श्री धर्मचन्द सरावगी
प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेमी

सम्पादक :

दीपचन्द नाहटा

☐ प्रकाशक

श्री धर्मचन्द सरावगी अभिनन्दन-समिति

श्री जैन सभा, ७, शम्भू मल्लिक लेन, कलकत्ता-७००००७

☐ प्रकाशन-तिथि

रविवार, २ नवम्बर, १९८६ ई०

☐ मुद्रक

[illegible]

८, [illegible] स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७

☐

मूल्य रु० ५०) रुपये पचास मात्र

दो शब्द

यह अभिनन्दन ग्रन्थ आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करना स्वाभाविक है। अभिनन्दनीय वे होते हैं, जो जीवन मे कुछ करते हैं—समाज के लिए, धर्म के लिए, राष्ट्र के लिए। जो व्यक्ति दूसरो के लिए कुछ करता है, वही दुनिया मे प्रशसा का पात्र होता है। जिनके-जिनके भी अभिनन्दन हुए हैं, या हो रहे हैं, निश्चय ही उनसे राष्ट्र को, समाज को कुछ मिला है। अभिनन्दन-ग्रन्थो मे सकलित उनकी जीवनी तथा उनके कृतित्व से आनेवाली पीढी प्रेरणा या शिक्षा ग्रहण करती है।

प्रस्तुत अभिनन्दन ग्रन्थ, प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेमी श्री धर्मचन्द सरावगी के जीवन-यात्रा को रेखाकित करता है। सरावगीजी ने वचपन से स्वाभिमान सहित अपने पाँव पर खडे होने के लिए रास्ते मे खड़े होकर अखबार भी बेचा है। उन्होने उस समय विदेश यात्रा की जब समाज मे वर्जित थी। अपने समाज के प्रथम वायुयान चालक भी बने, यहा तक प्रगति पथ पर आगे बढे कि कलकत्ता पौर प्रतिष्ठान के पार्षद बने। अपने कार्यकाल मे "नो स्मोकिंग इन पब्लिक भ्वेकल्स एण्ड सिनेमा" का प्रस्ताव रखा जो सर्वसम्मति से पारित हुआ एव आजतक लागू है। आप राज्यसभा के चुनाव मे सफल हुए तथा अन्य सहयोगी को अवसर देने के लिए उस आकाक्षित पद को स्वेच्छा से त्यागा भी। विभिन्न सस्थाओ मे जब भी जहा रहे, कुछ किया, यथा मारवाडी रिलीफ सोसाइटी, दिगम्बर जैन नया मन्दिर, जैनभवन, बडाबाजार युवक सभा, प्राकृतिक चिकित्सा तथा गो सेवा आदि के क्षेत्र मे स्वय कार्य तो किया ही बल्कि अपने साथ काम करने वालो के प्रेरणास्पद भी बने। प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार-प्रसार मे इनका योगदान ऐतिहासिक महत्व रखता है। इसके ये प्रेरक रहे हैं और स्वय भी अपने जीवन मे इसे उतारा है। इनका रहन-सहन, खानपान मर्यादित है।

हमने नजदीक से इन्हे देखा है इतनी लम्बी आयु मे भी ये स्वस्थ एव कर्मठ हैं। आपने जैसा कि डा० राधाकृष्णन् ने एक दफे कहा था कि "Goddies and Politicians should retire in time" के अनुसार आपने अनेक सस्थाओ के ट्रस्टी एव सम्माननीय पद से स्वय विराम ले लिया तथा पदाधिकारी रहते हुए भी पद की मर्यादा की रक्षा मे बराबर सलग्न रहे हैं—जैसे एक दफे शादी के उपलक्ष्य मे जैनभवन धर्मशाला के लिए सिफारिश का हमने अनुरोध किया, तो इन्होने कहा मैं ट्रस्टी हू, मेरे कहने से शायद आपको धर्मशाला मिल भी जाए, मगर यह मन्त्री का अधिकार है। अत आप उनसे ही मिलें। हम उनके अधिकार मे हस्तक्षेप करना उचित नही समझते।

जीवन वृत्त

शेखावाटी

इतिहास की लम्वी यात्रा मे पूरे राजस्थान की पहचान शाश्वत रणस्थली के रूप मे ही होती रही है। यहां पैदा होने वाले इन्सान के पावो तले तलवार की धार रही या बबूलो और केर-कांटो से भरे बियावान। भभकती बालुका मे बनते-बिगडते ऊँचे-नीचे धोरों का असीम विस्तार या सुलगती चट्टानो का ऊबड़-खाबड़ अटूट सिलसिला। अनवरत युद्ध और अविश्रान्त सघर्ष—बस यही नियति बनी रही इस धरती की। पानी पीना हो तो पाताल फोड कर निकाल लो, स्वाभिमान से जीना हो तो पीठ पर ढाल और कमर मे तलवार लटका कर चलो। इसी राजस्थान के पुरखो ने सतत् प्रहारों और चुनौतियो को झेलते हुए काल के भाल पर अपने ज्वलत अस्तित्व और अजस्र ऊर्जा के अमिट लेख लिखे। श्रद्धा से नमन करता है प्रत्येक भारतीय आज भी माटी की इस मरोड़ को।

कालान्तर मे युद्धों और सघर्षों का रूपान्तरण होता रहा। अनेक लोगो ने विभिन्न स्तरों पर सघर्ष करते हुए अपने को उजागर किया।

शेखावत राजपूतो की वीरता और शूरता की गाथाओ से जुडा राजस्थान का उत्तरी-पश्चिमी प्रदेश आज शेखावाटी के नाम से पहचाना जाता है। शेखावाटी,

के शासक शिवसिंहजी ने लाडखाना और कुँवर रामसिंहजी काशलीवाले के साथ दो हजार सेना लेकर फतहपुर पर धावा बोला। इधर फतहपुर का नवाब सरदारखाँ भी अपने सेनापति कायमखा के साथ ३५० घुडसवार और ग्यारह सौ पैदल सैनिको के साथ शिवसिंहजी की सेना के साथ भिड़ गया। इस घमासान लड़ाई मे दोनों ओर के अनेक योद्धा काम आगए। अन्त मे नवाब सरदारखा घायल हो गए। उनकी सेना का मनोबल गिर गया और सेनापति कायमखा भी मैदान छोड़कर भाग खड़ा हुआ।

सम्वत् १७८८ की चैत्र शुक्ला १ को फतहपुर की गद्दी पर राव शिवसिंहजी अधिष्ठित हुए। तबसे फतहपुर की राजधानी सीकर ही रही। रावराजा कल्याणसिंहजी इस परम्परा के अन्तिम राजपूत शासक थे। नवाबो, राजाओ और नामी-गिरामी सेठो का निवास रहने के कारण फतहपुर मे अनेक महत्वपूर्ण भवनो का निर्माण भी हुआ।

दर्शनीय स्थान

प्राचीन काल मे शारीरिक बल और शस्त्र-युद्ध मे रक्षा की दृष्टि से सुदृढ दीवारो से घिरे किले का होना सामरिक व्यूह रचना का एक अनिवार्य अग समझा जाता था। फतहपुर पर होने वाले निरन्तर आक्रमणो से सुरक्षा-व्यवस्था का विचार कर नवाब फतहखां ने शहर से दक्षिण तीन कोस की दूरी पर रिणाऊ नाम के छोटे से ग्राम मे एक सुदृढ और सुन्दर किले का निर्माण करवाया और उसके चारो ओर नगर बसा कर उसे आबाद कर दिया। इस किले के निर्माण मे दो वर्ष लग गए। सम्वत् १५०७ मे दिल्ली का स्वामित्व स्वीकार न करने के कारण बहलोल लोदी द्वारा नवाब फतहखा को हिसार से निकाल दिया गया। तबसे नवाब इसी किले मे आकर रहने लगे।

फतहपुर का यह किला प्राचीन शिल्प-कला का एक अद्भुत नमूना है। चारो ओर गहरी खाई और मजबूत परकोटे से घिरे किले के भीतरी भाग मे बने भवन अत्यन्त सुन्दर और कलापूर्ण बने हुए है। विशेषकर 'तोलिन का महल' देखने योग्य है। नवाब ने अपनी विवाहिता तेलिन के लिए इसे बडे मनोयोग से बनवाया था। फतहपुर के इतिहास मे होने वाले निरंतर परिवर्त्तनो का साक्षी यह

किला आज उपेक्षित और सूना पडा हुआ है। थोडी बहुत टूट-फूट के अतिरिक्त आज भी यह किला अपनी खुबसूरती और बुलन्दी का एहसास करवा रहा है—

ख़ण्डहर बता रहे है, इमारत बुलन्द थी।

नवाबी बावड़ी

चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा द्वारा लिखित 'आश्चर्य सप्तदशी' नामक पुस्तिका मे इस बावड़ी को ससार के सत्रह आश्चर्यो मे से एक माना गया है। सवत् १६७१ मे नवाब आलिफखा के लडके दौलतखा की देखरेख मे नागौर के शेख महमूद ने इस बावडी का निर्माण करवाया था। इस बावडी का निर्माण इतना पेचीदा है कि आज भी यह लोगो के लिए एक रहस्यमय तिलस्म बना हुआ है। कहते है कि इस बावडी मे अनेक सुरगे बनी हुई है जिनमे से एक सुरग फतहपुर के किले तक गई है। सम्भवतः नवाब की बेगमे इसी सुरग के रास्ते बावडी तक नहाने के लिए आती रही होगी। बावडी से सटा एक कु आ भी है जिसे अब अलग कर दिया गया है। कहते है एक डाकू इस बावडी मे बारह वर्षो तक छिपा रहा और पुलिस उसका पता नही लगा सकी। पुरातत्व की खोज करने वाले विद्वानो के लिए यह बावडी आज भी जिज्ञासा का केन्द्र बनी हुई है।

बावडी के चारो ओर एक विशाल बगीचा था जिसके सघन और छायादार वृक्षो के तले गुरु पाठशालाए चला करती थी। इस रम्य और दर्शनीय बगीचे की कल्पना कर प्राचीन ऋषिकुलो का चित्र आखो के सामने उभर आता है। कितना रमणीय स्थान रहा होगा यह किसी जमाने मे। सचमुच यह प्राचीन भवन-निर्माण कला का एक अद्भुत नमूना है, जिसकी सुरक्षा और देखभाल नितान्त आवश्यक है।

दिगम्बर जैन मन्दिर

सफेद सगमरमर से बना यह लुभावना मदिर ऐसा लगता है जैसे किसी योग-सिद्ध जैन मुनी का अलौकिक स्वप्न साकार होकर स्थापित हो गया है। नक्श और तराश का जादू देखना हो तो यह मन्दिर उस कला का जीता-जागता नमूना है।

हिसार से जब नवाब फतहखा फतहपुर आए थे तो उनके साथ उनके प्रधान मुसाहिव सेठ तुहिनमल्लजी भी हिसार से फतहपुर आ गए थे। ईश्वरदासजी भोजक भी इनके साथ थे। वे अपने साथ दो सुन्दर प्रतिमाए भी लेकर आये थे। एक सप्त धातु से बनी चौबीस महराज की तथा दूसरी काले पाषाण से निर्मित तीर्थंकर चन्द्रप्रभु की प्रतिमा थी। भट्टारकजिन चन्द्रदेव के उपदेश से प्रभावित होकर सेठ तुहिनमल्लजी ने सवत् १५०८ मे इस मदिर का निर्माण करवा कर इसमे दोनो प्रतिमाओ की प्रतिष्ठित की।

कालान्तर मे यह मन्दिर जमीन मे धसता चला गया। सवत् १८६१ मे भट्टारक श्री ललित कीर्तिजी के उपदेश से प्रभावित होकर जैन-समाज ने इस मदिर के ऊपर एक और नया मंदिर बनवा दिया और नीचे का मदिर बन्द करवा दिया। आज यही मदिर लोगो के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। मदिर के सभा मण्डप का तिबारा कुशल राज-चित्रकारो की अद्भुत कारीगरी का प्रतीक है। उसमे किया गया सोने की पच्चोकारी का काम, सुनहरे अक्षरो मे दीवारो पर अकित धार्मिक श्लोक और शिला-लेख पुरातत्व और प्राचीन इतिहास की अमूल्य थाती है। इसो प्रकार इस मदिर मे बहुत से प्राचीन ताम्रपत्र और यन्त्र लेख भी सुरक्षित है।

लक्ष्मीनाथजी का मदिर

लक्ष्मीनाथजी का मदिर फतहपुर के बड़ेबाजार के बीचों-बीच बना हुआ है। सफेद सगमरमर से बने इस मदिर मे भी जैन मदिर की तरह ही सोने की पच्चीकारी का काम देखने लायक है। इस मदिर का इतिहास भी विचित्र है। कहा जाता है कि अलवर के किसी पठान को हल जोतते समय जमीन में गडी हुई कोई मूर्ति दिखाई दी। उसने उसे निकाल कर अपने पास रख लिया। सवत् १५८८ मे गौरीदत्तजी भोजक उस मूर्ति को फतहपुर ले आए। वही मूर्ति लक्ष्मीनाथजी की प्रतिमा के रूप मे मदिर मे प्रतिष्ठित है। इस मदिर के निर्माणार्थ भूरियां (एक अग्रवाल जाति) ने अपनी खरीदी हुई जमीन दान मे दे दी। तत्कालिक नवाब नाहरखा ने इसके लिए सगमरमर की व्यवस्था की। बाकी खर्च के लिए चिट्ठा किया गया जिसमे ऊँची कलम दो पैसे की थी। आगे चलकर सवत् १८०८ मे इस मदिर के आकार को और भी विशाल रूप दे दिया गया। आज यह

कार्य है। इसमे अहिंसा से परिवर्तन की भावना सन्निहित है। कांग्रेस ने इन्हे विधान परिपद् मे इसलिये निर्वाचित किया है ताकि भविष्य मे देश और समाज इनकी कर्मठता से और भी लाभान्वित हो सके।

श्रममन्त्री श्री विजय सिंह नाहर ने कहा—श्री सरावगी मौन और हसमुख रहकर बराबर समाज की सेवा करते रहे है। ऐसे व्यक्तियो को सेवा का अधिक अवसर देना हितकर है। श्री राधाकृष्ण जी नेवटिया ने कहा "प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय की स्थापना मे अग्रणी बनकर श्री सरावगी ने एशिया मे एक बडे अभाव की पूर्त्ति की है। कुमार सी० एस० दुधोडिया ने कहा—जन जीवन और सार्वजनिक सस्थाओ से आपका हमेशा निकट का सम्बन्ध रहा है। १९२९ से ही आप सुधारवादी रहे है।

श्री चन्द्रकुमार का विवाह

धर्मचन्दजी के द्वितीय पुत्र चि० चन्द्रकुमार का शुभ-विवाह चलचित्र जगत के प्रसिद्ध वितरक और निर्माता श्री ताराचन्दजी बडजात्या की सुपुत्री राजश्री के साथ १९ जनवरी १९६५ को बम्बई मे हुआ।

धर्मचन्दजी सदा से सामाजिक रीति-रिवाजो मे युगानुकूल सुधार के पक्षपाती रहे हैं। अतः उन्होने वधू पक्ष के श्री बडजात्याजी को अपनी पारिवारिक व्यवस्था और अपने आदर्शवादी विचारो से अवगत करा दिया। बडजात्याजी जब कलकत्त मे रहते थे, तबसे उनसे सरावगीजी की जान-पहचान थी अत. लड़की को देखने के लिए उन्होने चन्द्रकुमार को बम्बई भेज दिया। वहा से लौट कर उसने अपनी स्वीकृति दे दी। ब्याह पक्का हो गया। लेन-देन की बात चलने पर धर्मचन्दजी ने कहा हमारी कोई माग नही है तथा विवाह बिना आडम्बर और सादगी से हो बारात मे परिवार के केवल १५ व्यक्ति हवाई जहाज से गये।

बम्बई मे विवाह के अवसर पर वर-वधू को आशीर्वाद देने के लिए २० जनवरी को एन० एस० सी० आई० के प्रागण मे स्वागत समारोह हुआ जिसमे सर्वश्री मोरारजी देसाई, बी० पी० दिवगी, एस० के० टी० देसाई, यू० एन० ढेबर आदि विशिष्ट व्यक्ति तथा सर्वश्री साहू श्रेयासप्रसादजी, रतनचन्दजी चुन्नीलालजी, चन्दूलाल, कस्तूरचन्दजी आदि प्रतिष्ठित व्यवसायी और चलचित्र जगत के अनेक सम्माननीय व्यक्ति उपस्थित थे।

कलकत्ते में भी वर-वधू के सम्मान में हिन्दुस्तान क्लब में प्रीति सम्मेलन का आयोजन हुआ। मुख्यमन्त्री श्री पी० सी० सेन, सर्वश्री श्रममन्त्री विजयसिंह नाहर रामकुमारजी भुवालका एम० पी०, बिहारी भाई शाह, श्रीमती अग्रवाल 'विश्वमित्र' सम्पादक कृष्णचन्द्रजी अग्रवाल आदि ने वर-वधू को अपना स्नेहमय आशीर्वाद दिया।

दिगम्बर जैन समाज अग्रवालो और खण्डेलवालो मे यह पहला वैवाहिक सम्बन्ध था। दोनो पक्षो के द्वारा उठाए गए इस सुधारवादी कदम की सभी ने प्रशसा की।

प्राकृतिक चिकित्सा : विश्व-भ्रमण

प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय का भवन बनकर तैयार हो चुका था। कुछ विद्यार्थी प्रशिक्षण के लिए विद्यालय मे प्रवेश भी लेने लगे। किन्तु धर्मचन्दजी को लगा कि विद्यार्थियों का विधिवत शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करने के लिए एक ओर जहा अनुभवी और निष्ठावान शिक्षकों की आवश्यकता है, वही देश-विदेश मे चलने वाले प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रो का विस्तृत अध्ययन होना भी आवश्यक है। उच्च स्तर की शिक्षा के अभाव मे डिग्री देना प्राकृतिक चिकित्सा के भविष्य को अन्धकार मे ढकेल देना होगा। अपने इन्ही विचारो से प्रेरित होकर धर्मचन्दजी ४ जुलाई १९६५ को विश्व-भ्रमण के लिए निकल पड़े।

धर्मचन्दजी का विश्वभ्रमण उद्देश्यपूर्ण था। अपने मिशन के पूर्ति के लिए आवश्यक ज्ञानार्जन करना ही इस यात्रा का लक्ष्य रहा। दो मास की लम्बी यात्रा मे धर्मचन्दजी ने जर्मन, इङ्गलैण्ड, अमेरिका, और जापान आदि देशो का भ्रमण किया। वहा चलने वाले प्रा० चिकित्सा केन्द्रो को निकट से देखा। विदेशो मे प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के विकास की सम्भावनाओ और उनके परिणामो का आकलन किया। अमेरिका मे वे अमेरिका के प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् के अध्यक्ष डा० जे० एम० गेहमन से मिले। दोनो मे प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के विषय मे सारगर्भित वार्त्तालाप हुआ। डा० गेहमन धर्मचन्दजी के सुदर्शन स्वस्थ व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुए। प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति का गहन ज्ञान और आत्म विश्वास देखकर डा० गेहमन की धर्मचन्दजी के साथ पूरी अतरगता हो गई। इसी प्रकार हैरिस बर्ग मे प्रेसकाफ्रेन्स मे धर्मचन्दजी ने प्राकृतिक चिकित्सा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए जो वक्तव्य दिया उससे वहां

के नागरिक बहुत उत्साहित हुए। डा० गेहमन से हुई बातचीत और प्रेस कान्फ्रेंस मे दिए गए वक्तव्य से प्रभावित होकर काल टर्नर ने अमेरिकी समाचार पत्र पेट्रीआट, ७-८-६५ मे जो लेख लिखा उसका भावार्थ इस प्रकार है—

"श्री धर्मचन्द सरावगी, कलकत्ता निवासी भारतीय ने प्राकृतिक चिकित्सा का विश्लेषण करते हुए कहा—आप जो भोजन करते है वही आप है।

"श्री सरावगी देखने से सज्जन और तीव्र-बुद्धि सम्पन्न व्यक्ति मालूम होते हैं, उनका रंग ताम्रवर्णी है और उनका व्यक्तित्व मधुर है। प्रसिद्ध अमेरिकी प्राकृतिक चिकित्सक डाक्टर जैसे एम० गेहमन से भेंट करने के लिए वे इस इनकेनन शहर मे आए हुए है।

"जब इन दोनो ही व्यक्तियो ने आपस में प्रेमपूर्वक हाथ मिलाया तो दोनो मे ही स्वास्थ्य का सौंदर्य परिलक्षित हो रहा था। श्री सरावगी की आयु ६० वर्ष होने ही वाली है।

"आमिष भोजन को दोनो ही अस्पृश्य मानते है। दस फुट लम्बी लाठी से भी उसे वे नही छू सकते। विशेष शाकाहारी श्री सरावगी ने कहा। विशुद्ध फलाहारी डाक्टर गेहमन ने प्रतिध्वनि की।

"श्री सरावगी भारत मे विधान सभा के सदस्य है। वे लोहा और इस्पात उद्योग के व्यापारी है। जूते के फीतो के निर्माता है। हवाई जहाज चालक है और प्राकृतिक चिकित्सा मे स्नातकस्तरीय शिक्षा देने वाले एक कालेज के प्रमुख-सदस्य है।

"प्राकृतिक चिकित्सा के लिए श्री सरावगी का मत है—जो आप खाते है, उसीसे आपके शरीर का निर्माण होता है। उदाहरण के लिए गर्भवती स्त्री को लीजिए। क्या उसके शरीर के भीतर शिशु का जीवन और पालन-पोषण नही होता है? अतएव यदि प्रकृति पूरे शरीर का निर्माण कर सकती है तो प्रकृति शरीर को निरोग भी कर सकती है। मुख्य बात है भोजन-जल। दवा की कोई आवश्यकता नही है। केवल समुचित पदार्थो को ही भोजन मे लें—चावल गेहूं, मक्का अनाज, लेटूस और सभी तरह की तरकारिया।

"पच्चीस वर्ष पूर्व, जब मै प्राकृतिक चिकित्सा के सम्पर्क में आया तो उस समय प्राय: ५० डालर (लगभग २५०) रुपये प्रति महीने डाक्टरो को उनकी फीस के रूप मे देता था। लेकिन प्राकृतिक चिकित्सा का मार्ग ग्रहण करने पर, तब से आज तक एक पैसा भी डाक्टरो को फीस के रूप मे मैंने नही दिया।

"श्री सरावगी प्रतिदिन नियमपूर्वक व्यायाम और यौगिक आसन करते है। उनके अनुसार सही ढंग से श्वास लेने से रक्त को शुद्ध करता है और त्वचा को कान्तिमान बनाता है।

"सन् १९४७ मे जब वे न्यूयार्क मे आए थे तब काफी समय तक बर्नर मेकफेडन के साथ रहे। डाक्टर मेकफेडन के विषय मे उन्होने कहा—वे एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे।

"डा० गेहमन जो जर्मन जाति के है, और पेनसिलवानिया के निवासी है, अनेक वर्षो तक डा० बर्नर मैकफेडन के साथ कार्य कर चुके है। डा० गेहमन ने डा० मैकफेडन के साथ हजारो मील की पदयात्रा की है।

"श्री सरावगी अमेरिका की सम्पन्नता से काफी प्रभावित हुए है। न्यूयार्क के विषय मे चर्चा करते ही वे समर्थन मे मुस्कुराने लगते है और सिर हिलाते है। यहाँ पर प्रत्येक व्यक्ति काफी सम्पन्न है—पूरी तरह सम्पन्न।

"अमेरिका की अधिकाश जनता का झुकाव गोलियो (नीद लाने वाली आदि) की ओर देखकर श्री सरावगी ने दु ख प्रकट किया और कहा—यदि वे प्राकृतिक रास्ता अपनाएँ और अपने भोजन का ध्यान रखें तो किसी भी तरह की गोली लेने की जरूरत न पडे।

जर्मनी और अमेरिका मे प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति बढती हुई लोकप्रियता देखकर श्री धर्मचन्दजी बहुत प्रसन्न हुए। प्राकृतिक चिकित्सा के उज्ज्वल भविष्य के प्रति आशान्वित होकर धर्मचन्दजी १२ सितम्बर को वापिस स्वदेश लौट आए। दमदम हवाई अड्डे पर बडी सख्या मे स्वजनो और मित्रो ने उपस्थित होकर धर्मचन्दजी का स्वागत किया।

होने के कारण यह इस गरीब देश के लिए अधिक उपयोगी भी है। किन्तु इसके लिए प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति निष्ठा होना आवश्यक है, अन्यथा इसका प्रभावकारी परिणाम नही हो सकेगा। महात्मा गांधी जीवन भर प्राकृतिक चिकित्सा की वकालत करते रहे। हमे इस कार्य के लिए जन-मानस को भावात्मक दृष्टि से समृद्ध करना होगा। श्रीमती पूर्वी मुखर्जी ने कहा कि सरकार इस पद्धति को आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली के अन्तर्गत ही मान्यता देने पर विचार कर रही है। मैं इस आशय का प्रस्ताव आयुर्वेदिक कौन्सिल मे रखूंगी।

श्रममन्त्री श्री विजय सिंह नाहर ने बताया कि सरकार ने तीसरी योजना के अन्तर्गत २५ लाख रुपए प्राकृतिक चिकित्सा के लिए नियोजित किए है। नेपाल मे भारतीय राजदूत श्रीमन्नारायण ने कहा कि कलकत्ता मे प्रारम्भ होने वाले प्राकृतिक चिकित्सा विद्यालय द्वारा प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण कार्य भी हो सकेगा। जिससे प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के प्रचार मे सहायता होगी।

श्री धर्मचन्दजी ने परिषद के मन्त्री पद से परिषद की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय की योजना को चारो ओर से आशातीत सहयोग मिल रहा था। परन्तु धर्मचन्दजी इस पक्ष मे नही थे कि त्रुटि हीन उच्च स्तरीय शिक्षा के अभाव मे किसी को सत्व-चिकित्सक का प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाए। देश-विदेशो मे घूमकर उन्होने जो अनुभव प्राप्त किया था उसके कारण जैसे-तैसे विद्यालय द्वारा शिक्षा-सत्र चलाते जाना वे उचित नही समझते थे। अत. वे चुस्त-दुरुस्त पाठ्य-क्रम और योग्यतम शिक्षको की व्यवस्था के लिए आग्रह करते रहे। उनके साथी आधी अधूरी जैसी भी व्यवस्था हो प्रशिक्षण कार्य को चलाते रहने के पक्ष मे थे। धर्मचन्दजी अपने मन की बात साथियो के आगे रखते अवश्य पर दुराग्रही वे कभी नही रहे। वे सदा यह मानकर चलते है—

'अपने मन की हो जाए तो अच्छा है,
नहीं हो जाए तो और भी अच्छा है।"

विचारो का यह अन्तर्द्वन्द्व दो वर्षों तक चलता रहा। धीरे-धीरे सबको धर्मचन्दजी के विचार की सार्थकता का भान होने लगा। दूसरी विकसित चिकित्सा-पद्धतियो के समकक्ष वैज्ञानिक और अनुभूत प्रशिक्षण के अभाव मे इसे

जोखीरामजी कलकत्ते आए

जोखीरामजी की पढाई विशेष नही हुई। उन दिनो अक्षर ज्ञान होना ही पढा लिखा समझा जाता था। इस सम्बन्ध मे एक दिलचस्प घटना का उल्लेख कर देना उचित होगा।

सगाई से पहले कन्या पक्ष के लोग जोखीरामजी को देखने आए। किसी ने जोखीरामजी के परिवार वालो से पूछा—लड़का पढा-लिखा है? सिर हिलाकर किसी ने उत्तर दिया—हा। जोखीरामजी को जब परीक्षा लेने के ख्याल से लिखने को कहा गया तो वे बडी मुश्किल से ज और ख अक्षर ही लिख पाये थे कि सबने कहा—ठीक है और लिखने की जरूरत नही है। बस जोखीरामजी की सगाई पक्की हो गई।

उस जमाने मे छोटी उम्र मे यानी १०-१२ वर्ष की उम्र मे विवाह होकर २-३ वर्ष बाद मुकलावा हो जाता था और घरवाले जल्दी ही आगन मे बच्चो को खेलते देखना चाहते थे। जोखीरामजी को पहली पत्नी से एक लडका हुआ जिसका नाम दानमल रखा गया।

उन दिनो भारत मे अंग्रेजी हुकूमत थी तथा कलकत्ता नगर उसकी राजधानी थी। राजधानी होने के कारण कलकत्ता बहुमुखी विकास की ओर अग्रसर हो

रहा था। उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल के व्यापारी अंग्रेजी कम्पनियों के साथ अपना तालमेल बिठाकर धन कमाने मे लगे हुए थे। समुद्री रास्ते मे दूसरे देशो के साथ अपने व्यापारिक सम्बन्ध जोडने के कारण कलकत्ता अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का केन्द्र बनता जा रहा था।

उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे थोड़े बहुत मारवाडी भी कलकत्ते पहुँचने लगे थे। कलकत्ते मे धन की नदी बहती है ऐसी आम आदमियो की धारणा बनी हुई थी। धन कमाने की प्रबल आकांक्षा से प्रेरित होकर जोखीरामजी ने भी कलकत्ते की यात्रा करने का निश्चय किया।

आवागमन के साधन अभी विकसित नही हो पाए थे। रेल, सड़को और बसो की कोई सुविधा नही थी। मारवाड से कानपुर तक की दूरी ऊँटो की पीठ पर लदे तथा हिचकोले खाते तय करनी पडती थी। रास्ते चलते जाने कब चोर-डाकू और घाडायतियो से मुठभेड हो जाने की सभावना और आतंक हरक्षण बना रहता था। जोखीरामजी ठहरे जीवट वाले व्यक्ति। एक बार जो निश्चय कर लिया उसको पूरा किये बिना उनको चैन कहाँ। आखिर माया-ममता का मोह-पाश टूटा और वे कलकत्ते की यात्रा पर चल पडे।

फतेहपुर से कानपुर तक की लम्बी दूरी उन्होने ऊँटो की पीठ पर सवार होकर ही पूरी की। यहाँ से नाव द्वारा नदी के रास्ते कलकत्ता पहुचा जा सकता था। परन्तु अब जोखीरामजी की अटी मे इतना जोर कहाँ था कि नाव वालो को पूरा किराया दे सके। आखिर चढनदारी करते हुए किसी प्रकार कलकत्ता पहुंच पाये। इस व्यवस्था के अनुसार रात को जब नाविक सो जाते तो जोखीरामजी को जागते रहकर नाव पर पहरा देना पडता था। भोजन खर्च के लिये दिन मे वे गमछे बेच लिया करते थे।

कलकत्ता पहुचने वालो मे जोखीरामजी पांचवे या छठें मारवाडी रहे होगे। यहाँ आकर जोखीरामजी काम की तलाश मे भटकते रहे। उस समय तक मारवाडियो का कोई अपना बडा उद्योग नही था। उत्तर प्रदेश और बिहार से आए हुए व्यापारी तथा बगाल मे बस गए खत्री अंग्रेज कम्पनियो या व्यापारियो की दलाली और ब्रोकरी का धन्धा करते थे।

पर कलकत्ते पहुँचना जोखीरामजी की यात्रा की समाप्ति नही थी। वस्तुतः यही से उनकी वास्तविक जीवन यात्रा का प्रारम्भ हुआ। वे पारिवारिक सुख-सुविधाओ का त्याग कर निकले थे। जोखीरामजी ने अपने प्रारब्ध की आडी-टेढी लकीरें खीचना प्रारम्भ किया। गिने-चुने लोगो से परिचय कर उन्होने अपने रहने-खाने की व्यवस्था की और कलकत्ते की दृष्टि से किराने की दलाली करने लगे। दलाली की सफलता परिश्रम की अपेक्षा प्रारब्ध पर ही अधिक निर्भर करती है। परिश्रम करने की क्षमता तो जोखीरामजी मे थी पर प्रारब्ध को पकड रखना उनके वश मे नही था।

किराने की दलाली के दलदल मे निरतर हाथ मारते रहने पर भी जोखीराम जी को कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि नही हुई। निराश और हताश होकर वे किसी काल्पनिक चमत्कार की आशा मे जुआ खेलने लगे। जुए ने उनकी बची-खुची कार्यक्षमता को और भी कमजोर किया। दलाली के खेल मे बाजार के घटते-बढते रुख का आधार तो रहता है, जुआ तो निपट भाग्य का खेल है। प्रकृति से परिश्रमी और कर्मवीर जोखीरामजी ने जब-जब भाग्य का सहारा लिया, उन्हे निराशा और नुक्सान के अतिरिक्त कुछ भी हाथ नही लगा।

जुए से हारकर जोखीरामजी फिर परिश्रमपूर्वक दलाली मे ध्यान लगाते और थोडी कमाई होने पर वे फिर जुए मे दाव लगा देते। फलतः कश्मकश और अभाव सदा बना रहता। न तो वे अपने लिए सुख-आराम का साधन जुटा पाते और न फतहपुर अपने स्त्री-बच्चो के लिए कुछ भेज पाते। कुल मिलाकर जोखीरामजी को कलकत्ते का जीवन रास नही आ रहा था। दूसरा कोई रास्ता नही होने के कारण उधेडवुन मे जोखीरामजी का समय गुजरता रहा।

जोखीरामजी कलकत्ते मे पैसा उपार्जन करने की जीतोड़ कोशिश करते रहे। अपनी धर्मपत्नी को खर्चा मुश्किल से ही भेज पाते थे। फतहपुर मे उनकी स्त्री किसी प्रकार अपना काम चलाती और अपने लडके दानमलजी का पालन-पोषण करती रही। दानमलजी का विवाह भी फतहपुर मे ही हो गया। पर दुर्भाग्यवश दानमलजी छोटी उम्र मे ही गुजर गए। दानमलजी की स्त्री दबग होने के साथ ही दयालु और धर्मप्राण थी। विधवा होने के बाद उसने अपना जीवन गरीब स्त्रियो की सेवा, सहायता और धर्म साधना मे लगा दिया। अपनी उदारता के

कारण उसने अपने जीवन काल में समाज द्वारा यथेष्ट आदर और सम्मान प्राप्त किया। पूरा जीवन उन्होने फतहपुर मे रह कर ही सद्कार्य करते हुए व्यतीत किया।

जवान लड़के की असामयिक मृत्यु से जोखीरामजी के हृदय पर गहरा आघात लगा। काम-काज मे अब उनका पहले जैसा उत्साह नही रहा। वे उदास और मायूस रहने लगे। जोखीरामजी जीवन मे बहुत कुछ कर गुजरने की आशा लेकर कलकत्ते आए थे। पर क्रूर काल के थपेडो ने उनके स्वप्नमय ससार को जलाकर राख कर दिया। अकेले रहकर जिन्दगी का लम्बा सफर तय करना उनके लिए दूभर हो गया।

जोखीरामजी का दूसरा विवाह भरतिया परिवार मे हुआ। पत्नी का नाम धन्नी देवी था। अब जोखीरामजी के जीवन का नया अध्याय प्रारम्भ हुआ। बड़ाबाजार मे रूपचन्दराय स्ट्रीट मे एक छोटे से घर मे वे अपनी नई स्त्री के साथ रहने लगे। धन्नी देवी के रूप मे जोखीरामजी को नई जीवन सगिनी तो मिली, लेकिन जादूलालजी की माली हालत पतली होने के कारण कोई आर्थिक लाभ नही हुआ। दलाली से जो थोड़ी बहुत आय होती उसी मे पति-पत्नी अपना ससार चलाते रहे। धन्नी देवी अपने नाम के अनुसार धन लेकर तो नही आई पर मातृत्व की भरपुर सभावनाओ वाली सौभाग्यवती स्त्री होने के कारण वह एक के बाद एक पुत्रो को जन्म देती चली गई। धीरे-धीरे जोखीरामजी का परिवार बढता रहने के कारण उनका आर्थिक संतुलन बिगडता चला गया। कम आय और बड़े परिवार के जो दुष्परिणाम होते है वे सामने आने लगे। यहाँ तक कि कभी-कभी घर मे चूल्हा जलाने की भी स्थिति नही रह पाती थी।

धन्नी देवी भारतीय परिवार मे जन्मी भले सस्कारो मे पली समझदार महिला थी। पारिवारिक गरीबी और भुखमरी को वह अपने पास-पडोसियो पर प्रगट नही होने देती थी। जिस दिन खाना पकाने की स्थिति नही होती थी उस दिन भी चूल्हे मे लकडियाँ जलाकर छोड देती थी, ताकि घर पर आने वाले यह नही समझें कि आज इनके घर मे चूल्हा ठडा पडा है। दिन-रात कठोर परिश्रम कर जोखीरामजी अपनी आर्थिक स्थिति सभाल पाने मे सक्षम नही हो सके। उनके लड़के भी समझ पकडने के साथ-साथ पिता के काम मे हाथ बँटाने लगे। फिर भी

कोई आशाप्रद सुधार नही हुआ। आखिर कुछ पटिवालो की राय से धन्नी देवी और उसके लड़के जोखीरामजी को लेकर राँची चले गये। राँची जाने के कारण ये भी थे—कलकत्ते की फिजूलखर्ची से छूटकारा, जोखीरामजी की जुए की लत से मुक्ति तथा राँची मे पहले से जाकर वसे हुए जान-पहचान वालो की सहायता से कोई छोटा-मोटा धन्धा मिल जाने की आशा।

जोखीरामजी कामकाज की खोज मे राँची आकर रहने लगे। राँची मे उन दिनो वहुत थोडे मारवाडी व्यापारी आए थे। सुविधा की दृष्टि से राँची अभी अविकसित नगर ही था। सडको आदि का निर्माण नही हो पाया था। जोखीराम जी ईट, मिट्टी और खपरैल से वने कच्चे मकान मे सपरिवार रहते थे। दिन मे सूरज की रोशनी और रात को दीये के प्रकाश से काम चलता था। विखरे-छितरे मकान, वीच-वीच मे पेड पौधो और झाड-झखाडो की हरियाली। आसपास की यात्रा पैदल चलकर और दूर की वैलगाडी द्वारा होती थी।

राँची का व्यापारिक सम्बन्ध रानीगज से था। राँची से रानीगज माल पहुँ-चाने मे वैलगाडी को पन्द्रह दिन चलना पडता था। रानीगज से रेल मार्ग द्वारा वगाल, विहार और उत्तर प्रदेश माल आता-जाता था। सुरक्षा की दृष्टि से भी राँची कोई उपयुक्त स्थान नही था। राँची के आसपास भयानक जगल फैला हुआ था। जगली जानवरो, साँपो और डाकुओ का उपद्रव होता रहता था। फिर भी कच्चे माल की वहुतायत के कारण यह स्थान व्यापार का केन्द्र वनता गया। जोखीरामजी का शेष जीवन राँची मे ही व्यतीत हुआ। जोखीरामजी की कई सन्तानें उनके सामने ही गुजर गई थी। मृत्यु के पहले उनकी आँखें भी चली गई। आँख जाने की एक विचित्र घटना हुई वताई जाती है। एक दिन एक व्यक्ति उनसे मिलने आया, वात करते-करते उसने कहा कि जोखीरामजी अपनी आंख वन्द करो, जोखीरामजी ने उसके कहने के अनुसार आख वन्द की वह फिर नही खुली। वह व्यक्ति कौन था किसी को मालूम नही।

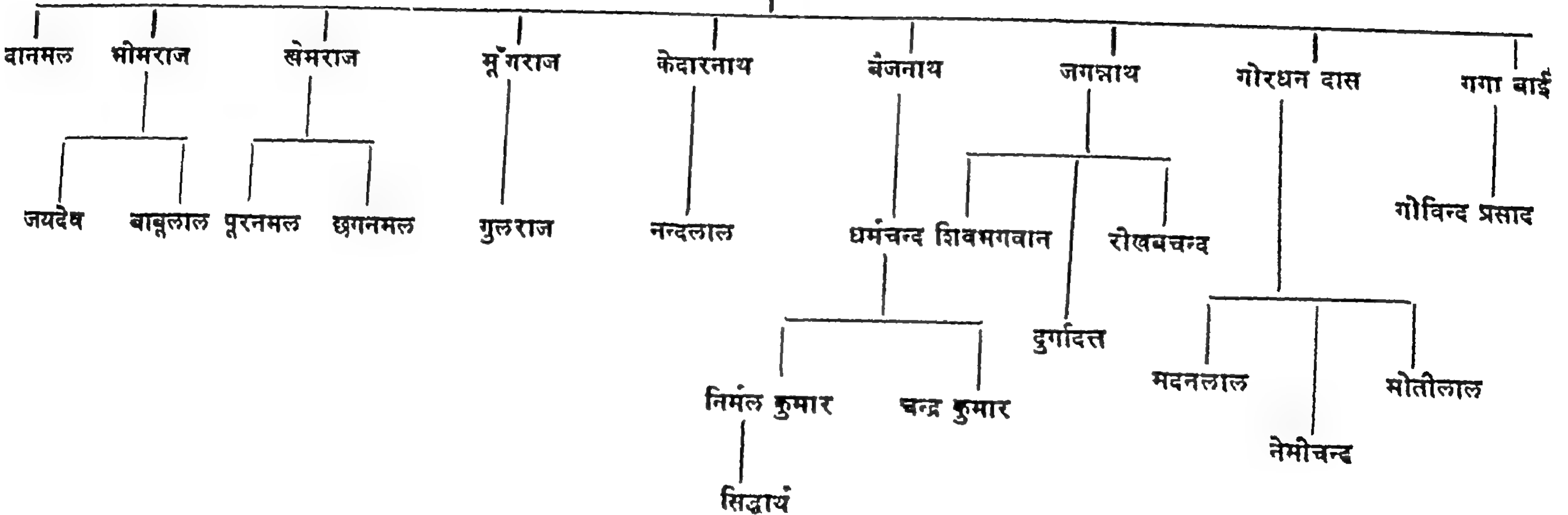
जोखीराम अव एक वड़े परिवार के धनी वन चुके थे। उनकी धर्मपत्नी धन्नी देवी ने छ पुत्रो और एक लडकी को जन्म दिया। एक लडका पहले था ही, इस प्रकार वह आठ सन्तानोवाली सौभाग्यवती के रूप मे समाज मे सम्मानित थी। अपने से वडो को प्रणाम करते समय वह पहले ही कह देती थी कि मुझे सात पुत्रो

की माँ बनने का आशीर्वाद नहीं देना—आपके आशीर्वाद से मैं पहले ही नौ सन्तानों वाली माँ बन चुकी हूं।

जोखीरामजी के लड़कों ने बडे होकर विभिन्न काम में अपनी तकदीर आजमाना प्रारम्भ किया। यद्यपि सब सम्मिलित परिवार में ही रहते थे पर कामकाज की दृष्टि से कुछ लडके राँची के बाहर भी गये। धीरे-धीरे इनका काम बूंडू, रामगढ, कलकत्ता, कोडरमा आदि स्थानो मे फैल गया। बडा परिवार होने के कारण जोखीरामजी के लड़को ने अलग-अलग प्रकार के धन्धे खोल लिए। इससे व्यापारिक केन्द्रो की सख्या तो बढी लेकिन मूल स्थिति मे कोई सुधार नही हुआ। लडको के भी अपने-अपने परिवार पालते गये और वे अपना-अपना खर्च किसी प्रकार चलाते रहे।

जोखीरामजी का परिवार जिस तरह वढा उसी गति से टूटता भी चला गया। उनके लडके मे दानमलजी २१ साल, भीमराजजी ३६ साल और खेमराजजी ३३ साल की उम्र मे ही स्वर्गवासी हो गये। सन् १९१३ मे खेमराजजी के पुत्रो ने खेमराज पूरनमल नाम से राँची में अपना अलग फर्म कर लिया लेकिन अलग होकर उन्होने कोई उन्नति नही की। यह देखकर बाकी के भाइयो ने अलग होने का विचार त्याग दिया। मूंगराजजी के कोई पुत्र नही था। उन्होने जगन्नाथजी के पुत्र गुलराजजी को गोद ले लिया।

कारबार की डोर अब केदारनाथजी के हाथ मे थी। वे कुशल तथा कार्यदक्ष व्यक्ति थे। इनके समय मे व्यापार की सराहनीय उन्नति हुई। आगे चलकर उन्होने राँची मे एक धर्मशाला भी बनवाई जो आज भी विद्यमान हैं। केदारनाथ जी के एकमात्र पुत्र नन्दलालजी का विवाह के कुछ साल बाद निधन हो गया। उस धक्के को वे सह न सके और केवल ४६ वर्ष की आयु मे ही २३ अक्टूबर १९१६ मे स्वर्गवासी हुए। □


जोखीराम सरावगी
दानमल
भीमराज
खेमराज
मूँगराज
केदारनाथ
बैजनाथ
जगन्नाथ
गोरधन दास
गंगा बाई
जयदेव
बाबूलाल
पूरनमल
छगनमल
गुलराज
नन्दलाल
धर्मचन्द
शिवभगवान
रीखबचन्द
गोविन्द प्रसाद
दुर्गादत्त
निर्मल कुमार
चन्द्र कुमार
मदनलाल
नेमीचन्द
मोतीलाल
सिद्धार्थ



स्व० धन्नी देवी स्व० बैजनाथजी की माताजी



धर्मचन्दजी के स्वनामधन्य पिता स्व० वैजनाथजी सरावगी

जन्म ५-०-१८७८ • स्वर्गवास २-१०-१९६२



धर्मचन्दजी की माताजी स्व० जानकी देवी।

जन्म . १०-७-१८७७ ● स्वर्गवास · ८-५-१९६६



धर्मचन्दजी की प्रथम पत्नी स्व० श्रीमती ज्ञानवती देवी ।

बैंजनाथजी

बैजनाथजी अपने आठो भाइयो मे सबसे अधिक सुयोग्य साबित हुए। 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात' के अनुसार बचपन से ही बैजनाथजी की जन्मजात विशेषताएँ परिलक्षित हुई। किसी को देखते थे तो ध्यान से, सुनते थे तो मनोयोग से और बोलते थे तो उत्सुकता और जिज्ञासा से भरे-भरे। पिता की अपेक्षा बालक बैजनाथ माँ के सान्निध्य मे ही अधिक रहे। माता धन्नी देवी भारतीय सयुक्त परिवार मे रहनेवाली मर्यादित महिला थी। उनके आचार-विचार, रहन-सहन और बोलचाल पर शालीनता की छाप रहा करती थी। बैंजनाथजी को अपनी माताजी से जो सस्कार विरासत के रूप मे मिले वे ही आगे चलकर उनके व्यक्तित्व के विकास का मूल आधार बने।

बैंजनाथजी का जन्म ५ जनवरी १८७८ मे कलकत्ते मे हुआ था। बैंजनाथजी को माँ का लाड-प्यार तो मिला लेकिन बडे परिवार और आर्थिक अभाव के कारण उन्हे वे सुख-सुविधाएँ प्राप्त नही हो सकी जो एक बालक के उचित विकास के लिए अनिवार्य होती है। उनके पिता जोखीरामजी स्वय पढे-लिखे नही थे। बैंजनाथजी अधिक नही पढ सके। उस जमाने की इंगलिश की फर्स्ट बुक मे लेमहार्स तक चार-पांच पाठ ही पढ सके। फिर भी उन्होने जो कुछ थोडा-बहुत

पढा वह वडे मनोयोगपूर्वक पढा और उसी से उनको कामचलाऊ ज्ञान की प्राप्ति हो गई। पढने-लिखने की जो रुचि बचपन से जगी वह जीवन के अन्तिम वेला तक वनी रही।

अभी वैजनाथजी मात्र चौदह वर्ष के ही थे कि उनके विवाह की बात चल पडी। जोखीरामजी जव कभी फतहपुर जाते तो वहाँ के निवासी वद्रीदासजी जालान वैजनाथजी से अपनी पुत्री जानकी बाई का सम्बन्ध करने का आग्रह करते। उस जमाने मे विवाह सम्बन्ध मे आजकल की तरह सौदेबाजी और लेनदेन की वात नही हुआ करती थी। जान-पहचान वाले परिवार के साथ सम्वन्ध करना अच्छा समझा जाता था। माता-पिता ही सम्बन्ध तय कर दिया करते थे। लडके-लडकी को आपस मे एक दूसरे को देखने-दिखाने का अवसर नही मिलता था। ऐसा करना सभ्यता और मर्यादा के विरुद्ध समझा जाता था। वद्रीदासजी और जोखीरामजी एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते थे। उस जमाने मे वडा परिवार अच्छी दृष्टि से देखा जाता था। अत सम्बन्ध तय हो गया। यद्यपि जानकी वाई रग-रूप की वहुत सुन्दर थी पर शरीर से थोड़ी भारी थी। उम्र मे भी वैजनाथजी से कुछ वडी ही थी। जवकि वैजनाथजी रग से गेहुआ, दुवले-पतले वदन वाले युवक थे पर 'सम्वन्ध कीजै जान कर, पानी पीजै छानकर' वाली कहावत के कारण सम्वन्ध करने में किसी प्रकार की वाधा नही हुई। लडके की अपेक्षा लडकी की उम्र वडी होने वाली बात को भी लोग अच्छा मानते थे, कहा करते थे—"वडी वहू वडो भाग, छोटो वनडो घनो सुहाग"।

सन् १८९० मे वैजनाथजी का विवाह जानकी वाई के साथ कर दिया गया। वैजनाथजी को जव भी समय मिलता वे उस जमाने मे प्रकाशित होने वाले हिन्दी के पत्र अवश्य पढते। इस प्रकार ज्ञानार्जन और गुण-ग्राह्यता उनमे वरावर बनी रहती। उनकी इस प्रवृत्ति के कारण उनके वडे भाई खीझकर कहा करते थे: "यो वैजियो दिन भर किताबा और छापा मे ही शीर घुसायो राख कमानो खानो कैया सीखसी।" वैजनाथजी पर इन वातो का कोई प्रभाव नही होता था। वे काम के समय काम करते और वाकी समय मे किताबें और अखवार पढते। पढने की इस आदत के कारण वैजनाथजी के वाह्य ज्ञान का विकास तो हुआ ही, साथ साथ मनुष्य को परखने की योग्यता भी वढी।

विवाहोपरान्त बैजनाथजी कलकत्ता और राँची दोनों जगह रहते थे। उनके अन्य भाइयों ने राची से बाहर बुन्डु, कोडरमा, कलकत्ता, रामगढ आदि स्थानो पर छोटा-मोटा धधा कर रखा था। बैजनाथजी भी उनके काम मे हाथ बँटाते। बुद्धिमान होने के कारण कारबार के गुर समझने मे बैजनाथजी को कोई कठिनाई नही हुई। राँची का काम उन दिनो जगन्नाथजी देखते थे। मूँगराजजी बुन्दु का काम सम्भालते थे। कलकत्ते का काम केदारनाथजी और गोवर्धनदासजी देखा करते थे जहाँ आढत का काम होता था। राँची मे परिवार मे मनिहारी, आटा, मैदा, नमक, किरासन तेल, तेल रग, अलकतरा, सीमेट, लोहा, खेती के औजार, मकान मरम्मत के औजार आदि कई तरह के काम होते थे। बैजनाथजी कुछ पढे-लिखे होने के कारण एक बार सोडावाटर की फैक्ट्री भी की और ठेकेदारी का काम भी शुरू किया जिसमे सरकारी विभागो के लिए पुल बनाना, मकान बनाना, सड़क बनाना इत्यादि का ठेका लेकर काम कराया करते थे, जिसमे काफी दौड़-धूप होती थी। यात्रा के साधन इतने विकसित नही थे इसलिए बैलगाडी मे यात्रा करनी पडती थी। साथ ही जहाँ रहे वहाँ कच्चा-पक्का भोजन बनाकर खाया करते थे। कभी किसी काम मे कुछ नफा हो जाता था तो कभी किसी मे घाटा भी हो जाता था। बीच-बीच मे शारीरिक श्रम अधिक होने के कारण बीमार भी पड जाते थे। उन्होने अपने सहयोग के लिए ठेकेदारी के व्यापार मे कुछ गुजरातियो को भी साथ लिया जिन्हे मासिक तनख्वाह के अलावा लाभ मे कुछ अश दिया करते थे। बैजनाथजी को मनुष्य पहचानने की अद्भुत क्षमता के कारण इनलोगो से सम्बन्ध बहुत वर्षो तक बना रहा।

आरम्भ से ही उन्हे सार्वजनिक कामो मे भाग लेने की रुचि थी। राँची गो-शाला का गोपाष्टमी पर मेला लगता था उसमे भी व्यवस्था आदि करने मे भाग लेते थे। उत्सव पर उस जमाने मे हण्डो की रोशनी पर होने वाले नाटको और व्याख्यानो की व्यवस्था मे रात को देर तक जगा करते थे। राँची से ४-६ मील दूर एक पहाडी, जहाँ अब एच० ई० सी० का विशाल कारखाना है, पर जगन्नाथजी का मन्दिर था जहाँ रथयात्रा के अवसर पर अषाढ महीने मे मेला लगा करता था। मन्दिर छोटा था, मेले मे काफी भीड़ होती थी। दर्शनार्थियो को असुविधा न हो इसलिए एक बार पुरुष दर्शन के लिए छोड़े जाते थे और दूसरी बार स्त्रियाँ। यह क्रम सुबह से आरम्भ होकर सध्या तक चला

करता था। इसकी व्यवस्था के लिए वे स्वयसेवक का काम बराबर करते थे। उनका व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली था। सुडौल शरीर, बुलन्द आवाज, चेहरे पर तेज और आदमी को भीतर तक झाकने वाली तीक्ष्ण दृष्टि के कारण उनमे नेतृत्व की गहरी क्षमता थी। परिवार मे उनकी धाक थी। पारिवारिक एकता और अनुशासन को बनाए रखने के लिए भाइयो ने सारी जिम्मेवारी उन्हे दे रखी थी। वे भी अपने भाइयो, उनके परिवार, स्त्री-बच्चो के साथ सदा समानता का व्यवहार करते थे। जो चीज अपने बेटे और पत्नी के लिए खरीदते वही सब बच्चो के लिए खरीदने की व्यवस्था थी। किसी प्रकार का भेदभाव रखना उन्हे अच्छा नही लगता था। इसीलिए परिवार के सभी लोग उन्हे श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे।

कलकत्ते के काम की देखभाल केदारनाथजी और गोवर्धनदासजी करते थे। कुछ दिनो बाद गोवर्धनदासजी अस्वस्थ रहने लगे। केदारनाथजी ने कलकत्ते में अपना अलग काम कर लिया था अत: बैजनाथजी को कलकत्ते आना पडा। कलकत्ते की गद्दी, जो उस समय १६० सूतापट्टी मे थी जिसका वर्त्तमान नाम जमनालाल बजाज स्ट्रीट हो गया है, बहुत वर्षो पुरानी बनी हुई थी। कोठी का नाम फतेद्वारी कोठी था। सूतापट्टी उस समय व्यापार का केन्द्र था। मारवाडी व्यापारी सूता, कपडा आदि का व्यापार करते थे। उस समय सराफ, जाजोदिया, पोद्दार, चौधरी, भोतिका, चमडिया आदि बडे-बडे व्यापारी थे। यही लोग पचायत व समाज आदि के कार्यो मे अगुवा रहा करते थे। जाजोदिया के यहाँ सूते की बिक्री इतनी अधिक हुआ करती थी कि, कहा जाता है, दिनभर की बिक्री को बोरे मे बन्द कर घोडा गाडी मे रख चितपुर पार कर १४०, हरिसन रोड स्थित अपने मकान मे ले जाते थे। उस समय मोटरो का प्रचार नही के बराबर था। किसी-किसी दिन बिक्री इतनी अधिक होती थी कि बोरा भर जाने पर एक आदमी चढकर उसे दबाता और बाकी के बिक्री के रुपये और नोट उसमे भरकर रस्सी से बाधता था। सराफ और पोद्दारो का भी इतना दबदबा था कि बिडला परिवार के लोग भी उनकी राय से सार्वजनिक कार्यो मे भाग लेते थे। उसी समय सूतापट्टी मे राह चलते किसी पर बनते हुए मकान की ईट या बाँस का टुकडा गिरा और वह बेहोश हो गया। औषधि का समुचित प्रयोग न होने के कारण लोगो ने रिलीफ सोसाइटी नाम की सस्था स्थापित कर इस कमी को

पूरा किया। सस्था का नाम आगे चलकर उस "मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी" हुआ जो आज भी विद्यमान है और जनता की सेवा कर रही है।

बैजनाथजी कलकत्ते में

सन् १९१६ मे बैजनाथजी कलकत्ते आए। राँची की तुलना मे कलकत्ता बहुत विराट नगर था। व्यापार का प्रमुख केन्द्र और अग्रेजो की राजधानी होने के कारण कलकत्ते का चहुमुखी विकास हो रहा था। अग्रेज साहब लोगो के रहने के लिए विशाल कोठियाँ और बगले बने हुए थे। बड़े-बडे व्यापारियो और बगाली जमीदारो के पास भी गाडियाँ और विशाल महल थे। कोलतार वाली सड़को का निर्माण अभी नही हुआ था। पत्थर की रोडियो की कच्ची सड़क पर टमटम और घोडा गाडियाँ दौड़ लगाया करती थी। हर व्यक्ति को सुबह ७-८ बजे से रात को १०-११ बजे तक काम करना पडता था। मुनीम-गुमास्ते, जमादार, नौकर और दलाल भी इनमे शामिल थे। आधी रात गए तक गद्दियो मे लेनदेन का काम चलता रहता था। दूकानें सुबह से ही देर रात तक खुली रहती थी। शहर मे बिजली का आगमन अभी नही हुआ था। छोटे घरों मे सरसो तेल के दीये या मिट्टी के तेल की ढिबरी और बड़े घरो मे मिट्टी के तेल से जलने वाले काँच लगे लैम्प रहते थे। मुख्य सडको और खास मोड पर मिट्टी तेल और बत्ती से जलने वाले लैम्प पोस्ट लगे रहते थे, जिन्हे शाम होते ही कारपोरेशन का कर्मचारी सीढी लगाकर जला जाता था और सुबह होते ही बुझा जाता था। बड़े घरो में कमरो की छतो पर कपडे की झालर वाले पखे झूलते थे जिन्हे एक आदमी रस्सी की सहायता से डुलाता रहता था। शहर मे मोटर गाड़ियाँ कभी-कभी ही दिखाई देती थी। धूल और धूएँ से भरा धुँधला-धुँधला आकाश। मिलो, कारखानो, गगाघाट पर स्टीमरो मे उतरता-चढता माल और लोगो की चहल-पहल।

प्रथम युद्ध अभी चल ही रहा था। बैजनाथजी मन लगाकर अपना आढत का काम करते थे और समय मिलने पर पूजा-पाठ और सार्वजनिक कार्यो मे समय देते थे। युद्ध समाप्त होने पर अग्रेज सरकार ने अपने राज-कोष मे एकत्रित सोना बेचने के लिए टेण्डर निकलवाया। बैजनाथजी ने बारह रुपये तोला की दर पर दो सौ तोला खरीदने के लिए टेण्डर भर दिया। टेण्डर पास हो गया

और उन्होने सोना खरीद लिया। उनके साथियो ने कहा सोना खरीदने से क्या फायदा है। सोने का भाव तो आठ-दस रूपये तोला होने वाला है। वैजनाथजी पर इन वातो का प्रभाव पडा। उन्होने अपने मित्रो और परिचितो मे, जिसने लेना चाहा, उनमे दस-दस तोला सोना जिस दाम मे लिया था उन्ही दामो मे वाँट दिया।

वैजनाथजी आढत और चलानी का काम करते थे। इस काम मे खर्च निकाल कर वर्ष मे २-३ हजार रूपये वच जाते थे पर कोई वडी आमदनी नही होती। सयोग की वात है, वे जिस मकान मे रहते थे उसमे उनके कुछ पडोसी शेयर वाजार मे काम करते थे पर वैजनाथजी को शेयरो के काम के प्रति कोई आकर्षण नही था। उनके साथी चाहते थे कि वैजनाथजी भी शेयरो का कार-वार करें। एकवार वैजनाथजी के किसी मित्र ने उनके नाम से ५०० शेयर खरीद लिए। वैजनाथजी के मना करने पर कहा "नफा होगा वह आपका होगा और घाटा होगा तो हम देगे।" होनहार की वात इस सौदे मे वैजनाथजी को हफ्ते भर वाद ही घर वैठे दो सौ रूपये के मुनाफे मिल गए। फिर तो वैजनाथजी शेयरो के कारवार मे दिलचस्पी लेने लगे। भाग्य ने भी वैजनाथजी का भरपूर साथ दिया और तीन-चार वर्षों मे ही वैजनाथजी ने कोई पाँच लाख रूपये कमा लिए। उन दिनो के पाँच लाख रूपये आज के पाँच करोड जितना महत्व रखते है। इस कमाई से वाजार मे वैजनाथजी की धाक जम गई। वे एक कुशल और योग्य व्यापारी की तरह अपना कारवार वढाने लगे। आमदनी के साथ ही साथ वैजनाथजी के रहन-सहन का स्तर भी ऊँचा होने लगा। घोडागाडी खरीदी गई, सार्वजनिक कार्यों और समारोहो मे जाते तो पूरे सेठाई ठाट-वाट से जाते थे। कीमती कपडो से वनी काले रग की अचकन, शेरवानी, पगडी और एक-आध सोने का जेवर शरीर की शोभा वढाते। सस्थाओ मे दान देने की प्रवृत्ति से चारो ओर इनके सम्मान मे वृद्धि हुई।

भारतीय व्यापारियो का प्रमुख केन्द्र वडावाजार की सीमा भी उन दिनो छोटी थी। पूर्व मे चितपुर रोड, पश्चिम मे स्ट्राण्ड रोड, उत्तर मे विवेकानन्द रोड और दक्षिण मे कैनिग स्ट्रीट तक ही वडावाजार का फैलाव था। अधिकाश लोग इसी क्षेत्र मे निवास करते थे। इसमे वगाली, मारवाडी और देशवाली सभी समाज के लोग रहते थे। आजकल जैसे सम्पन्न लोग न्यू अलीपुर, टालीगज या

बालीगंज क्षेत्र में आकर रहते है, उसी प्रकार उन दिनों सेठ लोग चितपुर पारकर नये रास्ते, सेन्ट्रल एवेन्यू, जिसका नाम आज चित्तरजन एवेन्यू है, तक जाकर रहने लगे थे। उस समय के सेठ जाजोदिया, चोखानी, बाजोरिया, सरावगी आदि हरिसन रोड (जिसका नाम आज महात्मा गांधी रोड है) मे और जकरिया स्ट्रीट मे बिडला राजा बलदेवदास के नाम से मकान बनाकर रहते थे। सेन्ट्रल एवेन्यू मे मारवाडियो ने विशुद्धानन्द विद्यालय की स्थापना की जो आज भी बडाबाजार का प्रमुख शिक्षण केन्द्र समझा जाता है। उत्तर मे विवेकानन्द रोड के बाद बंगाली जमीदारों की कोठियां थी जिनमे काफी जगह रहा करती थी। उनमे टैगोर, मल्लिक, सील आदि रहते थे। दक्षिण मे क्लाइव स्ट्रीट (जिसका नाम आजकल नेताजी सुभाष रोड है) मे अग्रेजो की आफिसें थी। फिर डलहौसी, धर्मतल्ला, चौरगी, पार्क स्ट्रीट आदि मे अग्रेजो की दूकानें और निवास स्थान थे। निवास स्थान के साथ काफी बढी जमीनें रहा करती थी।

अच्छी कमाई होने के कारण बैजनाथजी भी सेठों की गिनती में आने लगे थे उन्होने फतेपुर के ही श्री बिलासरायजी चौधुरी, श्री श्रीलालजी चमडिया आदि प्रसिद्ध सेठो से अपना सम्पर्क बढाया, साथ ही अपने काम को बडा रूप देने का प्रयत्न किया। गद्दियो में काम काज देर रात गए तक होता था और दूकानें भी प्राय: देर तक खुली रहती थी। बैजनाथजी ने—सूतापट्टी के पीछे जिस रास्ते का नाम आरमेनियन स्ट्रीट था—इनमे ३३ नम्बर मकान में रहने के लिए कमरा लिया। इस कोठी का नाम जीरा कोठी है, क्योकि पास में ही अमरतल्ला स्ट्रीट में किराने के व्यापारी रहते हैं। इस मकान के गोदामो में व्यापारी जीरे का स्टाक बहुत रखा करते थे और बराबर वजन हुआ करता था। मकान में घुसते ही जीरे की खुशबू आने लगती थी। यह मकान अब भी है। वही सोने-चाँदी के बरतनों और गहनो की एक बड़ी दूकान भी थी। एक दिन रात को उस दूकान मे डकैती हो गई। कुछ सशस्त्र डाकुओ ने दूकान पर हमला किया और माल लूटकर ले गए। बडाबाजार की व्यापारिक गतिविधि पर इस घटना का बहुत व्यापक प्रभाव पडा। सतर्कता की दृष्टि से रात को रुपयो का लेनदेन करने मे लोग परहेज करने लगे। दूकानें भी ग्यारह बजे से पहले बन्द होने लगी। अत्यधिक परिश्रम और खानपान की गडबडी के कारण बैजनाथजी को बवासीर की तकलीफ रहा करती थी। कैलाश घोष उनदिनो कलकत्ते के बहुत बडे अनुभवी और योग्य डाक्टर समझे जाते थे। डाक्टर साहब स्वय बडे मोटे थे। किसी के यहाँ

आना-जाना कम ही करते थे। एक तल्ले या दो तल्ले पर रोगी देखना होता तो उन्हे कुर्सी पर बैठाकर चार या छः आदमी कुर्सी पकड़कर ऊपर ले जाते। फीस भी घर आने का सोलह रुपये लिया करते थे जो उस समय बहुत ऊँची समझी जाती थी। बैजनाथजी के इलाज के लिए डा० कैलाश घोष को बुलाया गया। बैजनाथजी की हालत देखकर डाक्टर ने कहा कि इनकी तो हालत बहुत खराब है, आपरेशन करना होगा। मुझे बुलाने से व्यर्थ ही आपके बत्तीस रुपये खर्च हो जायेंगे। सब एक दूसरे का मुँह देखने लगे क्योकि सोलह रुपये ही निकाल रखे थे पर अब उन्हे बत्तीस रुपये फीस देनी पड़ी। उन्ही की सलाह से फिर बैजनाथजी ने अपने मस्से की शल्य चिकित्सा भी करवाई।

रुपयो की सहूलियत होने के कारण उन्होने धीरे-धीरे कई नवीन धन्धे प्रारम्भ किए। कलकत्ते मे उन दिनो तालाबो की भरती, सडको, भवनो और पुलो के निर्माण का कार्य बहुत व्यापक स्तर पर हो रहा था। ठेके का काम करने वाले राँची के कुछ परिचित गुजराती लोगो को काम मे लगाकर बैजनाथजी ने भी कलकत्ते मे काम प्रारम्भ किया। कुछ जमीनें खरीदी तथा कुछ जमीन लीज पर भी ली।

सार्वजनिक कार्यों मे रुचि रहने के कारण वे कलकत्ते की वैश्य सभा नामक सस्था से सम्बन्धित हो गए और आगे चलकर उसके मन्त्री बने और उन्होने उसके नाम मे भी सुधार कर मर्चेण्ट कमेटी रखा। मर्चेण्ट के मन्त्रित्व का भार उन्होने ३० वर्ष तक सँभाला। कमेटी की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने पर अपने पास से उसे कर्ज स्वरूप रुपये दे देते थे। आफिस की जगह न होने पर अपनी गद्दी मे ही उसका कार्यालय रखा करते थे।

उन दिनो हासानन्द नाम के एक आर्य समाजी काले कपडे पहन गोद मे बछड़ा लेकर कोठी-कोठी घूमा करते थे और गायो पर होने वाले भयकर अत्याचार की करुण कहानी लोगो को सुनाते थे। उनकी बातें सुनकर अनेक लोगो की आखो मे आसू आ जाते थे। बैजनाथजी पर भी इस प्रचार का गहरा असर पडा। उन्होने अपनी सामर्थ्य के अनुसार गायो की प्राण-रक्षा करने का प्रण किया।

उन दिनो कसाईखाने मे कटने आने वाली एक गाय का मूल्य चालीस रुपये होता था। बैजनाथजी दूध देने वाली गायों को चालीस-चालीस रुपयो मे खरीद लेते थे। इन गायो को वे राँची या कलकत्ते के लोगो को लागत मूल्य मे दे देते थे जिससे वे उनका हजारो कर दूध पीते रहे। लेकिन असख्य गाये अबाध रूप से कटती थी और अपने सीमित सामर्थ्य के अनुसार सभी की रक्षा कर पाना उनके लिए सम्भव नही था। बैजनाथजी ने निर्णय लिया कि वे कलकत्ते की गायो का दूध, दही और उससे बनी मिठाई नही खाएँगे, यदि खाएँगे तो वह अपनी ही गाय हो या कलकत्ता पिजरापोल की गाय हो जो दूध देना बन्द करने पर कसाई के यहाँ कटने को नही भेजी जाए। यह प्रतिज्ञा उन्होने आजीवन निभाई।

बैजनाथजी की गो-भक्ति को उस समय और भी गहरा आघात लगा जब उन्हे मालूम हुआ कि कुछ व्यापारी मुनाफा कमाने के लिए घी मे चर्बी मिलाकर घी बिक्री करते है। इस घृणित व्यापार के विरुद्ध उस समय जनता मे एक प्रचण्ड आन्दोलन उठ खडा हुआ था। बैजनाथजी ने चर्बी-विरोधी आन्दोलन मे खुलकर भाग लिया। कुछ व्यापारियो का माल पकडा गया और उनको सजा भी मिली। इस प्रकार इस व्यापार का अन्त हुआ। इस प्रकार के साहसिक और लोक कल्याणकारी कार्यो के कारण बैजनाथजी की लोकप्रियता बराबर बनी रही। जब घर मे मोटर गाडी खरीदने की बात चली तो बैजनाथजी ने शर्त रखी कि जितनी गाडियाँ खरीदोगे उतनी गायें रखनी पडेगी। गोशाला का भी प्रबन्ध करना होगा। गो-रक्षा के बारे मे ऐसी रचनात्मक दृष्टि आज कहाँ दिखाई देती है।

बैजनाथजी मूलत· धार्मिक प्रवृत्ति वाले आस्थावान व्यक्ति थे। यही कारण था कि वे प्रतिकूल परिस्थितियो और झझावातो मे भी शान्त और स्थिर रहकर कार्य करते रहते थे। प्रतिदिन मन्दिर जाना और पूजा-पाठ करना उनकी दिनचर्या का आवश्यक अग था। धार्मिक प्रचार के प्रति रुचि होते हुए भी वे नए मन्दिरो का निर्माण और मूर्तियो की स्थापना के पक्षधर नही थे। उनका विचार था कि जो भी कार्य हो वह व्यवस्थित रूप से होना चाहिए। पुराने मन्दिरो की उपेक्षा और उनकी जीर्ण-शीर्ण अवस्था देखकर उन्हे तकलीफ होती थी। अत उन्होने पुराने मन्दिरो और चैत्यालयो का जीर्णोद्धार करवाने और

थी कि तुम तो कलकत्ते रहते हो और मेरे शरीर का कोई भरोसा नही कब धोखा दे जाए। बैजनाथजी के हृदय में गहरी मातृ-भक्ति थी। उन्होने माताजी को आश्वासन दिया कि समय आने पर मैं हवाई जहाज से उडकर तुम्हारे पास आ जाऊँगा। यद्यपि उस समय हवाई जहाज की बात सुनी जाती थी पर भारत वर्ष मे उनके प्रचार की बात तो दूर, दर्शन तक नही होते थे। सयोग की बात है मूँगराजजी, जगन्नाथजी तथा परिवार के कुछ लोग दक्षिण की तीर्थ यात्रा पर एक-डेढ महीने के लिए चले गए, कोई लडका राँची मे उनके पास नही था। अचानक धन्नी देवी का स्वास्थ्य अधिक खराब हुआ। माताजी की गंभीर बीमारी का समाचार जिस दिन बैजनाथजी को कलकत्ते मे मिला वे शीघ्र से शीघ्र राँची पहुँचने के लिए बेताब हो उठे। यद्यपि अग्रेजों के उस युग मे रेलगाडी का आना-जाना सदा नियमानुसार होता था। पर होनहार की बात, उस दिन रेलगाडी की हडताल हो गई। कलकत्ते के इतिहास मे यह पहली और अनहोनी घटना थी। मोटर गाड़ियाँ भी उन दिनो गिने-चुने लोग ही रखा करते थे। बडी मुश्किल से उन्होने अपने एक मित्र की गाडी मागकर राँची जाने का प्रबन्ध किया। उन दिनो न तो आजकल की तरह बढियाँ सडक थी, न ही जगह-जगह पेट्रोल पम्प थे और न रास्ते मे कही गाडी खराब होने पर मरम्मत करने या पुर्जे बदलने का साधन था। बैजनाथजी ने रवाना होने से पहले अपने साथ पूरा पेट्रोल, नये टायर और कुछ आवश्यक पुर्जे और मरम्मत मे काम आने वाले औजार भी साथ ले लिए थे। इस प्रकार वे पूरी तैयारी के साथ रात को दस बजे कलकत्ते से राँची के लिए चल पडे। घने जगल, ऊबड खाबड रास्ते और नदी को पार कर राँची पहुँचना बहुत विकट काम था। फिर भी बैजनाथजी का आत्मबल ऊँचा था और भगवान की कृपा से वे दूसरे दिन दोपहर के समय यानी सोलह घटे की यात्रा कर राँची पहुंच गए। बैजनाथजी की माताजी ने जब देखा कि बैजनाथ पहुँच गया है तो उन्हे आत्मिक सतोष हुआ। इस प्रकार अपनी माताजी की अन्तिम इच्छा पूरी कर पाने का आत्म-संतोष बैजनाथजी को भी जीवन भर बना रहा।

आर्थिक समृद्धि होने पर भी बैजनाथजी की सेवा भावना पर किसी प्रकार का असर नही हुआ। वे बडी विनम्रतापूर्वक सस्थाओ मे अपना योगदान देते रहे।

काम करने का वैजनाथजी का अपना विशिष्ट तरीका था। चन्दे के लिए जब वे किसी से आग्रह करते तो साथ-साथ यह भी कहते थे—"भाई साहब, मैं तो लड्डू खाने वाला हूँ और आपको भी जबर्दस्ती लड्डू खिलाने आया हूँ। (यानी मैं जो धार्मिक कार्य कर रहा हू वह लड्डू खाना ही हुआ) आप जितने रूपये मेरी परोपकारी योजना मे देंगे, उतने ही रूपये आपके पसन्द की कोई परोपकारी योजना हो तो मेरे नाम से नि सकोच लिख दें और मुझसे मँगा लें।" ऐसी स्थिति मे दान देने वाले व्यक्ति के लिए इन्कार करना मुश्किल हो जाता था। 'पहले करो फिर कहो' वाले सिद्धान्त का पालन करने के कारण वे इस कार्य मे सदा सफल रहा करते थे। अपनी इस दान-वृत्ति और विशिष्ट शैली के कारण उन्होने अपने जीवन काल मे अनेक सस्थाओ को उपकृत किया।

रुचि विविधता का नाम है वैजनाथजी। वे न केवल धार्मिक और सामाजिक कार्यों के प्रति समर्पित थे बल्कि अपने मनोरजन और मनोविनोद के प्रति भी सजग और सजिदा थे। बगला थियेटर देखने का उनको बेहद शौक था। राष्ट्रकवि माधोजी शुक्ल के साथ उनकी गहरी आत्मीयता थी। माधोजी शुक्ल उन दिनो कलकत्ते मे ही इलाहाबाद बैंक मे नौकरी करते थे। कवि हृदय और साहित्यकार होने के कारण वे भी बगला मच के प्रति आकर्षित थे। वैजनाथजी उनको साथ लेकर ही थियेटर देखने जाते थे। फिर माधोजी शुक्ल, भोलानाथ वर्मन तथा कई राजनैतिक कार्यकर्त्ताओ से मिलकर हिन्दी नाट्य परिषद नामक सस्था स्थापित की। उसमे वे 'राणा प्रताप' आदि देशभक्तिपूर्ण नाटक दिया करते थे। थियेटर मे पहनने की पोशाक भी मखमल की जगह शुद्ध खादी की बनवाते थे। वैजनाथजी ऐसी सस्थाओ को सहयोग बराबर देते पर उन्होंने स्वय उसमे अभिनय कभी नही किया।

वैजनाथजी जीव-हिंसा को पाप समझते थे। इसलिए चमडे की वस्तुओ का व्यवहार कभी नही करते थे। वे लोगो को चमडे के जूते पहनने से भी मना किया करते। उस जमाने मे लोग घर के बाहर खुले सिर नही रहा करते थे। पगडी या टोपी आदि मे से कुछ अवश्य पहनते थे। खासकर मन्दिर मे खुले सिर जाने का नियम नही था। इससे लाभ भी था। सिर की वेशभूषा तथा माथ का तिलक देखकर मालूम हो जाता था कि कौन ख्याल किस प्रान्त का है, कौन-सा धर्म मानता है, क्या काम करता है। आजकल की तरह पैंट-बुशर्ट का चलन नही था।

बैजनाथजी सुबह के समय मन्दिर में पूजा-पाठ मे बिताते थे जब किसी जैन की टोपी मे चमड़ा लगा देखते तो उसे बदलकर रेक्सिन या प्लास्टिक लगाने को कहते।

बैजनाथजी जब किसी को पत्र भी लिखते तो प्रायः जवाबी कार्ड ही लिखते थे। इससे उत्तर देने वाले को कोई आलस्य और असुविधा नही होती थी और काम भी तेज गति से पूरा हो जाता था। व्यवहार कुशलता के इन्ही गुणो के कारण वे सबको साथ लेकर चलने मे समर्थ रहे। समाज का ऋण वे सदा स्वीकार करते थे और बदले मे समाज-सेवा के हर कार्य मे योगदान के लिए तत्पर रहते थे। परोपकार के लिए कष्ट उठाने मे उन्हे सदा आत्मिक संतोष और सुख मिलता था।

बडे व्यापारियों के सम्पर्क मे आकर बैजनाथजी ने जमीने खरीदी, मकान और गोदाम लीज पर लिए, लोहे और सीमेट का कारबार किया। एक ओर वे अपने व्यापार को बहुमुखी बनाने का जीतोड परिश्रम करते और दूसरी ओर दान-पुण्य और धार्मिक कार्यों मे भी लगे रहते। इस प्रकार दोहरा दायित्व ग्रहण करते हुए बैजनाथजी ने चार-पाँच वर्षो मे प्रचुर धन कमाया। बाजार मे अपनी साख जमाई और समाज मे प्रतिष्ठा प्राप्त की। फतेहद्वारी कोठी के मालिक पजाबी थे वे पजाब से आकर फतेहद्वारी कोठी मे रहने वाले व्यापारियो के सामने अपनी योजना रखी कि हम इस जीर्ण-शीर्ण कोठी को नये ढग से बना रहे है और आपलोगो को जितना स्थान अभी है बनने के बाद उतनी जगह उसी भाडे मे दे देंगे। परन्तु साल-दो साल आपलोगो को दूसरी जगह बैठकर व्यापार करने का कष्ट करना होगा। उस समय के लोग परिस्थिति को समझकर मकान मालिक को सहयोग देने की भावना रखते थे। सभी लोग अपने-अपने लिए स्थान खोजने लगे। बैजनाथजी और कुछ व्यापारियो को सूता पट्टी के उत्तर तरफ मे पास ही १९९ हरिसन रोड मे जगह मिली जिसका नाम भोलाराम कटरा था। इसके मालिक भोलारामजी चूडीवाला विचित्र व्यक्ति थे, स्वय साधारण कपड़े पहने गेट पर दरवान के पास बैठे रहा करते थे। कडे स्वभाव के थे। उनके कड़े व्यवहार के कारण कोई भी व्यक्ति उस कटरे मे रहना पसन्द नही करता था। उन्होने अपनी कड़ाई का नमूना तो एक बार टेलीफोन कम्पनी, जो उस समय सरकारी न होकर अग्रेजो की लिमिटेड कम्पनी थी, उसे भी दिखाया। यानी उस कटरे के कुछ

व्यापारियो ने जब अपने टेलीफोन का कनेक्शन हटाया तो टेलीफोन कम्पनी के कर्मचारी आकर तार खोलकर ले जाने लगे। जिस पर भोलारामजी ने आपत्ति की और तार नही ले जाने दिया। फलस्वरूप उस समय की टेलीफोन कम्पनी ने १९९ नम्बर हरिसन रोड की कोठी को ब्लैक लिस्ट मे चढाकर भविष्य मे उस कोठी मे किसी को टेलीफोन कनेक्शन नही देने का निर्णय ले लिया। आजकल उस कोठी का नाम सुराना कटरा है।

बैजनाथजी की माता का स्वर्गवास हो गया था। उन्होने अपनी माताजी का तैलचित्र बनवाने की सोची। व्यापारी बुद्धि होने के कारण उन्होने एक कालेज से निकले हुए कलाकार, जिसका नाम गोपीनाथ पाल था, से बातचीत की और उससे कहा कि तुम हमारी गद्दी मे ही बैठकर माताजी के एक ही तरह के ६ चित्र बना दो। हम तुम्हे कैनवास, फ्रेम, रग आदि की व्यवस्था कर देंगे। इस तरह बडे तैल चित्र केवल सौ-सौ रूपये मे बनवाए। गोपीनाथ पाल जब गद्दी मे आकर चित्रकारी किया करते थे, धर्मा उनके प्रति आकर्षित हुआ। और श्री पाल को अपनी स्कूल मे की हुई पेंसिल की चित्रकारी दिखलाई। गोपीनाथ पाल भी उसे थोडा शिक्षण देने लगे और धर्मा पेंसिल से चित्रकारी करने लगा। इसी बीच बैजनाथजी के एक मित्र जो चित्रकार भी थे और कलकत्ते मे शेयरो का व्यापार करते थे उनसे मिलने आए। बैजनाथजी ने उन्हे धर्मा के बनाए हुए चित्र दिखाए। वे देखकर प्रसन्न हुए पर साथ ही उन्होने कहा कि तुम्हारे एक ही लडका है यदि वह चित्रकार बन गया तो तुम्हारा व्यापार कौन सभालेगा। इस तरह धर्मा का चित्रकारी का शौक वही बन्द कर दिया गया।

फतेहद्वारी कोठी मे ही जगन्नाथजी केडिया रहा करते थे जिनका अपना मकान, १७३ हरिसन रोड, जनानी बाडी था और वह भी जीर्ण-शीर्ण था और बहुत-सा खाली था। उन्हे भाडे से बहुत थोडी आमदनी थी। सयोग से उसी समय सामने फुट पर १५६ नम्बर हरिसन रोड मे सुराना ने नई कोठी बनाई और उस समय एक-एक दूकान का भाडा दो-दो सौ रूपये आया जो बहुत समझा जाता था। जगन्नाथजी ने भी अपना मकान तोडकर नया बनाने का निर्णय लिया और एक तल्ले, दो तल्ले के लिए फतेहद्वारी कोठी के परिचित व्यापारियो को राजी किया कि मकान बनने पर वे उसमे आ जाएँगे क्योकि उस जमाने मे

लोग सूतापट्टी छोड़कर दूर जाना कम पसन्द करते थे। उस समय १७३ नम्बर में ज़ाने का रास्ता शम्भू मल्लिक लेन से था। केड़ियाजी ने अपने मकान के पूरब की ओर जो थोडी जगह थी, जैसा कि दो मकानो के बीच रखने का नियम है, उसमें कार्पोरेशन की तरफ से पेशाबघर बना हुआ था। जगन्नाथजी ने कार्पोरेशन वालो को कुछ ले-देकर पेशाब घर तुड़वाया और कोठी में जाने का रास्ता बनवाया। फलस्वरूप उस कोठी का नाम मूत कोठी हो गया। उसमे एक तल्ले पर आधा कमरा बैजनाथजी ने भाड़े पर ले लिया।

सयोग की बात है सुख और समृद्धि का यह दौर बहुत लम्बा नही चला। शेयरो के व्यापार से धन कमाकर बैजनाथजी साधारण व्यापारी से धनवान बने थे, उसी काम मे भयंकर घाटा लगा। घाटा इतना अकस्मात और बड़ा था कि बैजनाथजी को संभलने का भी मौका नही मिला। दो-तीन महीने मे लगातार शेयरो के दाम गिरते चले गए।

कहा जाता है कि मनुष्य का भाग्य जब प्रतिकूल हो जाता है तो सारी विपत्तियाँ साथ आती है। उसी समय बगाल मे रेन्टकन्ट्रोल जारी हो जाने के कारण लीज पर लिए मकानो का उचित किराया नही मिलने के कारण उसमे भी घाटा लगा। गोदामो मे नमी होने के कारण सीमेट पत्थर बन गया। जिस जमीन पर लोहा लक्कड़ का सामान रखा था उसे जल्दी ही खाली कर देने का आश्वासन देकर जमीनें बेंची गई। लेकिन जब माल उठाने के लिए जमीन के खरीददार के पास गए तो खरीददारों ने कह दिया कि जमीन तो माल सहित हमने ली थी। एक-आध बाहर के व्यापारियो ने अपने खातो मे झूठा रुपया नाम मे लिख कर अपने शहर मे नालिश कर एकतरफा डिग्री कराई। बैजनाथजी को उसका रुपया देना पड़ा। इस प्रकार ईमानदार और सज्जन स्वभाव वाले बैजनाथजी पर चारों ओर से विपत्तियो के पहाड़ टूट-टूटकर गिरने लगे। बैजनाथजी पर करीब चार-पाच लाख रुपयो की देनदारी रह गई। बैजनाथजी के लिए यह समय काफी कठिन अग्नि परीक्षा का रहा। इस भयानक घाटे के कारण बैजनाथ जी के भाई लोग नाराज रहने लगे पर उनके सामने बोलने का साहस किसी को न था।

प्रतिकूल परिस्थितियो के चक्रावात मे भी बैजनाथजी ने अपना मानसिक सतुलन नही बिगड़ने दिया। उन्होने धीरज और आत्म-विश्वास के साथ सारी

स्थिति का मुकाबला किया। उनको लगा कि भगवान उनके भीतर के स्वर्ण को घाटे की आग मे तपा कर खरा सिद्ध करना चाहता है। उन्होने धीरे-धीरे सबको कर्जा चुका देने का आश्वासन दिया और कलकत्ता छोड़कर राँची चले गए।

बैजनाथजी के स्वर्गीय भ्राता केदारनाथजी की विधवा पत्नी जयदेई की इच्छा अपने पति के नाम से जैन-मन्दिर बनवाने की थी। उन्होने अपना संकल्प राँची के जैन समाज के सामने रखा और जितने रुपये मन्दिर के निमित्त रखे थे समाजवालो को सौंप दिए। मन्दिर बनवाने के लिए जमीन भी केदारनाथजी की खरीदी हुई थी वह दे दी। मन्दिर निर्माण का कार्य प्रारम्भ भी हो गया। पूर्व योजना और सूझबूझ की कमी के कारण मन्दिर बनकर पूरा हो, उसके पहले ही सारा रुपया खर्च हो गया। समाज वालो ने समाज से चन्दा उठा कर मन्दिर को पूरा करवाने का विचार किया। पर, ऐसा करने से मन्दिर केदारनाथजी के नाम से तो बनता नही। उस समय तक बैजनाथजी कलकत्ते से राँची आ गए थे। बैजनाथजी ने जब सारी बात सुनी तो कहा कि जो रुपये लगेंगे वे हमारे फार्म के लगेंगे और मन्दिर केदारनाथजी के नाम से ही बनेगा। खस्ता हालत होते हुए भी बैजनाथजी ने अपनी भाभी के इच्छानुसार अपने भाईजी स्वर्गीय केदारनाथजी की स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए मन्दिर बनवाया जो आज भी है और दर्शनीय है और उस अचल का सबसे बढियाँ मन्दिर माना जाता है।

बैजनाथजी के एक घनिष्ट मित्र शीतल प्रसादजी जैन कलकत्ते मे ही रहते थे। शीतल प्रसादजी पढे-लिखे विचारवान और सुधारवादी विचारो के व्यक्ति थे। समाज मे उनका बहुत आदर और सम्मान था। सयोगवश कलकत्ता मे प्लेग का रोग फैल गया। शीतल प्रसादजी के माता-पिता, उनकी धर्मपत्नी, एक भाई और बहन सभी इस महामारी की चपेट मे आकर एक महीने के भीतर ही स्वर्गवासी हो गए। परिवार के पाँच-पाँच सदस्यो की सामूहिक मृत्यु इस प्रकार होने पर शीतल प्रसादजी के हृदय पर गहरा आघात लगा। ससार-सागर की लहरो मे थपेड़े खाने के लिए वे अकेले ही पीछे छूट गए थे। इस मर्मान्तिक घटना मे उन्हे ससार की असारता का भान हो गया। हृदय मे वैराग्य उत्पन्न हुआ और उन्होने गेरुआ वस्त्र धारण कर लिया और ब्रह्मचारी हो गये। अब वे अपना समय अध्ययन, धर्म-भावना और सामाजिक सुधार के कामो मे लगाने लगे। 'जैनमित्र'' नाम की साप्ताहिक पत्रिका में, जो सुधारक विचारो का था,

अपने विचारों का प्रचार करने लगे। बैजनाथजी ने राँची जाने के बाद ब्रह्मचारी शीतल प्रसादजी को रांची बुलाया। उन दिनो बिहार मे पुरूलिया के पास बंगला भाषी रहते थे जो अपने आपको सराक कहते थे। ये लोग हिंसा नही करते थे। किसी भी खाने की चीज को चाकू से काटने को कहा जाता तो उसे वे बध-क्रिया समझकर खाना निषिद्ध समझते थे। वे कुछ पुरानी मूर्तियो को अपना देवता समझकर सिन्दूर लगाकर पूजा किया करते थे। बैंजनाथजी शीतल प्रसादजी को साथ लेकर उस क्षेत्र मे गए। छानबीन करने पर पता लगा कि श्रावक शब्द का अपभ्रंश जिस प्रकार राजस्थान मे सरावगी हुआ उसी तरह बंगाल में और बिहार मे सराक हो गया। जिन मूर्तियो की वे देवता के रूप में पूजा करते थे उनके ऊपर लगे सिन्दूर की सफाई करवाने से वे भगवान पार्श्वनाथ और महाबीर की मूर्तियाँ ही निकली। बैंजनाथजी ने अज्ञान के अधकार मे भटकते हुए सराक-जाति के उत्थान के लिए 'प्राचीन श्रावको-धारिणी सभा" की स्थापना की। इसी सस्था के माध्यम से शीतल प्रसादजी ने सराको मे शिक्षा और धर्म प्रचार की दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य किया।

बैंजनाथजी के एकमात्र पुत्र धर्मा जब आठ वर्ष का था तभी उनकी सगाई मण्डावा निवासी श्री बस्तीरामजी सोथालिया की तीन वर्षीय पुत्री ज्ञानवती के साथ कर दी गई थी। उन दिनों सगाई सम्बन्ध लड़के-लड़की के माता-पिता ही तय कर दिया करते थे। धन की अपेक्षा बड़े परिवार के साथ सम्बन्ध तय करना अच्छा समझा जाता था। बैंजनाथजी का परिवार काफी बड़ा था। सगाई के समय बस्तीरामजी ने बडा परिवार देखकर सम्बन्ध कर दिया था। इधर समय ने पल्टा खाया और बैंजनाथजी को रुपयो की कमाई हुई। उन्होंने बस्तीरामजी से पाँच-छः वर्ष पहले किया, सम्बन्ध नही छोड़ा। फिर बैंजनाथजी को शेयरो में घाटा लगा, तब भी बस्तीरामजी ने सम्बन्ध नही छोड़ा। एकबार सम्बन्ध तय कर लेने के बाद हर स्थिति मे निभाना उस समय लोग अपना धर्म समझते थे। अब धर्मा सोलह वर्षों का हो चुका था। अतः उनके विवाह की तैयारी करनी पड़ी।

धर्मचन्दजी प्रारम्भ से ही क्रान्तिकारी विचारो वाले युवक थे। उन्होने लड़की को देख लेने की इच्छा प्रकट की, लेकिन बैजनाथजी ने उन्हे और घरवालो को यह

कहकर टाल दिया की लड़की कोई साग-सब्जी नही है कि उसे दिखाई जा सके। पिता के सामने धर्मचन्दजी को चुप हो जाना पड़ा। अत्यन्त सादगीपूर्ण समारोह के साथ धर्मचन्दजी का विवाह राँची मे सम्पन्न हो गया। लड़की वाले भी विवाह के समय मण्डावा से राँची मे ही आ गये थे। धर्मचन्दजी कल्पनाशील और महत्त्वाकांक्षी युवक थे। वे जिस प्रकार सुन्दर और विचारशील पत्नी का स्वप्न देखा करते थे, ज्ञानवती उन्हे वैसी नही लगी। साधारण सुन्दरता और धनवान घर का अहम वह साथ लेकर आई थी। फिर भी धर्मचन्दजी बड़े धीरज के साथ अपने विचारो के अनुकूल उसे ढालने का प्रयत्न करते रहे। पर्दा प्रथा और पारिवारिक मर्यादा के कारण पत्नी को साथ लेकर बाहर घूमना-फिरना या सामाजिक गतिविधियो मे भाग लेना सम्भव नही था। सम्पन्न घरानो के लाड-प्यार मे पली ज्ञानवती के लिए भी धर्मचन्दजी जैसे प्रगतिशील युवक की आकाक्षा को ठीक से समझ पाना और उनके साथ भावात्मक ताल-मेल बैठा पाना कठिन ही था। दोनो को पारिवारिक अनुशासन और मर्यादा मे रहकर ही चलना पड़ता था।

बैजनाथजी करीब दो वर्ष राँची मे रहे। इसी बीच उन्हे राँची के लिए टाटा आयरन स्टील कम्पनी की "डीलरशिप" मिल गई। जिसे उन्होने फर्म "जोखीराम मूंगराज" के नाम से ही लिया। पर भाइयो ने जब डिपोजिट के रुपये देने से इन्कार किया और साथ ही "डीलरशिप" नही लेने के लिए कहा तो उन्होने अपने उदार स्वभाव के हिसाब से भाइयो के सामने शर्त रखी कि कम्पनी को जो रुपये दिए जाएंगे वे मेरे खाते में नाम लिखकर दिए जाएंगे, यदि उसमे घाटा हुआ तो मैं देनदार रहूंगा। पर यदि मुनाफा हुआ तो वे चारो भाइयो का होगा। ऐसी शर्त होने पर भाइयो को चुप रह जाना पडा और टाटा का राँची के लिए डीलरशिप ले लिया गया। टाटा कम्पनी के अफसरो ने बैजनाथजी के ईमानदार और सरल स्वभाव को देखकर कई तरह का माल पूरे हिन्दुस्तान मे बेचने के लिए अनुमति दी। टाटा का आफिस कलकत्ते मे था इसलिए बैजनाथजी कार्य की सुविधा के लिए कलकत्ते आ गए। कलकत्ते में १७३ नम्बर, हरिसन रोड की कोठी में आकर कार्य आरम्भ कर दिया और रहने के लिए बगल में ही ९ नम्बर शम्भू मल्लिक लेन में रहने के लिए दो तल्ले पर चार कमरे भाड़े पर ले लिए।

धीरे-धीरे काम चमकने लगा और क्लर्क आदि के बैठने के लिए जगह की आवश्यकता हुई। फलस्वरूप दो तल्ले का कमरा जो खाली हुआ था भाड़े पर लिया गया। सयोग की बात है कि इस कमरे मे मकान बनने के बाद पांच-छः वर्षों में कई करोड़पति और लखपति फर्म आए उन्हे घाटा लगा और उन्हे काम बन्द कर इस कमरे को छोड़ना पडा। बैजनाथजी का ध्यान लोगो ने इस ओर आकर्षित किया पर वे अन्धविश्वासी नही थे, इसलिए उस ओर कोई ध्यान नही दिया और उस कमरे मे आफिस रखकर प्रचुर धन कमाया।

बीसवी शताब्दि के आरम्भ मे स्त्रियो मे घूँघट का काफी प्रचार था। यह किंवदन्ती थी कि "ग्यारह वर्षे भवेत गोरी" इसलिए लोग ग्यारह वर्ष की आयु के पहले ही लडकियो के हाथ पीले कर देना चाहते थे। बैजनाथजी को एक ही पुत्री भगवान देवी थी। राँची मे ही अपने पडोस मे मोदी परिवार रहता था जो बैजनाथजी की तरह ही कई भाइयो का सम्मिलित बडा परिवार था। जगन्नाथजी के पाँच वर्षीय पुत्र निरजनलालजी से भगवान देवी का सम्बन्ध तो जब वह दो वर्ष की थी तभी पक्का कर दिया गया था। पर विवाह, पुत्री ग्यारह और जँवाई राजा पन्द्रह के हुए, तब हुआ। विवाह के बाद भगवान देवी राँची मे ही रही। निरजनलालजी को छोटी उम्र मे ही चीनी की बीमारी हो गई थी और वे स्वर्ग सिधार गए। उन्हे केवल एक लडकी हुई। भगवान देवी १९४७ मे पचास वर्ष की आयु मे गुजरी। उनका परिवार आगे नही बढा।

उस समय विदेश यात्रा पानी के जहाज से होती थी। बम्बई से लन्दन पहुँचने मे १७ दिन लगते थे। सप्ताह में एक जहाज आता जाता था जिसमे डाक की चिट्ठियाँ, पार्सल, सवारियां आदि होती थी। यह एक दुःस्साहसिक कार्य माना जाता था। उस समय लोगो के दिमाग मे गलत धारणा बैठी हुई थी कि विदेश के रहने वाले सभी मासाहारी होते हैं। वहा अन्न, फल, दूध कुछ मिलता ही नही। इसलिए वहाँ जाने वाला अपने धर्म की रक्षा नही कर सकता। धर्मचन्दजी ने अपने पिता के सामने विदेश यात्रा की बात रखी तो पहले तो उन्होने स्वीकृति नही दी पर अन्त मे १९२९ मे स्वय बम्बई जाकर "राँची" नामक पानी के जहाज मे बैठाकर आये फिर धर्मचन्दजी ने यूरप मे सात महीने तक खूब भ्रमण किया और अध्ययन किया और अपने पिता को लिखा कि "इम्पीरियल एयरवेज" ने हवाई जहाज से साप्ताहिक लदन से कराची तक डाक लाने-ले जाने की योजना

वनाई है और उसमे कुछ सीटें यात्रियो के लिए भी है। वैजनाथजी ने उन्हे हवाई जहाज से शीघ्र लौट आने की अनुमति दे दी और साथ ही रुपये भी भेज दिए। इस हवाई यात्रा से धर्मचन्दजी इतने प्रभावित हुए कि १९३१ मे कलकत्ते में 'वगाल फ्लाईग क्लव" नाम की सस्था खुली जो लोगो को हवाई जहाज उड़ाना सिखलाती थी वे उसके सदस्य हुए और हवाई जहाज चलाने का शिक्षण लेने लगे। वैजनाथजी ने उसमे कोई वाधा नही दी।

सयोग की वात है कि १९३४ में विहार का भूकम्प हुआ। कलकत्ते से जैन सस्थाओ की ओर से वहाँ सेवा-कार्य करने के लिए जाने के लिए युवको की खोज हुई तो वैजनाथजी ने धर्मचन्दजी को भाग लेने के लिए उत्साहित किया। धर्मचन्दजी वहाँ लगातार एक महीने रहे। वहाँ मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के कार्यकर्त्ताओ से सम्पर्क वढा।

सन् १९३५ मे जव धर्मचन्दजी मारवाडी रिलीफ सोसाइटी की रसायनशाला के मत्री वने तो वैजनाथजी को प्रसन्नता ही हुई। वे धर्मचन्दजी को सदा सेवा और सहायता कार्यो मे भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते रहते।

कमाई के साथ-साथ दान वृत्ति मे भी विकास हुआ। वैजनाथजी ने पहले की अपेक्षा अधिक उदारता पूर्वक धार्मिक और सेवा-कार्यो मे योगदान करने लगे। मद्रास मे एक जीर्ण-शीर्ण जैन मन्दिर को उन्होने काफी अच्छे रूप मे पुनर्निमित करवा दिया था। मन्दिर आज भी मद्रास मे देखने लायक जैन मन्दिर है। वैजनाथजी नये मन्दिरो के निर्माण के पक्ष मे नही थे। उन्होने अपना पूरा ध्यान पुराने मन्दिरो का जीर्णोद्धार करवाने और उनकी व्यवस्था ठीक करने मे ही लगाया। जयपुर जाकर रहे तो उन्होने अपना अधिक समय वहा के मन्दिरो को मरम्मत करवाने मे लगाया। उन्हे जव पता लगा कि नवलगढ के मन्दिर की अवस्था अच्छी नही है और वहां वहुत थोड़े सरावगी है, उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नही है, वे वहा गए और उसका जीर्णोद्धार करवाया।

वैजनाथजी वरावर कहा करते थे "कम खाने और गम खाने" से आदमी स्वस्थ और सुखी रहता है। वैजनाथजी ने राची से कलकत्ते आने के वाद अपने परिश्रम और व्यापारिक सूझ-वूझ के वल पर अच्छा पैसा कमाया। न केवल उन्होंने अपना व्याज सहित कर्ज चुकाया वल्कि अपने व्यापार का विस्तार भी

किया। रांची, बुण्डू, रामपुर, कानपुर, रामगढ, दिल्ली, कोडरमा, जयपुर, मद्रास आदि करीब बारह स्थानो में उन्होने दूकाने और आफिस खोल ली थी। वस्तुतः यह सारा विस्तार बैजनाथजी की सूझ-बूझ और कठिन मेहनत का फल ही था। उन्होने भाइयो से अलग हो जाने का विचार रखा लेकिन भाइयो ने अलग होने वाली बात के प्रति कोई उत्साह नही दिखलाया। बैजनाथजी ने अधिक जोर दिया तो भाइयों ने बैजनाथजी के सामने शर्त्त रखी कि जो जमीन-जायदाद गत् तीस-चालीस वर्षों मे खरीदी गई है उसके दाम जो बहियो मे लिखे हुए है वही पकड़ेंगे और वह जायदाद हमलोग लेंगे। बैजनाथजी अलग होने पर तुले हुए थ उन्होने भाइयो की शर्त्त सहर्ष स्वीकार कर ली। इस शर्त्त के अनुसार बैजनाथजी की अधिकाश जमीन-जायदाद, जो राँची के आस-पास ही थी, भाइयो के हिस्से मे चली गई। यद्यपि तीस-चालीस वर्ष पहले खरीदी गई इन जमीनों का मूल्य अब कई गुना बढ गये थे। भाइयो से अलग होकर उन्होने 'जोखीराम बैजनाथ" के नाम से अपना अलग फर्म कर लिया और दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति की।

मन की शान्ति और धर्म लाभ के लिए बैजनाथजी प्रसिद्ध जैन-तीर्थ पार्श्वनाथ गए। पहले पार्श्वनाथ स्टेशन का नाम इसरी था। इसरी स्थित आश्रम मे बैजनाथजी काफी समय तक रहे। वही धर्म साधना मे निमग्न रहते हुए अपने विचारो का प्रचार किया करते थे। वहा के एक मन्दिर का जीर्णोद्धार कर सुन्दर मन्दिर का रूप दिया और कुछ जमीन खरीद कर वहा के आश्रम को दान कर दी। वे सदा इस बात पर जोर देते रहे कि धर्मानुकूल आचरण ही मानव जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है। अपना सासारिक कर्तव्य निभाने और धन कमाने का विरोध उन्होने कभी नही किया। उनका कहना था कि आदमी को पैसा कमाना चाहिए और उसे परोपकार और सद्कार्यो मे भी खर्च करना चाहिए। समाज से केवल लेना और बदले मे कुछ नही देना कृतघ्नता है। वे कहा करते थे :

"नौका में पानी बढ़ो, घर में आयो दाम।
दोनो हाथ उछालियों, यही सयानों काम॥"

कुछ समय बाद वे बनारस गए। वहाँ वे बनारस युनिवर्सिटी देखने गए। उन्होने देखा कि बनारस युनिवर्सिटी शहर से काफी दूर है और वहां पर विद्या-

विद्यार्थियों के निवास के लिए जो होस्टल है उसमें जैन छात्रों के लिए अलग व्यवस्था नही है। वैजनाथजी ने विद्यार्थियो की सुविधा के लिए युनिवर्सिटी के बाहर ही जगह खरीद कर छात्रावास बनाने की योजना बनाई। भवन निर्माण का कार्य साहू श्री शान्तिप्रसाद जैन ने वहन किया। धार्मिक दृष्टि रहने के कारण वैजनाथजी की इच्छा थी कि छात्रो के लिए एक मन्दिर भी होना चाहिए जिससे छात्रो के हृदय मे धर्माचरण के प्रति झुकाव पैदा किया जा सके। उन्होने इन्दौर के प्रसिद्ध सेठ सर हुकमचन्दजी से सम्पर्क किया। सारी योजना बताई और स्वय चलकर सारी परिस्थितियो का अध्ययन कर रुपये लगाने की राय दी। सेठ हुकमचन्दजी की आयु काफी हो गई थी। वे इन्दौर से बनारस तक रेल से जाने-आने का कष्ट सहन करना नही चाहते थे। उस समय हवाई सर्विस आज-कल की तरह चालू नही हुई थी। वैजनाथजी ने एक १०-१२ सीट की हवाई जहाज दिल्ली से इन्दौर, इन्दौर से बनारस और बनारस से इन्दौर और फिर दिल्ली के लिए भाडे पर किया और कुछ मित्रो और सेठजी को छात्रावास और मन्दिर का स्थान बनारस लेजाकर दिखलाया। सेठजी वैजनाथजी की लगन से प्रभावित हुए और वहा सुन्दर मन्दिर बन गया। आज भी बनारस युनिवर्सिटी के बाहर लका नामक मुहल्ले मे छात्रो के लिए छात्रावास और मन्दिर बना हुआ है जिसका नाम जैन छात्रावास है।

वैजनाथजी बनारस के बाद जयपुर गए तो वहा भी उन्होने धार्मिक गति-विधियो मे पूरा भाग लिया। जयपुर जिसे आजकल "पिंकसिटी" कहा जाता है, जैनियो का प्रमुख केन्द्र रहा है। कहा जाता है कि किसी जमाने मे इसका नाम जैनपुरी था जो आगे चलकर जयपुर हो गया।

राजस्थान ही नही पूरे भारतवर्ष मे इतना सुन्दर और सलीके से बसा हुआ नगर नही है। सडकें इतनी चौडी और सीधी हैं कि शहर को एक छोर से दूसरे छोर तक चीरती हुई चली गई है। सड़क के दोनो ओर बने मकानो और भवनो की एक जैसी डिजाइन और एक जैसा रंग किसी भी नए आने वाले आदमी को दिग्भ्रमित कर देते है। इस विराट नगर मे जैनियो के अनेक नयनाभिराम मन्दिर और चैतालय बने हुए है, जो शिल्प कला के अद्भुत नमूने ही नही धर्म प्राण जैन समाज के श्रद्धा के केन्द्र भी है। मन्दिरो के दर्शनार्थ बाहर से आने वाले मुसाफिरो को अनावश्यक रूप से इधर-उधर भटकना न पड़े इसके लिए

बैजनाथजी ने बड़ी सुन्दर व्यवस्था की। उन्होने मुसाफिरों के पथ-प्रदर्शन के लिए निदशिका छपवा दी जिसमे मन्दिरो की क्रम-सख्या अकित थी। इसकी सहायता से मुसाफिरो को एक ही चक्कर मे सिलसिलेवार सारे मन्दिरों और दर्शनीय चैतालयो की परिक्रमा करने मे सुविधा होती थी। इन्होने जयपुर मे स्थित अनेक जीर्ण-शीर्ण चैतालयो की मरम्मत करवाई।

गाँधीजी से सम्पर्क के कारण धर्मचन्दजी का प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति लगाव बढने लगा। वे बराबर प्राकृतिक चिकित्सा के सम्बन्ध मे अध्ययन और प्रयोग करते रहते। प्रारम्भ में बैजनाथजी को इस चिकित्सा पद्धति मे कोई दिलचस्पी नही रही। पर एक विशेष घटना ने बैजनाथजी को भी प्राकृतिक चिकित्सा का कट्टर समर्थक बना दिया। बैजनाथजी उन दिनो खिदिरपुर मे रहा करते थे। एक रात के समय अचानक बैजनाथजी के पेट मे भयकर दर्द हुआ। सुबह से पहले किसी डाक्टर का उपलब्ध होना सम्भव नही था। धर्मचन्दजी ने बैजनाथजी के पेट पर मिट्टी की पट्टी चढाई और एनिमा देकर पेट की सफाई कर दी। बैजनाथजी को इससे बडा आराम मिला। इसके बाद तो उनकी निष्ठा प्राकृतिक चिकित्सा मे निरन्तर बढती ही गई।

एक बार वे किसी बारात मे गए थे। वहाँ खान-पान की गडबडी के कारण उनके पेट मे दर्द होने लगा। लोगो ने डाक्टर को दिखाया पर बैजनाथजी ने उससे कोई औषधि या इन्जेक्शन नही ली और धर्मचन्दजी को ही टेलीफोन से बुलाने का आग्रह किया। धर्मचन्दजी प्राकृतिक चिकित्सक को साथ लेकर वहाँ पहुँचे। मिट्टी की पट्टी लगाई व एनिमा दिया, बैजनाथजी के पेट की सफाई हो गई और वे स्वस्थ हो गए।

बैजनाथजी को एक बार ब्लडप्रेशर की शिकायत हुई फिर भी बैजनाथजी ने डाक्टरी इलाज नही करवाया। धर्मचन्दजी ने उनके भोजन मे नमक खाने का त्याग कराया तो वे ठीक हो गए। इसप्रकार की अनेक घटनाएँ बैजनाथजी के जीवन मे घटित होती गईं और प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति उनका विश्वास दिन-दिन दृढ होता गया।

कहा जाता है कि एकबार बैजनाथजी को निरन्तर हिचकियो का क्रम चालू हो गया। हालत इतनी गम्भीर हो गई कि उनके बचने की भी आशा नही रही।

इस विकट स्थिति मे भी वैजनाथजी ने डाक्टरो की शरण नही ली। उन्होने धीरज के साथ धर्मचन्दजी के वताए अनुसार पन्द्रह दिन का उपवास किया। नीवू के पानी का सेवन करते रहे। कुछ ही दिनो मे वे पुन· स्वस्थ हो गए। वैजनाथजी की तरह ही उनकी पत्नी जानकी देवी को भी प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति गहरा विश्वास था। बीमारी चाहे कितनी ही गम्भीर क्यो न हो वे बडे धीरज और विश्वास के साथ प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा ही उससे मुक्त होने का प्रयास करती थी। इस प्रकार प्राकृतिक चिकित्सा वैजनाथजी की पारिवारिक चिकित्सा पद्धति वन चुकी थी।

वैजनाथजी नए-नए कामो मे दिलचस्पी लेते थे। एकवार इकमीककूकर मे पकाया हुआ खाना उन्होने खाया तो उन्हे वड़ा स्वादिष्ट लगा। उन्होने कूकर की वनावट को ध्यान से देखा। उसकी वनावट मे कोई पेंचीदगी नही थी। चार चीजें एक साथ और अल्प समय मे पकाई जा सकती थी। भाप से पकने के कारण चीजो का गुण और स्वाद भी वना रहता था। वैजनाथजी को कूकर वहुत उपयोगी लगा। उन्होने स्वय उसका निर्माण करना प्रारम्भ किया। गेलवेनाइज्ड स्टील के कूकर वनवाकर उन्होने अपने अनेक मित्रो को विना मूल्य वांटा। जुगलकिशोरजी विडला और सर सेठहुकमचन्दजी को उन्होने चांदी के कूकर वनवाकर भेंट किए।

वैजनाथजी को सफल जीवन यात्रा के पीछे उनको धर्मपरायणा पत्नी श्रीमती जानकी देवी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। छोटी उम्र मे ही वे कुछ भारी शरीर की थी। कुछ फोडा-फु सी होते तो जल्दी नही सूखते। वह कहती मेरी पाचनी छोडी है। पर सयुक्त परिवार मे रहने के कारण पाच-सात सेर आटा हाथ की चक्की से पीसना नित्य का कार्य था। इससे उनका मोटापा वढा नही और-फु सी होने भी वन्द हो गए। वे वैजनाथजी द्वारा किए जा रहे धार्मिक और सामाजिक कार्यों मे कभी वाधा नही डालती थी। एक समभदार गृहिणी की तरह वे व्यवस्था की भी सफलता पूर्वक देखभाल किया करती थी। स्वावलम्वी होने के कारण वह प्रत्येक कार्य के लिए नौकर-चाकरो पर अपने को निर्भर नही करती थी। प्राय घर का काय वह अपने हाथो से ही पूरा करती थी। वैजनाथजी के साथ कोई न कोई ब्रह्मचारी, साधू या अतिथि प्रतिदिन घर पर आ ही जाते थे। जानकी देवी उन सवका अतिथि सत्कार किया करती। आलस्य को अपने पास

फटकने नही देती थी। मन्दिर जाना, पूजा-पाठ करना और घर की देखभाल करना उनका प्रतिदिन का नियमित कार्य था।

पढी-लिखी नही होने पर भी वह बैजनाथजी के जीवन मे समय-समय पर आने वाले उतार-चढ़ाव को अच्छी तरह समझती थी। खर्च कम हो और घरेलू व्यवस्था का स्तर भी प्रतिष्ठाजनक बना रहे इस बात का वह बराबर ख्याल रखती थी।

बैजनाथजी को जब कारबार मे घाटा लगा था तब वे सोचा करते थे कि भारत मे तीर्थ स्थान के पास कोई छोटी-मोटी दूकान करके किसी प्रकार बाकी जीवन बिता देंगे। आगे चलकर जब बैजनाथजी को टाटा कम्पनी का काम मिला और जब उन्होने फिर से अपने कारबार का विस्तार करके राँची, बुण्डू और कोडरमा के अतिरिक्त मद्रास, रायपुर, कानपुर, दिल्ली और जयपुर मे दूकानें खोली। काम की जिम्मेवारी उनपर ही थी तो जानकी देवी कहा करती थी, "कहाँ तो आप मन्दिर के पास छोटी-सी दूकान करके जीवन बिताना चाहते थे और अब काम का जगह-जगह फैलाव करके भी आपको सन्तोष नही हो रहा है। इस प्रकार जानकी देवी निराशा के समय बैजनाथजी का उत्साहवर्द्धन भी करती थी और दूसरी ओर उनकी अनावश्यक महत्वाकांक्षा को भी मर्यादित करने की सलाह देती थी। जानकी देवी ने बैजनाथजी के साथ प्राय भारतवर्ष के प्रमुख सिद्ध क्षेत्रो और अतिशय क्षेत्रो तथा तीर्थस्थानो की यात्रा कई बार की। एक बार "जैन बाला विश्राम आश्रम" आरा की रजत-जयन्ती जानकी देवी की अध्यक्षता मे ही मनाई गई थी। उस अवसर पर जानकी देवी ने महिलाओ को सम्बोधित करते हुए कहा कि शिक्षा और धर्म से जुड़े रहकर उन्हे अपना जीवन आदर्शमय बनाने का प्रयास करना चाहिए। आगे चलकर परिवार मे प्राकृतिक चिकित्सा का व्यवहार होने लगा तो उन्होने उसे अपनाया। वे जीवन मे जैनियो की धार्मिक तिथियां, दूज, पचमी को हरी सब्जियाँ नही खाती थी और साथ ही अष्टमी और चतुर्दशी को पूर्ण उपवास करती थी। जैनियो के भादो महीने मे होने वाले दसलक्षणी पर्व पर भी कई बार कई दिनो का उपवास करती थी। घर मे बच्चो पर और नौकरो-चाकरो पर बिना औषधि के केवल मिट्टी, पानी, एनिमा, उपवास से रोगो के ठीक होते देखकर काफी प्रभावित हो गई थी। एकबार की घटना है कि जैन हाउस से मेट्रो सिनेमा, जो लगभग एक फर्लांग की दूरी पर है,

कोई धार्मिक फिल्म देखने परिवार वालो के साथ गई। सयोग की बात उस वक्त तक कलकत्ते में घोडे गाडियो का कुछ प्रचार था। जानकी देवी मेट्रो की गली के पास पहुँची ही थी कि एक घोडा गाडी के घोडे के पाँव उनके पैर पर लगा, कुछ चोट आई। भाग्य से हड्डी वगैरह नही टूटी। सिनेमा का प्रोग्राम कैंसिल हुआ और उन्हे घर पर लाकर गर्म पानी से पैर धोकर मिट्टी का उपचार शुरू हुआ व साथ ही उपवास भी शुरू हुआ। वह ठीक होने लगी। इसी बीच कोई रिश्तेदार उन्हे बिना पूछे अपने मित्र डाक्टर को ले आए। डाक्टर ने चोट का मुआयना कर जानकी देवी से पूछा कि आप क्या खाती है। उन्होने जब उपवास करने की बात कही तो डाक्टर ने उनसे कहा कि आपको भोजन तो अवश्य करना चाहिए नही तो आप कमजोर हो जाएँगी। इसपर वे हँसकर बोली कि 'डाक्टर साहब यदि मै भोजन नही करूँगी तो कमजोर हो जाऊँगी और साथ ही यह घाव भी कमजोर हो जाएगा और मै भोजन करूँगी तो मेरे मे शक्ति बढेगी और घाव भी बढेगा। डाक्टर बेचारा क्या बोलता, चुप रह गया।

बैजनाथजी की बीमारी के समय धर्मचन्दजी ने उनको उपवास वगैरह कराया तो वे बिल्कुल नही घबडाई। एकबार मन्दिर जाते समय बैजनाथजी ने उनसे कहा कि तुम्हारी उम्र हो गई है, तुम लकडी लेकर चला करो तो गिरने-पडने का डर नही रहेगा। इसपर वे हँसते हुए बोली कि, मैं बूढी थोड़ी हो गई हू जो लकड़ी लेकर चलूँ। वे परिवार के रिश्तेदारो के यहाँ होने वाले सभी उत्सवो मे भाग लिया करती थी।

जानकी देवी गरीबों मे काफी दान किया करती थी। रिश्तेदारो मे भी जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी उनको चुपचाप सहयोग दिया करती थी। सुबह उठकर अपना नित्य कर्म खुद किया करती थी। जीवन के अन्तिम दिनो में तो उन्होने चर्खा काटना भी सीख लिया था। वे रोज इतना सूत कात लेती थी कि धर्मचन्दजी के पहनने लायक धोतिया उससे बन जाती थी। वे सुबह सध्या सामयिक किया करती थी। भजन बोला करती थी। सुबह ६ बजे ही स्नान कर मन्दिर के दर्शन रोज किया करती थी। रात्रि भोजन कभी नही करती थी। पिछले तीस वर्षों से केवल एक बार अन्न खाती, सध्या को दूध और फल लेती थी। फलो मे उन्हे बगाल का केला पसन्द था। खान-पान और सयमी जीवन के कारण उनका स्वास्थ्य अन्त तक ठीक रहा। वे अपना भोजन खुद बनाती और आंटा

पीसती। मृत्यु के एक दिन पहले वे बेहोश हुई, उन्हें कोई डाक्टरी दवा, सूई आदि नही दी गई, घर के लोगो ने उनकी सेवा की।

जोखीरामजी के परिवार की महिलाओ मे वे सबसे अधिक सुन्दर महिला थीं साथ ही जोखीरामजी के परिवार की महिलाओ और अपने पीहर के परिवार की महिलाओ मे जानकी देवी हो ऐसी सौभाग्यवती महिला हुई जिसने तिरासी वर्ष की आयु तक सुहाग सुख भोगा व लम्बी उम्र पाई। ८ मई १९६६ को सायं ६ बजे कलकत्ते के जैन हाउस मे अपना पार्थीव शरीर ८९ वर्ष की आयु मे उन्होने त्याग दिया।

राजभवन से बीस किलोमीटर दूर डायमण्ड हार्बर रोड पर इक्कीस विघा जमीन मे धर्मचन्दजी ने एक सुन्दर आकर्षक बगीचा बनाया था जिसमे कई तालाब आदि थे, जिसका नाम "जैन उद्यान" था। बैजनाथजी बीच-बीच में वहाँ जाया करते थे।

१९६० की बात है—कलकत्ते मे प्राकृतिक चिकित्सा के लिए विद्यापीठ बनने की बात चली। श्री मोरारजी देसाई उस समय भारत सरकार के अर्थ मन्त्री, श्री श्रीमन्नारायण और ढेबर भाई, कांग्रेस के प्रेसिडेन्ट ने सुझाव रखा कि इस बगीचे का नाम "जैन उद्यान" की जगह "प्रकृति निकेतन" रखा जाए और प्रकृति निकेतन ट्रस्ट बनाकर उसे दान कर दिया जाये। बैजनाथजी प्राकृतिक चिकित्सा से इतने प्रभावित थे कि उन्होने तुरन्त इसके लिए स्वीकृति दे दी। साथ ही डेढ लाख रुपया नगद भी दिया। १९६२ मे अचानक उनका स्वास्थ खराब हुआ तो उन्होने जयपुर जाने का प्रोग्राम बनाया। वहाँ मोती डूमरी के आस-पास बापूनगर में प्राकृतिक चिकित्सालय के पास एक मकान खरीदा, वही प्राकृतिक इलाज कराया। उस वक्त उनके साथ जानकी देवी, धर्मचन्दजी की पत्नी मोती देवी, उनकी छोटी पुत्री लक्ष्मी देवी ने रहकर उनकी सेवा-सुश्रुषा की। बैजनाथजी वहाँ प्राकृतिक चिकित्सा कराकर ठीक हो गए। महावीरजी नामक तीर्थ स्थान का मोटर से यात्रा कर दर्शन कर आए। धर्मचन्दजी के बड़े पुत्र निर्मल कुमार की पहली लड़की सगीता का जन्म दिन ४ नवम्बर को कलकत्ते मे था इसलिए ३ नवम्बर को हजाई जहाज द्वारा जयपुर से सुबह रवाना होकर ३ नवम्बर को ही कलकत्ते पहुंचने का प्रोग्राम बना। इस बीच कुछ आवश्यक

काम के लिए २८ अक्टूबर को धर्मचन्दजी कलकत्ते आ गए। संयोग की बात है कि एक नवम्बर को जयपुर से टेलीफोन आया कि पिताजी की तबीयत अचानक कुछ विशेष खराब हो गई है। धर्मचन्दजी को उसी समय संध्या के हवाई जहाज की टिकट मिल गई और वे दिल्ली रात्रि ७ बजे पहुँच गए। उस समय रात्रि को दिल्ली से जयपुर हवाई जहाज की सर्विस नही थी। दिल्ली से जयपुर जाने वाली ट्रेन छूट चुकी थी। धर्मचन्दजी ने हवाई अड्डे से ही टैक्सी ली और रिंगस नामक स्थान पर पहुचकर गाड़ी पकड़ी और सुबह ही जयपुर पहुँचे। धर्मचन्दजी के पहुँचने पर वैजनाथजी को बहुत संतोष हुआ और फिर उन्होंने शरीर त्याग दिया। वैजनाथजी ने भी जोखीरामजी के परिवार मे सबसे अधिक उम्र पाई और काफी दान-पुण्य किया। समाज मे आज भी उनका नाम गो-भक्ति और मन्दिरो के जीर्णोद्धारक के रूप मे स्मरण किया जाता है। □



बालक धर्मा



धर्मचन्द सरावगी

सन् १९०५, गोपाष्टमी के शुभ दिन २,००० की आबादी वाले राँची नामक गाँव मे जोखीरामजी के पुत्रो द्वारा खरीदे हुए मकान मे उनके छठे पुत्र बैजनाथजी की पत्नी जानकी देवी ने अपने पहले लड़के को जन्म दिया। उसके पहले उन्हे एक लडकी भगवान देवी की प्राप्ति हो चुकी थी।

पुराने जमाने मे प्रसव के लिए नर्सिंग होम या मातृ सेवा सदन आदि नही थे। प्रसव दाइयाँ ही कराया करती थी। जहाँ बड़ा परिवार होता था वहाँ बड़ी-बूढी तथा इस काम मे दक्ष औरतें भी रहती थी। उस जमाने मे स्त्रियाँ घर के काम-काज खूब करती थी। गर्भवती रहने पर भी अन्त तक काम-काज करती रहती थी, केवल भारी बोझ नही उठाती थी इसलिए उनको प्रसव मे कष्ट नही होता था, न ही चीर-फाड की जरूरत होती थी। जानकी देवी को जब प्रसव हुआ, बड़े आराम से हुआ, घर की स्त्रियो ने समझा कि एक लोथड़ा-सा हुआ है, कुछ ने कहा भाठा हुआ है। पर दूसरी समझदार बडी औरतो ने कहा कि यह लोथड़ा नही है इसको ऊपर से चीरो लडका निकलेगा। जानकी देवी बताया करती थी कि वैसा ही किया गया, उसमे लड़का जन्मा।

वैजनाथजी गोपाष्टमी मेले मे थे। उस जमाने मे किरासन तेल से जलने वाले हण्डो की रोशनी मे एक नाटक राँची में पिंजरापोल के मेले मे हो रहा था, उसे देखने मे व्यस्त थे। वैजनाथजी को मेले मे खवर भेजी गई, वे समाचार सुनकर तुरन्त घर आये और जच्चा और वच्चा मजे मे है सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

धीरे-धीरे वालक वडा होने लगा पर वचपन से ही कमजोर था। लडके का नाम धर्मचन्द रखा गया। पुकारने का नाम धर्मा पड़ गया। वह पाँच वर्ष की आयु तक माता का स्तन पान किया करता था। वैजनाथजी काम-काज मे व्यस्त रहते थे, राँची के वाहर भी यात्रा करते रहते थे। पर उनके छोटे भाई गोवर्द्धनदासजी को वच्चे का स्तन पान अच्छा नही लगता था। इसके लिए वे वरावर अपनी भाभी (जानकी देवी) को टोका करते थे। मातृ हृदय तो मातृ हृदय ही होता है, वे यह कहकर अपने देवर को समझाती कि वच्चा है मानता नही है। वे कई वार टोकते, कभी-कभी तो काली मिर्च पीसकर अपनी भाभी को लाकर देते कि वे अपने स्तन पर लगा लें जिससे वच्चे की स्तन पान की आदत छूट जाए। पर धर्मा कव मानता वह मिर्च पोछकर भी स्तन पान करता था। जिस मकान मे वे रहते थे नीचे के तल्ले मे गोवर्द्धनदासजी को कमरा मिला हुआ था और वही रसोई, स्नान घर, पुराने ढग के पायखाने जिन्हे उन दिनो मेहतर आकर साफ किया करता था, वने हुए थे। एक तल्ले पर वैजनाथजी और केदारनाथजी को कमरा मिला हुआ था। एक वार धर्मा सिढी चढते-चढते ऊपर पहुँचने के पहले ही लुढक कर वापस नीचे आ गिरा पर सौभाग्य से अधिक चोट नही आई। धर्मा को माता का प्यार तो मिला ही पर भीमराजजी की पत्नी (धर्मा की ताई चाँद वाई) जो विना सन्तान ही विधवा हो गई थी, धर्मा को वहुत लाड-प्यार करती थी और अपने पास ही सुलाती थी।

परिवार मे शिक्षा का प्रचार वहुत नही होने के कारण धर्मा की पढाई छै वर्ष की उम्र मे आरम्भ हुई। जिस मकान मे वैजनाथजी रहते थे उसके सामने ही एक सरकारी नार्मल स्कूल भी था, उसकी दीवार जरूर पक्की थी पर छत खप-रैल की थी जिसमे हिन्दू, मुसलमान, मारवाड़ी, हिन्दुस्तानी, वगाली, सभी जाति के वच्चे पढते थे, पर भाषा हिन्दी ही थी। आगे चलकर वडी क्लासो मे अग्रेजी आरम्भ होती थी। क्लासें भी दसवी, नौंवी, आठवी अन्त के पहली जिसे उस

समय टेन्थ, नाईन्थ, एइट्थ और अन्त मे फर्स्ट कहा करते थे। हिन्दी पढाने के लिए एक पण्डित थे जिनका नाम ठाकुर पण्डित था। गौर वर्ण मोटे-सोठ सफेद अँगरखा और सर पर टोपी पहनते और कभी-कभी तिलक भी लगाते थे। अग्रेजी के लिए एक कायस्थ बृजमोहन बाबू थे, दुबले-पतले। मुसलमान बच्चे को उर्दू पढाने के लिए मुसलमान मास्टर थे। सयोग से हेडमास्टर भी मुसलमान ही थे। मुसलमान बच्चो को शुक्रवार को मस्जिद मे जाकर नमाज पढने की आधे घटे की छुट्टी मिलती थी। मस्जिद स्कूल के पास ही आधे फर्लांग की दूरी पर था। स्कूल मे बच्चो से पढाई के लिए दो आना, चार आना, छह आना, दर्जा के हिसाब से मासिक फीस ली जाती थी। समय से फीस न देने पर एक पैसा रोज का जुर्माना होता था। बच्चो की पढाई न करने पर, समय पर न आने पर, बेंत से पिटाई होती, नील डाउन किया जाता। पर धर्मा अपने समय पर जाता और पढाई मे बहुत तेज न होते हुए भी पीछे नही था इसलिए मारपीट की नौबत नही आती थी। स्कूल का नाम नार्मल स्कूल था। सामने मैदान मे ईमली का पेड़ था। छुट्टी के बाद बच्चे पत्थर मारकर ईमली तोडा करते थे। एक दिन धर्मा भी बच्चो के साथ ईमली तोडने गया, दूसरे लडके द्वारा फेंका गया पत्थर धर्मा के माथे पर लगा और खून बहने लगा। सारे लडके 'फटलई कपार' कहकर भाग गए। धर्मा घर पर आया उसे कपडा जलाकर पट्टी बाधी गई। उस चोट का निशान अबतक माथे पर है। घर के लोग कहा करते थे कि यह तो इतना सीधा-सादा है फिर यह घटना कैसे घटी।

पास ही जिला स्कूल था जो बडी क्लास के लडको के लिए था और जो लगभग चालीस-पचास एकड जमीन घेरे था। बच्चो के पढने के कमरे भी बढियाँ ऊँची फर्स पर बने थे, जिनके दरवाजो मे काच लगे थे, बेंच-टेबल भी अच्छे थे। व्यायाम करने के लिए व्यायामशाला थी। फुटबाल खेलने के लिए ग्राउण्ड भी था और साथ ही चारो तरफ चार फुट ऊँची पक्की दीवार भी बनी थी। फिर तो राँची मे कालेज भी बन गया। उसके ठाट और सजावट तो और भी आलीशान थे पर धर्मा को न तो जिला स्कूल जाने का सौभाग्य मिला, न कालेज जाने का, वह तो कलकत्ता आ गया था।

राँची उन दिनो २००० लोगो की बस्ती थी जिसमे जालान, मोदी, खेमका, रूइया, बुधिया, पोद्दार आदि जाति के दो-दो चार-चार परिवार थे। जैनियो मे

जोखीरामजी का परिवार और रतनलालजी का परिवार था। राँची समुद्रतल से २५०० फुट ऊँचा होने के कारण वहाँ का मौसम गर्मियो मे भी ठढा रहता था। विहार की राजधानी पटना मे रहने वाले अग्रेज गवर्नर महोदय के लिए गर्मी से बचने के लिए वहाँ कोठियाँ, वगले आदि वनाए गए थे। साथ ही राँची के चारो तरफ जगल होने के कारण आदिवासी रहा करते थे। उस समय मजदूरी राजमिस्त्री की पाच आने रोज, कुली का काम करने वाले की तीन आने रोज और काम करने वाली औरतो की दो आना रोज थी। राँची मे जो आदिवासी काम करने आते उनकी वेष-भूषा विचित्र होती थी। पुरुषो के वडे वाल, जिन्हे वे घुँघराले कर के सजाते थे। कानो मे वडे छेद जिसमे वांस की पेंसिलनुमा लकड़ी छोटी-वड़ी-मोटी-पतली शौक के अनुसार पहने रहते थे। गले और हाथ मे कौडी, मूँगा या कासे आदि के गहने वने होते थे। कमर मे एक फुट चौडी सूती पट्टी चार-पांच हाथो का लगोटानुमा पहनते थे। ऊपर चद्दर से वदन ढँके रहते थे जो वच जाता आगे पीछे या वगल मे लटका लेते। आत्म रक्षा के लिए साथ मे एक लकडी रखते। कोई-कोई तीर-कमान भी रखता। काम के समय उतार कर अलग रख देते। वे वडे मेहनती होते थे। सुवह सात-आठ वजे ही काम पर आ जाते थे और सध्या को पाँच-छह वजे तक काम करते थे। सुवह वे अपने घर से खा कर आते और काम पर से जाने के वाद अपने घर पर भोजन करते। दोपहर टिफिन के समय अपने साथ लाया हुआ सत्तू पानी मे घोलकर पीते या सत्तू मे हरी मिर्च और कच्चा आम या इमली डालकर उसके लड्डू वनाकर खाते त्यौहारो और छुट्टी के समय मनोरजन और अपनी स्फूर्ति के लिए अपने घर मे चावल हाँड़ी मे कई दिन सडाकर वनाई हुई शराव पिया करते थे जिसे वे हड़िया कहते थे। काम करते समय जव भूल होती तो आपस मे एक दूसरे को ताना देते कि आज हड़िया पीकर आया है। इनके नाम भी हमलोगो के दिनो के नाम पर होते जैसे सोमरा, मगला, वुधवा, शुक्रा, शनीचरा इत्यादि। इनकी स्त्रियाँ काम पर आती वे भी काफी मेहनती होती थी। नाम भी उसी तरह होते केवल पुंलिग की जगह स्त्रीलिंग हो जाते यानी सोमरी, मगली, वुधनी, शनीचरी इत्यादि। वेश-भूषा भी पुरुषो जैसा होता। कमर मे लगोटनुमा वस्त्र की जगह घुटनो से थोडा नीचा लुगीनुमा कपडा पहनती थी और शरीर पर चद्दर ओढती पर उसकी चौडाई कम होती थी जिसे वे अपने कन्धे पर इकट्ठा कर जनेऊनुमा गाठ वाधकर लटका देती जिससे उनके दोनो हाथ कामकाज करने के लिए खाली हो जाते।

उनके यहाँ ब्लाउज का व्यवहार शुरू नही हुआ था। आदीवासियों की जाति उराँव आदि कई तरह की थी।

मजदूर सस्ते मिलते थे इसलिए चाय बगान की अग्रेज कम्पनियाँ राँची में अपना कई एजेन्ट रखा करती थी और बुधिया, खेमका आदि परिवारो के मार्फत कुली भर्ती करती थी और उन्हे कमीशन देती थी। उसी तरह पोद्दार परिवार की नागपुर मे टाटा कम्पनी के सूता मिल की एजेन्सी थी। रतनलालजी के परिवार की किराशन तेल की एजेन्सी थी। राँची के मारवाडी लोग दूकानदारी किया करते थे। वहाँ उस समय कोई इण्डस्ट्री नही थी। व्यापार मे ही पैसे कमाते और पारिवारिक जीवन सस्ते मे चलाते और बचे पैसे से मकान, जमीन आदि खरीदते। उस समय कलकत्ता, पटना आदि से रेल की लाईन पुरूलिया तक बिछी थी। पुरूलिया से राँची तक छोटी लाईन थी। स्टेशन से गवर्नर के बंगले तक बढियाँ सडकें थी जिस पर अग्रेजो की क्लबें, अग्रेजो की आवश्यकता के सामान बेंचने वालो की दूकानें, गिरजाजघर आदि थे। आदिवासियो मे क्रिश्चियन धर्म का प्रचार करने के लिए सस्थाएँ भी बन गई थी। मारवाडी मोहल्ले में एक ठाकुरबाड़ी थी। पास ही खाली मैदान जिसे "पीठिया टांड याने वह जगह, जहाँ सप्ताह मे दो दिन। बुधवार और शनिवार को बाजार लगता था। वह बाजार अब भी है। बाजार भी उसी तरह बुधवार और शनिवार को लगता है जिसमे आदीवासी आकर अपनी जरूरत की चीजें—तेल, नमक, आटा, चावल, सूता आदि—ले जाते और अपने यहाँ पैदा होने वाली शाक-सब्जी, फल लाकर बेंचते। मारवाड़ियो ने राँची के पास की पहाडी पर मन्दिर भी बनवाया और गोशाला भी स्थापित की जो गोरक्षा के साथ गाव के लोगो को दूध बेंचती थी। उस समय पानी की पाईपें न होने के कारण सामर्थ्यवाला व्यक्ति अपने घर में ही कुँआ खुदवाता था या जहाँ कुँआ होता उसके पास ही मकान बनवाते। उस जमाने मे मकान अधिकतर एक तल्ले का बनता और ऊपर मे खपरैल होती थी या जो परिवार अधिक रुपया कमा लेता वह उसपर पक्की छत ढलवाकर एक तल्ला और उठवा देता। लोगो मे आपस मे बहुत प्रेम था।

चार कोस की दूरी पर रातू महाराज रहा करते थे। इनकी बहुत बड़ी जमीदारी थी। उनसे ही अग्रेजो ने बहुत-सी जमीन खरीद कर गवर्नर के लिए कोठियाँ आदि बनाई थी। रातू महाराज पढे-लिखे नही थे। अपनी बड़ी

पढाई मोमबत्ती या लालटेन की रोशनी में होती थी। एक दिन बैजनाथजी से उनके मित्र डोमन मास्टर, जो जाति के कायस्थ थे और रेलवे मे काम करते थे, कड़े स्वभाव के कारण अपने अफसर की पिटाई कर दी और नौकरी से हटा दिये गए, मिले और कहा कि तुम यदि मुझे तीन रुपये मासिक दो तो मैं धर्मा को अंग्रेजी सिखा दूंगा। बैजनाथजी ने उनकी शर्त्त स्वीकार करली। उस जमाने मे तीन रुपये एक लड़के पर खर्च करना चर्चा का विषय बना।

राँची में उस जमाने मे मुसलमानो के साथ जैसे स्कूल मे बच्चे पढ़ते थे वैसे ही मुहर्रम पर निकलने वाले ताजियो मे सम्मिलित होते। मुसलमान घरो मे भी काम-काज के लिए रखे जाते थे। घोड़ा गाडी मे कोचवान, सईस मुसलमान रहते। घरो में भी आदिवासी स्त्रियाँ बहुत सस्ते मे काम के लिए मिल जाया करती थी। बीच-बीच मे नटो के खेल देखने को मिलते। सर्कस भी साल मे एक दो बार आया करते थे। आन्ध्र प्रदेश का राममूर्ति भी राची आया और उसने लोहे की साकल तोडी और अपनी छाती पर से हाथी गुजरवाया, धर्मा को यह सब देखने को मिलता था।

आदिवासियो के यहाँ जन्मे छोटे घोडे १०-१५ रूपये मे मिल जाते थे और गाडियों के लिए अच्छे घोडे १०० रूपये मे मिलते थे। राँची में जब पहली बार सिनेमा आया तो जनता को मुफ्त दिखाया गया था—यह एक आश्चर्य की बात थी। "पीठिया टांड़" जहाँ हर बुधबार और शनिवार को बाजार लगता था, उसमे ही चार बाँसो को खडा कर सफेद कपड़ा बाधा गया और चलते-फिरते दृश्य दिखाए गए। ये रगीन भी नही थे और बोलते भी नही थे फिर भी जनता के लिए आश्चर्य की चीज थी जिसे देखने के लिए बहुत भीड़ इकट्ठी हुई। घर मे घोड़ा गाडी आ गई थी, कोचवान को दस रूपये और साईस को पाँच रूपये महीना दिया जाता था। जगन्नाथजी शौकीन तबीयत के आदमी थे। उन्होने एक फिटन भी खरीद ली थी जिसमे घोडा गाड़ी का घोडा ही उपयोग मे लाया जाता था। राँची के आस-पास इमली बहुत होती थी जिसे आदिवासी बाजार के दिन बेचने के लिए लाया करते थे। राँची के व्यापारी उसे खरीदकर सफा कर, बीज निकाल कर बगाल और दक्षिण भारत, जहा इसका उपयोग होता है, भेजा करते थे। रांची के आस-पास महुआ भी बहुत होता है जिसका शराब बनाकर उपयोग करते

है। जगलो मे लाख पेडो पर वहुत लगती है जिसे वनाने में कभी होती है इसलिए शराव और लाख वनाने का काम मारवाडी व्यापारी नही करते थे।

धर्मा जव वीमार चलता था तव मू गराजजी, केदारनाथजी आदि कहा करते थे "वैजिओ को छोरो इतनो विमार चाले हैं, वैजियो न के निहाल करसी" मू गराजजी को लडका नही था, केदारनाथजी को एक लडका था, वैजनाथजी को एक लडका था। जगन्नाथजी को चार लडके थे, उन्होने एक लड़का मूंगराजजी को गोद दिया और एक अपने भतीजे जयदेव की विधवा को गोद दे दिया। राँची मे अधिकतर परिवार वैष्णव धर्म को मानने वाले थे इसलिए वैजनाथजी के घर मे मरने-जीने, शादी-व्याह के नेगचार जैन परम्परा से न होकर वैष्णव परम्परा से हुआ करता था। इसके शुभ मुहूर्त देखने, शादी-व्याह का काम व पूजा-पाठ कराने का काम श्रीनारायणजी पण्डित किया करते थे। लोगो की उनपर वडी श्रद्धा थी। ये थे भी वडे सात्विक व्यक्ति। उनको एक लड़का और चार लडकियां थी। सयोग की वात है श्रीनारायणजी ने स्वय लम्वी उम्र पाई पर उनका लडका तीस वर्ष की उम्र मे ही मर गया और चारो लड़कियाँ विवाह के पाँच-पाँच दस-दस वर्ष वाद विधवा हो गई। धर्मा को इससे जन्म-पत्री, मुहुर्त आदि दिखने मे उनसे श्रद्धा कम हो गई। दूकान मे विलायतूमियाँ नाम का मुसलमान नौकर काम करता था। वह मेहनती और होशियार था, झाड़ू-वुहारू, रग, काट-पीट आदि करना, माल वजन करना सव जानता था और निःसकोच कर लिया करता था। दूकान और घर एक ही जगह होने के कारण दूकान के साथ घर मे भी काम होता था तो कर लिया करता था।

पहला विश्व युद्ध छिड़ चुका था। लोगो के सामने झूठी-सच्ची खवर आया करती थी। साथ ही लोगो मे साधारण ज्ञान का इतना अभाव था कि जव वगाल की खाडी मे "एमडन" नामक पानी का जहाज आया तो राँची मे रात्रि को लोग लालटेन लेकर जहा कोई कहता वहाँ देखने को जाते मानो वह कोई चिडिया हो। वद्रीदासजी जालान (वैजनाथजी के श्वसुर) की दो लडकियाँ थी। वे लडकियो का विवाह करने के वाद फतेहपुर छोड़कर उज्जैन और इन्दौर की तरफ कमाने के लिए गए। कई वर्षों तक प्रयत्न करने के वाद सतोषजनक सफलता नही मिली तो वे राँची चले आए। तव तक उन्हे एक पुत्र भी हो गया था। वहाँ कई वर्षों तक रहे, अपने खर्च चला लेने लायक कमाई कर लेने के वाद अधिक कमाकर

कोई जायदाद नही बना सके। सयोग की बात है उनका पुत्र राँची में तालाब मे तैरते हुए एक दिन डूब गया। इससे उनको बहुत आघात पहुँचा और कुछ वर्षो के बाद वे भी स्वर्ग सिधार गए। उनकी पत्नी लड़की के पास रहना अच्छा न समझकर फतेहपुर चली गई। बैजनाथजी की धर्मपत्नी जानकी देवी को भी अपने भाई की दुर्घटना से बडा आघात लगा और वे बच्चो के तैरने की बात सामने आते ही कांप जाती थी।

मूँगराजजी कुछ भारी शरीर के थे। वे धूम्रपान किया करते थे, अधिकतर हुक्का पीते और चीलम भी पिया करते थे। वे फिर बुण्डू रहने लगे जो राँची से बीस मील दूर पड़ता है। उस जमाने मे यातायात का साधन न रहने के कारण बैलगाडी से जाने मे ६ घन्टे का समय लगता था। इसलिए यात्रा रात्रि का भोजन करके की जाती थी जिससे सुबह लोग वहाँ पहुँच जाते थे। पैदल जाने वाले सडक का घुमावदार रास्ता न पकडकर पगडण्डी के रास्ते से जाते और तीन-चार घन्टे मे ही दूरी तय कर लेते थे। केदारनाथजी कलकत्ते मे रहकर "जोखीराम मूंगराज" के नाम से आढत का काम किया करते थे। बैजनाथजी दुबले-पतले थे और साइकिल चलाना जानते थे। उस जमाने मे साइकिल के पीछे आजकल की तरह कैरियर नही बना था इसलिए धर्मा को कभी-कभी सामने ही बैठाकर ले जाया करते थे। धर्मा ने भी साइकिल चलाना सीख लिया था। उस वक्त तक बच्चो की दो पहिए की छोटी साइकिल परिवार मे नही आई थी इसलिए धर्मा बड़ी साइकिल को ही भीतर से पैर डालकर और पैडल पर ही बैलेन्स कर चलाया करता था। राँची का स्टेशन बाजार से ३ मील दूर था। पोस्ट आफिस आधा मील पर था। व्यापारिक खबरें कलकत्ता समय पर पहुँच सके इसके लिए यह प्रयत्न रहता था कि चिट्ठी को पोस्ट बाक्स मे न डालकर पोस्ट आफिस मे डाक निकलने के पहले डाल दी जाए और वहाँ से यदि डाक निकल गई हो तो फिर स्टेशन जाकर रेलवे के स्टेशन वाले पोस्ट बाक्स मे लोग डालते थे जहाँ की चिट्ठियाँ गाडी रवाना होने के १० मिनट पहले निकाली जाती थी। चिट्ठियाँ भेजने के लिए विलायतूमिया, लक्ष्मण महाराज आदि लोगो को काम मे लिया जाता था जो अन्य कामो के अलावा साइकिल चलाना भी जानते थे। धर्मा ने जब साइकिल चलाना सीख लिया तब उसकी इच्छा रहती थी कि पोस्ट आफिस जाकर चिट्ठी छोड़ने का काम उसे मिले तो वह साइकिल पर चढकर बड़ी

आसानी से जा सकता है। पर न तो घर वाले उसे यह काम करने को कहते और न ही उसका साहस होता कि घरवालो से कहे।

जगन्नाथजी दुवले-पतले थे और स्वास्थ्य के प्रति वहुत ध्यान रखते थे। वे धूम्रपान नही करते और सुवह उठकर घर से तीन मील दूर 'मोहरावादी" नामक स्थान पर लगे वगीचे मे पैदल जाते। वहा स्नान आदि कर वगीचे मे लगे साग-सब्जी लेकर घर आते। घर मे घोड़ा गाड़ी आ गई थी। कोचवान की तनख्वाह दस रुपये मासिक और सईस की तनख्वाह पाँच रूपये मासिक थी। कोचवान का नाम इस्माइलमियाँ था और सईस का लतीफमियाँ था। राँची मे वुधिया, मोदी और पोद्दारो ने पक्की हवेलियाँ वनवा ली थी। पोद्दारो के सम्वन्ध मे एक किवदन्ती प्रचलित थी कि उनके पूर्वज हुकमचन्दजी जव राची आए तव उन्होने पहाड़ी पर वने मन्दिर मे धरना दिया। पहाड़ी माता उनके स्वप्न मे आई और वोली कि जाओ तुम अन्याय नही करोगे तो तुम और तुम्हारा परिवार कभी गरीव नही होगा। पोद्दारो का परिवार वहुत वर्षो तक राँची के जाने-माने परिवारो मे अग्रणी रहा। साथ ही उनके वेटे पोते भी सार्वजनिक कार्य मे वहुत वर्षो तक दिलचस्पी लिया करते थे। केदारनाथजी की लड़की किशनदेई वाई और वैजनाथजी की लड़की भगवान देई वाई का विवाह एक साथ ही कर दिया गया। संयोग से मकान मे दो चौक थे इसलिए मण्डप दो जगह वधा और दो दरवाजो पर अलग-अलग वारात आई। किशनवाई का सम्वन्ध कलकत्ते के खेमका परिवार मे हुआ था। वे लोग वारात लेकर राची आए थे। भगवानवाई का विवाह पड़ोस के मोदी परिवार मे हुआ। साधारण तरीके से कम खर्च मे विवाह सम्पन्न हुआ।

परिवार मे मूगराजजी के लड़के गुलराज का विवाह हुआ, यह लडके का पहला विवाह था इसलिए वहुत उत्साह था। उस समय समाज मे विवाह के समय वेश्याओ का नाच कराने की परिपाटी थी पर इस विवाह मे हाथरस से नौटकी पार्टी वुलवाई गई जो कि लोगो के यानी गाँव वालो के मनोरजन के लिए कई रोज पीठियाटाड़ के मैदान के खुली स्टेज पर हण्डो की रोशनी मे नौटंकी के खेल नगाडो की ताल पर कराए गए। यह रात ८ वजे से शुरू होकर रात २-३ वजे तक होता। उस समय स्वर्गीय गगावाई के लड़के गोविन्द प्रसाद को भी हैदरावाद से वुलाया गया था।

गंगाबाई का विवाह हैदराबाद के एक बहुत धनी गनेड़ोवाला परिवार मे हुआ था। पर वे अधिक दिन जीवित नही रही और एक पुत्र गोबिन्द प्रसाद को जन्म देकर ही स्वर्गवासी हो गईं। गोबिन्द प्रसाद जब हैदराबाद से आए तो उनकी आयु ८ वर्ष की थी उनकी देखभाल के लिए एक नौकर और उनकी पूजा-पाठ आदि की सँभाल के लिए एक ब्राह्मण साथ मे आए। गोबिन्द प्रसाद ने हैदराबाद से राची तक की यात्रा रेल के पहले दर्जे में की साथ ही उनके रहन-सहन, कपड़े-लत्ते आदि बहुत ऊँचे स्तर के थे, जो जोखीरामजी के परिवार में और रांची मे एक चर्चा का विषय बना। उस जमाने मे कोई कन्ट्रोल नही था इसलिए विवाह पर अलग-अलग दिन अलग-अलग सम्प्रदायो को भोजन कराया गया जिसे उस जमाने में जीमनवार कहा करते थे। कई तरह की मिठाइयाँ व नमकीन बने। वर की बारात के लिए रातू महाराज से माग कर हाथी मँगाया गया। बारात के समय कागज के फूलो की फुलझडियाँ बनाकर सजाई गई जो महीनों पहले कारीगर आकर बनाया करते थे। फुलझडियाँ बारात के साथ लडकी वाले के मकान तक जाती फिर बाद मे लडके वालो के यहाँ। गुलराज का विवाह पोद्दारो के यहाँ हुआ। पर ये राची के पोद्दारो के रिश्तेदार थे जो रतलाम में रहा करते थे और अच्छा सम्बन्ध मिलने के कारण उन्होने राची आकर ही अपनी लड़की की शादी अपनी परिस्थिति के अनुसार कर दी। इसके बाद जगन्नाथजी के लड़के शिवभगवान का विवाह हुआ। इसके लिए भी रघुनाथपुर से सिंघानिया परिवार राची आकर ही विवाह कर गए।

उस जमाने में स्त्रियों की वेश-भूषा पर काफी नियत्रण था। घर के बाहर निकलने पर उन्हे घाघरा और ओढनी पहननी पड़ती थी। विधवा औरतें ही केवल साड़ी पहनकर घर के बाहर निकल सकती थी। पर इसपर भी उन्हे ओढनी ओढनी पड़ती थी। घूघट काफी लम्बा होता था। पैर मे चादी का एक गहना पहनाया जाता था जिसे कडी कहते थे। वह जितना भारी हो उतना अच्छा समझा जाता था और मरने पर ही निकलता था। इससे उनके एड़ी के ऊपर का हिस्सा और पिंडली के नीचे का हिस्सा बहुत पतला हो जाता था। नाक मे तो छेद होता ही था कान मे भी चार-पाच छेद होते थे। इसे सौन्दर्य की निशानी समझी जाती थी। धर्मा का भी कान छेद दिया गया था। और उसमे एक मोटी बाली पहना दी गई थी।

मारवाड़ी टोला के पास ही एक दुर्गा मन्दिर भी था। उसमे हिंसा नही होती थी इसलिए बगालियो के अलावा मारवाडी तथा अन्य जाति के लोग भी जाया करते थे। भगवान देवी का विवाह पास के मोदी परिवार में हो गया था। वे रांची मे ही रहती थी। उनके पति निरजनलालजी अपने परिवार का सूते आदि का व्यापार देखा करते थे। उनको भी साइकिल चलाना आता था। धर्मा ने जब अन्य साथियो को हाफ पेंट पहने देखा तो अपनी माँ जानकी देवी से इसकी चर्चा की। जानकी देवी ने धर्मा की बात बैजनाथजी से कही। पर बैजनाथजी ने यह कहकर टाल दिया कि क्या यही एक बच्चा है, सब बच्चो के जब हाफ पेंट बनेंगे तब ही बनेगा। पर जब भगवान देवी को यह बात मालूम हुई तो उसने निरजनलालजी से इसकी चर्चा की और उन्होने धर्मा के लिए अग्रेजो को सप्लाई करने वाली कम्पनी के यहाँ ले जाकर उसके नाप का हाफ पेंट बनवाया जिसे पहनकर धर्मा को बहुत खुशी हुई।

जानकी देवी पुरानी चीजो को फेका नही करती थी। उन्हे ठीक से सुरक्षित रखा करती थी। याददाश्त भी उनकी बहुत अच्छी थी, जब घर मे कोई चीज की जरूरत होती तब वे निकालकर दे देती। कोई-कोई चीज तो तीस-तीस चालीस-चालीस वर्ष पुरानी होती थी जो कौडियो के दाम मे खरीदी हुई होती थी। पर यदि नई लेनी होती तो काफी दाम लगते। यही चीज धर्मा को विरासत मे मिली।

धर्मा बैजनाथजी के साथ रांची से कलकत्ते आया। उस समय रांची से पुरूलिया तक छोटी लाईन और पुरूलिया से कलकत्ते तक बड़ी लाईन थी इसलिए पुरूलिया से गाडी बदलनी पडती थी। यह यात्रा तीसरे दर्जे मे बैठकर की। उस समय भी कलकत्ते के स्टेशन का नाम हवड़ा था। सूता पट्टी मे जोखीराम मूगराज के नाम से गद्दी थी। जहाँ गद्दी थी उस कोठी का नाम फतेद्वारी कोठी था। वह अब बदलकर पजाबी कटरा हो गया है। इसमे नीचे के तल्ले मे गोदामे और एक तल्ले पर २२ कमरे थे। पूरब मे १०, दक्षिण मे २ और पश्चिम मे १० जिनमे लोग अपनी तिजोरी, आलमारी, रैक आदि रखकर आवश्यक सामान रखा करते थे। और कमरो के सामने लम्बा दालान था जिसमे गद्दिया बिछी रहती और उसी पर बैठकर लोग काम करते रहते। उस समय टेबुल-कुर्सी का प्रचलन नही हुआ था। अलग-अलग व्यापारियो ने अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार एक कमरा

बा दो कमरा ले रखा था। गद्दियों पर कोई पार्टिशन नही था। दिन मे अपना काम करते और रात मे वही सो जाते। दो तल्ले पर एक तरफ ठाकुर बाड़ी थी दूसरे तरफ एक वैद्यजी रहते थे जो लोगो को मुफ्त दवाइया देते थे, वही कई बासे थे जिनमे लोग अपना भोजन करते। साथ ही लोगो के शौच करने के लिए पखाने बने हुए थे और स्नान करने के लिए जगह बनी हुई थी। पानी के पम्प का प्रचलन नही हुआ था इसलिए नीचे से नौकर लोग कलशो से पानी भर कर दो तल्ले मे जाकर बड़े-बड़े मट्टी के जालो (मटको) को भरते थे। इतनी बडी कोठी में जहा सैकड़ो लोग रहते थे वहाँ सिर्फ ६ पखाने थे इसलिए लोगो को नम्बर लगाना पडता था। हाथ धोने के लिए, स्नान करने के लिए नौकरो से सहायता लेनी पड़ती थी। सस्ती का जमाना था इसलिए ८-१० रुपया मासिक पर नौकर मिलते थे। और बासे मे भी दोनो समय का भोजन केवल १० रुपये मासिक में ही मिल जाता था। फतेद्वारी कोठी काफी पुरानी बनी हुई थी। सीढिया भी अच्छी नही थी। उसी रास्ते नौकर लोग पानी ऊपर ले जाते इसलिए कई बार लोग फिसल जाते। कबूतर बहुत रहा करते जिनकी "गुटरगूँ" सुनने को मिलती। पहली यात्रा मे धर्मा को गद्दी मे ही रहना पड़ा उसके लिए वह सारा नया अनुभव था। फिर बैजनाथजी ने अपने रहने के लिए नजदीक मे ही आरमेनियन स्ट्रीट में अपने परिचित गणपतरामजी बजाज के कहने पर एक छोटा कमरा ११ रुपये महीने भाडा पर लिया जो पखाने के पास था और सतोष किया कि शौच जाने की सुविधा है। इसके व्यवहार के लिए नम्बर नही लगाना पडेगा।

फतेद्वारी कोठी मे स्नेहीराम डूगरमल नाम का फर्म था जिनका ब्यापार आसाम मे भी था। उनके मालिक डूंगरमलजी लोहिया स्वास्थ्य के प्रति बहुत रुचि रखते थे। नित्य गगाजी जाते और कुछ व्यायाम भी करते। धर्मा उनके साथ गगा स्नान को जाता और गगा में तैरना सीखने का प्रयत्न करता। किन्तु तैरने की बात अपने माताजी को कभी नही बताई। डूंगरमलजी लोहिया सार्वजनिक कार्यों मे भी काफी रुचि रखते थे। वे मारवाडी रीलिफ सोसाइटी के पदाधिकारियो मे थे। आगे चलकर गोबिन्द भवन बना तो वहां के कीरतनों मे भी भाग लिया करते थे। स्वास्थ्य भी उनका बहुत अच्छा था। बैजनाथजी धार्मिक विचारो के थे इसलिए दिगम्बर जैन मन्दिर के सामने मिया कटरा के

कलकत्ता आने पर डूगरमलजी लोहिया तथा कई अन्य लोगों का स्वास्थ्य देखकर धर्मा की भी इच्छा हुई कि वह अपना स्वास्थ्य सुधारे। उस समय शोभा राम बैशाख स्ट्रीट में माहेश्वरी व्यायामशाला का अखाडा चलता था। धर्मा ने वहाँ नाम लिखाया और व्यायाम करने जाना आरम्भ किया। उस जमाने मे व्यायाम करना गुण्डे-बदमाशो का काम समझा जाता था। पडोस के कुछ लोग अपने बच्चो को धर्मा से दूर रहने के लिए कहा करते थे। धर्मा को नई चीजो की जानकारी और उसके सीखने की उत्सुकता बराबर रहा करती थी। उन दिनो महर्षिदेवेन्द्र रोड मे शाल बल्लो से बनी गोदामे थी जहां मैदा, तेल आदि का काम हुआ करता था और उसे लोग मैदा पट्टी कहते थे। एक दिन सध्या को वहां आग लगने की खबर आई। धर्मा भी आग देखने पहुँचा। देखते देखते धर्मा ठीक जहां आग लगी हुई थी वहाँ पहुँच गया। उस समय दमकलें भी कम थी व साधन भी बहुत कम थे। आग के पास एक दमकल वाला आग बुझा रहा था। उसे पाइप का हैण्डल पकड कर लम्बी भारी पाइप को खीच कर लाना था। उसने अपने अन्य साथियो के अभाव मे इधर-उधर किसी से सहयोग के लिए दृष्टि दौडाई। धर्मा ने उसका पाइप का हैण्डल पकड़ा और वह मोटी पाइप को टानकर ले आया। सयोग से उसी बीच जलती लकड़ी का टुकडा धर्मा के ऊपर गिरा जिससे उसका कपडा थोडा जल गया पर विशेष कोई क्षति नही हुई। यह बात घर आकर धर्मा ने किसी को नही बताई। मैदा पट्टी की आग ने इतना जोर पकडा कि वह १०-१२ दिनो तक रही। दूर-दूर के लोग उसे देखने के लिए आते रहे। और सारा का सारा मैदा पट्टी जलकर नष्ट हो गया। फिर इम्प्रूभमेट ट्रस्ट ने उसे खरीदकर नये ढग से बनाकर उसका नाम महर्षिदेवेन्द्र रोड रखा जहा बडी-बडी इमारतें बनी हुई है।

धर्मा स्कूल से आता था फिर भोजन करके सूता पट्टी की गद्दी मे आ जाता और वही सोया करता था। बैजनाथजी धार्मिक विचारो के थे इसलिए धर्मा को साधारण पढाई के साथ-साथ जैन धर्म की पढाई के लिए झमनलालजी पण्डित को रख दिया वे उसे सुबह पढाने आते। धर्मा सुबह नहा-धोकर मन्दिर जाता भोजन करता और फिर स्कूल चला जाता। यह क्रम २-३ वर्ष चला फिर राजा कटरा के पास हुक्का पट्टी मे कुछ लोगो ने महाविद्यालय नाम से स्कूल खोला। बैजनाथजी को कुछ मित्रो ने उस विद्यालय की शिक्षा की प्रशसा की तो उन्होने

धर्मा को वहा भर्ती करा दिया। वहां के प्रिन्सिपल मूलचन्दजी अग्रवाल थे जो पढाई के साथ-साथ सार्वजनिक कामो में भी रुचि रखते थे इसलिए वैजनाथजी से उनका परिचय था। धर्मा वहा दो वर्ष पढा। पढने के सभी विषयो मे उसकी रुचि थी पर संस्कृत उसको वहुत कठिन जान पड़ती थी क्योंकि विभक्तियो के हिसाब से शव्दो को रटाया जाता था वह उसको कठिन जान पडता था। स्कूल मे वहुत से वच्चे पढाई से वचने के लिए "माथे" मे दर्द है कहकर छुट्टी लेकर घर जाना चाहते थे। उस समय आज-कल की तरह माथे के दर्द की गोलियो का प्रचलन नही था। मूलचन्दजी को किसी ने कह दिया कि धर्मा माथे के दर्द को हटाने का मत्र जानता है इसलिए वे उसे वुलाते और लडके का माथा दर्द मत्र द्वारा दूर करने को कहते थे। धर्मा अगूठा और मध्य की अगुली से लडके का माथा जोर से दवाकर धीरे-धीरे दोनो अगुलियो को सामने ले जाता और मन ही मन "काली ककलकत्ते वाली तेरा मत्र न जाये खाली" कहकर फूँक मारता। इस तरह लड़के का माथा ठीक हो जाता और उसे घर जाने की छुट्टी नही मिलती थी। उस समय फतेह्वारी कोठी मे ही द्वारका प्रसाद जालान ने जो वैजनाथजी के मित्रो में थे, वैजनाथजी से सलाह की कि वच्चो को स्कूल की वनिस्पद घर पर ही पूरे टाइम मास्टर रखकर पढाया जाये तो पढाई अच्छी होगी। द्वारका प्रसादजी के भी दो लडके थे। एक का नाम रघुनाथ, दूसरे का श्री था। इसलिए उन्होने एक मास्टर रखा जो उन दोनो लडको और धर्मा को अग्रेजी पढाया करते थे। धर्मा की मित्रता लडको से वहुत दिनो तक रही इन्होने उम्र कम पाई। मास्टर का नाम देवेन्द्रनाथ घोष था। वे क्रान्तिकारी विचारों के थे। धर्मा को क्रान्तिकारियो का किस्सा सुनाया करते थे।

वैजनाथजी के मुकावले द्वारका प्रसादजी की आर्थिक स्थिति वहुत अच्छी थी साथ ही वे शौकीन भी थे। तीनो वच्चो की पढाई उनकी गद्दी के कमरे मे हुआ करती थी। दो-चार वार धर्मा को उनके मकान पर जाने का मौका मिला तो उसने देखा कालीतल्ला मे उन्होने अपने रहने के लिए एक-दो कमरे न लेकर एक पूरा मकान ही भाडे पर ले रखा था और रईसी ठाट लगा रखे थे। एक कमरा वैठक के रूप मे था, एक कमरा जूते रखने के लिए था जहा वीस-तीस जोडे जूते अलग-अलग समय पर पहनने के हिसाब से अलग तरह के रखे रहते थे। एक कमरा ठाकुर वाडी, एक कमरा रसोई के लिए था, एक नौकरो के लिए। एक

बार धर्मा उनके यहाँ गया उस दिन खूब पानी बरसा की चारों तरफ के रास्ते पानी से भर गए। ट्राम चलनी बन्द हो गई इसलिए दरवान भाडे की घोडा गाडी ले लाया और उसने धर्मा को उसपर बैठाकर सूतापट्टी पहुँचाया। धर्मा को आश्चर्य हुआ कि उस समय भी कालीतल्ला मे कमर जितना पानी इकट्ठा होता था। यह बात सन् १९१९ की है। जब धर्मा घोडा गाडी मे बैठा तो देखा घोडा गाड़ी के भीतर पानी तो घुसा हुआ ही है, उसकी सीटें भी पानी मे तैर रही है। धर्मा के लिए यह नया अनुभव था क्योकि राँची मे उसने ऐसा कभी नही देखा था।

राची से धर्मा जब कलकत्ता आया तो उसे यहा कई चीजें नई दिखलाई दी। जिस तरह राची मे दूध के दाम २ आना सेर था वह कलकत्ते मे ४ आना सेर था। जलेबी पैसे मे २, दही बड़ा पैसे में चार मिलते थे। यहा कलकत्ते मे जलेबी दो पैसे मे एक और दही बाडा पैसे मे एक मिलता था। फतेह्वारी कोठी के सामने मल्लिक कोठी के बीच कानिया हलवाई की बिख्यात दूकान थी जहाँ सुबह से लेकर रात तक बराबर कचौडी तथा अन्य मिठाइयो की बिक्री होती थी।

काली गुदाम के पास राम प्रताप हलवाई की एक जलेबी की दूकान थी जिसमे सुबह ५-६ बजे से ९-१० बजे तक केवल जलेबी ही बिका करती थी। वह दूकान आज भी उसी प्रकार चलती है। पुराने जमाने मे यातायात के लिए घोडागाड़ी का प्रयोग होता था। माल ढोने के लिए बैल गाडी या भैंसा गाडी काम मे आती थी। उस समय तक मोटरो और लारियो का प्रचार नही हुआ था। इसलिए सडको पर घोडो की लीद, बैलो का गोबर, भैंसो का गोबर चारो तरफ बिखरा रहता था। राँची मे सुबह मेहतर आकर मुख्य रास्तो पर झाडू दे जाते पर कलकत्ते मे झाडू तो दिया ही जाता था और सडको की धुलाई भी होती थी। उस समय कलकत्ते की आबादी १० लाख थी। भारत की आबादी ३३ करोड थी इसलिये पण्डित लोग जब चर्चा करते तब कहा करते ३३ करोड देवी-देवता है।

धर्मा को पैदल चलने का बहुत अभ्यास था। घर का सामान अनाज, मसाला आदि दरवान लोग खरीद कर लाते। जब कभी दरवानो को समय नही मिलता तो धर्मा को कहने पर वह बडी प्रसन्नता से कई बाजारो यानी मछुआ बाजार, राजा कटरा, तुला पट्टी आदि स्थानो मे जाँच पडताल कर के जहा सस्ता

होता वही से खरीदता। धर्मा ने जैन पण्डित से जो शिक्षा ली उससे उसका अभ्यास इतना बढा कि जैनियो की शास्त्रीय सभा मे जब भी बैठता तो इस तरह के प्रश्न करता और तर्क-वितर्क करता कि लोग देखकर और सुनकर चकित रह जाते। कलकत्ते मे उस समय ४ मन्दिर थे —एक-नया मन्दिर चितपुर रोड पर दो-बड़ा मन्दिर, १, बैसाख लेन, तीन-पुरानी बाडी, ३५, बृज दुलाल स्ट्रीट चार-बेलगछिया मन्दिर, बेलगछिया ट्राम डिपो के पास। साल मे एक बार कार्तिक पूर्णिमा को रथ यात्रा का जूलूस चावल पट्टी के मन्दिर से निकलकर बेलगछिया जाया करता था। उसे देखने के लिए कलकत्ते के आस-पास के मुहल्लो से तथा दूर-दूर से लोग हजारो की सख्या मे लोग आते। जिस रास्ते से यात्रा निकलती उसमे लाईन लगाकर देखते और यात्रा मे भी शामिल होते। स्त्रियाँ मकानो के बरामदे मे बैठकर देखती। उस जमानें मे दिगम्बरियो मे दयाचन्दजी, वृद्धिचन्दजी रामजीवनदासजी और सरावगी का बोलबाला था। उनके परिवार के लोग विशेष प्रकार का कपड़ा पहनकर अगुवाई मे रहा करते थे और श्वेताम्बरियो मे बद्रीदासजी जौहरी के परिवार के लोग जवाहरात पहनकर निकला करते थे। उनके चारो तरफ उनकी रक्षा के लिए हथियार लिए चौकीदार रहा करते थे।

धर्मा भी इस यात्रा मे सभी के साथ बेलगछिया पैदल जाया करता था। यह यात्रा सैकडो वर्षो से आज भी निकलती है। पहले श्वेताम्बरियो की यात्रा निकलती है जो मानिकतल्ला मे बद्रीदासजी के बगीचे जाती है। पीछे दिगम्बरियो की जो बेलगछिया जाती है।

भादो सुदी पचमी से चतुर्दशी तक जैनियो का विशेष पर्व माना जाता है। इन १० दिनो मे पूजा-पाठ, व्रत-उपवास लोग अपनी शक्ति के अनुसार करते है। धर्मा भी पूजा-पाठ करता। शास्त्र-सभा मे बहस करता। चतुर्दशी के दिन सारे मन्दिरो के दर्शन कर बाली और उत्तरपाडा के दर्शन के लिए स्टीमर, से जाता। पैदल चलने का अभ्यास इतना अधिक था उसे कि जगन्नाथ घाट से बाली तक स्टीमर पर, बाली से उत्तरपाडा पैदल जाता, उत्तरपाडा से जगन्नाथ घाट स्टीमर से आता। चतुर्दशी के दिन घर के सभी लोग उपवास करते थे, धर्मा को भी उपवास करने को कहा जाता पर वह नही करता।

पढाई के बाद धर्मा को लोगो की जीवनी और यात्रा सम्बन्धी पुस्तकें पढने का शौक था। उस समय स्वामी सत्यदेव परीव्राजक की कई पुस्तकें, खासकर

अमेरिका यात्रा का अनुभव उसने पढ़ा। इससे उसके मन मे विदेश भ्रमण की अभिलाषा जागी। यद्यपि उसके दूसरे साथी उपन्यास पढने मे रुचि लिया करते। पढने के लिए दिगम्बर जैन युवक समिति द्वारा स्थापित महावीर पुस्तकालय, पास मे ही, मियाकटरा के एक तल्ले पर था। आगे चलकर महाबीर पुस्तकालय के जीर्णोद्धार मे धर्मा का बहुत बड़ा हाथ रहा। मनोहरदासजी जालान कलकत्ते में बासतल्ला गली में रहा करते थे। कपड़े के व्यापारी थे साथ-साथ सट्टे का व्यापार भी करते थे। बैजनाथजी जब कलकत्ते आए तो मनोहरदासजी ने बैजनाथजी को सट्टे से दूर रहने की सलाह दी। एकबार बद्रीदासजी जालान की पत्नी हरियादेवी जो फतेहपुर मे अकेली रहा करती थी, गगासार की यात्रा करने कलकत्ते आई और मनोहरदास जी के पास ठहरी। मनोहरदासजी ने उनके सामने एक प्रस्ताव रखा कि गगासागर की यात्रा के बाद वह देश न जाए कलकत्ते मे ही रहे। मनोहरदास के चार पुत्र थे—माधव प्रसाद, मदनलाल, नन्दलाल, और गौरीशकर। नन्दलाल को उन्होने अपने छोटे भाई दुर्गादत्त की विधवा पत्नी को गोद दे दिया और अब छोटे पुत्र गौरीशकर को उन्हे गोद देना चाहते थे। उनका कहना था इस बच्चे को तुम पालो तुम्हारा मन लग जाएगा साथ ही तुम्हारे वश का नाम भी चलेगा।

बद्रीदास की पत्नी ने कहा मेरे पास कोई धन-दौलत नही है, मैं इस बच्चे को गोद लेकर इसका भविष्य खराब नही करना चाहती। इस पर मनोहरदासजी ने स्पष्ट किया कि यह बात मुझे मालूम है। मै लिखा-पढी मे स्पष्ट कर दूँगा कि लड़का तुम्हे गोद तो दे रहा हूँ पर मेरी सम्पति मे इस लडके का अन्य लडको की तरह बराबर का हिस्सा रहेगा। इस पर उन्होने मनोहरदासजी से कहा कि मेरी दोनो लडकियाँ कलकत्ते मे है मै उनसे सलाह कर बात पक्की करूँगी। फिर उन्होने गगासागर यात्रा के बाद अपनी लड़की मोहरी देवी से, जो जयदयालजी सराफ को व्याही थी, जानकी देवी जो बैजनाथजी को व्याही थी, सलाह की। उन्हे मनोहरदासजी का प्रस्ताव बड़ा अच्छा लगा क्योकि उनके इस प्रस्ताव से कलकत्ते मे ही माँ और भाई दोनो घर बैठे मिल गए। सयोग से मोहरी देवी ज्यादा उम्र नही पा सकी और ५-७ वर्ष बाद ही सग्रहणी रोग से ग्रस्त होकर स्वर्ग सिधार गई। जयदयालजी भी मधुमेह के रोगी थे अधिक उम्र नही पा सके। धर्मा ने मनोहरदासजी, माधवप्रसादजी, मदनलाल, नन्दलाल आदि ममेरे

भाइयो के जीवन में वहुत उथल-पुथल देखी। माधव प्रसादजी और गौरीशंकर मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के प्रधान मन्त्री चुने गए।

प्रथम विश्व-युद्ध समाप्त हुआ इससे बाजारो मे बहुत उलट-पलट आई। धर्मा ने वैजनाथजी की वहुत अच्छी अवस्था और खस्ता अवस्था दोनो देखी। देश मे स्वतन्त्रता का आन्दोलन भी छिड गया था। एनीवेसेन्ट, जो भारतीयों को स्वतन्त्रता दिलाने की पक्षधर थी, उनका जुलूस देखा, साथ ही गांधीजी का जुलूस भी देखा। गाँधीजी की मीटिंग जाजोदिया के प्रयत्न से उनके मकान के बगल मे ही पश्चिम की ओर साथ ही बागड बिल्डिंग के दक्षिण फुट पर राजेन्द्र मल्लिक के छोटे से मकान के बैठक खाना मे जो आज भी उसी हालत मे है—एक बड़े कमरे के नीचे गांधीजी की बैठक हुई। गाधीजी ने अपने भाषण के बाद लोगों से स्वराज फण्ड के लिए रुपये मागे, लोगो ने यथाशक्ति, जिनके पास जो था, दिया। धर्मा पीछे कैसे रहता उसके पास कुछ नही था, हाथ मे अनन्त पहने था। उसने उसे उतार कर दे दिया। घर आकर जब उसने बताया तब वैजनाथजी नाराज होने की बनिस्पद खुश हुए। कलकत्ते मे उस समय 'भारत मित्र' और 'कलकत्ता समाचार' दो दैनिक चलते थे। 'भारत मित्र' पुरातन विचारो का समर्थक था। मूलन्दजी सुधारक विचार के थे इसलिए उन्होने महाविद्यालय का काम छोडकर "विश्वमित्र नामक" एक दैनिक और प्रकाशित कर दिया। इसका दाम एक पैसा था और कार्यालय नारायण प्रसाद बाबू लेन मे था। वैजनाथजी ने जब रुपय कमाया तब एक घोडा गाडी भी खरीदी।

घटना १९२६ की है

कलकत्ते का बडाबाजार और बडाबाजार की सूता पट्टी, इसी सूता पट्टी के सूत के व्यापारियो के सम्मिलित प्रयास से राजराजेश्वरी की भव्य पूजा हरिसन रोड स्थित बाबूलाल अग्रवाला की धर्मशाला मे वर्षों से हुआ करती थी। दूर-दूर से लोग दर्शन के लिए आते थे। कई दिनो तक रंगारग सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ करते थे। पूजा के शेष दिन, विसर्जन के पहले, उस वर्ष, जब नगर परिक्रमा के लिए झाँकी निकली और हरिसन रोड एवं सेन्ट्रल एवेन्यू के बीच भगवानदास बागला के अस्पताल के सामने पहुंची तो सामने के फुट पर एक छोटा-सा मस्जिद था, जिसका नाम दीना मस्जिद था। जो अब भी है, वही मस्जिद के सामने मुसलमानो ने

बाधा पहुंचाई और दगा शुरू हो गया। दगा बड़ा ही भयकर था और बीस-पच्चीस दिन तक चलता रहा। मस्जिद के पीछे मुसलमानों की बस्ती और बागला पुस्तकालय के पीछे हिन्दुओ की बस्ती। इसी तरह चितपुर रोड और हरिसन रोड की मोड के दक्षिण जामा मस्जिद, लालबाजार तक मुसलमानो की बस्ती और इघर उत्तर तरफ हिन्दुओं की बस्ती थी।

सयोग की बात है, उस समय मियाँ कटरा के पीछे बगल की गली बाबूलाल लेन यानी नाईटोला मे, भुनभुनवाला के मकान मे अपने माता-पिता के साथ धर्मा रहा करता था। उसी गली में पेशावरी व्यापारी फलो का थोक व्यापार करते थे। धर्मा के पिता और परिवार के लोगो के सामने वहाँ रहना एक आतकपूर्ण समस्या थी। जब पेशावरी व्यापारियो को उनकी घबराहट का पता चला तो उन्होने बहुत भरोसा दिया, हिम्मत बधाई, कहा, जबतक हमलोगो की जान रहेगी तबतक आपलोगो का बाल भी बांका नही होगा। पर विपत्ति कब, कैसे, किस रूप मे आए, यह कौन जानता है। इसी विचार से धर्मा के पिताजी बैजनाथजी वह मकान छोड़ कर १७३ हरिसन रोड के पीछे ९ नम्बर शम्भू मल्लिक लेन वाले मकान के दो तल्ले पर रहने लगे।

यह दगा काफी दिनों तक चला। उस समय धर्मा पर विदेश यात्रा की धुन सवार थी—कैसे जाया जाए, कपडे क्या हो, वहा रहाव के लिए क्या करना पडता है आदि आदि बातो की जानकारी के लिए वह बासुदेवजी सराफ से समय-असमय मिलने जाया करता था। वासुदेवजी सराफ धर्मा की तरह ही परिवार और घरवालो के विरोध की परवाह न कर विदेश यात्रा कर चुके थे। सराफजी कोलुटोला के पास १४४, सेन्ट्रल एवेन्यू मे रहा करते थे। धर्मा दगे के विकट दिनो मे भी निर्भय उनसे मिलने जाया करता था।

उस दगे मे समाज के नवयुवको ने हिन्दू मुहल्लो मे मुसलमानो को और मुसलमान मुहल्लो मे हिन्दुओ को बचाने का अद्भुत साहसपूर्ण कार्य किया था। साथ ही बिना किसी भेद-भाव के क्षतिग्रस्त हिन्दू मुसलमानो की डट कर सेवा की थी। उन व्यक्तियो मे पद्मराजजी जैन, राष्ट्रकवि माधवजी शुक्ल, प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका, घनश्यामदासजी बिड़ला, बसन्तलालजी मुरारका, रामकुमारजी भुवालका आदि थे। धर्मा इस सेवा कार्य मे सहयोग नही दे पा रहा था।

वैजनाथजी से परिचय के कारण एकबार घनश्यामदासजी ने धर्मा को टोका। आप एक नवयुवक हैं, समाजसेवा के कार्यों से अलग रहने से कैसे काम चल सकता है। धर्मा ने उनसे उत्तर मे निवेदन किया : आप यह मानकर चलें कि हमारे बीच एक व्यक्ति अस्वस्थ है। और फिर आपलोग जैसे अनुभवी काम मे लगे हैं तो सफलता मिलेगी ही।

आठ साल की अल्पायु मे ही धर्मचन्द की सगाई किसी तीन साल की बच्ची के साथ कर दी गई थी। सन् १९२० मे धर्मचन्द को विवाहसूत्र में बाध देने का निश्चय किया गया। धर्मचन्द अब निरा बालक नही रह गया था। भावों और आवेगो से भरा सोलहवां साल लग चुका था उसे। आखो में इन्द्रधनुषी सपने सजोए, यौवन की देहरी पर खडा था धर्मचन्द। वैवाहिक जीवन का पूरा अर्थ न समझने पर भी कोई चाद-सी सुन्दर बहू शर्म से घूँघट निकाले उसके मन-मन्दिर में प्रवेश कर चुकी थी। पिता ने जिस लडकी के साथ उसका भविष्य जोडना चाहा था उसकी एक झलक देखे बिना धर्मचन्द विवाह करना नही चाहता था। दबी जबान से धर्मचन्द ने अपने मन की बात माँ के आगे सरका दी। पर पिता के दबदबे के आगे उसकी बात भला कौन सुनता। लोगों ने जब लडकी देखने की बात सुनी तो नाई ब्राह्मण जो सगाई कराते हैं उनके विवाह बिना देखे होते है, यह सगाई तो घर वालो ने देख सुनकर आज से आठ साल पहले की थी। अब लडकी कोई गाजर मूली, साग-भाजी का सौदा थोड़े है जो दिखाई जाए। मन की उधेडबुन के साथ धर्मचन्द ने विवाह की रश्म अदा कर दी। जिसे आना था वह बहू बनकर घर मे आ गई।

पिता ने सोचा था कि पत्नी का मोह और काम की जिम्मेवारी से धर्मचन्द की चचल प्रकृति को लगाम लग जाएगी। पर विधि के विधान को कौन टाल सकता है। इतने सारे बन्धनो के बावजूद धर्मचन्द का घुमक्कड़ मन दुनिया की सैर करने के लिए उतावला होता गया। नन्हे मन की यह महत्वाकाक्षा सचमुच अद्भुत थी। उस जमाने मे देश मे भी एक प्रदेश से दूसरे की यात्रा करना जोखम से खाली नही था। ऐसी अवस्था में समुद्र के रास्ते दुनिया की यात्रा के लिए निकलने की बात कोई सिरफिरा ही सोच सकता था। कहा उत्ताल तरगो से आलोड़ित महासागर का अनन्त विस्तार और कहा उसके पार जाने का एक

नन्हे-का बाल-संकल्प। पर होनहार की असाधारण शक्ति बचपन में ही प्रकट होने लगती है। आखिर बड़े साहस और आत्म विश्वास के साथ धर्मचन्द ने अपने योरप भ्रमण के संकल्प को पिता के सामने रख ही दिया। सुनकर बैजनाथजी तो अवाक् रह गए।

धर्मचन्द अपने पिता का आदर तो करता था, किन्तु उसकी गहरी समझ ने उसके विद्रोही मन को यह भी एहसास करवा दिया कि रूढिग्रस्त जड़ परम्पराओ से बंधे पिता के अनुशासन को स्वीकार कर लेने से वह अपनी महात्वाकांक्षाओ की पूर्ति नही कर सकेगा। प्रगतिशील युग की दौड मे पिछड कर रहना उसको स्वीकार नही था। अतः प्रारम्भ से ही उसने स्वावलम्बी होने का रास्ता अपना लिया था। विवाहोपरान्त वह उस समय महात्मा गांधी रोड और रवीन्द्र सरणी की मोड के पास जैन मन्दिर के सामनेवाली गली में ही रहता था। पास ही श्री महावीर पुस्तकालय मे जाकर भ्रमण सम्बन्धी पुस्तकें पढता और प्रातः उठकर "विश्वमित्र" कार्यालय जाता जो उस समय कालेज स्ट्रीट मार्केट के पास ही था। श्री मूलचन्दजी वहा रहा करते थे और अपनी देख-रेख मे पत्र निकलवाते थे। धर्मचन्द "विश्वमित्र" की कुछ प्रतियां लाता और महात्मा गाधी रोड और रवीन्द्र सरणी के मोड़ पर खड़ा होकर बेच देता। एक बार श्री मूलचन्दजी ने उसे देखा, श्री बैजनाथजी से भी उनका परिचय था, बैजनाथजी की आर्थिक स्थिति को वे जानते थे। जब धर्मचन्द से उन्होने बातें की तो उसने उनसे अपने स्वावलबी जीवन के विचार बताए। रहने का स्थान, खान-पान कपडे तो घरवाले देते ही थे। कुछ हाथ खर्च निकाल लेने की योजना धर्मचन्द ने उनसे बताई।

आगे चलकर जोखीराम मूगराज को टाटा की एजेन्सी मिली, उसके माल बेचने के लिए बिहार, उत्तर प्रदेश, पजाब आदि प्रान्तो मे घूमना पडता था। उस काम को उसने कई वर्षों तक वेतनभोगी कर्मचारी के रूप मे किया और हर महीने अपने वेतन के रुपये लेकर बैंक मे जमा करता रहा।

जब धर्मचन्द ने योरप भ्रमण पर जाने का प्रस्ताव पिता के सम्मुख रखा तो पिता ने इस कार्य को पारिवारिक और सामाजिक मर्यादा के विपरीत समझ कर उसको किसी भी प्रकार की आर्थिक मदद करने से इन्कार कर दिया। धर्मचन्द तो यह बात पहले से ही जानता था। उसने अपनी स्वय की कमाई के

बल पर ही योरप भ्रमण करने की तैयारी की। वह टाईपिंग, फोटोग्राफी, मोटर चलाना आदि कई हुनर जानता था। उसके मन मे यह विश्वास था कि जरूरत पड़ने पर अपनी इस जानकारी के सहारे कमाता हुआ वह अपनी यात्रा पूरी कर लेगा। आत्मविश्वास की यह पराकाष्ठा थी।

मात्र वीस वर्ष की अल्पायु में योरप भ्रमण का यह निश्चय साधनहीन धर्मचन्द की प्रौढ मानसिकता और प्रखर आत्म-विश्वास का द्योतक था। यह यात्रा किसी अडियल वच्चे की सनक मात्र नही थी, वल्कि अंधेरी गलियो मे भटकते हुए पुरातनपथी मारवाड़ी समाज के अवचेतन मे नए प्रकाश की प्राप्ति के लिए चलने वाली कसमसाहट का प्रचण्ड विस्फोट था। यह नियति की असीम अनुकपा ही रही होगी कि मध्यवित्तीय घराने में जन्मा सीकिया (धर्मचन्द) का इतिहास को यह कठिन मोड देने वाला सकेत-विन्दु वन सका। कौन कह सकता है कि नई दुनिया की खोज मे निकले इतिहास-प्रसिद्ध वास्कोडिगामा के मनोवल से धर्मचन्द का मनोवल कुछ कम था।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे इस घटना के विस्तार मे जाने का न यहां अवकाश है, न आवश्यकता। यह अद्भुत वालक धर्मचन्द ही था जो समस्त वाधा-निषेधों की अवहेलना करता, ताल ठोक कर अकेला ही चल पड़ा। अजनवी दुनिया की सैर करने। धर्मचन्द से पहले जी० डी० विड़ला जैसे समृद्ध घराने के कुछ एक मारवाडी योरप-यात्रा पर गए अवश्य किन्तु अपनी औकात की सीमा लांघ कर दुस्साहसिक यात्रा पर निकलने वाला उस समय तक प्रथम युवा धर्मचन्द ही था। यह यात्रा अजीव इस रूप में भी थी कि न कोई विदाई-समारोह, न किसी की शुभकामना, न किसी के द्वारा उत्साह-वर्द्धन। उस समय तक हवाई जहाज की यात्रा आरम्भ नही हुई थी। पानी के जहाज से यात्रा करनी पडती थी। वम्वई से हर सप्ताह जहाज जाया करते थे। लन्दन तक १२ दिन लगते थे। रांची नामक जहाज में सीट रिजर्व हुई। १ जनवरी, १९२९ को जहाज रवाना होने वाला था। वैजनाथजी पहुंचाने गए थ। वे अन्तिम समय तक उसे समझाते रहे कि विदेश-यात्रा न करे। धर्मचन्द अपने विचार वदलने को तैयार नही था। उसने यात्रा खर्च के लिए रुपये नही मागे केवल पैर छूकर आशीर्वाद लिया और लम्वी यात्रा के लिए रवाना हो गया।

विक्षोभ और बौखलाहट

विदेश-यात्रा समाप्त कर धर्मचन्द २९ जुलाई, १९२९ को करांची के हवाई अड्डे पर उतरा। करांची में सरावगी तथा मारवाड़ी समाज के अन्य लोगो ने धर्मचन्द का उत्साह-जनक स्वागत किया। करांची मे धर्मचन्द सेठ ताराचन्द घनश्यामदास के यहाँ ठहरा। दूसरे दिन रायबहादुर चम्पाराम मोतीराम के मन्दिर मे बडे प्रेम से पूजन किया। पहली अगस्त को स्थानीय मारवाडी युवक-सभा की ओर से पार्टी दी गई जिसमे अच्छी तादाद मे युवको ने भाग लिया। दूसरे दिन सेठ शिवरतनजी मोहता ने अपने बगीचे मे पार्टी दी जिसमे सरावगी, अग्रवाल और माहेश्वरी समाज के सैकड़ो सम्माननीय व्यक्ति उपस्थित थे। उसी दिन सध्या को रायबहादुर सेठ मोतीलाल गोवर्द्धनदास की गद्दी मे मारवाड़ी युवक सभा द्वारा आयोजित गोष्ठी मे धर्मचन्द ने अपनी विदेश-यात्रा के अनुभव सुनाए। वही से वे तीर्थ-यात्रा करते हुए कलकत्ता के लिए रवाना हुए।

इधर कलकत्ता के सरावगी समाज मे, धर्मचन्द के वापस आने की खबर स भीषण हलचल मची हुई थी। खण्डेलवाल पचो ने धर्मचन्द को जाति से बहिष्कृत कर देने के इरादे से पचायत बुलाई। कहते हैं श्री बलदेबदासजी सरावगी पंचायत बुलाने वालो मे प्रमुख थे। धर्मचन्द को समाज-बहिष्कृत करने के लिए तात्कालिक धर्म और समाज के ठेकेदारो ने जो जोरदार मुहिम चलाई थी उससे सम्बन्धित कुछ सामग्री हम यहा प्रस्तुत कर रहे है। इससे उस समय की सामाजिक मानसिकता को समझने मे सहायता होगी—

पचायत की कार्यवाही रात को तीन बजे तक चली और बिना किसी निर्णय के समाप्त हो गई। "स्वतत्र' का सवाददाता लिखता है—"लोगो के विचारो से जान पडा कि जैन धर्म उदारतापूर्वक विलायत यात्रियो को शरण देता है। विलायत यात्रा से सनातन धर्म भले ही डूबता हो, जैन धर्म नही डूबता। अन्त मे रात को तीन बजे पचायत समाप्त हुई। बहिष्कारवादियो की दाल न गली। विलायत यात्रा के विरोध मे चलने वाले इस आन्दोलन का साथ देनेवाले कुछ स्वयभू धर्म-रक्षको और समाज सेवियो ने अपना अलग मच तैयार किया।

'अग्रवाल महापचायत' के मच से अशान्ति और फूट के बीज बोए जाने लगे। कलकत्ता से 'मारवाड़ी अग्रवाल-सरावगियो की घोषणा' शीर्षक से एक परचा

निकाला गया जिसमे विलायत यात्रा से लौटे धर्मचन्द के साथ किसी प्रकार का खानपान तथा जातीय सम्बन्ध न रखने का अनुरोध किया गया। इस परचे पर फतेहपुर, रामगढ, सुजानगढ, गुड्ढा, रतनगढ, लक्ष्मणगढ़ और अलवर आदि स्थानो के करीब ८० लोगो के हस्ताक्षर थे। यह अपील 'भारत-मित्र' में दिनाक ११-११-२९ को छपी। धर्म भीरू लोगो द्वारा चलाए गए इस आन्दोलन की पृष्ठभूमि मे कोई सैद्धान्तिक तर्क न रहकर कुछ बहके हुए लोगो का इर्ष्या और द्वेप भरा दुराग्रह ही अधिक था।

कलकत्ते के जैन समाज मे विलायत की बात करने वाले धर्मचन्दजी को अशांति की सम्भावना थी। उसे दूर करने के लिए का० सु० बर बुधवार सं० १९८६ को कलकत्ता निवासी समस्त दिगम्बर जैन धार्मिक जातियो की पंचायत बैठी जिसमे बैजनाथजी सरावगी ने अर्जी पेश की कि मेरे पुत्र धर्मचन्द के अनार्य देशो मे गमन के निमित्त जो समाज मे हलचल मच रही है उसके दूर करने के लिए जो हुक्म आप देवेंगे वह मुझे व मेरे पुत्र के लिए नम्रतापूर्वक पालनीय होगा। इस अर्जी पर बैजनाथजी तथा धर्मचन्दजी दोनों की सही थी।

इस पर पचायत मे युक्ति प्रत्युक्ति पूर्वक बहुत देर तक मथन होता रहा, जिसका निर्धारण हुआ कि उक्त व्यक्तियो को प्रायश्चित-विधान से निर्दोष कर लिया जाए, इसके लिए हम दोनो को नियत किया अत. हम ने आगे लिखा प्रायश्चित विधान दोनो के लिए नियत करते है। सरावगी गृहस्थ के लिए यह आवश्यक है कि गृहस्थाश्रम का पालन करने के लिए देश, नगर, घर तथा भोजनशाला, शयनघर ऐसे हो जहां पर आर्य पुरुषो का पड़ोस और संगति हो, जहा पर अनार्य म्लेच्छो की सगति निरतर हो वह देश, स्थान योग्य नही। उसमे रहने से धार्मिक आश्रमो की जड़ खराब हो जाती है जिससे धर्म-संस्कारो के बिना धार्मिक व्यवस्था बिगड़ जाती है। धर्मचन्दजी के सस्कार और धर्माचार कई प्रकार के अनार्यों की संगति से, खान-पान की व्यवस्था ठीक न होने से निर्दोष समझे गये है अत उनके दोपों को हटाने के लिए प्रायश्चित-विधान की आवश्यकता है जिससे उनका साहस ऐसी प्रवृत्तियो मे फिर न होवे। प्रायश्चित का अर्थ पापो को दूर करना है। अत. धर्मचन्दजी को नीचे लिखा प्रायश्चित विधान करना होगा।

यह प्रायश्चित कम-से-कम एक वर्ष मे पूर्ण करना होगा—

उपवास ५, नीरस एकासन ५०, एकासन १० तथा सम्मेद सिखरजी, गिरनारजी और सोजा गिरिजी इन तीर्थ क्षेत्रो की वन्दना। प्रतिदिन णमोकार मन्त्र की एक-एक जाप एक वर्ष करना, कबूतरो के लिए पाँच मन दाना गेरना, अपाहिजो के लिए रोटी पाच मन की, अनार्य देश गमन निषेध, ट्रस्ट के लिए ३१) रु० और जैन औषधालयो के लिए ५१) रु०, दिगम्बर जैन धार्मिक सस्थाओ के लिए तथा जैन समाचार पत्रो के लिए ३०१) रु० (इनकी नामावली नीचे दी गई है) कलकत्ते के चारो श्री दि० जैन मन्दिरो के लिए १०८) रु०।

उपर्युक्त प्रायश्चित विधान पूर्ण होने पर ही धर्मचन्दजी को निर्दोष माना जाएगा। अन्त मे कर्म दहन पाठ पूजन, हवन और शान्ति विधान किया जाए। धर्मचन्द के विलायत यात्रा को लेकर जो आन्दोलन कलकत्ते के जैन समाज मे चला वह एक व्यक्ति विशेष की कहानी मात्र न रहकर इतिहास का एक ऐसा दस्तावेज बन गया है जिसमे तात्कालिक समस्त जन समाज की धार्मिक मान्यता, सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक व्यवस्था और सम्पूर्ण जीवन-दर्शन प्रतिबिम्बित होता है। जड-संस्कारों से मुक्त होकर नई चेतना और प्रकाश की प्राप्ति के लिए समाज के भीतर ही भीतर जो कसमसाहट और भावात्मक द्वन्द्व चल रहा था उसको अभिव्यक्ति देने का माध्यम बना धर्मचन्द के विलायत प्रवास को लेकर होने वाला सघर्ष। न केवल विलायत यात्रा बल्कि विधवा-विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, छूआछूत और जातिगत ऊँच-नीच जैसे अनेक प्रश्न इस संघर्ष के साथ जुड़े और मुखरित हुए। यह एक भावनात्मक विस्फोट था जिसने सुसुप्त समाज को झकझोर कर जगा दिया और सामूहिक विचार-मन्थन को एक नई दिशा दी। नई चेतना की इस ऊष्मा ने जैनेतर समाज मे भी गरमाहट पैदा कर दी थी। फिर भी जड परम्परावादी लोगो की पकड समाज पर इतनी मजबूत थी कि उससे निकल पाना बड़ी-बड़ी हस्तियो के लिए भी दुरूह कार्य था। बहुचर्चित खेतान और बिड़ला जैसे परिवारो को भी साधारण कारणो को लेकर सामाजिक बहिष्कार का अभिशाप वर्षों झेलना पडा।

इन्दौर के प्रख्यात सेठ सर हुक्मचन्दजी जैसे व्यक्ति को कलकत्ते आकर समाज के सामने इस बात की सफाई पेश करनी पड़ी कि उन्होने विलायत यात्रा

से लौटे धर्मचन्द को अपने रंगमहल मे ठहरने की सम्मानजनक सुविधा कैसे और क्यो दी ? वस्तुत यह शुभ सयोग और सौभाग्य ही कहा जाएगा कि धर्मचन्द जैसा साधारण हैसियत का आदमी ऐसी प्रचण्ड सुधारवादी मुहिम का अगुआ हो गया। अव वचकाना समझा जाने वाला धर्मचन्द वहुचर्चित व्यक्ति धर्मचन्द सरावगी वन चुका था। समाज द्वारा होने वाले इस अन्याय और अविवेकपूर्ण व्यवहार ने धर्मचन्दजी को और अधिक झुझारू व्यक्ति के रूप मे खडा कर दिया। निरन्तर होने वाले प्रहारो और अत्याचारो की आग मे तप-तप कर सोना कुन्दन वनने लगा।

१९२९ मे जव धर्मचन्दजी स्वजन, परिजन, समाज के मना करने पर भी योरप गए, लौट आए, यात्रा से रहन-सहन का ज्ञान वढा। उस समय धर्मचन्दजी ९, शम्भू मल्लिक लेन मे रहते थे। यह मकान १७३, हरिसन रोड की गद्दी के पीछे ही है। २ तल्ले पर ४ कमरे ४० रुपए महीने किराया पर थे। एक कमरा माताजी के लिए, एक कमरा धर्मचन्दजी के लिए, एक भण्डार घर और एक कमरा आने-जाने वाले मेहमानो के लिए खाली रहता था। कमरे किराए पर थे पर धर्मचन्दजी ने मकान मालिक से वात कर अपने कमरे मे अपने खर्च से पाइप लगाई, आधुनिक रग करवाया। कमरे के पीछे वरामदे मे टाइल लगवाकर नहान घर वनवाया उसमे फौवारा लगवाया, टोटी लगवाई जिससे हर समय पानी आता रहे। मकानो मे उस जमाने मे विजली के पप से पानी नीचे से ऊपर नही ले जाया जाता था। नहान घर मे लगी टोटियों और फुहारो मे हर समय पानी आता रहे इसलिए वगल के भण्डार घर मे थोडी ऊँची जगह पर एक टकी वैठा दी थी और काम करने वाले नौकर से व्यवस्था कर ली थी कि घर के लिए आवश्यक पानी भरने के अलावा टंकी मे ८ कलशी रोज पानी डाल दिया करे। इस तरह धर्मचन्दजी का कमरा आकर्षक वन गया था। मिलने-जुलने वाले आते तो मुग्ध हो जाते।

१९३१ की १ जनवरी को प्रथम पुत्री शान्ति का जन्म हुआ। लडकी का जन्म उस जमाने मे खुशी की वात नही मानी जाती थी। लोग लडके के जन्म पर कई दिनो तक ताश, चौपड खेलकर खुशिया मनाते थे। खेल खिलाते थे। जिसके घर पुत्र जनमता था उनका घर हँसी की गूँज से गुलजार रहता कई

दिनो तक। और लड़की के जनमने पर यह सब जैसे वर्जित था। लड़की जनमी है बस जनम गई है। मगर जिसकी लगी लगन पुरानी मान्यताओं को तोड़ने और नए रिवाजों को जोड़ने में थी वह इस स्थिति को कैसे मानता।

धर्मचन्दजी ने पुत्री के जन्म पर उतनी ही खुशी मनाई जितनी समाज पुत्र के जन्म पर मनाता है। वह सब कुछ उन्होने किया ताश, चौपड, गाना-बजाना, स्वागत-सम्मान यहा तक कि अखबारो मे समाचार-सूचनाएँ भी छपवाई। ताकि अपने-पराए, गाव, समाज यह जान लें कि क्या लड़की क्या लड़का संतान सतान है।

धर्मचन्दजी नित्य दिगम्बर जैन नया मन्दिर जाया करते थे जो हरिसन रोड के चौराहे पर बागड बिल्डिग की बगल मे चितपुर रोड पर है। और जब मन्दिर से लौटते तो शम्भू मल्लिक लेन की गली मे सैकडो भिखारी उनके आने की प्रतिक्षा मे बैठे रहते थे। क्योकि धर्मचन्दजी उन्हे पराठे बांटकर फिर भोजन करने जाते। यह उनका नित्य का नियम था। वे रोज दो रुपया के पराठे बांटते। उस जमानें मे दो रुपए के आधा मन पराठा दाल, साग-सब्जी मुफ्त मे मिला करते थे।

क्योकि आटा का भाव चार रुपया मन था। पराठे बांटने का क्रम कई वर्षो तक चलता रहा। अचानक एक दिन यह पराठे बांटने का सिलसिला टूट गया। बात यह हुई कि भिखारियो मे एक भिखारी अपनी लाठी सडक पर सामने रखकर बैठा था जिससे एक वृद्ध टकरा कर गिर पडा और गिरे हुए उस वृद्ध से सहानुभूति दरसाने के बजाए भिखारी उस पर टूट पड़े थे। बुरी तरह उसे लाछित कर रहे थे। उसी दिन से धर्मचन्द ने यह पराठा बाटने के क्रम बन्द कर दिया।

इधर परिवार और परिजन के लाड प्यार मे शाति ५ वर्ष की हुई। तब १९३५ में द्वितीय सतान निर्मल कुमार का जन्म हुआ। परिवार की, दादा-दादी, की, माता-पिता की खुशी जहां द्विगुणित हुई, वही शाति की शिक्षा-दीक्षा का दायित्वबोध धर्मचन्दजी को हुआ। शान्ति को पढने के लिए घर पर एक शिक्षिका नियुक्त हुई जिसका नाम शान्ति ही था। ये वे दिन है जब लड़कियो की शिक्षा अनुचित नही तो उचित भी नही मानी जाती थी। स्त्री शिक्षा नारो

मे उजागर थी पर प्रथा मे दुविधाजनक। शान्ति पढ रही थी निर्मल परिवार के पलको के पालने मे झूल रहे थे।

अचानक एक दु सवाद धर्मचन्द को व्याकुल कर गया। धर्मचन्द की वडी वहन भगवान देवी जो राँची के मोदी परिवार मे व्याही थी उनका पति डायवीटीज जैसे भयानक रोग से दिन-प्रति दिन क्षीण होते जा रहे थे। राची मे इस रोग के इलाज की समुचित व्यवस्था नही थी इसलिए उन्हे कलकत्ता वुला लिया गया। शम्भू मल्लिक लेन वाले मकान के चौथे खाली कमरे मे उन्हे रखा गया। डाक्टरी शुरू हुई मगर रोग सुधरने के वजाय इतनी विगडी कि भगवान देवी के पति, परिवार के जमाई को गेग्रीन का फोड़ा हो गया जिसका इलाज कठिन था। दिन भर मे तीन-तीन सुइया पडती, नर्स घाव की सफाई के लिए आती। उनके दुःख मे परिवार दुःखी और चिन्तित रहने लगा था। सभी भगवान देवी के सौभाग्य की कामना मे लीन थे।

धर्मचन्दजी जव अपने पिताजी के साथ आरमनी स्ट्रीट के मकान से उठकर मिया कटरा के पीछे नाई टोला मे झुनझुन वाले के मकान मे आए तो हरिसन रोड के भगवानदास अस्पताल के डाक्टर नवरतन मल वर्मन जो बड़े वावू के नाम से प्रसिद्ध थे आया-जाया करते थे। वे एलोपैथिक चिकित्सक थे। मारवाड़ी समाज मे काफी धाक थी। परिवार मे भी छोटी-वडी वीमारिया या दुर्घटना होती तो एलोपैथिक इलाज, होता। शान्ति और निर्मल जन्मे तव भी उन्ही की सलाह से लेडी डाक्टर द्वारा घर मे ही प्रसव कराया गया। भगवान देवी के पति राची से कलकत्ते आए तव भी उन्ही की सलाह से चिकित्सा कराई। वे मिष्ट-भाषी, व्यवहार कुशल तो थे ही रुपया कमाने में भी वहुत उस्ताद थे। दवाइयो के जो नुस्खे लिखते थे वह इस तरह से लिखते थे कि दूसरे किसी दवाखाना मे दवाइयां नही मिलती। उन्होने अपना एक दवाखाना तुलापट्टी मे खोल रखा था वही मिला करती थी। उन्ही दिनो जव धर्मचन्दजी वड़े हो गए एक वार यौगिक व्यायाम का प्रदर्शन देखा और उसके लाभ से वहुत प्रभावित हुए तो अपने पारिवारिक डाक्टर नवरतन से योगासनो के साथ शीर्षासन की चर्चा की और उनसे राय चाही। डाक्टर साहव वड़े होशियार थे उन्होने सोचा अपने हाथ की सोने की चिडिया भागना चाहती है। उन्होने गंभीर मुद्रा बनाकर कहा, धर्मचन्दजी, आप पढे-लिखे है, विदेश जाकर आए है। टाइप राइटर सीधे रखकर

टाइप की जाती है, उसे उलट कर टाइप करेंगे तो वह खराब होगी। आप साधु संन्यासियो की बात करते है। ये पैसा कमाने के लिए उल्टी-सीधी हर तरह के तमाशा दिखाते है और पैसा कमाते है। डाक्टर साहब के कहने का ढग ऐसा था कि कुछ वर्ष के लिए शीर्षासन आदि से धर्मचन्दजी का ध्यान हट गया।

धर्मचन्दजी के जीवन मे ऐसे सयोग आते रहे जो उनके जीवन-क्रम को विकसित करते रहे। बड़ाबाजार उस समय तक फैला पसरा नही था और नही सिमटा-सिकुडा ही था। फिर भी देश त्यागकर अन्य प्रान्तों से लोग आ रहे थे। आबादी बढ रही थी। बड़ाबाजार जनसकुल होता जा रहा था। बडाबाजार उस समय हरिसन रोड और चितपुर रोड, तुला पट्टी, बडतल्ला, बांसतल्ला मे बसा था। बडाबाजार के आगे जोडासाको, द्वारकानाथ ठाकुर की राजबाड़ी आदि थी। राम बगान के पास जो गन्दी बस्तिया थी उसे इम्प्रूवमेट ट्रस्ट खरीद कर तोड़ रही थी। बगाली जमीन्दारो के मु शी, नायबो की बड़ाबाजार मे जो कच्ची-पक्की कोठियां थी वह बिक रही थी। बड़ाबाजार के बहुसंख्यक निवासी मारवाड़ी खरीद रहे थे। ऐसे में धर्मचन्दजी को यह अवसर मिला कि वे शम्भू मल्लिक लेन के मकान में रहते हुए नन्दो मल्लिक लेन में चार तल्ले पर पाच कमरे का एक फ्लैट बिना सलामी के दो सौ रुपये माहवार पर मिला। नन्दो मल्लिक लेन की बड़ी जमीन पर एक परिचित सज्जन ने नया बना मकान आधुनिक ढंग से बनाया था जिसमे लिफ्ट लगाई, जमीन मे सीमेट की जगह मारवल लगाया। हर तल्ले पर स्नान घर और रसोई घर भी बनाए थे।

धर्मचन्दजी जैसे सुरुचि सम्पन्न व्यक्ति के सामने जब इस फ्लैट का प्रस्ताव आया तब भला वह कैसे हाथ से निकलने देते। एक माह का किराया देकर ले लिया मगर बड़े बाबू अर्थात् पिताजी नाराज हुए क्योकि ४० रुपया महीने से बढकर २०० रुपया महीने का खर्च शुरू हो रहा था। धर्मचन्दजी ने समझाया दो सौ ही रुपये तो लगे है। पुराने कमरो को अभी नही छोड़ेगे। एक बार चलकर वहा रहेगे। वह जगह पसद नही आएगी तो वापस आ जाएगे। घर की गाडी हो गई थी गद्दी से नन्दो मल्लिक लेन जाने के अन्य साधन सुलभ थे ही। सयोग का फल जिस प्रकार सम्पति मे सफल हो रहा था उसी प्रकार परिवार मे भी विकास के चरण आगे बढ रहे थे। इसी मकान मे दूसरी लडकी तृतीय

सतान लक्ष्मी की प्राप्ति हुई। और यही एक वर्ष बाद ही द्वितीय पुत्र अर्थात् चतुर्थ संतान चन्द्रकुमार जन्मे। शान्ति बढ रही थी—पढ रही थी।

उन दिनो बडाबाजार मे छोटे-छोटे तग कमरो मे गुरु पाठशालाएँ थी। बच्चे पहाडा और हिसाब के साथ-साथ अक्षर भी पढते थे। गुरुजी बेत के इशारे पर गला फाड फाड कर पढाते थे—एक इकाई, दो दुक्कम, अ अनार, क कबूत्तर, शान्ति बालिका विद्यालय मे पढती थी।

जमाना आधुनिकता का था। देश मे पुनर्जागरण की गूँज थी—'गांधीजी, वन्दे मातरम्'। बड़ाबाजार मे सुधारवादी आन्दोलनो की हवा तेज थी। एक क्रान्तिकारी सुधारक थे श्री बालकृष्णजी मेहता। मेहताजी धोती-कुर्त्ता पर हैड लगाते थे। सड़क पर चलते तो अलग पहचाने जाते थे। धोती कुर्त्ता पर हैड इसलिए लगाते थे कि धूप से आँखो और चेहरो की रक्षा होती है। अच्छाई अपने देश की हो या विदेश की, अच्छाई ही है, ग्रहणीय है। इसी ख्याल से मेहताजी ने बडाबाजार मे शिक्षा के क्षेत्र मे क्रान्ति का आह्वान किया। विडेन स्ट्रीट मे एक मोन्टेशरी स्कूल स्थापित की। योरप मे यह मोन्टेसरी बहुत तेजी से बढ़ रही थी। बड़ाबाजार मे यह प्रथम प्रयत्न था। बच्चो को बच्चे की मानसिकता के अनुसार खेल-खिलौने से मोन्टेशरी की शिक्षा पद्धति थी। धर्मचन्दजी ने सुना कि पडोस मे नन्दो मल्लिक लेन के कुछ ही कदम पर स्थित विडन स्ट्रीट मे योरप की पद्धति वाले विद्यालय की स्थापना श्री मोहताजी ने की है। तो आधुनिक विचारो के प्रतिपक्षी धर्मचन्दजी ने अपने बच्चो को स्वय उस विद्यालय मे भर्ती करा आए। इस विद्यालय मे प्रताप भाई नाम के गुजराती बन्धु बच्चो को शिक्षा देते थे।

उस समय तक देश को आजादी नही मिली थी। अग्रेजो की राज-सत्ता मे कलकत्ता की चौरगी बडी सजी-बजी रहा करती थी। इधर अग्रेज साहब, मेमो के लिए फिरपो, ग्रैण्ड होटल, रेस्तरा आदि थे तो उनके हर तरह की जरूरत की चीजो की खरीद फरोख्त के लिए बड़े-बड़े स्टोर भी थे। जिसमे आरमी नेभी स्टोर रानी रासमनी रोड (कारपोरेशन) स्ट्रीट के नुक्कड़ पर तो ह्वाइट वे लेडला था। इन दोनो मे साहब के रोजमर्रा के काम मे आनेवाली सभी चीजें मिलती थी। सुव्यवस्था और चीजो की सजावट देखने लायक होती। बेचने

धाले और खरीदने वालों का मधुर सलूक देखकर किसी का भी मन बाग-बाग हो उठता। अंग्रेज साहब, मेमें इन स्टोरो मे घूम-घूम कर चीजें खरीदते थे।

धर्मचन्दजी बराबर चाहते कि बच्चे स्वावलम्बी बनें। इसलिए शान्ति को ह्वाइट वे लेडला की दूकान दिखाकर एस्प्लानेड से नन्दो मल्लिक लेन जानेवाली ट्राम में बैठा देते थे और कन्डक्टर से भी कह देते थे कि वहां उसे उतार दें। शान्ति ११ वर्ष की हो गई थी, आजकल की तरह ट्रामो मे भी इतनी भीड़ नही होती थी। साथ ही शान्ति को गहने भी नही पहनाते थे इससे शान्ति का आत्म विश्वास बढना स्वाभाविक था।

एक बार १९४२ में धर्मचन्दजी के परिवार मे किसी को तेज बुखार था। उस समय किसी परिचित मित्र ने नेचर क्योर की चर्चा की, यानी रोगी के माथे पर ठंढी पट्टी और उपवास के साथ रोगी को प्यास लगने पर नीबू का मिला ठढा पानी पिलाने की राय दी। धर्मचन्दजी को भी यह पागलो की सी बात लगी थी। क्योकि उस समय हर छोटी-बड़ी बीमारी पर एलोपैथी दवा का प्रयोग होता था। १९४२ मे दूसरी लडाई लगी और कलकत्ते पर जापानी द्वारा बम गिराया गया तब शहर खाली सा हो गया। उस समय धर्मचन्दजी बडा बाजार १७३, हरिसन रोड में रहते थे। पढने की आदत उन्हे शुरू से थी। युगल किशोर चौधरी की प्राकृतिक चिकित्सा पर लिखी किताब उनके हाथ लगी उन्होने उसे पढ डाली। फिर तो उनकी लिखी अन्य किताबें भी उन्होने मगा ली तथा पढने के बाद प्राकृतिक चिकित्सा के किताबो मे बताए नुस्खे का प्रयोग चोट लगने, खरोच पडने, मामूली फोडे-फुन्सियों पर करने लगे। इस चिकित्सा पद्धति पर मन जमा, प्रयोग से प्रभावित हुए और ये इस बात का पता लगाने लगे कि भारत मे कही कोई प्राकृतिक चिकित्सा के केन्द्र भी है क्या।

१९४४ मे जब कलकत्ते लोग वापस लौटकर आने लगे धर्मचन्दजी का परिवार माजरहाट वाले मकान मे आकर रहने लगा था। उस समय ज्ञानवती लाठ ने मण्टेशरी पद्धति से पढाने वाली स्कूल अभिनव भारती के नाम से बासतल्ला स्ट्रीट में खोली थी। उनके साथ वहा प्रताप भाई भी आ गए थे। उसमे छोटी लड़की लक्ष्मी और छोटा लडका चन्द्रकुमार पढता था। माजरहाट से निर्मल, लक्ष्मी और चन्दर को लेकर ट्राम से एस्प्लानेड आता और एस्प्लानेड से चितपुर

की ट्राम मे चढकर जाता और लक्ष्मी, चन्दर को वांसतल्ला स्ट्रीट की मोड़पर छोड़कर खुद मुक्ताराम वावू स्ट्रीट से विशुद्धानन्द विद्यालय चला जाता। सध्या को भी उसी तरह अपनी छुट्टी के वाद लक्ष्मी, चन्दर को लेकर वांसतल्ला स्ट्रीट की मोड़ से ट्राम से एस्प्लानेड आकर ट्राम द्वारा माजरहाट पहुँच जाता। उस समय कलकत्ते की आवादी इतनी अधिक नही थी वच्चो को गहने भी नही पहनाए जाते थे। जिससे उन्हे छिनने या तग करने की वृति किसी की हो इसलिए वच्चे स्वावलम्वी हुए।

जव हिटलर व्रिटेन पर चढाई करने के लिए तेजी से वढ रहा था व्रिटेन और जर्मन के युद्ध की घोषणा दूसरे विश्वयुद्ध के रूप मे हो चुकी थी। दुनिया मे हाहाकार मचा था। १९४२ मे भारत मे सवसे अधिक सकट कलकत्ते पर छाया था क्योंकि हिटलर के साथ जापान भी सम्मिलित हो गया था और वर्मा तक चला आया था। एक तरह से कलकत्ता खाली-सा हो गया था। लोग घर छोडकर अन्य सुरक्षित प्रान्तो मे या अपने देश गाव मे चले जा चुके थे। जो थोडे से लोग जन-शून्य सड़को पर इक्के दुक्के नजर आ जाते थे। वे भी उस समय कलकत्ते से पलायन कर गए जव यहां कई स्थानो पर वम गिरा था। वड़ावाजार इलाके मे गनेशगढ, जोड़ा सांकू, के मकान पर गिरा था। उन दिनो १७३, हरिसन रोड के वरामदे मे खड़े होकर पश्चिम की तरफ मनोहरदास कटरा तक पूरव की तरफ दूर तक एक भयावह सन्नाटा नजर आता था। कही किसी मकान के जगले वरामदे पर टगी लगोट और धोतियां ही दीखती थी। इस परिस्थिति मे धर्मचन्दजी के पिताजी परिवार सहित राची चले गये। मगर धर्मचन्दजी कलकत्ते मे ही रहे। अपने मातहत जो लोग थे कामकाजू उन्हे भी उन्होने कह दिया कि जो जाना चाहे जा सकते है ओर जो रहना चाहे वह रहे। उनकी भोजन की व्यवस्था मेरी ओर से रहेगी। कामकाज वन्द सा हो चुका था।

युद्ध की वजह सारे भारत मे लोहे पर सरकार ने कन्ट्रोल वैठा दिया और उसका वितरण व एसोसियेशन की मार्फत करवाती थी। कलकत्ते मे सरकार की ओर से धर्मचन्दजी को ही स्टाकिस्ट वनाया था। खिदिरपुर मे गोदाम था जिसमें ४०० टन माल हर महीने आता। लोहे का कन्ट्रोलर जिन व्यापारियों को जितनी टन का परमीट देता धर्मचन्दजी उन्हे उतना माल कन्ट्रोलर द्वारा तय किए मूल्य पर दे देते। सरकार उन्हें ३० रुपया टन कमीशन देती थी।

धर्मचन्दजी जिनको माल बेचते थे उसी माल को वे लोग थोड़े कदम दूर पर उसे बेच कर ३०० रुपया टन कमाते थे। पर धर्मचन्दजी अपनी कमाई मे सतुष्ट थे। खिदिरपुर माजरहाट पुल के पास धर्मचन्दजी एक छोटा-सा मकान रहने का बना लिया था। कलकत्ते पर जब बम गिरा तो खिदिरपुर मे बमबारी हुई थी तथा बम का एक टुकड़ा इस मकान पर भी गिरा था जो अबतक सुरक्षित रखा है यादगार के लिए। पिताजी को राची मे जब यह खबर मिली तब धर्मचन्दजी को फिर पिता का रोष भाजन बनना पड़ा। पिताजी अपने एकलौते पुत्र को खतरे मे कैसे छोड़ सकते थे। उन्होने कहा काम बन्द करो चलो। मुझे ऐसी कमाई नही चाहिए। धर्मचन्दजी ने पिताजी को समझाया—जो बम का टुकड़ा अपने मकान पर गिरा है वह बम नही बल्कि दो-लाख रुपये की थैली के रूप मे गिरा है। बात यह थी उस समय इनके गोदाम मे पांच-छः सौ टन माल पड़ा था जिन व्यापारियो पर कन्ट्रोलर ने परमिट काटी थी वे कलकत्ता छोडकर चले गए माल कोई उठा नही रहा था। धर्मचन्दजी ने कन्ट्रोलर को इसकी सूचना दी तो कन्ट्रोलर ने कहा कि बिना परमिट के ही जिसे चाहो माल बेच दो। बिना परमिट का माल कन्ट्रोल रेट मे बेचने का सवाल नही था। धर्मचन्दजी ने इसे बाजार भाव बेच डाला। इससे उन्हे उसमे दो लाख की कमाई हुई थी।

लोग धीरे धीरे लौटने लगे थे। धर्मचन्दजी का परिवार और बच्चे भी आ गए। खिदिरपुर वाला मकान छोटा था। बगल मे ही अखाड़ा था। धर्मचन्दजी को व्यायाम का शौक था अखाडे मे स्वय भी व्यायाम करते और बच्चो को भी सिखाते थे। फिर तो इसी मकान पर इनके खेलने के लिए छत बना और मन्दिर भी।

उन दिनों हिन्दुस्तान मे उत्तर प्रदेश मे प्राकृतिक चिकित्सा का प्रारम्भिक प्रचलन था। जैसे गोरखपुर मे श्री विट्ठलदास मोदी, इलाहाबाद मे श्री बालेश्वर प्रसाद सिंह, दिल्ली मे श्री युगल किशोर चौधरी और बंगाल मे एक अजित बोस भी थे जो प्राकृतिक चिकित्सक के रूप मे व्यवसायिक आधार पर इस चिकित्सा पद्धति मे लगे हुए थे। इसी बीच निर्मल की माँ बीमार पड़ी। वे भयानक रूप से सग्रहणी के रोग से त्रस्त थी। इनके प्राकृतिक इलाज के लिए धर्मचन्दजी ने दिल्ली से श्री युगल किशोर चौधरी को और गोरखपुर से श्री विट्ठलदास मोदी को बुलाया व प्राकृतिक इलाज उनका हुआ। प्राकृतिक चिकित्सा को बढ़ाने के ख्याल से ५० रु० माहवार

की तीन स्कालरशिप देने का निर्णय किया। उस समय पच्चास-पच्चास रुपये कई महिनों तक अपने पास से ये दे-देकर तीन विद्यार्थियो को इलाहाबाद, दिल्ली, गोरखपुर प्रशिक्षण के लिए भेजा।

इनकी धर्मपत्नी ज्ञानवती देवी लम्बे समय से सग्रहणी-रोग से पीडित थी। उनके उपचार और प्रयास करने पर भी उनकी स्थिति में सुधार के कोई लक्षण दिखाई नही पड़ रहे थे। धर्मचन्दजी चिन्तातुर से उनकी सेवा मे लगे रहते। दिनाक ५ सितम्बर, १९४४ को ज्ञानवती देवी ने प्रातःकाल पाच वजे अपना नश्वर शरीर त्याग दिया। इस असामयिक आघात से सारा परिवार शोक मे डूब गया। उनकी अन्तिम इच्छानुसार धर्मचन्दजी ने विभिन्न जैन-सस्थाओ को हजारो रुपये दान दिए।

ज्ञानवती देवी आम भारतीय नारियो की तरह साधारण सूझ-बूझ रखनेवाली सीधी-सादी स्त्री थी। धर्मचन्दजी के प्रगतिशील कार्यो और विद्रोही विचारों को समझ पाना उनके लिए सम्भव नही था। वह उनकी मात्र ऐसी पत्नी थी जिसके जीवन का सारा कार्य-कलाप परिवार की चहारदीवारी तक ही सीमित रहा। फिर भी धर्मचन्दजी के स्वस्थ, सुन्दर और सुयोग्य संतानो की जन्मदात्री तो वह थी ही। धर्मचन्दजी जव वाहरी सेवा कार्यों मे व्यस्त रहते थे तव परिवार का सारा कर्म-चक्र इस धुरी पर घूमता रहता था। धर्मचन्दजी की ऊँची उड़ान और महात्वाकाक्षाओ की पूर्ति मे वह सम्पूर्ण रूप से साथ नही दे सकी थी। फिर भी धर्मचन्दजी ने उनकी इच्छा-अनिच्छाओ को समझते हुए उनकी सुख-सुविधाओ का पूरा ख्याल रखा। जैसा कि ऐसी अवस्था मे होता है—धर्मचन्दजी ने कभी अपनी पत्नी की उपेक्षा नही की। उसके आदर-सत्कार मे किसी प्रकार की कमी नही आने दी। प्रतिकूलताओ मे भी अनुकूलता को खोज लेना इनके स्वभाव और चरित्र का विशेप गुण रहा है।

नीड़ का निर्माण फिर-फिर

ज्ञानवती देवी के स्वर्गवास से धर्मचन्दजी के सामने वच्चो की देखभाल और परिवार की सार-सभाल करने की समस्या विकट रूप से आ खड़ी हुई—घर मे

माताजी अकेली थी और उनके सहयोग के लिए भी जिससे पारिवारिक व्यवस्था की देख-रेख ठीक से हो सके। स्थिति की गंभीरता को सोच-समझ कर धर्मचन्दजी ने दूसरा विवाह कर लेने की स्वीकृति दे दी।

९ नवम्बर, १९४४ को धर्मचन्दजी का दूसरा विवाह श्री पारसदासजी जैन आरावालो की सुपुत्री मोती देवी के साथ हो गया। प० जगमोहनलालजी शास्त्री ने जैन विधि से कलकत्ते मे ही सारी वैवाहिक कार्यवाही सम्पन्न की। सादगी पूर्ण समारोह ही इस विवाह की विशेषता रही।

आभामयी, मोती देवी

दूसरा विवाह धर्मचन्दजी के लिए वरदान सिद्ध हुआ। यह एक नए जीवन का प्रारम्भ था। नई पत्नी के बारे मे आखो मे झिलमिलाता मधुरिम-सा झीना-झीना स्वप्न लिए, उत्सुकता और कुछ-कुछ शकाओ मे भरे धर्मचन्दजी अपने भविष्य-जीवन के ताने-बाने बुनने लगे। अबोध शिशुवत भोले-भाले चेहरे और सुन्दर नाक-नक्श वाली मोती देवी धर्मचन्दजी को शालीनता की प्रतिमूर्ति ही लगी।

प्रथम साक्षात्कार मे ही सुमुखी मोती देवी ने भावुक और महात्वाकाक्षी, तरुण हृदय धर्मचन्दजी का मन मोह लिया। दूसरे विवाह का निश्चय करते हुए धर्मचन्दजी मन ही मन जैसी प्रियतमा और जीवन-सहचरी की कल्पना करते रहते थे वही मोती देवी के रूप मे साकार होकर सामने आ खडी हुई।

साधारण पर मर्यादित घराने मे पालित-पोषित होने के कारण मोती देवी आधुनिक तडक-भडक वाले जीवन की विकृतियो से अछूती ही रही। मोती देवी मे निश्छलता, सरलता, आज्ञाकारिता और विनम्रता के गुणो को देखकर धर्मचन्दजी को यह विश्वास हो गया कि वे उन्हे अपनी सच्ची जीवन सगिनी के रूप में ढाल सकेगें। उनकी पारखी आंखो ने मोती की आब को सही-सही पहचान लिया। मोती की आभा और उज्ज्वल प्रकाश की मधुरिम किरणो के स्पर्श से धर्मचन्दजी की अधेरी दुनिया मे नवप्रभात का सूर्योदय होने लगा।

नया जीवन प्रारम्भ करते समय धर्मचन्दजी के मन मे यह शका बार-बार उठती रही कि मोती देवी नई मां के रूप मे अपने प्यार और स्नेह से बच्चो का मन जीत सकेगी या नही।

कही सौतेली माँ का सा व्यवहार कर पारिवारिक शांति को भंग तो नही कर देगी ? कही ऐसा तो नही हो जाएगा कि बच्चे ही स्वभाव-भिन्नता के कारण मोती देवी को मा के रूप मे स्वीकार करने से इन्कार कर दें। मन मे उठने वाली इन शकाओ और प्रश्नो ने धर्मचन्दजी को पहले ही सावधान कर दिया था। धर्मचन्दजी दुनिया देख चुके थे। दूसरी पत्नी के आगमन से अनेक परिवारो मे होने वाली विनाश-लीला से वे बखूबी परिचित थे। अतः उन्होने अपने लिए पत्नी का चुनाव करते समय किसी सम्पन्न घराने की उच्च-शिक्षित और अहकारी लडकी को नही चुना। उन्होने अपनी परिपक्व बुद्धि से मोती देवी के चरित्र और गुण-स्वभाव को अच्छी प्रकार से जांच परख लिया था। सरलता की मूर्ति मोतीदेवी को अपनी पारिवारिक व्यवस्था के अनुकूल गढा और सवारा जा सकेगा-इस विश्वास के साथ उन्होने मोतीदेवी को स्वीकार किया था। धर्मचन्दजी के स्नेह-पूर्ण साहचर्य और उचित प्रशिक्षण मे रहकर मोतीदेवी ने भी शीघ्र ही परिवार की व्यवस्था के अनुकूल अपना मन बना लिया। नए जीवन का नया उत्साह लेकर धर्मचन्दजी भी नई दिशाओ मे उड़ान भरने के स्वप्न संजोने लगे।

घर की प्रत्येक वस्तु सलीके से सजी रहे, सभी कार्य समय पर और नियमानुसार हो, खाने पीने की वस्तुएँ स्वास्थ्य सबधी नियमो का ध्यान रखते हुए तैयार की जाएँ, पारिवारिक सदस्यो तथा कर्मचारियो के साथ व्यवहार करते समय आपसी विश्वास और इज्जत का ख्याल रखा जाए, ये सब बातें धर्मचन्दजी की पारिवारिक व्यवस्था की अपनी विशेषता रही है।

मोतीदेवी शीघ्र ही सारी बातो को समझ गई। एक ओर वह घर गृहस्थी के सारे कार्य अत्यन्त चतुराई से पूरे करती, दूसरी ओर बच्चो को अपना भरपूर प्यार और स्नेह देकर उनकी सुख-सुविधाओ का प्रबन्ध करती।

कलात्मक अभिरुचि और प्रयोगवादी जीवन के हिमायती धर्मचन्दजी का रहन सहन, दिनचर्या और शौक आम आदमी से बिल्कुल भिन्न है। अपने सस्कारगत स्वभाव से अलग हटकर धर्मचन्दजी के रुचि-वैचित्र्य के साथ मन का तालमेल बिठा लेना मोतीदेवी के लिए एक कठिन चुनौती भरा कार्य था। यह मोतीदेवी ही है कि जिसने अपने प्रखर आत्म-विश्वास और सकल्प बल के सहारे अपनी आकांक्षाओ और मनोकामनाओ को धर्मचन्दजी की आकांक्षाओं और मनोकामनाओ के साथ एकाकार कर दिखाया।

इस प्रकार के रोमांचकारी भयानक अनुभवो के रहने पर भी धर्मचन्दजी का मनोबल कभी कमजोर नही हुआ। उनका कहना है कि 'मृत्यु एक शाश्वत सत्य है। उसको जब आना होगा आ जाएगी। उससे डरकर कर्म से विमुख होना हमारी ना समझी और कमजोरी है।'

योजना-पटु धर्मचन्दजी ने प्रारम्भ से ही मोतीदेवी को प्रशिक्षित और सुयोग्य बनाने की दृष्टि से सारी व्यवस्था कर दी।

जब धर्मचन्दजी नन्दो मल्लिक लेन में रहते थे उनके एक मित्र श्री मदन-लाल नेवर ने ८/१, एस्प्लानेड, जिसका नाम आज सिद्धो कान्हु डाहार है, तीन कट्ठे पर बना मकान ४८ हजार मे बिना बयाने का मात्र पत्र-व्यवहार के आधार पर सौदा करा दिया। कलकत्ते पर जब बम गिरे कलकत्ता खाली हुआ पिताजी ने मकान लेने से ना कर दिया फलस्वरूप मकान मालिक ने धर्मचन्दजी पर नालिस ठोक दी इसलिए मजबूर होकर इन्हे ४८ हजार मे मकान लेना पड़ा आज यह मकान ही इनका निवास और व्यापार का केन्द्र बना हुआ है।

भाग्य और सयोग का इतना प्रबल उदाहरण विरले के जीवन में ही मिलता है जैसा कि धर्मचन्दजी के जीवन मे बराबर होता रहा है। कलकत्ते पर जब बम गिरा था उस समय एस्प्लानेड के चौराहे से अर्थात के० सी० दास की दुकान से गवर्नर हाउस के कोने तक जितने भी मकान थे सरकार ने युद्धस्तर पर सब खाली करा लिए थे। और ४५ मे जब युद्ध शेष हुआ तब सरकार ने सभी मकान के मालिको को मय मुवावजा के वापस सौप दिए। इसमे धर्मचन्दजी का मजबूर होकर ४८ हजार मे खरीदा हुआ मकान भी था जिसका उन्हे ५६ हजार मुवावजा मिला था।

सेवाभावी धर्मचन्दजी

स्वभाव से विद्रोही और क्रान्तिकारी होते हुए भी धर्मचन्दजी ने समाज के साथ टकराव और तनाव का मार्ग नही चुना। उनका दृढ विश्वास रहा कि समाज मे रहकर अपने सद्-व्यवहार सेवा-कार्य, इमानदारी और सदाचरण के द्वारा अपने विचारो और कार्यों का औचित्य स्वीकार करवा लेना ही सच्ची सफलता है। अपने इन्ही विचारो के कारण धर्मचन्दजी का झुकाव निरन्तर सेवा कार्यों की ओर होता गया।

सन् १९३५ मे बंगाल और विहार मे भयकर भूकम्प के परिणामस्वरूप जन-धन की जो हानि हुई उससे चारो ओर हाहाकार मच गया। धर्मचन्दजी जैसा जीवट वाला उत्साही कार्यकर्ता भला ऐसी विपत्ति के समय चुप होकर कैसे बैठा रह सकता था। वे तुरन्त 'दिगम्बर जैन युवक समिति, कलकत्ता' के जोशीले युवको का दल लेकर जोर-शोर से सेवा-कार्य मे जुट गए।

सबसे अधिक विनाश की चपेट मे आने वाला मोतीहारी क्षेत्र (विहार) मे जाकर धर्मचन्दजी ने सराहनीय कार्य किया। मोतीहारी मे कई सप्ताह रहकर वहां के पीड़ित लोगो को मकान बनाने के लिए कम मूल्य पर बांस, पुआल आदि दिए, भोजन की दूकान भी खोली जो कम मूल्य पर भोजन देती थी। इनकी सेवा की रुचि देखकर मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के कार्यकर्त्ताओ ने इन्हे कार्य-कारिणी का सदस्य बनाया और फिर इनके निरतर सेवा कार्यो से प्रभावित होकर 'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी' ने इनको रसायनशाला का मत्री चुना।

रसायनशाला के मत्री

रसायनशाला के मत्री-पद पर रहते हुए धर्मचन्दजी ने व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त बनाने की दृष्टि से अनेक आवश्यक कदम उठाए। अपने पद का दायित्व समझने के कारण अब वे अधिक सजग और सावधान रहने लगे। उन्होंने अपने साथियो के मनोबल को कभी गिरने नही दिया। आप के प्रयास से ही 'मारवाड़ी रिलीफ' पत्रिका का नियमित प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसके द्वारा आम आदमी को सोसाइटी की गतिविधियो की जानकारी तो मिलती ही थी साथ ही देश-विदेश की प्रमुख घटनाओ के सम्बन्ध मे भी सक्षिप्त सूचना प्राप्त होती थी। इसीके माध्यम से प्रचलित रोगो के उपचार सम्बन्धी जानकारियां भी दी जाती थी। इन्होने एक पाकेट डायरी का प्रकाशन भी किया जिसमे प्रतिदिन काम आने वाली उपयोगी बातो का उल्लेख रहता था। सिर्फ चार आने मे मिलने वाली यह डायरी अपने समय मे बहुत लोकप्रिय हुई। इसके माध्यम से सोसाइटी का नाम घर-घर पहुँचा।

लोकोपयोगी लेखन

धर्मचन्दजी के पिताजी ने जिस 'मर्चेन्ट्स कमेटी' की २५-३० वर्षो तक सेवा की उसके मत्री रहे और उसके माध्यम से व्यापारिक क्षेत्र मे उपस्थित होने

वाली समस्याओ के समाधान का प्रयास करते रहे। आगे चलकर धर्मचन्दजी इसके अध्यक्ष चुने गए। आपने अपने अध्यक्षताकाल मे इसके कार्यक्षेत्र को व्यापक बनाने का सफल प्रयास किया। इन्होने इसका नाम बदल कर 'मर्चेन्ट्स चेम्बर आफ कामर्स' कर दिया।

टेलीफोन की दर कम करवाने, इनकम टैक्स सम्बन्धी जानकारी देने आदि कार्यो से लेकर चुनाव के प्रति जागरूकता पैदा करने जेसे अनेक महत्वपूर्ण कार्य इस सस्था के द्वारा सम्पादित किए जाते थे। धीरे-धीरे यह सस्था व्यापार जगत की एक अपरिहार्य आवश्यकता बनती चली गई। इसका विकसित रूप 'मर्चेन्ट्स चेम्बर आफ कामर्स' आज हमारे सामने है जो व्यापारिक जगत में सबसे अधिक प्रभावी भूमिका निभा रही है। धर्मचन्दजी के पिता द्वारा बोया गया छोटा-सा बीज आज व्यापारी-समाज को छाया देने वाला विशाल वट-वृक्ष बन चुका है।

सार्वजनिक सेवा-कार्यो में भाग लेकर धर्मचन्दजी ने पर्याप्त लोकप्रियता अर्जित की। अनुभव प्रवण बने और जिन्हे वे पत्र-पत्रिकाओं मे नियमित रूप से लिखने भी लगे थे।

इस प्रकार व्यापारिक और अन्य सेवा संस्थानो में कार्यरत रहते हुए इनके अनेक लेख पत्रो मे प्रकाशित होते रहे। इन लेखो के द्वारा धर्मचन्दजी ने तात्कालिक समाज के सामने उपस्थित ज्वलत समस्याओ की ओर लोगो का ध्यान आकर्षित किया। 'विश्वमित्र' में नियमित रूप से इनके विचारों का प्रकाशन होता रहा।

प्रथम विश्व-भ्रमण ने धर्मचन्दजी को उद्योग-धन्धों के बारे मे एक नवीन दृष्टि प्रदान की। योरप की विकसित वैज्ञानिक टैक्नोलोजी ने धर्मचन्दजी को अत्यधिक प्रभावित किया। अपनी विदेश-यात्रा मे इन्होने अनेक देशो मे चलने वाले प्रमुख उद्योग-केन्द्रो का सूक्ष्मता से निरीक्षण किया और उनके बारे मे प्राप्त जानकारी अपने देशवासियों को दी। टाटा सस्थान द्वारा प्रकाशित 'टिस्को रिव्यू' तथा उपन्यास सम्राट प्रेमचन्दजी द्वारा सम्पादित 'हस' मे धर्मचन्दजी के उद्योग-धन्धो से सम्बन्धित लेख विशेष आग्रह पूर्वक छापे जाते थे। इस प्रकार

हवाबाज और सामाजिक कार्यकर्त्ता के अतिरिक्त एक सशक्त लेखक और विचारक के रूप मे भी इनकी छवि निखरने लगी। हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओ के अलावा बगला के 'युगातर', अग्रेजी के 'स्टेट्समैन', 'अमृतबाजार पत्रिका' तथा 'ओरियट इलेस्ट्रेटेड वीकली' आदि मे भी इनके लेखो का प्रकाशन होता था। अपनी योरप यात्रा से सम्बन्धित अनुभवो को इन्होने 'योरप मे सात मास' पुस्तक के रूप मे प्रकाशित किया जिसकी चारो ओर से प्रशंसा की गई।

सतुलित जीवन : रचनात्मक दृष्टि

लोकसेवा और जन-कल्याणकारी कार्यो मे सलग्न रहते हुए धर्मचन्दजी अपनी पारिवारिक आवश्यकताओ और कारबार के प्रति भी सदा सजग और सावधान रहे। अपनी व्यापक पहचान का सदुपयोग करते हुए इन्होने अपनी व्यापारिक क्षमता का भी निरन्तर विकास किया।

वस्तुतः धर्मचन्दजी अपनी क्षमताओ और सीमाओ को अच्छी प्रकार पहचानते थे, इसलिए इन्होने अपने लिए मध्यममार्गी सतुलित जीवन-दर्शन को ही उपयुक्त समझा। भावुकता के वशीभूत होकर किसी एक ही क्षेत्र मे इतनी दूर कभी नही बढे जिससे बाकी सारी जीवन-व्यवस्था अपना सतुलन खो बैठे। न वे सबको पीछे छोड़कर आगे बढ जाना चाहते थे और न वे समय की गति से पिछडे रहकर अस्तित्वहीन बन जाना स्वीकार करते थे। सबकी सुनते और सबके साथ रहते हुए भी इन्होने अपने जीवन-गणित का एक ऐसा समीकरण विकसित कर लिया जिससे इनके व्यक्तित्व की एक अलग विशेषता झलकती रहती। अपने को हीन भावनाओ से मुक्त रखने की यह प्रवृत्ति धर्मचन्दजी को प्राकृतिक विरासत के रूप मे ही मिली थी। बचपन से ही वे अपने आपको समृद्ध घराने के विद्यार्थियो को बराबर की हैसियत वाला दिखाने का प्रयास करते थे। वे बताते है—

'जब विशुद्धानन्द विद्यालय के प्राथमिक विभाग मे पढता था उस समय बहुत से पैसेवालो के लड़के मेरे सहपाठी थे। उनको उस जमाने मे भी टिफिन खर्च के लिए एक रुपया मिलता था, जबकि मुझे सिर्फ एक आना। उनके सामने एक आने की चीज खरीद कर खाना मुझे अपना अपमान करवाना लगता था। इसलिए मैं हफ्ते दो हफ्ते अपने पैसे इकट्ठे करता रहता था और फिर एक

दिन उन सबके साथ शान से खर्च करता था। इस प्रकार मैं अपनी गरीबी को उनके सामने प्रकट नहीं होने देता था।

साधारण होते हुए भी असाधारणता की ओर धर्मचन्दजी का रुझान बराबर बना रहता था। यही वह प्रेरणा-शक्ति थी जिसके रहते धर्मचन्दजी के स्वाभिमान पर कभी आच नही आने पाई। आभिजात्य बने रहने की यह प्रबल प्रेरणा ही उनकी विकासन्मुख जीवन यात्रा का रहस्य है।

लोकोपकारी कार्यो मे भाग लेकर धर्मचन्दजी लोकप्रिय होते गए। 'जैन नवयुवक समिति' के मत्रीपद के अतिरिक्त 'मारवाड़ी ट्रेड्स एसोसियेशन' का मन्त्रीत्व भी आप ही को सभालना पड़ा। सन् १९३९ तक धर्मचन्दजी विभिन्न सस्थाओ के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और कुछ-कुछ राजनीतिक गतिविधियो मे व्यस्त रहे।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के मत्री

सुलक्षिणी मोतीदेवी के सद्व्यवहार से धर्मचन्दजी को नव-जीवन का सा उत्साह मिला। अब वे अधिक उमग और ऊर्जा के साथ कर्म-क्षेत्र मे आगे बढने लगे। सन् १९४४ में जापान की लडाई खत्म होने के बाद अग्रेजो की हालत पतली होने लग गई थी। भारत पर अब और अधिक लम्बे समय तक शासन कर पाना अग्रेज सरकार के लिए असम्भव होता जा रहा था। स्वाधीनता-सग्राम अपने निर्णायक दौर मे से गुजर रहा था। 'करो या मरो' का एकमात्र नारा सिद्धि-मन्त्र की तरह दशो दिशाओ में गूज रहा था। देश का बच्चा-बच्चा मातृ भूमि की बलिवेदी पर अपने प्राणो की आहूति देने को मचल रहा था। बडाबाजार के मारवाडी युवक आन्दोलन के अगुआ बनकर लाठी गोली और जेल का मुकाबला करने पर तुले हुए थे।

धर्मचन्दजी के पिता श्री बैजनाथजी का कहना था "सेवा से बडा और कोई धर्म दुनिया मे नही है"। पिता की यह सीख जीवन भर धर्मचन्दजी का मार्ग-दर्शन करती रही। वैसे हमारे स्वाधीनता-सग्राम की यह विशेषता भी थी कि राजनैतिक मोर्चा-बन्दी के समानान्तर सेवा भावी, सुधारवादी और रचनात्मक-कार्य करने वाली सस्थाएँ भी पूरे जोरशोर से कार्य कर रही थी। धर्मचन्दजी की ऐसे ही कार्यो मे रुचि रही। ऐसी ही सस्थाओ को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर

वे जीवन भर सेवा-कार्यों मे लगे रहे। अक्टूबर सन् १९४५ में वे 'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी' के मन्त्री चुने गए। सोसाइटी का यह चुनाव दो दलों की शक्ति-परीक्षा का चुनाव था। एक ओर श्री राधाकृष्णजी नेवटिया, श्री बजरगलालजी लाठ, श्री वासुदेवजी आदि सशक्त समाज-सेवी धर्मचन्द के विपक्ष मे कार्य कर रहे थे, वही श्री मूलचन्दजी अग्रवाल, श्री भालचन्दजी शर्मा श्री भँवरमलजी वियाणी, श्री गणेश प्रसाद सराफ आदि उत्साही कार्यकर्त्ता धर्मचन्दजी के पक्ष मे डटे हुए थे। पूरी चहल-पहल का माहौल था। गहरी रस्साकशी हुई। धर्मचन्दजी अपने नवयुवक साथियो के सहयोग तथा रसायन-शाला के मन्त्री के रूप मे किए गए पिछले सराहनीय कार्यों के बल पर इस चुनाव सघर्ष मे विजयी हुए। धर्मचन्दजी की यह विजय इस बात का सबूत है कि उस समय समाज मे राजनैतिक कार्यों की तरह सेवा-कार्यो का भी समान महत्त्व था। सच तो यह है कि उस समय राजनीति भी सेवा-भाव से ही की जाती थी।

अपने मन्त्रीत्व काल मे धर्मचन्दजी ने सोसाइटी के माध्यम से अनेक कठिन और खतरनाक परिस्थितियो में साहसिक सेवा-कार्य किए। सन् १९४६ मे वर्मा मे हुए भूकम्प के कारण जन-धन की भयकर तबाही हुई। लाखो लोग बेघरबार हो गए। सोसाइटी की ओर से स्वय धर्मचन्दजी तथा श्री रामेश्वर प्रसादजी पाटोदिया परिस्थिति का अवलोकन करने हवाई जहाज द्वारा रगून पहुंचे। वापिस लौटकर भूकम्प-पीडित लोगो को राहत पहुँचाने का निर्णय लिया गया। सोसाइटी की ओर से तुरन्त एक मेडिकल मिशन रगून के लिए रवाना किया गया, जिसने वहा जाकर पीडितो और घायलो की सहायता-चिकित्सा मे अपना महत्वपूर्ण योगदान किया। सोसाइटी द्वारा किया गया यह सेवा-कार्य विशुद्ध मानवीय भावना से किया गया पवित्र कार्य था। इस कार्य की सर्वत्र प्रशंसा हुई और धर्मचन्दजी की धाक एक सफल कायकर्त्ता के रूप मे जम गई।

उन्ही दिनो आसाम मे भी भयकर वाढ आ गई और गाव के गांव वाढ के पानी में डूब गए। पानी मे घिर जाने के कारण लाखो लोग भूख-प्यास और बीमारियो की चपेट मे आ गए। सोसाइटी की ओर से श्री भालचन्दजी शर्मा के नेतृत्व मे एक दल वाढ पीडितो की सहायतार्थ भेजा गया। कीचड और वाढ के पानी से घिरे खतरनाक स्थानो से लोगो का उद्धार कर उनको सहायता-शिविरो तक पहुँचाना तथा उनके लिए आवश्यक खाद्य-पदार्थ, वस्त्र और दवाइयो का

प्रबन्ध करना आदि कार्यों में स्वयसेवक रात-दिन लगे रहे। कार्यकर्त्ताओ ने स्वय को खतरो में झोक कर भी अनेक लोगो की प्राण-रक्षा की। धर्मचन्दजी स्वयं रात-रात भर जाग कर कार्यकर्त्ताओं का सहयोग करते थे। सफलतापूर्वक किए गए इन कार्यों के कारण सोसाइटी का बहुत सुनाम हुआ।

सुयोग्य, सहयोगी

धर्मचन्दजी के समय मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की कार्यकारिणी सभा में जो व्यक्ति चुनकर आए वे सभी विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी और कर्मठ कार्यकर्त्ता थे—

सर्वश्री आनन्दीलालजी पोद्दार (सभापति), तुलसीरामजी सरावगी और कृष्णचन्द्रजी कोठारी (उप-सभापति), मगतूरामजी जयपुरिया, प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका, भागीरथजी कानोड़िया, रघुनाथप्रसादजी खेतान, श्यामसुन्दरजी जयपुरिया, गजानन्दजी टिबड़ेवाल, बासुदेवजी थरड़, गणपतरामजी बियाणी, वेणीशकरजी शर्मा, रावतमलजी नोपानी, काशीप्रसादजी मोदी, रामेश्वरजी पाटोदिया, गनेशप्रसादजी सराफ।

इतने सारे समर्थ और सुयोग्य व्यक्तियो के साथ रहते, धर्मचन्दजी कठिन से कठिन कार्यो को भी सफलता पूर्वक सम्पादित कर सके तो इसमे सबके सहयोग की महिमा ही प्रकट होती है। यद्यपि सोसाइटी का तात्कालिक राजनीति के साथ कोई सम्बन्ध नही था, फिर भी अधिकाश कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत हैसियत से राजनीति मे बराबर भाग लेने वाले थे। पर सभी लोग इतने सूझ-बूझ वाले और कर्तव्यनिष्ठ थे कि वे हमेशा इस बात की सावधानी रखते थे कि उनकी राजनीतिक गतिविधि के कारण सोसाइटी के कार्य पर किसी प्रकार का विपरीत प्रभाव न पड़ने पाए। सोसाइटी के कार्यकर्त्ताओं को दुहरे मोर्चे पर जूझना पड़ता था। एक ओर स्वाधीनता सग्राम की आग को प्रज्वलित रखना और दूसरी ओर समाज-सेवा के कार्य को आगे बढाना। दुहरे दायित्व के ऐसे कठिन समय मे ओजस्वी और प्रभावी कार्यकर्त्ताओ का नेतृत्व करने का सौभाग्य मिला धर्मचन्दजी को। सोसाइटी का कार्य ही इतना व्यापक था कि उसी मे उन्हे रात-दिन व्यस्त रहना पड़ता था। प्राकृतिक प्रकोपों की चपेट मे आए लोगो की प्राणरक्षा के लिए दूर-दूर प्रदेशो मे जाकर सेवा-शिविर लगाने पड़ते थे।

डायमण्ड हार्वर में अग्निकाण्ड हुआ, नगर मे हैजा फैला, आसाम मे वाढ आई, दगे भड़के, जहाँ भी राहत कार्य की आवश्यकता होती धर्मचन्दजी अपने सुयोग्य और उत्साही कार्यकर्त्ताओ के साथ जुटे रहते। वगाल के पूर्वी किनारे पर भयकर तूफान से जो विनाश-लीला हुई उसमे वेघरवार हुए लोगो की सहायता के लिए ढकुरिया, पचरौल, चन्दनपुर, कृष्णनगर थाना और पाटाल सव-डिवीजन में शिविर लगाकर व्यापक सेवाकार्य किया गया। असमर्थ तथा दुर्घटनाओ मे मृत व्यक्तियो के कफन के लिए पाच गज कपडा सोसाइटी द्वारा सव समय देने की व्यवस्था की गई। ९ दिसम्वर सन् १९४५ को श्री पट्टाभिसीतारमैया और 'हरिजन सेवक' के मन्त्री ठक्करवावा सोसाइटी का निरीक्षण करने पधारे। उन्होने सोसाइटी द्वारा किए गए सेवा कार्यों के लिए धर्मचन्दजी तथा सोसाइटी के कार्यकर्त्ताओ को बधाई दी।

सोसाइटी द्वारा एलोपैथिक दवाओ की विक्री तथा आयुर्वेदिक दवाओ के निर्माण की व्यवस्था भी की गई। गांधीजी के सद्परामर्श से धर्मचन्दजी ने सोसाइटी मे प्राकृतिक-चिकित्सा विभाग की स्थापना की। धर्मचन्दजी ने स्वय इस समय तक प्राकृतिक चिकित्सा के सम्वन्ध मे व्यापक अध्ययन कर लिया था। इन्होने स्वय कई रोगियों पर इसका प्रयोग कर सफलता प्राप्त की। परिणाम-स्वरूप प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति इनकी आस्था गहन से गहनतर होती गई। स्वय गाधीजी ने भी इनका उत्साह वढाया। उन्होने प्राकृतिक चिकित्सा विभाग के चिकित्सक डा० कुलरजन मुखर्जी को अपने पास वुलाकर प्राकृतिक चिकित्सा के सम्वन्ध मे व्यापक जानकारी दी। आज भी पूरे भारत मे प्राकृतिक चिकित्सा के विशेपज्ञो मे धर्मचन्दजी का नाम वड़े आदर के साथ लिया जाता है। धर्मचन्दजी के समसामयिक श्रद्धेय श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिहका और श्री राधाकृष्णजी नेवटिया भी प्राकृतिक चिकित्सा और योग के विशेषज्ञ समझे जाते है। तीनो ही अस्सी पार कर शतकपूर्ति की ओर अग्रसर है। पूर्ण स्वस्थ और प्रसन्न युवकोचित उत्साह से भरे-भरे।

एक और अग्नि-परीक्षा

कायदे आजम जिन्ना कांग्रेस छोडकर मुश्लिम लीग के स्वयभू नेता वन चुके थे। वे मुसलमानो के लिए अलग राज्य की माग कर रहे थे। उस समय पजाव, सिन्ध, सीमाप्रान्त, वलूचिस्तान और वगाल मे मुस्लिम लोग की अन्तरिम

सरकारें काम कर रही थी। देश का विभाजन हुए बिना अलग मुस्लिम राज्य का निर्माण सम्भव नही था।

१६ अगस्त, १९४६ को बगाल में सुहरावर्दी की सरकार के संरक्षण में मुसलमानो ने हिन्दुओ पर हमले शुरू किए। लीग के इस डाइरेक्ट एक्शन से बगाल मे जो साम्प्रदायिक हिंसा भड़की उससे चारो ओर हाहाकार मच गया। देखते-देखते कलकत्ता महानगर आग की लपटो मे घिर गया। चारो ओर मौत का ताण्डव-नृत्य होने लगा। खून-खच्चर, बलात्कार, लूट और अग्निकाण्ड से पीड़ित लाख-लाख हिन्दुओ के काफिले सुरक्षा और शरण की खोज मे पूर्वी बगाल से आने लगे। कलकत्ते की सड़कें लाशो से पट गई। हिन्दू बस्तियों मे फँसे मुसलमान और मुस्लिम बस्तियो मे फसे हिन्दू सहायता के लिए चीत्कार करने लगे। इस आकस्मिक विनाश-लीला ने सभी को हतप्रभ कर दिया। आदमी आदमी के खून का प्यासा बन गया था। सोसाइटी के लिए यह भीषण अग्नि-परीक्षा का समय था। खतरनाक स्थानो मे फसे लोगो को सुरक्षित निकाल लाना और उनकी प्राण-रक्षा का प्रबन्ध करना अत्यन्त कठिन और जोखिम भरा कार्य था।

धर्मचन्दजी के पिता श्री बैजनाथजी नही चाहते थे कि उनका एकमात्र बेटा ऐसे खूनी दरिन्दों और दगाइयो की भीड़ मे से लोगो का बचाव करते कही खुद ही मौत का शिकार हो जाए। पर धर्मचन्दजी पर जो दायित्व था उससे वे पीछे कैसे हट सकते थे। पिता के लाख मना करने पर भी वे अपने कर्त्तव्य पर डटे रहे। सोसाइटी के कार्यकर्त्ता और मारवाडी समाज के हजारो उत्साही युवक जान की बाजी लगाकर असहाय लोगो की प्राण-रक्षा के कार्य मे जुट गए। पीड़ित और उजड़े लोगो को शिविरो मे पहुंचाना, उनके लिए दवा-दारू, अन्न वस्त्र और आवश्यक वस्तुओ का प्रबन्ध करने मे धर्मचन्दजी रात-दिन व्यस्त रहते सूचना मिलने पर वे खुद स्वयं-सेवको को साथ लेकर जाते और खतरे मे फँसे लोगों को निकाल कर लाते।

सोसाइटी के इतिहास मे सेवा-कार्य का यह सबसे कठिन समय था। मानवता के शत्रु कातिलो और खूनी भेड़ियो के जगल मे घुसकर लोगो को बचा लाना वास्तव मे प्रचण्ड रोमाचकारी कार्य था।

धर्मचन्दजी ने इस घोर सकट के समय मे अपने प्रखर मनोबल का परिचय ही दिया। मारवाडी समाज के युवको ने उस समय किस प्रकार वीरता और उत्साह से मानव-सेवा का कार्य किया इसका कुछ अन्दाज उस समय 'विश्वमित्र' मे छपी इस खबर से लगाया जा सकता है—

अनोखा दृश्य (विश्वमित्र, २९-८-४६)

कलकत्ते के लिए यह पहला और अनोखा दृश्य था कि उसका भूतपूर्व मेयर जान हथेली पर लिए हुए उत्तेजित, खूखार और युद्धशील दगाइयो के बीच पहुंच कर फसे हुए हिन्दू परिवारो को निकालता है। श्री आनन्दीलालजी पोद्दार इसके लिए बधाई के पात्र है। उस माहेश्वरी युवक के साहस की प्रशसा क्या की जाए जिस रतनलाल मान्धाना ने तीन दिन घोर परिश्रम कर रक्षा कार्य किया। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी का सेवा कार्य सबकी जबान पर है। उसके प्रधान-मत्री श्री धर्मचन्दजी सरावगी न जाने अपने वृद्ध पिता को किस तरह समझा कर दगे के दिनो मे मैदान मे डटे रहकर असख्य नर-नारियो की सेवा का प्रबन्ध करते रहे। श्री बसतलालजी मुरारका पूरे युवक बन गए और केलाबगान जैसे जटिल क्षेत्र से हिन्दू परिवारो को निकाल लाने मे समर्थ हुए। श्री भालचन्दजी शर्मा और तुलसीरामजी सरावगी अपने परिवारो की चिन्ता भूलकर सेवा कार्य मे लग गए। श्री रामेश्वरजी नोपानी, श्री वेणीशकरजी शर्मा, ओकारमलजी सराफ और विश्वनाथजी मोर सेवा-कार्य को भलीभाति सगठित करने मे सफल हुए।

मारवाडी रिलीफ सोसाइटी की उल्लेखनीय सेवा सम्भव हुई सर्वश्री गणपतरायजी बिहानी, गजानन्दजी टीबड़ेवाल, मेघराजजी सेवक, मगतूरामजी जालान, सोहनलालजी जाजोदिया, सत्यदेवजी गोयनका, रामेश्वरजी पाटोदिया, हरिलालजी लाठ आदि सेवको की तत्परता और लगन से। ये सभी बधाई और धन्यवाद के पात्र है। मेसर्स सूरजमल नागरमल के सफल सचालक सेठ मोहनलालजी जालान और केशरदेव जालान ने तत्काल ही अपने मकानो के समस्त दरवाजे खोलकर निराश्रितो की हर प्रकार से सहायता की और उससे भी बढ कर उनकी चेष्टा उनलोगो को फिर से बसाने की अनुकरणीय है। श्री देवीप्रसादजी खेतान ने सरकारी क्षेत्रो मे अपने प्रभाव का अधिक से अधिक प्रयोग कर पुलिस और लारी की सहायता दिलवाई। हरिसन रोड नाईटोला गली के बाजपेयी सदन से दुबले-पतले कन्नौजिया युवको ने निकल कर गुण्डो की भीड़

कौशल से भगायी, अन्यथा हरिसन रोड के बाकी मकान भी जनशून्य हो जाते। धर्मतल्ला, तालतल्ला क्षेत्र में, प्रचार से दूर किन्तु दस हजार व्यक्तियो की प्राण-रक्षा और हर प्रकार से सहायता करते हुए, दोनो हाथो से अपने सामर्थ्य से अधिक धन लुटा कर और फिर दिन-रात कार्य करने वाले उस वीर विजय सिंह नाहर को कौन भूल सकता है। खूनी दंगे की भयकरता के साथ इन सेवकों की सेवा की मधुरता चिरस्मरणीय रहेगी।"

सोसाइटी के कार्य को धर्मचन्दजी पूर्ण समर्पित होकर ही कर रहे थे। वे प्रात.काल सुबह का नाश्ता साथ लेकर गाड़ी से चलते, रास्ते में नाश्ता करते और ठीक-आठ बजे सोसाइटी पहुंच जाते। देर तक काम में लगे रहते और आवश्यकता होने पर कई बार रात को भी सोसाइटी आफिस में सो जाते। दगा शान्त होने के बाद भी पीड़ित लोगो के पुनर्वास तथा सहायता का कार्य बरावर चलता रहा। इन्ही दिनो मलाया, कुआलालमपुर से करीव ७०० प्रवासी भारतीय स्वदेश लौटे। माहेश्वरी भवन मे सोसाइटी द्वारा इनके भोजन आदि की व्यवस्था की गई।

गांधीजी के आदेशानुसार नोवाखाली, चांदपुर तथा त्रिपुरा क्षेत्रों की पीड़ित हिन्दू जनता के लिए राहत-कार्य लगकर इन्होने किया। बंगाल के अन्य दगाग्रस्त क्षेत्रो-ग्वालन्दी, चन्दनपुर, चौमुहानी, चिटखिला, दत्तपाड़ा और रामगग में भी सहायता शिविर लगाए गए। इस प्रकार सारे मारवाड़ी समाज की सहायता से व्यापक सेवा-कार्य की व्यवस्था और सफल संचालन कर धर्मचन्दजी ने अपनी योग्यता, कर्मठता और सेवा भावना का ठोस उदाहरण समाज के सामने रखा।

दूसरी योरप यात्रा

विश्व भ्रमण द्वारा ज्ञानार्जन करना और प्राप्त अनुभवो के योगदान द्वारा समाज को विकास की ओर अग्रसर करना, यह धर्मचन्दजी की मूल वृत्ति रही है। धर्मचन्दजी मारवाडी रिलीफ सोसाइटी द्वारा सचालित राहतकार्यों मे ही उलझे हुए थे कि इसी बीच लन्दन मे ५ मई १९४७ से १२ मई तक 'ब्रिटिश इण्डस्ट्रीज फेयर' होने की सूचना मिली। योरप मे होने वाली औद्योगिक क्रान्ति पर धर्मचन्दजी की आंखें बराबर लगी रहती थी। लन्दन मे लगने वाली उक्त प्रदर्शनी मे अबतक के औद्योगिक विकास को एक ही स्थान पर देखा और समझा जा

सकता था। मौके पर चूक जाना धर्मचन्दजी के स्वभाव मे नही था, अतः उन्होने योरप-यात्रा का निश्चय कर लिया। १ मई, १९४७ को वे सपत्नीक विदेश-यात्रा पर रवाना हो गए। उनकी धर्मपत्नी मोतीदेवी का साथ रहने से यह यात्रा धर्मचन्दजी के लिए विशेष आनन्द दायक और उत्साहप्रद थी लन्दन पहुँच कर धर्मचन्दजी ने इण्डस्ट्रीज फेयर मे भाग लिया। इस प्रदर्शनी को देखकर धर्मचन्दजी ने भारत के लिए उपयोगी लघु उद्योगो के सम्वन्ध मे विस्तृत ज्ञान प्राप्त किया। लन्दन से धर्मचन्दजी पेरिस गए। दुनिया का स्वर्ग कहे जाने वाले पेरिस मे धर्मचन्दजी ने सौन्दर्य, कला और मनोरजन के मनोमुग्धकारी करिश्मे देखे। फिर अमेरिका हवाई जहाज द्वारा न जाकर पानी के जहाज द्वारा गए। इस यात्रा का एक विचित्र अनुभव था। उस समय इगलैण्ड से 'क्वीन एलिजावेथ' नामक पानी का जहाज था, उसमे धर्मचन्दजी को सपत्नीक सीट मिली। यह विश्व का सवसे वडा पानी का जहाज था इसमे सबसे ऊँचे श्रेणी मे सीट मिली। उसमे खाने-पीने की सारी सुविधाएँ थी। जहाज मे ही तीन दिन की यात्रा मे धर्मचन्दजी की पत्नी मोती देवी ने तैरना सीखा। इसी जहाज मे श्री विधानचन्द्र राय भी यात्रा कर रहे थे उनसे धर्मचन्दजी का परिचय हुआ। जहाज एक शहर की तरह था, इसमे धोवीखाना, छापाखाना, विश्व की सारी खवरें मिलने की व्यवस्था थी। कलकत्ते के दगे की खवर भी उसमे आयी। जहाज मे ७ मजिलें थी, खेलने के साधन थे। जहाज से ही अपने पुराने मित्र राजकुमारजी खेमका को तार देकर न्यूयार्क के होटल मे कमरा रिजर्व करवाया। दूसरे दिन उनका तार आया उसमे होटल का नाम था। वहाँ धर्मचन्दजी आस्ट्रेलिया गए।

वही पर सिडनी मे प्रडेन्शियल विल्डिग मार्टिन पैलेस मे भारतीयो द्वारा मनाए गए १५ अगस्त के झडोत्तोलन समारोह मे धर्मचन्दजी ने सपत्नीक भाग लिया। वहां से सिगापुर होते हुए अगस्त के तीसरे सप्ताह मे ये भारत लौट आए। यह धर्मचन्दजी की अपनी विस्तृत विदेश यात्रा थी। भारत लौट कर धर्मचन्दजी ने अपनी विस्तृत विदेश यात्रा के अनुभव पत्रिकाओ में प्रकाशित किए जिनको लोगों ने वड़े चाव से पढा।

धर्मचन्दजी के विदेश-यात्रा से लौटने के पूर्व ही सन् १९४७ मे पजाव में दगे हुए और लाखो शरणार्थी भाग-भाग कर वगाल मे आने लगे। धर्मचन्दजी की अनुपस्थिति मे साथियो ने सोसाइटी के माध्यम से दगा-पीड़ितो के

सहायतार्थ व्यापक सेवा-कार्य किया। अमृतसर और लाहौर में भी शिविर लगाए गए और अनेक हिन्दू परिवारो का उद्धार किया गया।

हरिद्वार में कनखल मे भी सेवा-शिविर लगाया गया। इस शिविर का निरीक्षण करने जवाहरलाल नेहरू स्वय पधारे और उन्होने सोसाइटी के कार्य की प्रशसा की।

धर्मचन्दजी भी विदेश-यात्रा से आते ही सोसाइटी द्वारा हो रहे राहत-कार्य में जुट गए। इसी क्रम में बगाल के रिलीफ मत्री प्रिंसिपल एस० एन० अग्रवाल, पूना नेचर क्योर होम के डाक्टर दीनशा मेहता आदि अनेक विशिष्ट लोगो ने सोसाइटी के कार्यों का निरीक्षण किया और धर्मचन्दजी को बधाई दी।

दिल्ली स्टेशन के प्लेटफार्म पर सोसाइटी द्वारा जो सहायता कार्य चल रहा था उसका महत्व विश्वमित्र मे छपी इस खबर से समझा जा सकता है—

'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी : नेताओं द्वारा कार्य की प्रशसा

नई दिल्ली (तार द्वारा) कलकत्ते की मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी ने दिल्ली स्टेशन के प्लेटफार्म पर एक कैम्प खोला है जहा १५००० शरणार्थियों की सेवा की जा रही है। नगर के अनेक भागो में गन्दगी आदि के कारण हैजा का भयकर प्रकोप हो रहा है। सोसाइटी के कार्यकर्त्ता शरणार्थियो एव वहां की जनता को हैजे का टीका घूम-घूमकर लगा रहे है। बिडला मन्दिर के मेडिकल कैम्प मे २ हजार लोगो को टीका लगाया गया। बाढ पीडित लोगों की सहायता के लिए एक कैम्प जमुनापुल पर भी खोला गया है। बच्चो के लिए मुफ्त दूध वितरण किया जाता है।

सोसाइटी के प्रतिनिधि महात्माजी से मिले। महात्माजी ने उनको पूर्वी और पश्चिमी पजाब मे भी कार्य बढाने की राय दी। पजाब शरणार्थी सहायता दल के प्रधान सगठनकर्त्ता श्री भालचन्द शर्मा फिरोजपुर, कुरूक्षेत्र तथा अमृतसर मे कैम्प खोलने मे व्यस्त थे। अमृतसर स्थित कैम्प का लेडी माण्टबेटन, राजकुमारी अमृत कौर तथा शरणार्थी सहायता एद पुनर्वास मत्री के० सी०

नियोगी, डा० पट्टाभि सीतारमैया एवं श्री शकर राव देव ने निरीक्षण किया। आपलोगों ने सोसाइटी के कार्य की प्रशंसा की।

प्राकृतिक चिकित्सा की ओर

धर्मचन्दजी सजीदा स्वभाव के परिहास-प्रिय व्यक्ति हैं। किसी भी विषय पर खुले दिल से बात करना और ठहाका मारकर हँसना उनकी सहज वृत्ति है। अस्सी की उम्र मे भी उनका पूर्ण स्वस्थ और सुदर्शन व्यक्तित्व इस बात का गवाह है कि शरीर को सहेज कर रखने की कला मे वे पूर्ण निष्णात हैं। बार-बार विश्व भ्रमण करते हुए दिमाग और खुली आखो से विविध वैचित्र्यपूर्ण ससार को देखा और परखा है। समाधि से लेकर सयोग-साधना तक सभी स्थलो पर झाक आए है वे। पर अपना आचार-व्यवहार, खानपान, रहन-सहन और जीने का सलीका अपना ही है—नशा-हीन, निरामिष, सात्विक और प्राकृतिक। कही कोई तनाव नही, कुण्ठा नही, वाद-विवाद नही। जो अच्छा लगता है उसे पूरे उत्साह से करते हैं, जो मन को भाता नही उसमे उलझते नही। बातो की अपेक्षा कर्म पर विश्वास। उनके सानिव्य से मन की उदासी धुल जाती है। जीवन के प्रति उमग और आनन्द की स्फूर्णा होती है। उनके साथ बैठकर बतिया लेने वाला व्यक्ति बोझ और थकान से मुक्त और हलका होकर लौटता है।

धर्मचन्दजी के इस सदाबहार जीवन का राज है प्रकृति के प्रति उनका असीम प्यार और अटूट लगाव राची मे इनका जन्म हुआ—घनघोर जगलो से घिरे, प्राकृतिक वैभव और सौन्दर्य से परिपूर्ण धरती की गोद मे इनका बचपन बीता। प्रकृति के प्रति इनका जन्मजात लगाव आज भी ज्यों का त्यो बना हुआ है। जल मिट्टी, हवा, प्रकाश, और आकाश के साथ इनकी सास और धड़कन का सहज सम्बन्ध है। प्रकृति से प्राप्त ऊर्जा को प्राकृतिक जीवन प्रणाली के विकास-कार्य मे ही खर्च कर इन्हे आत्मिक सतोष होता है। जीवन की इस सान्ध्य बेला मे अपनी आनुसगिक गतिविधियोको समेट कर प्राकृतिक चिकित्सा और सेवा-कार्य के लिए ही इन्होने अपना शेष जीवन समर्पित कर रखा है। प्राकृतिक-चिकित्सा के प्रति इनकी लगन और निष्ठा को शक्ति मिली है महात्मा गाधी, विनोबा भावे, ढेवर भाई और मोरारजी देसाई जैसे महान व्यक्तियो के ससर्ग से।

पाइलेट धर्मचन्दजी

जैसा कि कहा जा चुका है कि दुस्साहसिक कार्य करना धर्मचन्दजी की नियति बन चुकी है। विरोध के बावजूद वे अपने गन्तव्यपथ पर आगे ही बढते गए।

एक बार जो निश्चय कर लिया उस काम को पूरा कर दिखाने का उत्साह उनमें बराबर बना रहा। वे उसी साल स्थापित 'बगाल फ्लाइंग क्लब' मे जाकर स्वय हवाई जहाज चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त करने लगे। वे जबतक क्लब से लौटकर नही आते उनकी माँ भोजन नही करती थी।

हवा मे उडने और आकाश से बातें करने का आकर्षण इतना अधिक था कि थोड़े ही दिनो में गहरी लगन और निरन्तर अभ्यास द्वारा उन्होने हवाई जहाज उड़ाने का विधिवत प्रशिक्षण पूरा कर लिया। सन् १९३१ मे इन्होने 'ए' पाइलोट्स लाइसेंस प्राप्त किया था।

मारवाड़ी समाज मे उस समय बृजलालजी लोहिया, धर्मचन्दजी सरावगी और भागीरथजी गोयनका तीन युवक पाइलट हुए, इनमे धर्मचन्दजी का स्थान जैन पाइलट के हिसाब से प्रथम था। लेकिन लदन से कराँची तक हवाई-यात्रा करने वाले प्रथम भारतीय यात्री धर्मचन्द ही थे।

बगाल फ्लाइग क्लब मे ये बराबर अभ्यास करते रहे और फिर १९५५ से १९५७ तक क्लब के कोषाध्यक्ष के पद पर भी रहे। इस बीच इन्होने कई बार हवाई यात्राएँ की। हवाई जहाज उडाते समय कई बार इनके साहस और धैर्य की परीक्षा भी हुई।

परीक्षा के क्षण

एक बार दमदम के समीपवर्ती आकाश मे हवाई-विहार करते समय एक गिद्ध पक्षी वायुयान से आ टकराया। वायुयान थोड़ा क्षतिग्रस्त भी हुआ। लेकिन धर्मचन्दजी ने बड़े धैर्य और कुशलता से वायुयान को सुरक्षित जमीन पर उतार लिया। इस पर उनके शिक्षक ने उन्हे बधाई दी और दूसरे दिन 'स्टेट्समैन' पत्र मे इस घटना का समाचार छपा। यहा पर यह बात उल्लेखनीय है कि कुछ ही दिनो पहले इसी प्रकार गिद्ध से टकरा कर एक विमान-दुर्घटना हो चुकी थी जिसमे रूमानिया के राजकुमार को मौत का शिकार होना पड़ा। आजकल भी बीच-बीच मे ये पक्षी बड़े-बडे जहाजो से टकरा कर लाखो का नुकसान करते है।

३० दिसम्बर, १९३३ मे धर्मचन्दजी ने विश्व विजयी पहलवान गामा को अपने जहाज मे बैठाकर आकाश की सैर करवाई। इस उड़ान में वे पाँच हजार

फीट की ऊँचाई तक उड़े। गामाजी बहुत खुश हुए और जब उतरने लगे तो कुछ देर और उड़ाने को कहा पर उतरते समय विमान को जोरदार झटका लगा। बेचारे गामाजी तो एकदम घबरा गए। लेकिन धर्मचन्दजी विमान से इस प्रकार मुस्कराते हुए नीचे उतरे जैसे कुछ हुआ ही नही। बाद मे पता चला कि भूमि पर उतरते समय गामा के अधिक वजन के कारण विमान का एक चक्के का टायर फट गया था। श्री गामा ने कहा अब हम दुबारा हवाई जहाज पर नही चढ़ेंगे।

धर्मचन्दजी मे एक कुशल विमान-चालक की सूझ-बूझ और निर्भीकता दोनो ही गुण थे। आगे चलकर इन्होंने स्वय अपना विमान (पुष्पक) खरीद लिया था जिसपर इन्होंने अनेक बार भारत-भ्रमण किया। फिर अपने ही जहाज द्वारा विश्व-भ्रमण का प्रोग्राम बनाया। पत्नी को भी विमान चलाना सिखाया। पर एक के बाद एक कानूनी बाधाएँ आती गई इसलिए फिर १९४७ मे सपत्नीक विश्व भ्रमण कम्पनियो द्वारा चलाए जाने वाले हवाई जहाजो मे किया।

फिर एक चुनौती—हवाबाज को

सन १९४० मे कांग्रेस का अखिल भारतीय अधिवेशन रामगढ मे होने जा रहा था। सारे देश मे राजनैतिक चेतना का एक अभूतपूर्व ज्वार छाया हुआ था। मौलाना अब्दुल कलाम आजाद की अध्यक्षता मे होने वाले इस अधिवेशन की ओर सारे देशवासियो की आँखें लगी हुई थी। सम्मेलन मे कांग्रेस की नीतियो और स्वाधीनता आन्दोलन की भावी रूपरेखा के बारे मे निर्णय लिए जाने थे।

एक कुशल पाइलट के रूप मे धर्मचन्दजी की ख्याति सारे देश मे फैल चुकी थी। अधिवेशन की स्वागत समिति के प्रतिनिधियो ने धर्मचन्दजी से आग्रह किया कि वे अधिवेशन मे उद्घाटन के अवसर पर आकाश से पुष्प वृष्टि कर अध्यक्ष श्री अब्दुल कलाम आजाद का स्वागत करें। धर्मचन्दजी भला ऐसे अवसर पर कब चूकने वाले थे। उन्होने इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया। ठीक समय पर धर्मचन्दजी अपने फ्लाइंग क्लब का वायुयान लेकर रामगढ की ओर उड़े। किन्तु तूफान और मुसलाधार वृष्टि के कारण पुष्प-वृष्टि नही कर सके। जहाज संकट मे फँस गया। धर्मचन्दजी ने बड़े साहस और सूझबूझ से काम लेते हुए विमान को जमशेदपुर हवाई अड्डे पर उतार लिया। यह तूफानी वृष्टि इतनी

भयकर थी कि पूरे रामगढ में अधिवेशन के मैदान मे पानी भर गया। अधिवेशन के लिए तैयार किया गया म च और दूसरे तम्बू क्षतिग्रस्त हो गए। लाचार होकर कांग्रेस को यह अधिवेशन स्थगित कर देना पड़ा।

बाद मे १९४८ मे जब जयपुर मे पण्डित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ तो धर्मचन्दजी ने विमान द्वारा पुष्प-वृष्टि की। इस समय तक धर्मचन्दजी ने अपना स्वय का जहाज खरीद लिया था जो 'पुष्पक विमान' के नाम से प्रसिद्ध था। जयपुर से लौटते समय धर्मचन्दजी की माताजी, धर्मपत्नी और बच्चे भी साथ थे। कलकत्ते के समीपवर्ती आकाश मे पहुँचते-पहुँचते धर्मचन्दजी दिशा भ्रमित हो गए। उन दिनो बेहला मे हवाई अड्डा था। दुर्गापुर ब्रिज को पार करते हुए धर्मचन्दजी ने समझा कि हावड़ा ब्रिज आ गया है और अब चार-पांच मिनट में ही हम बेहला हवाई अड्डे पर पहुंच जाएँगे। लेकिन पन्द्रह-बीस मिनट तक उड़ान भरने के बाद भी जब बेहला का हवाई अड्डा नही दिखाई दिया तो धर्मचन्दजी समझ गए कि जहाज अपने निर्दिष्ट-पथ से भटक चुका है। इधर सूर्यास्त होकर अधकार बढने लगा था। आखिर धर्मचन्दजी ने अपनी माताजी तथा पत्नी को सूचित करते हुए कहा कि 'हवाई अड्डा कही दिखाई नही देता है। आकाश के अन्धेरे मे बेमौत मरने की अपेक्षा किसी खेत मे विमान उतारने का प्रयत्न कर रहा हूँ। पता नही सुरक्षित उतर सकेंगे कि नही। आप लोगो को भगवान का नाम लेना हो तो ले लीजिए।'

धर्मचन्दजी की बात सुनकर सब लोग घबडा गए पर धर्मचन्दजी धैर्य के साथ उपयुक्त स्थान की तलाश करते रहे। अन्त मे उन्होने पालता मे किसी स्थान पर अपने विमान को सुरक्षित जमीन पर उतार लिया। इस प्रकार पूरे परिवार को मौत के मुँह से बचा लेने में वे सफल रहे।

निरीक्षण और प्रयोग

प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी कार्य को विस्तार देने के लिए विषय का ज्ञान प्राप्त करने की दिशा में धर्मचन्दजी की दिलचस्पी बढती गई। देश मे जहां-जहा प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र थे वहा-वहा वे स्वय गए। मलाद (बम्बई), उरुली काचन (पूना के समीप) तथा डा० दीनशा मेहता द्वारा स्थापित पूना के प्रसिद्ध चिकित्सा केन्द्रो पर जाकर इन्होने वहां चलने वाले चिकित्सा सम्बन्धी कार्यो के

वारे मे विस्तृत जानकारी की। चिकित्सा केन्द्रो की व्यवस्था और वहां चलने वाले प्रयोगो के परिणामो का व्यौरा प्राप्त किया। इसके वाद प्राप्त ज्ञान के प्रयोगो का सिलसिला चालू हुआ—पहले स्वयं अपने ऊपर और फिर मित्रो और परिचितो पर। इन प्रयोगो के उत्साह जनक परिणामो ने धर्मचन्दजी को आगे वढने की प्रेरणा दी। अव वे इस कार्य को व्यापक वनाने के लिए मन ही मन योजना वनाने लगे।

सन् १९५१ अगस्त मे धर्मचन्दजी जयपुर गए वहाँ इन्होंने अनेक सार्वजिन सस्थाओ के साथ अपना सम्पर्क स्थापित किया और लोगो को प्राकृतिक चिकित्सा सम्वन्धी जानकारी दी। वही प्रचार कार्य करते हुए उनके मन मे प्राकृतिक चिकित्सा सम्वन्धी प्रशिक्षण केन्द्र खोलने की कल्पना का उदय हुआ, जिसको आगे चलकर उन्होने पूरा भी किया।

कलकत्ता कारपोरेशन में : धूम्रपान निषेध के नियामक

अव तक धर्मचन्दजी अपने क्षेत्र मे काफी लोकप्रिय हो चुके थे। सन् १९५२ मे कलकत्ता कारपोरेशन के चुनाव हुए। साथियो के आग्रह को स्वीकार कर धर्मचन्दजी भी चुनाव मे खडे हुए। उन्होने काग्रेसी उम्मीदवार के रूप मे चुनाव लडने का निश्चय किया। श्री अतुल्य घोष और विजयसिंहजी नाहर का धर्मचन्दजी के प्रति विशेष स्नेह था। धर्मचन्दजी के मुकाविले मे दो उम्मीदवार दूसरे भी खडे थे। पर भाग्य धर्मचन्दजी के पक्ष मे कार्य कर रहा था। उम्मीदवार के फार्म चेकिंग होते समय दोनो प्रतिद्वन्दियो के फार्म गलत भरे जाने के कारण अस्वीकार कर दिए गए। इस आकस्मिक विजय से धर्मचन्दजी का दायित्व और भी वढ गया। एक कौंसिलर के रूप मे धर्मचन्दजी ने वडी निष्ठा और लगन के साथ कई महत्वपूर्ण कार्य किए।

उन दिनो ट्रामो मे धूम्र-पान के कारण दूसरे यात्रियो को वडी असुविधा होती थी। कभी-कभी कपड़ा जलने जैसी घटनाएँ भी घटती रहती थी। धर्मचन्दजी ने ट्राम मे धूम्र-पान वन्द करवाने के लिए कारपोरेशन मे प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव को व्यापक समर्थन मिला। कारपोरेशन ने प्रस्ताव पास कर विधान-सभा को प्रेषित कर दिया। विधान सभा मे भी इस प्रस्ताव की अनुकूल प्रतिक्रिया हुई। कानून वनाकर ट्रामो मे धूम्र-पान निषेध कर दिया गया। इसे प्रभावित होकर

धर्मचन्दजी ने सिनेमा घरो में धूम्र-पान पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रस्ताव कारपोरेशन में रखा। संयोग से इसी अवसर पर दक्षिण प्रदेश के किसी सिनेमा घर में भयंकर अग्नि-कांड हुआ। बहुत से लोग मारे गए। अनुसन्धान करने पर अग्नि-काण्ड का कारण धूम्र-पान था। इससे उनके प्रस्ताव को बल मिला और सिनेमा घरो मे धूम्र-पान बन्द हुआ। यह धर्मचन्दजी के रचनात्मक विचार की विजय थी। अनेक प्रमुख व्यक्तियो ने धर्मचन्दजी को इस विजय के लिए बधाई दी। धर्मचन्दजी ने रेल और हवाई जहाज में भी धूम्र-पान बन्द करवाने की पेशकश की लेकिन उसमें सफलता नही मिली। उनके मित्र परिहास किया करते थे कि धर्मचन्दजी का वश चले तो किसी को घर मे भी धूम्र-पान नही करने दे।

कारपोरेशन की बैठक में एक बार एक प्रस्ताव आया कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का कारपोरेशन को आगे बढाने मे बहुत बड़ा हाथ रहा है। इसलिए कारपोरेशन में जहा काउन्सिलरो की बैठक होती है उस हाल मे उनका एक बड़ा तैल-चित्र टांगा जाए। धर्मचन्दजी ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया और अपने खर्च से चित्र बनवाकर देने की घोषणा की। चित्र बना पर सयोग की बात है जापान गवर्नमेन्ट ने नेताजी का एक तैल चित्र बनाकर भेजा वह चित्र कौसिलर हाल मे टागा गया। पर फिर धर्मचन्दजी का दिया हुआ चित्र मेयर और काउन्सिलर जिस सीढी से चढते है उसके बरामदे मे टांगा गया जो आज भी टगा है और उसपर लिखा है कि धर्मचन्द सरावगी ने बनवाकर दिया।

अनवरत कार्य

कलकत्ता कारपोरेशन के कौन्सिलर के रूप मे धर्मचन्दजी ने शृंखलाबद्ध कार्य किया। महानगर और समाज से सम्बन्धित ज्वलत समस्याओ की ओर इन्होने कारपोरेशन का ध्यान आकर्षित किया। शराब का प्रचलन तीव्र गति से बढ़ रहा था। अनेक प्रतिष्ठित कहे जाने वाले घराने पीने की बुरी लत के शिकार हो रहे थे। शराबखोरी के कारण अनेक खाते-पीते परिवारो को धूल मे मिलते देखा था इन्होने। अतः पूरे जोर-शोर के साथ इन्होने शराब की दुकानें बन्द करवाने का प्रयत्न किया।

मछुआ बाजार मे फल विक्रेताओ के कारण कूडे और गन्दगी का ढेर लगा रहता था, जिसके कारण आसपास का वातावरण सडाध से भरा रहता था।

सड़को पर कूडे के कारण लोगो का राह चलना कठिन हो रहा था। धर्मचन्दजी ने इस समस्या के समाधान के लिए कारपोरेशन का ध्यान आकर्षित किया।

स्वास्थ्य-रक्षा की दृष्टि से नगर मे जगह-जगह स्वीमिंग पुल बनाने का प्रस्ताव रखा। दुकानो मे बिकने वाली खाद्य सामग्री के सम्बन्ध मे शुद्धता की सूचना देने वाले साइन बोर्ड लगवाने के लिए आन्दोलन किया।

आदिम युग की बर्बरता की याद दिलाने वाले हाथ-रिक्शा की जगह आज जो कुछ रूटो मे आटो रिक्शा चलता है उसके प्रारम्भ करवाने की इन्होंने पुरजोर कोशिश की।

गायो तथा अन्य दुधारू जानवरो की रक्षा के लिए कसाईखाने बन्द करवाने का सतत् प्रयत्न किया। सितम्बर १९५४ मे धर्मयुद्ध समिति द्वारा चलाए गए गौरक्षा आन्दोलन मे इन्होंने उत्साह से भाग लिया। यह प्रथम अवसर था जब श्री प्रयागदासजी राठी, श्री सोहनलालजी दुगड, श्री गजराजजी सरावगी जैसे प्रतिष्ठित मारवाड़ियो ने आन्दोलन मे खुलकर भाग लिया। इसमे अनेक लोग घायल हुए और जेल गए। श्री सोहनलालजी दुगड़ के भी सिर मे लाठी लगी और उनको जेल भी दी गई।

२४ नवम्बर, १९५८ को कलकत्ते मे 'विश्व शाकाहारी काग्रेस' का आयोजन हुआ जिसमे देश-विदेश के ६५ प्रतिनिधियो ने भाग लिया। धर्मचन्दजी इस सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष थे। इस महत्वपूर्ण आयोजन को सफल बनाने मे धर्मचन्दजी का विशेष सहयोग रहा था।

जिन समस्याओ की ओर धर्मचन्दजी ने अपने कार्यक्रम मे लोगो का ध्यान आकर्षित किया था वे ही समस्याएँ आज भी सुरसा की तरह मुँह बाए खडी है। कसाईखाने, हाथ-रिक्शा, शराब की दुकानें, गन्दी बस्तियो की सफाई और स्वास्थ्य रक्षा के प्रश्न आज भी ज्यो के त्यो अनुत्तरित पडे है। इन भयानक समस्याओ के समाधान के अभाव मे पूरा महानगर नरक-कुण्ड बनता चला जा रहा है। एक भविष्य द्रष्टा की तरह धर्मचन्दजी प्रारम्भ से ही इन समस्याओ के प्रति जागरूक रहे और समाधान की दिशा मे सघर्ष करते रहे।

एक वार्ड विशेष के प्रतिनिधि होते हुए भी धर्मचन्दजी ने पूरे जन-जीवन से सम्बन्धित व्यापक रचनात्मक कार्यो मे ही अधिक रुचि ली। यह इनके उदारवादी

दृष्टिकोण का परिचायक है। बात-बात मे सिद्धान्तो की चर्चा करने वाले लोगों मे ये नही रहे। इनका कहना था कि व्यक्ति की पहचान सिद्धान्तो से नही उसके कर्मो से ही की जाती है। अपनी असफलता का दोष दूसरो के माथे मढने वाला व्यक्ति अपनी ही कमजोरी प्रकट करता है। पूरी ताकत और आत्म-विश्वास से कार्य करने वाले व्यक्ति के पीछे पीछे सफलता स्वयं चली आती है—

"सब सहायक सबल के, कोऊ न निबल सहाय।"

फिर इंगलैड की ओर

२४ अप्रेल १९५३ को धर्मचन्दजी ने अपने मित्र श्री गोविन्द प्रसाद रुईया, जिन्होने मारवाड़ी रीलिफ सोसाइटी के तीसरे तल्ले मे प्राकृतिक चिकित्सा प्रवेशित विभाग खोलने के लिए सत्तर हजार रुपये दिए थे, के साथ इङ्गलैण्ड यात्रा के लिए प्रस्थान किया। इसी सन्दर्भ मे २०-४-५३ को अनेक सस्थाओ की ओर से श्री दिगम्बर जैन भवन मे धर्मचन्दजी का विदाई समारोह मनाया गया जिसमे उनके कर्मठ जीवन को भूरि-भूरि प्रसशा की गई।

श्री राजबली जी शुक्ल ने अभिनन्दन पत्र पढ़ा। लोकमान्य के सचालक श्री रमाशकरजी त्रिपाठी, कौसिलर श्री तुलसीरामजी सरावगी, श्री बसन्तलालजी मुरारका, श्री सीतारामजी सेकसरिया, श्री मुरलीधरजी सोथलिया तथा श्री मूलचन्दजी अग्रवाल आदि नगर के विशिप्ट व्यक्तियो ने इस समारोह की शोभा बढ़ाई।

धर्मचन्दजी ने अपनी उक्त विदेश यात्रा मे लन्दन, हालैण्ड, फ्रान्स बेलजियम इटली, वियाना आदि अनेक देशो का भ्रमण किया। इसी यात्रा मे इन्होने लदन मे होनेवाली हेल्थ-कान्फ्रेन्स मे अपना ऐतिहासिक भाषण दिया।

लन्दन में भाषण

लन्दन मे ५ मई को कलकत्ता कारपोरेशन के कौसिलर भारतीय प्रतिनिधि श्री धर्मचन्दजी सरावगी ने विश्व स्वास्थ्य सम्मेलन में आगन्तुक प्रतिनिधियो को सम्बोधित करते हुए कहा—

'आज ससार मे मानव मात्र का स्वास्थ्य खतरे से टकरा रहा है। उचित और पोषक खाद्य पदार्थों का अभाव प्रतिदिन के भोजन तथा दिनचर्या मे संयम

हीनता ने ही आज के स्वास्थ्य को बडी चिन्तापूर्ण स्थिति मे डाल दिया है। साथ ही रोगी बनकर अत्यधिक औषधियों का सेवन करने के कारण भी विकट समस्या उत्पन्न हो गई है। उदाहरणार्थ पेन्सिलीन के आविष्कार ने हाल ही मे अपनी भारत-यात्रा मे कहा था कि डाक्टर लोग साधारण से साधारण बीमारी मे भी पेन्सिलीन का उपयोग उदारता पूर्वक कर रहे है। इसका परिणाम भविष्य मे यह होगा कि उस रोगी की नाजुक परिस्थिति मे यह औषधि कोई असर नही डाल सकेगी सम्मेलन के एक प्रतिनिधि के भाषण से भी इसकी स्पष्ट पुष्टि हो जाती है कि जिस स्थान पर प्रतिदिन डी० डी० टी० मक्खियो और मच्छरो को हटाने के लिए व्यवहार मे लाई जाती है, वहा पर देखा जाता है कि वे मक्खिया और अन्य कीड़े-मकोडे उस डी० डी० टी० की गन्ध के इतने अभ्यस्त हो जाते है कि वे वहा से कभी नही भागते।

'इस सम्मेलन मे भिन्न-भिन्न देशो के प्रभावशाली महान व्यक्तित्व वाले प्रतिनिधि सम्मिलित हुए है। उनसे मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ हूँ, और भारत की ओर से मैं आपलोगो का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। मेरी यह अभिलाषा है कि ससार मे दवाइयो के व्यवहार की जो बाढ आ गई है उसे आप सामूहिक रूप से रोकें। जिससे मानव मात्र का उपकार हो और स्वास्थ्य सम्मेलन उस महान श्रेय को प्राप्त करें।'

सम्मेलन में करीब ९० देशो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया था। धर्मचन्दजी इटली और बेलजियम होते हुए वियाना पहुँचे। यात्रा के इसी क्रम मे वे इंगलैंड मे एलीजाबेथ के राज्याभिषेक समारोह मे भी सम्मिलित हुए।

विदेश-यात्रा से लौटकर धर्मचन्दजी फिर सार्वजनिक कार्यों मे व्यस्त हो गए। २९ जुलाई १९५३ को कलकत्ते मे मर्चेण्ट्स कमेटी के ५१ वें अधिवेशन मे धर्मचन्दजी ने सभापति-पद से महत्वपूर्ण भाषण दिया।

२२ नवम्बर १९५३ को मारवाडी सम्मेलन के तत्वावधान मे समाज सुधार समिति द्वारा दहेज विरोधी आन्दोलन प्रारम्भ किया गया। धर्मचन्दजी ने इसमे सक्रिय भाग लिया।

६ अप्रैल १९५४ को जापान के डा० ओसावा की उपस्थिति मे प्राकृतिक चिकित्सा पर गोष्ठी हुई जिसमे इन्होने अपने महत्वपूर्ण विचार रखे।

निर्मल-इन्दु · शुभ विवाह

'जीवन की लम्बी यात्रा मे सफल और असफल होना बहुत कुछ पति-पत्नी के आपसी तालमेल पर निर्भर करता है। पुरुष और स्त्री दो पहियो की तरह जीवन-रथ को गतिशील बनाते है। दोनो पहियो के सन्तुलन के बिना रथ का एक कदम भी आगे बढ पाना सम्भव नही। धर्मचन्दजी दाम्पत्य-जीवन के इस रहस्य से भलीभाति परिचित थे। अपने बड़े पुत्र निर्मल कुमार के विवाह के समय इन्होने अपने इस अनुभूत ज्ञान का भरपूर उपयोग किया।

परिवार के मगलमय भविष्य की कामना को हृदय मे सजोये वे सुयोग्य पुत्र-वधू की तलाश में लग गए। जात-पांत की कट्टरता और दहेज जैसी सामाजिक बुराइयों से परहेज रखने वाले धर्मचन्दजी ने यहा भी अपने उदार और सुधारवादी दृष्टिकोण से ही काम लिया। लडकी गौरवर्ण, सुशील और सद्-सस्कारो वाली हो इतनी ही चाह थी। चाहे वह मारवाड, बिहार, यू०पी०, पजाब, गुजरात कही की भी हो। उन्होने अपने बन्धु-बान्धवो व मित्रो के सामने अपने विचार रखे। उनकी आँखे इच्छित पुत्र-वधू की तलाश करती रही। एक दिन मातृ-सेवासदन के सामने उनकी दृष्टि एक लड़की पर पडी। साथ मे मोती देवी थी। उन्होने उनसे कहा ऐसे रग-रूप की लडकी निर्मल के लिए मिल जाए तो अच्छा हो।

एक दिन अपने मित्र श्री शिवकुमारजी धानुका से किसी आवश्यक कार्य की सलाह के लिए उनके घर गए। सयोग से कुमारी इन्दु स्कूल जाने की तैयारी कर शिवकुमारजी के पैर छूने आई। धर्मचन्दजी ने उनसे पूछा लडकी किसकी है। शिवकुमारजी ने कहा आपकी है जब यह छोटी थी तो व्यायामशाला भी जाया करती थी। धर्मचन्दजी ने मन ही मन सोचा, "गोद मे छोरो गाव मे ढिंढोरो"।

बातचीत आगे बढी और सम्बन्ध पक्का हो गया उस समय धर्मचन्दजी ने उनसे एक बात स्पष्ट कर ली कि समाज की परम्परा के अनुसार जब मित्र अपने पुत्र-पुत्रियो का सम्बन्ध कर कई पुश्त के लिए सम्बन्ध जोडते है तो उनके व्यवहार में फर्क आ जाता है। जब तक साधारण मित्र रहते है, एक-दूसरे के यहां खाना-पीना होता है। पर जब सम्बन्धी होते है तो लडकीवाला लडके वाले के यहा पानी तक नही पीता। आपको यह मानना पडेगा कि आप ऐसा व्यवहार नही करेंगे। शिवकुमारजी ने यह बात स्वीकार कर ली। आज भी शिवकुमारजी के बच्चे धर्मचन्दजी को ताऊजी कहते है।

१६ अप्रैल १९६० को निर्मल कुमार का विवाह सौ० इन्दु के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। पुराने रीति-रिवाजों से हटकर अत्यन्त सादगी से विना पगड़ी शेरवानी आदि के पहने एक ही दिन मे विवाह अनुष्ठान पूरा किया गया।

दहेज, पर्दा और आडम्वर रहित इस आदर्श विवाह की सर्वत्र चर्चा रही। नगर के गण्यमान्य प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने इस विवाह समारोह मे उपस्थित होकर वर-वधू को आशीर्वाद दिया एव धर्मचन्दजी को इस सुधारवादी कदम के लिए ववाई दी।

परिवार को धर्मचन्दजी अपनी स्वर्ग-सृष्टि मानते है। आपस मे एक-दूसरे पर विश्वास, सहयोग, त्याग और सेवा भावना ही पारिवारिक सुख और समृद्धि का प्राण है।

प्राकृतिक निकेतन

व्यक्ति जव अपनी पारिवारिक सीमा से आगे वढकर जन-हित से सम्वन्धित कर्म क्षेत्र मे प्रवेश करता है तव वह मात्र व्यक्ति न रहकर संस्था का पर्याय वन जाता है। उसके द्वारा होने वाले व्यापक हितकारी कार्यों से उत्साहित और प्रेरित होकर अनेक सेवा भावी लोग उसके साथ कदम से कदम मिलाकर चलना प्रारम्भ कर देते है। धर्मचन्दजी ने इक्कीस वीघा मे फैला जैन उद्यान नामक अपना वगीचा प्राकृति-निकेतन-ट्रस्ट को सौंप कर प्राकृतिक चिकित्सा पिद्यापीठ के निर्माण की योजना का श्री गणेश किया तो समाज के अनेक कर्मठ व्यक्ति योजना की क्रियान्विति मे धर्मचन्दजी के साथ जुड़ने लगे। योगासन और प्राकृतिक चिकित्सा के सदेश-वाहक श्री राधाकृष्णजी नेवटिया, सतत् समाजसेवी श्री वजरगलालजी लाठ, समाज-भूषण श्री विजय सिहजी नाहर, कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री आनन्दीलालजी गोयनका जैसे महत्वपूर्ण व्यक्तियो ने योजना को सफल बनाने मे पुरजोर सहयोग दिया।

२० जनवरी १९६३ को दानवीर श्री सोहनलालजी दुगड़ के करकमलो द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा विद्यापीठ का शिलान्यास किया गया। धर्मचन्दजी ने इस मानव कल्याणकारी योजना की पूर्ति के लिए ५०००० (पचास हजार) रुपये नगद देने की घोषणा की। श्री दुगडजी ने भी पत्र-पुष्प के रूप मे ५००० (पांच हजार) रुपयो का अवदान दिया।

नगर से पन्द्रह मील दूर प्रकृति के सुरम्य वातावरण मे शिलान्यास का यह भव्य समारोह आनन्द और उत्साह से परिपूर्ण था। समारोह मे विशिष्ट रूप से आमन्त्रित नगर के गण्यमान नागरिकों को सम्बोधन करते हुए सेठ सोहनलालजी दुगड़ ने कहा—मैं पूर्ण आशा और विश्वास लेकर इस मगल कार्य को सम्पन्न कर रहा हूँ। निश्चय ही इस सस्था से जनता की महान सेवा हो सकेगी। यह सही है कि आज एलोपैथिक पद्धतियो का जाल फैला हुआ है, किन्तु अन्ततोगत्वा प्राकृतिक चिकित्सा और सही रहन-सहन से ही मानव जीवन सुखी हो सकता है।

श्री राधाकृष्णजी नेवटिया ने कहा—गरीब भारत को अल्प व्यय मे गुणकारी चिकित्सा सुलभ करने के अभिप्राय से ही गांधीजी ने सदा प्राकृतिक इलाज पर बल दिया था। आज उन्होने बालकोवाजी जैसे सुदक्ष व्यक्तियो की देखरेख में देश मे जगह जगह प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रो की स्थापना की जो आज भी चल रहे हैं। सरकार द्वारा भी इसके प्रचार मे सहयोग मिल रहा है।

श्री बजरगलालजी लाठ ने कहा—प्राकृतिक चिकित्सा को अपना कर हम जीवन और दीर्घायु के साथ धन की भी रक्षा कर सकते हैं।

प० अक्षय चन्द्र शर्मा ने कहा—पाश्चात्य देशों का समृद्ध जीवन भी आज अप्राकृतिक ढग के रहन-सहन के कारण दुखमय बना हुआ है। हमारे यहां प्राचीन ग्रन्थो मे शत आयु का उल्लेख है, जिसको प्राकृतिक आहार-व्यवहार के द्वारा ही पूर्व पुरुष पा सके थे। आज भी यदि हम सही ढग से नियमो का पालन कर सके तो शत आयु असम्भव नही।

श्री रामकुमारजी भुवालका ने प्राकृतिक नियमो के पालन और व्यायाम की अनिवार्यता पर जोर दिया। अन्त मे प्राकृतिक अल्पाहार के साथ ही यह भव्य समारोह सम्पन्न हुआ।

निर्माण-कार्य का श्री गणेश

२६ जनवरी १९६३ को भारतीय गणतंत्र-दिवस के शुभ अवसर पर तीन सौ मजदूरो के साथ विद्यापीठ के भवन-निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया गया। साढे छ लाख की लागत से पूरी होनेवाली इस योजना के लिए चार लाख सरकार ने देना स्वीकार किया। इस प्रकार योजना का भार काफी हल्का

हो गया। बाकी पूर्ति की दृष्टि से दान-दाताओं से सम्पर्क होता रहा। निर्माण कार्य पूरी तीव्रता से चल रहा था। देखते ही देखते कागजो पर लकीरो मे उकेरा गया स्वप्न प्रकृति निकेतन की धरती की गोद मे आकार धारण करने लगा।

६ फरवरी १९६३ को प्रकृति निकेतन-ट्रस्ट की बैठक जैन हाउस धर्मचन्दजी के निवास स्थान पर हुई। श्री यू० एन० ढेवर की अध्यक्षता मे हुई ट्रस्ट की बैठक मे उपस्थित श्री श्रीमन्नारायण, श्री राधाकृष्णजी नेवटिया श्री आनन्दीलालजी गोयनका, श्री बजरगलालजी लाठ और धर्मचन्दजी ने विद्यापीठ के निर्माण की अब तक की प्रगति का लेखा-जोखा दिया। कार्य की प्रगति के लिए सभी ने सतोष व्यक्त किया।

इस बैठक के पश्चात् ही भोजन का कार्यक्रम हुआ जिसमे राजस्थान के मुख्य मत्री श्री सुखाडियाजी, सर्वश्री रामकुमार भुवालका, मोहनलाल दुगड़ आदि अनेक सम्मानित व्यक्ति उपस्थित थे। सभी ने प्राकृतिक चिकित्सा विद्यापीठ की योजना के प्रति अपनी शुभ-कामना प्रकट की।

भारत सरकार ने इस योजना के लिए ३,४५,६५०)०० (तीन लाख पैंतालिस हजार छ सौ पचास) रुपये का अनुदान स्वीकार किया था। इस प्रकार विद्या निकेतन के मुख्य भवन के साथ ही प्रिन्सिपल के लिए निवास स्थान, अन्य काटेज आदि के निर्माण का कार्य साथ-साथ चलता रहा। धर्मचन्दजी स्वय निर्माण-कार्य का निरीक्षण करते और मजदूरो को आवश्यक निर्देश देते रहे।

इधर कलकत्ता मे प्राकृतिक-चिकित्सा-विद्यापीठ का कार्य द्रुतगति से चल ही रहा था इसी बीच धर्मचन्दजी ने अपने स्वर्गीय पिता श्री बैजनाथजी की पावन स्मृति मे जयपुर मे चल रहे प्राकृतिक चिकित्सा के लिए पक्का भवन बनवाने का निश्चय कर लिया। जयपुर के बापूनगर मे चलने वाले इस चिकित्सालय का सारा कार्य कच्चे मकानो मे ही चल रहा था जिससे रोगियो के रख-रखाव में काफी कठिनाइयो का सामना करना पडता था।

२ मार्च १९६३ को राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री मोहनलालजी सुखाड़िया ने नए भवन का शिलान्यास किया। उक्त अवसर पर चिकित्सालय के मन्त्री श्री बद्रीप्रसाद स्वामी ने कहा—प्राकृतिक चिकित्सालयो का लक्ष्य रोगी की

चिकित्सा करना गौण है। मुख्य ध्येय लोगों को प्राकृतिक जीवन-पद्धति का ज्ञान देना है, ताकि वे निरोग रहने की कला सीख सकें। हमारा प्रयत्न है कि लोग स्वस्थ रहे और उन्हे किसी प्रकार की चिकित्सा न करानी पडे।'

वहाँ धर्मचन्दजी ने बताया कि १९४६ में बापू के आशीर्वाद से मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी द्वारा कलकत्ता मे प्राकृतिक चिकित्सालय खुला तबसे बराबर इस विषय मे खोज और अनुसधान का कार्य चल रहा है। १९५६ मे कांग्रेस अध्यक्ष श्री ढेबर भाई के प्रयत्नों से प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् का गठन हुआ। उसके बाद अब श्री श्रीमन्नारायणजी इसके अध्यक्ष है। १९६३ मे ही कलकत्ता मे इस चिकित्सा का एक विद्यापीठ प्रारम्भ करने की योजना बनी है जिसका शिलान्यास श्री मोरारजी भाई करेंगे। आशा है शीघ्र ही वहा पढाई भी शुरू हो जाएगी। आपने कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा के विकास में हमारी मुख्य बाधा आज अच्छे चिकित्सको का अभाव है। इस विद्यापीठ से यह कमी काफी हद तक दूर होगी। आपने बताया कि विदेशो मे इस चिकित्सा पद्धति का काफी प्रचार है। हिटलर का कैंसर इसी पद्धति से ठोक हुआ था। आज जर्मनी मे पाच सौ चिकित्सा केन्द्र सेवा रत हैं। वहां के विश्वविद्यालय मे भी इसका काफी महत्वपूर्ण सम्मान है।

मुख्यमन्त्री श्री सुखाडिया जी ने कहा कि इस देश मे अभी सरकारी अधिकारियो व आम जनता मे आयुर्वेद तथा प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के बारे मे श्रद्धा नही बन पाई है। फिर भी आज का युग बापू के कार्यों और जीवन निष्ठाओ के काफी अनुकूल है। यदि उसका लाभ उठाकर हम उनके कार्यों को वैज्ञानिक आधार पर ठीक से सगठित नही कर पाये और लोगों मे श्रद्धा नही जगा पाये तो वे टिकने वाले नही हैं। यदि हम चाहते है कि राजस्थान विश्वविद्यालय के मेडिकल के छात्र इस चिकित्सालय का लाभ उठाएँ तो हमे इस चिकित्सालय को लाभ उठाने के स्तर तक विकसित करना पड़ेगा। नही तो छात्रो पर इसका ऊल्टा ही असर पड़ सकता है। आज वक्त है और परिस्थियो की अनुकूलता भी है कि हम इस चिकित्सा-पद्धति को वैज्ञानिक रूप देकर इसको स्थायित्व दे दें।

जयपुर के प्राकृतिक चिकित्सालय मे नया पक्का भवन बनवा कर धर्मचन्द जी ने अपने स्वर्गीय पिताजी की पावन स्मृति को अक्षुण्ण तो बनाया ही,

चिकित्सालय का स्तर भी ऊँचा उठाया। चिकित्सालय राजस्थान यूनिवर्सिटी के सामने ही है। यूनिवर्सिटी से जो चिकित्सक डाक्टर आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से पढ़कर निकलेंगे वे चिकित्सालय मे चल रहे प्राकृतिक चिकित्सा सम्वन्धी प्रयोगो से भी लाभान्वित हो सकेंगे। जो लोग प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति को अवैज्ञानिक मानते है वे मिट्टी, पानी, हवा और प्रकाश आदि की अपार शक्ति से परिचित हो सकेंगे। उन भौतिक तत्वो के अद्भुत रहस्यो को समझने की वैज्ञानिक दृष्टि का विकास होगा।

आज के युग मे एलोपैथी आदि विकसित और वैज्ञानिक कही जाने वाली चिकित्सा-पद्धतियो ने रोगो के मूलकारण और वचाव के उपायो की विस्तृत खोज का महत्वपूर्ण कार्य किया है। किन्तु उनकी खर्चीली और जटिल प्रणाली ने मानव-समाज के मन मे एक प्रकार की शंका और भय को भी जन्म दिया है जिससे साधारणत. आज के आदमी को लगता है कि इस युग मे स्वस्थ रहना सम्भव नही है। किन्तु प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली की यह विशेषता है कि वह मनुष्य को आश्वस्त करते हुए इस विश्वास को जागृत करती है कि स्वस्थ रहना वहुत सहज और सरल है।

विनोवा जी का आगमन

महात्मा गाधी की तरह आचार्य विनोवा भावे भी प्राकृतिक जीवन-पद्धति के प्रवल समर्थक और प्रचारक रहे। प्राकृतिक चिकित्सा विद्यापीठ द्वारा चिकित्सको को दी जाने वाली उपाधियो के सम्वन्ध मे जव उनसे राय मांगी गई तो उन्होंने लिखा कि प्राकृतिक चिकित्सको को अपने नाम के आगे सत्व-चिकित्सक लिखना चाहिए क्योकि वे जनता की सच्ची सेवा करते है। प्रकृति निकेतन मे निर्माणाधीन प्राकृतिक चिकित्सा विद्यापीठ के सम्वन्ध मे चर्चा करते समय जव उनको वताया गया कि सागर जाते समय यह स्थान वीच मे पड़ता है, तो उन्होने कुछ समय निकाल कर उसे देखने की इच्छा प्रकट की।

वुधवार जो जव विनोवाजी व्रतचारी ग्राम से सागर के लिए रवाना हुए तो श्री राधाकृष्णजी नेवटिया उनके साथ पदयात्रा मे शामिल हुए और उन्हे प्रकृति निकेतन ले आए। जव उनका दल प्रकृति निकेतन के पास पहुँचा तो वहाँ सर्वश्री धर्मचन्दजी सरावगी, विहारी लालजी शाह, निर्मलकुमार सरावगी चन्द्रकुमार सरावगी, श्रीमती मोती देवी, इन्दुमती देवी सरावगी तथा श्रीमती लक्ष्मी

राजगढ़िया ने बिनोवाजी का स्वागत किया। धर्मचन्दजी ने हाथ कते सूत की माला उन्हें अर्पित की और श्रीमती मोती देवी ने कुंकुम से तिलक किया।

बिनोवाजी ने घूम-फिर कर विद्यापीठ के निर्माण-कार्य का अवलोकन किया। वहां चलने वाली पवन चक्की को देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए। अपने हाथो से उन्होने एक स्वास्थ्य दायक नीबू के पौधे का रोपण भी किया। विद्यापीठ के प्राकृतिक वातावरण और कार्यकर्त्ताओ की निष्ठा देखकर वे काफी प्रसन्न हुए और उन्होने इस कार्य की सफलता के लिए अपना आशीर्वाद और शुभकामना प्रकट की।

कोणशिला की स्थापना

२२ जून १९६३ को वित्तमन्त्री श्री मोरारजी भाई देसाई ने निर्माणाधीन विद्यापीठ के भवन मे कोणशिला की स्थापना की। इस अवसर पर बोलते हुए श्री देसाई ने कहा—

"यद्यपि प्राकृतिक चिकित्सा विद्यापीठ के भवन का शिलान्यास हो चुका है पर कोणशिला का महत्व इसलिए है कि हम सब जाने की नीव भरी जा चुकी है और अब मूल निर्माण पृथ्वी के ऊपर होने लगा है। इस निर्माण के साथ-साथ वैचारिक निर्माण भी इस विद्यापीठ के हक मे हो रहा है। आशा है कि देश की एक कमी को यह विद्यापीठ पूरी करेगा। जहाँ मेरा व्यक्तिगत अनुभव है मैं प्राकृतिक चिकित्सा पर अधिक विश्वास करता हूँ। यही नही पिछले १४ वर्षों से प्राकृतिक नियम के अनुसार चलने की कोशिश भी कर रहा हूँ। फिर भी किसी दूसरी चिकित्सा प्रणाली की आलोचना कर हमे इस पद्धति की वकालत नही करनी चाहिए। बल्कि ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिए जिससे लोग प्राकृतिक चिकित्सा की ओर आकर्षित हो। यदि अल्प-व्यय मे रोग-मुक्त होने का उपाय बताया जाय तो निश्चित रूप से इसकी ओर जनता आकर्षित होगी।

"हाल ही मे अमेरिका मे तीन रोगियो की चिकित्सा होमियोपैथिक एलोपैथिक और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से की गई, जिसमे प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति का स्थान दूसरा रहा। आमतौर पर प्राकृतिक नियमो का पालन करने का अभ्यास सबको करना चाहिए, परन्तु शरीर को काच की भाति भी नही बनाना

चाहिए। वैज्ञानिक तरीके से लोगो में प्राकृतिक जीवन के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करने का प्रयास करना चाहिए। जहा तक मेरा विश्वास है लोग यदि प्राकृतिक नियमो के अनुसार रहे तो वहुत दिनो तक जिन्दा रह सकते है।"

पश्चिम वगाल के मुख्यमन्त्री श्री प्रफुल्लचन्द्र सेन ने कहा कि चिकित्सा की कितनी भी नई प्रणालियाँ क्यो न आए फिर भी पुरानी प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली चलती रहेगी। हमें इसके प्रति विश्वास पैदा करने का प्रयास करते रहना चाहिए।

पश्चिम वग के श्रममत्री श्री विजय सिहजी नाहर ने कहा कि जव वित्तमत्री मोरारजी देसाई तथा मुख्यमत्री पी० सी० सेन का आशीर्वाद प्राप्त है तो इस पद्धति की उन्नति अवश्य होगी। धर्मचन्दजी ने सभी को धन्यवाद दिया।

प्राकृतिक विद्यापीठ के निर्माण का निश्चय करने से पूर्व श्री धर्मचन्दजी ने देश मे चलने वाले अन्य प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रो जसीडीह, गोरखपुर, मुजफ्फरपुर, वम्वई, जयपुर, केरला आदि का भलीभाँति निरीक्षण कर लिया था। अतः विद्यापीठ के निर्माण के समय इसको सम्पूर्ण रूप से उपयोगी स्वावलम्वी और स्वास्थ्य प्रदायक वनाने का ध्यान रखा गया। चिकित्सा के साथ-साथ शिक्षण की भी व्यवस्था रखी गई। शुद्ध खान-पान की दृष्टि से विद्यापीठ के अन्तर्गत गोशाला, उद्यान, शाक-सब्जी उत्पादन की भी व्यवस्था की गई।

सभी प्रकार की सस्थाओ से रुचि

'ज्यो की त्यो धर दीन्हि चदरिया' वाला सतमन धर्मचन्दजी का नही रहा। उन्होंने अपनी जीवन-चदरिया को हर रग मे डुवोया, रगा और परखा पर सारे रगो को आत्मसात् करते हुए चदरिया पर कोई धव्वा नही लगने दिया। महात्मा सुकरात की इस सीख का वे वरावर ध्यान रखते हैं कि ससार मे सम्मान-पूर्वक जीवन व्यतीत करने का सरल और निश्चित उपाय यही है कि मनुष्य वास्तव मे जैसा हो वैसा ही अपने को व्यक्त करे। सव प्रकार के दुराव-छिपाव और भय से मुक्त खुली पुस्तक-सा दिखता-दिखाता जीवन, वच्चो जैसी सरलता, युवको जैसा उत्साह और वुजुर्गो जैसे अनुभवसिद्ध होने के कारण ये सभी मे सरलता से घुल-मिल जाते है। सशक्त शरीर और स्वस्थ मन से सभी रसो का पान करते हुए आनन्द की खोज और आनन्द का वितरण—यही इनका जीवन-दर्शन रहा है। इनका कहना है कि वृक्ष की तरह कीचड़ से भी

जीवन-रस खीच लो—पर स्वयं कीचड़ मत बनो। सयम-मय-भोग का यह सतुलित दर्शन धर्मचन्दजी के जीवन का एक अछूता आयाम है। सिद्धातो और आदर्शों का लबादा ओढकर चलनेवाली कृत्रिमता के इस युग मे इस प्रकार के बेबाक आदमी बिरले ही मिलते है।

अपनी सर्वतोमुखी वृत्ति के कारण नगर मे चलने वाली सभी प्रकार की गतिविधियो से धर्मचन्दजी सदा जुडे रहे। कभी व्यायामशाला, स्वीमिग क्लब और फ्लाई ग क्लब द्वारा आयोजित साहसिक कारनामो मे भाग लेते है, कभी महामूर्ख सम्मेलन मे अपनी मूर्खताओ की अभिव्यक्ति करते हुए हास-परिहास करते है और कभी कलकत्ता नागरिक सघ के सास्कृतिक आयोजनो मे डफ और झाझ की ताल पर झूमते दिखाई देते हैं। कभी बगीय साहित्य सम्मेलन और सुरक्षा सम्मेलन जैसे दायित्वपूर्ण कार्यों मे सहभागी बनते हैं और कभी दिल्ली दुग्ध योजना जैन, रचनात्मक कार्यो के लिए बीकानेर के ग्राम ग्राम मे अलख जगाते फिरते है। कही आग लगी हो, बाढ आ गई हो, दगा छिड़ गया हो, देश पर आक्रमण हुआ हो धर्मचन्दजी सदा आगे बढकर सेवा-कार्यो मे भाग लेते रहे है। कार्यक्रमो के इन विविध सोपानो पर सीढी दर सीढी उर्ध्व-गमन करते हुए धर्मचन्दजी अपनी जीवन यात्रा का आठवां दशक पार कर शतक-पूर्ति की ओर अग्रसर हो रहे है। अनवरत कर्ममय जीवन। कही थकान नही, कोई अवरोध नही बस एक ही उद्घोष—जबतक जीओ अपनी ऊर्जा का भरपूर उपयोग करते हुए, पूरी सजीदगी के साथ जीओ।

धर्मचन्दजी शारीरिक व्यायाम करने के निमित्त नियमित रूप से बडाबाजार युवक सभा मे जाया करते। वहा ये प्रतिदिन एक घन्टे तक विभिन्न कसरत करते और वहा आने वाले अन्य युवको को व्यायाम का महत्व समझाते। यह सुखद आश्चर्य की बात ही है कि आज अस्सी वर्ष की आयु मे भी वे बराबर व्यायाम शाला में जाते और व्यायाम करते है।

फरवरी १९६४ मे बीकानेर महाराज श्री करनी सिहजी, एम०पी० कलकत्ता पधारे। उसी समय बड़ाबाजार युवक सभा के अन्तर्गत इण्डोर राइफल रेंज का श्रीगणेश हुआ। राइफल सूटिंग-सेन्टर का उद्घाटन करते हुए महाराजा ने कहा कि गत् वर्ष हुए चीन के आक्रमण को दृष्टिगत् रखकर राइफल सूटिंग की ट्रेनिंग

की व्यवस्था देश के हर युवक के लिए की जानी चाहिए। इस दिशा में राज्य सरकारो को उचित कदम उठाना चाहिए क्योंकि यह युग की माग है। साथ ही एक समाजवादी देश मे हर व्यक्ति को समान अवसर प्राप्त हो सके इसकी भी जिम्मेवारी सरकार पर होती है।

इस समारोह की अध्यक्षता श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका ने की। श्री हिम्मतसिंहकाजी ने राइफल सूटिंग प्रशिक्षण की आवश्यकता समझाते हुए कहा कि हमे अपने देश का झण्डा ऊँचा रखना है।

सभा के मन्त्री श्री लक्ष्मण प्रसाद अग्रवाल तथा विशेष सदस्य श्री धर्मचन्दजी ने युवक सभा की गतिविधियो और व्यायाम की अनिवार्यता पर प्रकाश डाला। सर्वश्री राधाकृष्णजी कानोडिया, रामकुमारजी भुवालका, एच० एन० सरकार आदि प्रमुख व्यक्ति समारोह मे उपस्थित थे।

धर्मचन्दजी राज्य सभा मे

२६ मार्च १९६४ को पश्चिम बंगाल विधान सभा द्वारा राज्य सभा के लिए पांच सदस्यो का चुनाव होना था। विधान सभा मे दलगत स्थिति के अनुसार कांग्रेस के तीन उम्मीदवार विजयी हो सकते थे। फिर भी कांग्रेस ने अपने चार उम्मीदवार खडे किए उनमे चौथे नम्बर पर धर्मचन्दजी का नाम था। चौथे उम्मीदवार का नाम कांग्रेस ने इस आशा से भरा था कि वक्त पर यदि विपक्ष के कुछ वोट भी मिल जाए तो कांग्रेस के चार उम्मीदवार सफल हो सकेंगे।

जब चुनाव हुआ तो धर्मचन्दजी के भाग्य ने जोर मारा। कांग्रेस के तीसरे उम्मीदवार श्री एस० पी० राय के तीन वोट रद्द हो गए और परिणामस्वरूप श्री धर्मचन्दजी चौथे नम्बर के उम्मीदवार होते हुए भी विजयी रहे।

धर्मचन्दजी की इस आकस्मिक विजय से जहा हिन्दी क्षेत्रो मे प्रसन्नता प्रकट की गई वही बगला भाषी कांग्रेसियो मे गहरा क्षोभ देखा गया। धर्मचन्दजी नही चाहते थे कि उनकी सदस्यता को लेकर कांग्रेस पार्टी मे किसी प्रकार की अशांति का निर्माण हो। अत. उन्होने एक वफादार सिपाही की तरह पश्चिम

बंगाल कांग्रेस के अध्यक्ष एवं अतुल्य घोष के कहने पर इस्तीफा भेज दिया, जिससे इनकी जगह वापिस एस० पी० राय को चुना जा सके।

धर्मचन्दजी के इस त्याग से विक्षुब्ध बगलाभाषी काग्रेसी बहुत प्रभावित हुए। इधर द्विजेन्द्रलाल सेनगुप्ता के इस्तीफा दे देने के कारण बंगाल विधान सभा की एक सीट का फिर से चुनाव होना था। काग्रेस ने धर्मचन्दजी को इस सीट से खडा किया और वे निर्विरोध हो गए। श्री एस० पी० राय फिर राज्यसभा के सदस्य निर्वाचित हो गए। इस प्रकार कांग्रेस का एक सकट टल गया और धर्मचन्दजो एम० एल० सी० के रूप मे पार्टी और देश का कार्य करते रहे। धर्मचन्दजी ने जिस त्यागमय भावना से पार्टी का काम किया उसके कारण सभी विधायको के मन मे धर्मचन्दजी के प्रति श्रद्धा और सम्मान की भावना का उदय हुआ।

श्री मोरारजी भाई देसाई ने अपनो प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यदि सभी कांग्रेसी कार्यकर्त्ता धर्मचन्दजी जैसे हो सकें तो पार्टी और देश का बड़ा उपकार हो। श्री अतुल्य घोष ने भी धर्मचन्दजी की त्यागमय भावना की भूरि-भूरि प्रशसा की। कानपुर से श्री गगाधर जालान ने प्रशसा का पत्र भेजा धर्मचन्दजी का ठिकाना नही जानता था। उसने लिफाफे पर लिखा—"धर्मचन्दजी सरावगी वे व्यवित हैं जिन्होने राज्य सभा की सीट दरवाजे तक आई उसे लौटा दिया, कलकत्ता।" पत्र धर्मचन्दजी को दूसरे दिन मिल गया। धर्मचन्द जब बगाल विधानसभा सीट पर चुनकर गए तो राज्यसभा की सीट छोड़ने के कारण इनकी अलग छवि थी, लोग बराबर चर्चा किया करते थे।

स्वागत समारोह

राज्य सभा की सदस्यता से त्यागपत्र देकर फिर एम० एल० सी के चुनाव मे निर्विरोध चुन लिए जाने से सारे नगर मे हर्ष की लहर दौड गई। २१ अगस्त १९६४ को धर्मचन्दजी का स्वागत और सार्वजनिक अभिनन्दन हिन्दुस्तान क्लब की ओर से किया गया। सम्माननीय नागरिको की उपस्थिति मे समारोह के अध्यक्ष पद से बोलते हुए बगाल के मुख्य मन्त्री श्री प्रफुल्लचन्द्र सेन ने कहा—" श्री सरावगी एक क्रान्तिकारी व्यक्ति है। आज के युग मे वे जिस प्रकार प्राकृतिक चिकित्सा पर अडिग विश्वास लेकर चल रहे है वह अत्यन्त साहसपूर्ण

कलकत्ते में भी वर-वधू के सम्मान मे हिन्दुस्तान क्लब में प्रीति सम्मेलन का आयोजन हुआ। मुख्यमन्त्री श्री पी० सी० सेन, सर्वश्री श्रममन्त्री विजयसिंह नाहर रामकुमारजी भुवालका एम० पी०, बिहारी भाई शाह, श्रीमती अग्रवाल 'विश्वमित्र' सम्पादक कृष्णचन्द्रजी अग्रवाल आदि ने वर-वधू को अपना स्नेहमय आशीर्वाद दिया।

दिगम्बर जैन समाज अग्रवालो और खण्डेलवालो मे यह पहला वैवाहिक सम्बन्ध था। दोनो पक्षो के द्वारा उठाए गए इस सुधारवादी कदम की सभी ने प्रशसा की।

प्राकृतिक चिकित्सा : विश्व-भ्रमण

प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय का भवन बनकर तैयार हो चुका था। कुछ विद्यार्थी प्रशिक्षण के लिए विद्यालय मे प्रवेश भी लेने लगे। किन्तु धर्मचन्दजी को लगा कि विद्यार्थियों का विधिवत शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करने के लिए एक ओर जहा अनुभवी और निष्ठावान शिक्षकों की आवश्यकता है, वही देश-विदेश मे चलने वाले प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रो का विस्तृत अध्ययन होना भी आवश्यक है। उच्च स्तर की शिक्षा के अभाव मे डिग्री देना प्राकृतिक चिकित्सा के भविष्य को अन्धकार मे ढकेल देना होगा। अपने इन्ही विचारो से प्रेरित होकर धर्मचन्दजी ४ जुलाई १९६५ को विश्व-भ्रमण के लिए निकल पड़े।

धर्मचन्दजी का विश्वभ्रमण उद्देश्यपूर्ण था। अपने मिशन के पूर्ति के लिए आवश्यक ज्ञानार्जन करना ही इस यात्रा का लक्ष्य रहा। दो मास की लम्बी यात्रा मे धर्मचन्दजी ने जर्मन, इङ्गलैण्ड, अमेरिका, और जापान आदि देशो का भ्रमण किया। वहा चलने वाले प्रा० चिकित्सा केन्द्रो को निकट से देखा। विदेशो मे प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के विकास की सम्भावनाओ और उनके परिणामो का आकलन किया। अमेरिका मे वे अमेरिका के प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् के अध्यक्ष डा० जे० एम० गेहमन से मिले। दोनो मे प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के विषय मे सारगर्भित वार्त्तालाप हुआ। डा० गेहमन धर्मचन्दजी के सुदर्शन स्वस्थ व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुए। प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति का गहन ज्ञान और आत्म विश्वास देखकर डा० गेहमन की धर्मचन्दजी के साथ पूरी अतरगता हो गई। इसी प्रकार हैरिस बर्ग मे प्रेसकांफ्रेन्स मे धर्मचन्दजी ने प्राकृतिक चिकित्सा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए जो वक्तव्य दिया उससे वहा

"पच्चीस वर्ष पूर्व, जब मैं प्राकृतिक चिकित्सा के सम्पर्क मे आया तो उस समय प्राय: ५० डालर (लगभग २५०) रुपये प्रति महीने डाक्टरो को उनकी फीस के रूप मे देता था। लेकिन प्राकृतिक चिकित्सा का मार्ग ग्रहण करने पर, तब से आज तक एक पैसा भी डाक्टरो को फीस के रूप मे मैने नही दिया।

"श्री सरावगी प्रतिदिन नियमपूर्वक व्यायाम और यौगिक आसन करते है। उनके अनुसार सही ढग से श्वांस लेने से रक्त को शुद्ध करता है और त्वचा को कान्तिमान बनाता है।

"सन् १९४७ मे जब वे न्यूयार्क मे आए थे तब काफी समय तक बर्नर मेकफेडन के साथ रहे। डाक्टर मेकफेडन के विषय मे उन्होने कहा—वे एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे।

"डा० गेहमन जो जर्मन जाति के है, और पेनसिलवानिया के निवासी है, अनेक वर्षो तक डा० बर्नर मैकफेडन के साथ कार्य कर चुके है। डा० गेहमन ने डा० मैकफेडन के साथ हजारो मील की पदयात्रा की है।

"श्री सरावगी अमेरिका की सम्पन्नता से काफी प्रभावित हुए है। न्यूयार्क के विषय मे चर्चा करते ही वे समर्थन मे मुस्कुराने लगते है और सिर हिलाते है। यहाँ पर प्रत्येक व्यक्ति काफी सम्पन्न है—पूरी तरह सम्पन्न।

"अमेरिका की अधिकाश जनता का झुकाव गोलियो (नीद लाने वाली आदि) की ओर देखकर श्री सरावगी ने दु ख प्रकट किया और कहा—यदि वे प्राकृतिक रास्ता अपनाएँ और अपने भोजन का ध्यान रखें तो किसी भी तरह की गोली लेने की जरूरत न पडे।

जर्मनी और अमेरिका मे प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति बढती हुई लोकप्रियता देखकर श्री धर्मचन्दजी बहुत प्रसन्न हुए। प्राकृतिक चिकित्सा के उज्ज्वल भविष्य के प्रति आशान्वित होकर धर्मचन्दजी १२ सितम्बर को वापिस स्वदेश लौट आए। दमदम हवाई अड्डे पर बड़ी सख्या मे स्वजनो और मित्रो ने उपस्थित होकर धर्मचन्दजी का स्वागत किया।

होने के कारण यह इस गरीब देश के लिए अधिक उपयोगी भी है। किन्तु इसके लिए प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति निष्ठा होना आवश्यक है, अन्यथा इसका प्रभावकारी परिणाम नही हो सकेगा। महात्मा गांधी जीवन भर प्राकृतिक चिकित्सा की वकालत करते रहे। हमे इस कार्य के लिए जन-मानस को भावात्मक दृष्टि से समृद्ध करना होगा। श्रीमती पूर्बी मुखर्जी ने कहा कि सरकार इस पद्धति को आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली के अन्तर्गत ही मान्यता देने पर विचार कर रही है। मैं इस आशय का प्रस्ताव आयुर्वेदिक कौन्सिल मे रखू गी।

श्रममन्त्री श्री विजय सिंह नाहर ने बताया कि सरकार ने तीसरी योजना के अन्तर्गत २५ लाख रुपए प्राकृतिक चिकित्सा के लिए नियोजित किए है। नेपाल मे भारतीय राजदूत श्रीमन्नारायण ने कहा कि कलकत्ता मे प्रारम्भ होने वाले प्राकृतिक चिकित्सा विद्यालय द्वारा प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण कार्य भी हो सकेगा। जिससे प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के प्रचार मे सहायता होगी।

श्री धर्मचन्दजी ने परिषद के मन्त्री पद से परिषद की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय की योजना को चारो ओर से आशातीत सहयोग मिल रहा था। परन्तु धर्मचन्दजी इस पक्ष मे नही थे कि त्रुटि हीन उच्च स्तरीय शिक्षा के अभाव मे किसी को सत्व-चिकित्सक का प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाए। देश-विदेशो मे घूमकर उन्होने जो अनुभव प्राप्त किया था उसके कारण जैसे-तैसे विद्यालय द्वारा शिक्षा-सत्र चलाते जाना वे उचित नही समझते थे। अत वे चुस्त-दुरुस्त पाठ्य-क्रम और योग्यतम शिक्षको की व्यवस्था के लिए आग्रह करते रहे। उनके साथी आधी अधूरी जैसी भी व्यवस्था हो प्रशिक्षण कार्य को चलाते रहने के पक्ष मे थे। धर्मचन्दजी अपने मन की बात साथियो के आगे रखते अवश्य पर दुराग्रही वे कभी नही रहे। वे सदा यह मानकर चलते है—

'अपने मन की हो जाए तो अच्छा है,
नहीं हो जाए तो और भी अच्छा है।"

विचारो का यह अन्तर्द्वन्द्व दो वर्षों तक चलता रहा। धीरे-धीरे सबको धर्मचन्दजी के विचार की सार्थकता का भान होने लगा। दूसरी विकसित चिकित्सा-पद्धतियो के समकक्ष वैज्ञानिक और अनुभूत प्रशिक्षण के अभाव मे इसे

१९६७ में धर्मचन्दजी कांग्रेस के जिला-चुनाव-अधिकारी रहे। इन्ही की देखरेख मे बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी का चुनाव हुआ।

जून, १९६८ मे धर्मचन्दजी ने मित्र परिषद् भवन मे स्वास्थ्य तथा नैतिक प्रचार प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

मार्च १९६६ मे धर्मचन्दजी की अध्यक्षता मे श्री जैन विद्यालय, सुकियस लेन, मे महावीर जयंती मनाई गई।

जुलाई, १९६९ में अहिंसा प्रचार समिति हॉल मे 'भारत केशरी' मास्टर चन्दगीराम का स्वागत धर्मचन्दजी की अध्यक्षता मे किया गया।

यद्यपि सन् १९७० तक आते-आते बड़ाबाजार की राजनैतिक, सामाजिक और सास्कृतिक चेतना पर निराशा की धुंध छाने लगी थी, पर धर्मचन्दजी पूरे उत्साह से सार्वजनिक कार्यो मे भाग लेते रहे।

हृदय मे आशा और विश्वास की ज्योति जलाए इन्होने अपने कर्ममय जीवन को सदा गतिशील बनाए रखा।

२६ नवम्बर १९७३ को धर्मचन्दजी अपने ट्रस्ट द्वारा बड़ाबाजार युवक सभा को १५५५५) रु० का अवदान देकर वहाँ अखाडे का निर्माण कराया जिसका उद्घाटन हुआ। रामकुमारजी भुवालका, प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका, कालीकृष्णजी रोहतगी, हरिरामजी जालुका, मदनलालजी भावसिंहका, काताप्रसादजी चंगोईवाला, गुलाबचन्दजी चौबे आदि पदाधिकारियो और आजीवन सदस्यो ने उक्त अवसर पर उपस्थित होकर धर्मचन्दजी के उत्साह की प्रशसा की।

२२ दिसम्बर, १९७४ को दिगम्बर जैन नया मन्दिर समिति के पदाधिकारियो का चुनाव धर्मचन्दजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जुलाई १९७६ मे सत बालब्रह्मचारी श्री प्रद्युम्नकुमारजी जैन के तत्वावधान मे धर्म-शिक्षण-शिविर लगाया गया। इस शिविर मे धर्मचन्दजी ने प्रधान वक्ता के नाते शिक्षार्थियो को सम्बोधित किया। यह कौन जानता था कि अपनी युवावस्था मे विदेश-भ्रमण का दुस्साहस कर सामाजिक बहिष्कार का प्रकोप झेलने वाले धर्मचन्दजी एक दिन जैन-समाज के धार्मिक अनुष्ठानो के प्रवक्ता भी बन

रूप में धर्मचन्दजी ने व्यायाम और प्राकृतिक चिकित्सा की उपयोगिता पर विस्तृत प्रकाश डाला। इस परम्परागत प्रीति सम्मेलन मे कलकत्ता महानगर के प्रायः सभी उद्योग-पति, समाजिक कार्यकर्त्ता, साहित्यकार और पत्रकार भाग लेते है। धर्मचन्दजी ने 'स्वास्थ्य ही धन है' इस प्रसिद्ध कहावत का उल्लेख करते हुए बताया कि 'हम मे से अधिकाश लोग स्वास्थ्य का महत्व समझते हुए भी अपने स्वास्थ्य की देखभाल के प्रति लापरवाही और गैरजिम्मेवारी का ही परिचय देते है। परिणाम यह होता है कि मानसिक रूप से परिपक्वता आते-आते बुढापा भी सवार होने लगता है। हम अपनी ऊर्जा और ज्ञान का उपयोग कर सकने मे असमर्थ अनुभव करने लगते है। प्रायः लोग कहा करते है कि चालीस वर्ष की उम्र के बाद व्यायाम करने से हृदय पर जोर पड़ता है, इसलिए इस उम्र मे व्यायाम नही करना चाहिए। किन्तु विदेशो मे अस्सी की उम्र पार कर जाने वाले व्यक्ति भी नियमित व्यायाम करते है और अपनी कार्य-क्षमता को बनाए रखते है। बड़ाबाजार व्यायामशाला मे अनेक लोग पचपन वर्ष की उम्र मे भी व्यायाम करने आते है। इससे उनका शरीर गठीला और स्वस्थ बना रहता है।

"श्री मोरारजी देसाई और आदरणीय श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका का उल्लेख करते हुए धर्मचन्दजी ने कहा कि आज अस्सी वर्ष पार करके भी ये लोग पूर्ण स्वस्थ रहकर कार्य कर रहे है। हमे इनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिए। विशेषकर जो सामाजिक कार्यकर्त्ता है उनको तो स्वस्थ रहने को सावधानी रखनी ही चाहिए। अन्यथा लोगो की सेवा करने के बदले उन्हे खुद ही दूसरो से सेवा करवाने की नौबत आ जाएगी।

"कलकत्ते मे आज बडे बडे भवन और फ्लैट प्रतिदिन बन रहे है। इनमे निवास करने वाले बच्चे अनियमित रहन-सहन और अनियन्त्रित खान-पान की वजह से बीमार रहते हैं। ये मकान-मालिक जिस प्रकार आधुनिक सुविधा की दृष्टि से स्नानघर, पैखाना, रसोईघर आदि बनाना आवश्यक समझते है, उसी प्रकार यदि भवन-निर्माण करते समय एक अच्छा-सा व्यायाम घर भी बनाना प्रारम्भ कर दें तो समाज का बहुत उपकार हो। इससे बच्चो मे बचपन से ही व्यायाम के प्रति दिलचस्पी पैदा होगी। वे सुसस्कारी और हृष्ट-पुष्ट रह सकेंगे। इससे पूरे

देश का भविष्य तेजस्वी और बलिष्ठ बन सकेगा। "हमारे यहां पहला सुख निरोगी काया को ही माना गया है। स्वास्थ्य के अभाव मे बाकी के सारे सामाजिक सुख निरर्थक हो जाते हैं। स्वामी विवेकानन्द कहा करते थे हमे ऐसे युवकों की आवश्यकता है जिनका शरीर फौलाद और नसें इस्पात की तरह मजबूत हों। स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। हमे अपने समाज के स्वास्थ्य-धन को बचाए रखने के लिए प्राकृतिक जीवन-पद्धति को अपना कर जीने का अभ्यस्त होना चाहिए।"

होली-दीपावली होने वाले इस प्रीति सम्मेलन मे प्रायः देश की राजनैतिक सामाजिक और औद्योगिक परिस्थितियो की ही चर्चा विशेष रूप से हुआ करती है। धर्मचन्दजी ने व्यायाम और प्राकृतिक जीवन-पद्धति की चर्चा कर इस सम्मेलन की परम्परा को एक नया मोड़ दिया। उपस्थित सुयोग्य नागरिको ने स्वास्थ्य की महत्ता को समझा और धर्मचन्दजी द्वारा रखे गए उपयोगी विचारो और सुझावो को काफी दिलचस्पी से सुना। यह धर्मचन्दजी की अपने मिशन के प्रति निष्ठा और समर्पण-भावना का ही प्रभाव था जिससे लोगो मे व्यायाम और प्राकृतिक जीवन पद्धति के प्रति उत्सुकता और उत्साह जागृत हो गया।

चमत्कार को नमस्कार

फरवरी, १९७८ मे भारत सरकार द्वारा आयोजित राष्ट्रीय शारीरिक क्षमता कार्यक्रम के अन्तर्गत होने वाली प्रतियोगिता मे ७२ वर्षीय ग्रुप के साथ भाग लिया और तीन स्टार प्राप्त किए। उनकी शारीरिक क्षमता से प्रभावित होकर शिक्षा-विभाग के निरीक्षक श्री प्रतापचन्द्र 'चन्दर' ने धर्मचन्दजी को एक गौरव-पदक प्रदान कर विशेष रूप से सम्मानित किया। वास्तव मे जादू वह है जो सिर पर चढ़कर बोले। धर्मचन्दजी को यह सम्मान किसी तिकड़म या किसी की अनुकम्पा स्वरूप प्राप्त नहीं हुआ। बाकायदा प्रतियोगिता मे भाग लेकर अपनी शारीरिक क्षमता को सिद्ध किया—

> लोग पत्थर भी नहीं फेंकते हैं बिना मतलब के,
> कुछ तो खता होगा यारो ने इस दीवाने से।

सचमुच निरतर मिलने वाली चमत्कारिक-सिद्धियो ने धर्मचन्दजी की जीवन-यात्रा को बेहद दिलचस्प और अनुकरणीय बना दिया है।

प्राकृतिक-चिकित्सा-महाविद्यालय का काय जिस उत्साह से प्रारम्भ हुआ था वह कई वर्ष के अनुभव के आधार पर बन्द कर दिया गया था। सरकारी मान्यता के अभाव में प्रशिक्षण और डिग्री प्रदान करने के कार्य की कोई उपयोगिता नही थी। श्री मोरारजी देसाई और श्री ढेबर भाई के अथक प्रयास के बावजूद सरकारी मान्यता प्राप्त करने मे सफलता नही मिल सकी। व्यावहारिक कठिनाई के कारण विद्यालय करीब सात-आठ वर्षो तक बन्द पड़ा रहा।

सन् १९८१ मे प्रकृति निकेतन के ट्रस्टी श्री निर्मल कुमार सरावगी ने प्राकृतिक चिकित्सा विद्यालय को नए रूप मे प्रारम्भ करने की योजना बनाई। बडे उत्साह और लगन के साथ इन्होने इसके लिए तीन लाख रुपये इकट्ठे किए। लेकिन प्रतिष्ठान के सचालन के लिए उपयुक्त और निष्ठावान व्यक्ति की आवश्यकता थी। इस जिम्मेवारी को सम्भालने के लिए कोई प्रस्तुत नही हो रहा था। इसी समय श्री विमल प्रसादजी जैन बगलोर के प्राकृतिक चिकित्सालय से अपना इलाज कराकर लौटे। वे प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से इतने प्रभावित थे कि उन्होने इस पद्धति के प्रचार-प्रसार के लिए काम करना अपने जीवन का उद्देश्य ही बना लिया। बगलोर की तरह ही उत्तर भारत मे भी एक व्यवस्थित प्राकृतिक चिकित्सालय होना चाहिए ऐसी उनकी प्रबल इच्छा हुई। उनका मन पार्श्वनाथजी मे भवन बनाने का था। इसी बीच धर्मचन्दजी के साथ इस विषय मे विचार-विमर्श हुआ और कलकत्ता मे स्थित प्राकृतिक चिकित्सालय भवन को ही फिर से प्रारम्भ करने की बात को इन्होने स्वीकार कर लिया। इस कार्य को पुनः आरम्भ करने के लिए इन्होने तीन लाख रुपये अनुदान के रूप मे देने की स्वीकृति दी। किन्तु अपरिहार्य व्यक्तिगत और व्यापारगत कारणो से स्वय विमलप्रसादजी इस कार्य के लिए समय देने मे असमर्थ रहे।

पैसा तो मिला पर कार्यकर्त्ता की समस्या अभी भी बनी हुई थी। निर्मल कुमारजी द्वारा किए जा रहे प्रयास से उत्साहित होकर पुराने ट्रस्टी श्री आनन्दी-लालजी गोयनका ने १९८२ मे प्राकृतिक निकेतन को नए रूप से सचालित करने की जिम्मेवारी अपने ऊपर ले ली। उन्होने १५ महीने अथक परिश्रम करके

अठारह लाख रुपये और इकट्ठे किए। इस प्रकार चौबीस लाख रुपए लगाकर इस संस्था को नया रूप प्रदान किया गया। कार्य के अनुकूल ही इसका नया नामकरण 'नेचर क्योर एण्ड योगा रिसर्च इंस्टीच्यूट' रखा गया।

८ जनवरी, १९८४ को प्रसिद्ध उद्योगपति श्री लक्ष्मीनिवास जी बिड़ला ने एक विशाल समारोह में प्रदीप ज्योति जला कर इस प्रतिष्ठान का उद्घाटन किया। समारोह में उपस्थित श्री रामकृष्ण मिशन के स्वामी लोकेश्वरानन्दजी तथा प्रसिद्ध राजनेता श्री विजय सिंहजी नाहर ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित किया तथा प्रतिष्ठान की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रकट की। इस प्रकार धर्मचन्दजी का जो स्वप्न अधूरा रह गया था वह नई उमंग और नई सज-धज के साथ साकार हो गया।

वर्त्तमान में प्रकृति निकेतन का कार्य बहुत ही सुचारू और सन्तोषप्रद तरीके से चल रहा है। स्वयं धर्मचन्दजी और आनन्दीलालजी इसकी व्यवस्था और देख-रेख में लगे रहते हैं। इस समय इस चिकित्सा केन्द्र में दो बड़ी कोठियाँ, जिनमें चार चार रोगी, दो छोटी कोठियाँ जिनमें दो-दो रोगी रह सकते हैं। साथ ही बारह केबिन ऐसे हैं जिनमें दो दो रोगी रहते हैं। इसके अतिरिक्त एक जनरल वार्ड है जिसमें पन्द्रह पुरुष और पन्द्रह स्त्रियों के रहने की व्यवस्था है। रोगियों को आसन, प्राणायाम तो सिखाया ही जाता है, साथ ही फिजियो-थरापी के बिजली चालित यन्त्र, स्टीम बाथ, सोना बाथ आदि की भी व्यवस्था है। प्राकृतिक स्वच्छ वातावरण, सात्विक और शुद्ध-आहार तथा हवा-पानी और मिट्टी की सहायता से होनेवाले उपचार से रोगी शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ कर लेते हैं। प्रायः रोगियों के सभी स्थान भरे रहते हैं। अपनी सुव्यवस्था और सफल चिकित्सा के कारण यह चिकित्सा केन्द्र उत्तर भारत का लोकप्रिय प्रतिष्ठान बन गया है। ○

सीखने की वृत्ति

घर्मचन्दजी के जीवन मे सफलताओं का राज इस बात मे निहित है कि वे अपने शैशवकाल से ही जीवन को सजाने-सँवारने और उसके विकास के लिए बिना साधन के आगे घुटने टेके साध्य की और निरन्तर बढते रहना। जब वे कुल दस वर्ष के थे और जब हमारे देश मे बच्चों की छोटी साइकिल का प्रचलन नही था तब उन्होने साइकिल चलाना सीखा और वह भी नीचे और ऊपर के फ्रेम-रोड के बीच में पैर डाल कर, पायडल पर पैर रख कर चलाते हुए क्योकि वे उस समय कद के छोटे थे और साइकिल की गद्दी की ऊँचाई अधिक थी। इसी के साथ सीखने के क्रम मे दूसरा क्रम है गगा मे तैरना सीखना। उनके तैरना सीखने से एक मार्मिक घटना जुडी हुई है। वह है इसके पहले उनकी माताश्री के एक ही भाई थे जो तालाब मे डूब कर प्राण त्याग चुके थे। माँ का हृदय तो माँ का ही हृदय होता है वे आशका मे डूबी तब तक भोजन लिए बैठी रहती थी जब तक घर्मा घर लौट कर नही आ जाता था। भोजन भी वे उसके आने के बाद ही करती थी। मोटर चलाना भी उन्होने सीखा—उस समय जब मोटर घर में आ गई थी और उसका ड्राइवर कोई क्रिश्चियन था। उसे गुरु की गरिमा प्रदान करते हुए विनम्रता से खुशामद करते हुए। मोटर चलाना ही नही सीखा बल्कि उसका मेकनिज्म भी ये सीख गए। मजे की बात यह कि उस समय मोटर मे सेल्फ स्टाटर था ही नही कार हैंडल से ही स्टार्ट होती थी। बाद को तो वे ऐसे हिम्मती ड्राइवर हुए कि इनकी मोटर हवा से बातें करती थी।

मनुष्य के कुछ भी सीखने का अर्थ है उसे अपने को काम मे लगाए रहना। ऐसे समय के सद्पयोग का उदाहरण घर्मचन्दजी के जीवन मे एक नही अनेक हैं, जैसे पुरानी टूटी चूडियो का खूबसूरत चेन बनाना। ये बड़े मनोयोग से टूटी-फूटी चूडियां एकत्र कर दीये की लौ के ऊपर गर्म करते रहते और उसे इच्छा-नुसार मोड़ कर एक दूसरे से जोड-जोड़ कर चेन बना लेते थे। इन्होने फोटो-ग्राफी उस समय सीखी जब इसका एक ही निर्माता था कोडक तथा जब यह एक मँहगा शौक माना जाता था। कारण उस समय फोटो खीचकर निगेटिव से पोजेटिव मे बदलने की जो प्रक्रियाएँ थी जैसे कैमरे से निकाल कर अघेरे कमरे में फिलम की धुलाई करना, फिर उसे पोजेटिव पेपर पर रख कर शीशे के फ्रेम मे बन्द कर घूप या तीव्र प्रकाश मे निर्धारित समय तक रखना, इस

काम मे कई तरह के केमिकल्स लगते थे, जिसका ज्ञान भी इन्हें था क्योकि ये फोटोग्राफी की पूरी प्रक्रिया यहां के व्यावसायिक फोटोग्राफरों की दूकानो पर हेल-मेल बढाकर सीखते रहे। इसी तरह ये कलकत्ते के बेलगछिया मे, वहाँ नियमित चक्कर लगाते रहे, जहाँ सरकारी घुडसवार पुलिसो के घोड़े को मस्क कराया जाता था क्योंकि इन्हे घुड़सवारी सीखनी थी और ये सीख कर रहे। घुडसवारी सीखने मे उन्हे समय तो देना ही पड़ता था साथ ही ट्रेनर यानी घोडो को मस्क कराने वालो की खुशामद मलामत के साथ ही उन्हे कुछ लेना-देना भी पडता था। मगर जिसका मन नए से नए विकास और आविष्कारों को सीखने मे लगा हो वह हाथ पर हाथ रख कर चुप कैसे बैठा रहता। ये टाइप करना भी जानते है। नई-नई निकली रेमिंग्टन की टाइप मशीन घर मे आई कि बस ये उस पर अगुलियां चलाने लगे। इन्हे टाइपिस्ट बनना था यह बात नही बल्कि यह भावना रही कि मनुष्य प्रयत्न करे तो दुनिया में क्या नही सीख सकता। कलकत्ते मे बिजली का प्रारम्भ डी० सी० करेंट से हुआ था। और उस समय इस कहावत के अनुसार कि बिना साँप का मत्र जाने उसके बिल मे हाथ नही डालना चाहिए' हर कोई इसकी फिटिंग और यात्रिक कामो मे सहज ही हाथ नही लगाता था। मगर धर्मचन्द सरावगी थे कि बिना इस खतरे की पर-वाह किए कि डी० सी० करेंट लगते ही आदमी दूर जा गिरता है अपने घर का बिजली का काम खुद कर लिया करते थे यानी ये छोटे-मोटे बिजली मिस्त्री भी बने। बिजली आई तो पानी ऊपर चढाने के लिए मोटर भी आई। मोटर से पाइपो के द्वारा पानी ऊपर चढाने का तरीका भी आया। धर्मचन्दजी पाइप आदि फिट करने मे भी माहिर हो गए और जब कलकत्ते मे मोटर बाइक अर्थात मोटर साइकिल आई तो आप कई वर्षों तक मोटर साइकिल पर चलते रहे।

इसके बाद सन् १९५१ मे जब ये कुल ४६वर्ष के थे तब शारीरिक व्यायाम की लगन आप को लगी। आप बडाबाजार युवक सभा मे व्यायाम सीखने लगे। उस समय सभा मे बलराम दे स्ट्रीट के सम्पन्न परिवार के गोपीनाथ पाल एक नामी बॉडी बिल्डर व्यायाम की शिक्षा देते थे। वे एक ऐसे शिक्षक रहे जिन्होने इसके पीछे अपना जीवन दे दिया। यहाँ तक कि परिवार की सम्पन्नता की रक्षा भी नही कि बल्कि उस ओर से इतने उदासीन रहे कि भाइयो ने इनके हिस्से की सम्पत्ति भी हडप ली। ऐसे लगनशील बॉडी बिल्डर गोपीनाथ पाल के सम्पक मे आकर धर्मचन्दजी ने अपने प्रयत्न से, लगन से वह सब करामात

सीख लिया जो सरकस के खिलाड़ी दिखा-दिखा कर पैसा कमाते है, लाखो लोगो का मनोरंजन करते है। अर्थात एक चक्के की साइकिल पर सरकस वालो की तरह ही आगे-पीछे चलना, तार पर चलना, रोजर बैलेंस, छाती पर लोहा कटाना, पैरतलवार के खेल, स्केटिंग, वैटमिंटन, राइफल शूटिंग आदि। और आज से ८ वर्ष पूर्व अपनी ७४ वर्ष की आयु मे आपने चित्रकारी सीखना शुरू किया। घर पर ही एक चित्रकार आते और इन्हे चित्रकला की शिक्षा देते। परिणाम, दो वर्ष मे ही आप एक कुशल चित्रकार बन बैठे। आपके द्वारा अनेको रगीन चित्र आज भी आपके निवास स्थान मे सुशोभित है।

सन् ८४ के मध्य की बात है। जीवन सगिनी मोतीदेवी बहुत बीमार पडी। परिवार मे एलोपैथी चिकित्सा का वातावरण बिल्कुल नही था अतः धर्मपत्नी का इलाज प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से की। इसी सिलसिले मे उन्हे सुझाव मिला कि भोजन परिवर्तन के अलावा मोतीदेवी के लिए सुबह हरी घास पर नगे पाव घूमना, प्राणायाम तथा आसन करना लाभदायक होगा। मोती देवी आसन घर पर ही कर लिया करती थी और हरीघास पर घूमने के लिए धर्मचन्दजी अपने निवास के कुछ ही फासले पर कर्जनपार्क (जिसका नाम आजकल सुरेन्द्रनाथ पार्क है) मे उन्हे उषाकाल मे लेकर जाया करते थे। वहा उन दिनो आर० एस० एस० की शाखा लगा करती थी, जिसका नाम धर्मराज शाखा था और जो तीस-चालीस वर्षों से लग रही थी। इस शाखा के व्यवस्थापक थे रामनरेशजी गौड़। लगभग पन्द्रह बीस वर्षो से अधिकारी है। धर्मचन्दजी अपनी पत्नी मोतीदेवी के साथ नियमित घूमने जाते और शाखा मे लोगो को लाठी चलाते देखते। एक दिन लाठी चलाना सिखाने वाले शिक्षक से मिलकर इन्होने इच्छा जाहिर की कि वे भी लाठी चलाना सीखना चाहते है। शिक्षक ने धर्मचन्दजी से कहा आप की उम्र हो गई है आप क्या सीखेंगे। धर्मचन्दजी ने उनसे उत्तर मे कहा, "मैं तो बराबर बड़ाबाजार युवक सभा मे व्यायाम करता हूँ।" साथ ही उन्होने अपने चित्र दिखाते हुए कहा, "आपकी आयु चालीस पैतालीस की होगी मेरी ६० की है। आप जो पाच दिनो मे सीखते है मुझे वह सीखने मे दस दिन लगेंगे।" गौड़जी ने इनके उत्साह को देखते हुए इन्हे सिखाने का आश्वासन दिया। धर्मचन्दजी ने ५-७ लाठियो की व्यवस्था कर ली तथा दूसरे लोगो को भी सीखने के लिए उत्साहित कर एक वर्ष मे ही सप्तपदी तक लाठी चलाना सीख लिया।

अब ८२ की उम्र मे आप कराटे यानी टाइकाडो सीख रहे हैं। इस क्रम मे यहा यह उल्लेखनीये है कि आज भी इनका बड़ाबाजार युवक सभा मे जाना अनिवार्य है। सभा मे इस टाइकांडो की शिक्षा की शुरूआत १९७९ में हुई थी। ८०-८५ तक पी० के० गुरूंम इसके शिक्षक थे जो राजीव गांधी के बाडीगार्ड बनकर चले गए। इनके बाद सन् ८६ में बलराज सिह २६ वर्ष के नौजवान शिक्षक नियुक्त हुए। आप नेपाल मे टाईकांडो प्रतियोगिता में ब्रोजमेडल भी प्राप्त कर चुके हैं। अभी-अभी सियोल मे आयोजित एशियाई ओलम्पिक मे भाग लेने के लिए सम्पर्क सूत्रो की गड़बड़ी के कारण भाग लेने का अवसर नही पा सके किन्तु ८८ मे जो ओलम्पिक आयोजित होने वाला है उसमे भाग लेने की आशा मे तैयारी जोरो से कर रहे हैं। बलराज सिंहजी सिखाने शाम को आया करते हैं और अपनी तैयारी के लिए जब सुबह आते हैं उसी समय धर्मचन्द जी उनसे टाइकांडो सीखा करते है।

इसी प्रकार इनके जीवन मे अवसर और संयोग सहजता से हर दिशा में उपलब्ध होते रहे हैं। ये परिस्थितियो को दत्तात्रय के समान गुरू मान लेते हैं अर्थात् जीवन मे जो मिलना चाहिए वह इन्हे सहज में ही प्राप्त होता रहा है।

भाग्य की बात

कहावत है "लाभ-हानि, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ।" धर्मचन्दजी इसके चरितार्थ रूप हैं।

धर्मचन्दजी अपनी कर्तव्य परायणता की वजह से खूब यशस्वी हुए। १९२९ मे लण्डन से एक वायुयान सप्ताह मे एक दिन डाक की चिट्ठियां लेकर भारत आना आरम्भ हुआ जिसमे केवल पाच-सात यात्री ही रहते थे। धर्मचन्दजी जब उसी हवाई जहाज से आए तो प्रथम भारतीय शाकाहारी यात्री थे जिसका उल्लेख कलकत्ते के 'स्टेटमैन' जैसे अखबार मे बड़े-बड़े अक्षरो मे हुआ। ये जिस जहाज से आ रहे थे वह बगदाद मे ठहरा और मौसम की खराबी के कारण आगे की यात्रा उस दिन के लिए स्थगित कर दी गई। इन्हे बगदाद घूमने का सुयोग सहज ही मिल गया। भाग्य कैसे साथ देता है इसका नजीर है इस जहाज का बिना इन्हे लिए उड़ जाना क्योकि जब यह बगदाद मे घूम रहे थे तभी रिपोर्ट आई कि मौसम ठीक हो गया है और जहाज तत्काल ही

उड़ गया। ये अफसोस में डूबे रहे कि अब कही सात दिनों बाद जब दूसरा जहाज आएगा तब कही जाना होगा। मगर धर्मचन्दजी के भाग्य की बात कहिए कि जहाज को बगदाद के बाद मौसम खराब मिला, उसे पुन. लौटना पडा। धर्मचन्दजी दूसरे दिन जब मौसम ठीक हुआ तो उसी जहाज से भारत आए पर कुछ दिनों बाद पत्रों में फिर खबर आई कि बगदाद से दूसरे सप्ताह डाक लेकर जो जहाज रवाना हुआ अगले पड़ाव पर उतरते समय नष्ट हो गया तथा उसकी डाक भी नष्ट हो गई एवं सारे यात्री मारे गए। भाग्य ने इनका इतना साथ दिया कि यहाँ यह कहना आवश्यक प्रतीत होता है कि यदि इनका छूटा हुआ जहाज पुनः लौट कर नही आता और इन्हे दूसरे जहाज से आना पड़ता तो शायद आज यह लिखने का अवसर नही मिलता। इसी तरह भारत पहुँचकर जब १९३१ मे इन्होने वायुयान चलाने का लाइसेन्स लिया तो प्रथम जैनी चालक माने गए। उस समय भी हवाई जहाज की यात्रा जोखिम भरी थी। एक बार इनके जहाज से एक गिद्ध की भिड़न्त हुई मगर भाग्य से इन्होने सकुशल जहाज को जमीन पर उतार लिया। जबकि इसके कई दिनो पहले ही फ्रांस के राजकुमार का हवाई जहाज कलकत्ते मे ही गिद्धो के हमले से ध्वस्तप्राय हो चुका था। आजकल हवाई जहाज कम्पनी इन गिद्धों से जहाजो की सुरक्षा के मद में लाखों रुपए व्यय करती है। इसी तरह १९४८ मे जब ये सपरिवार अपने पुष्पक से ही जयपुर काग्रेस में जवाहरलाल नेहरू पर पुष्प वृष्टि कर लौट रहे थे तब इन्होने दिशाभ्रम में पड़कर दुर्गापुर के पुल को हावडा का पुल मान लिया और सोचा कलकत्ते पहुंच गए है। किन्तु फिर इन्हे यह आभास मिल गया कि नही अभी वे बेहला हवाई अड्डे से बहुत दूर है। सध्या हो गई थी, अन्धेरा धीरे-धीरे बढ रहा था अतः अगर ये वही हवाई जहाज उतारते तो पता नही कहाँ टकरा जाते। पूरे परिवार का जीवन ही खत्म हो जाता। इस अवसर पर इनके भाग्य ने ऐसा साथ दिया कि ये एक विस्तृत खेत मे जहाज को सकुशल उतार सके। किसी की कुछ हानि नही हुई।

यह बात १९४५ की है जब ये मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के प्रधान मन्त्री चुने गए जिसके लिए इनका कोई न प्रयत्न था, न प्रयास। सहसा भालचन्दजी शर्मा आए और उन्होंने कहा आपको सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र मे कुछ करना है। सोसाइटी को सम्भालना है। बिना कुछ सोचे समझे हां कर दिया। पिताजी से

अनुमति मागी तो उन्होने भी यह कहते हुए स्वीकृति दे दी कि ठीक है मगर ध्यान रखना किसी तरह की वदनामी न हो। और वदनामी की कौन कहे आप सोसाइटी के यशस्वी कार्यकर्ता के रूप मे विख्यात हो गए। इसी तरह कारपोरेशन के कौंसिलर चुने गए। जवकि अपने लोहे के व्यवसाय के सिलसिले मे टाटा जाने को तैयार थे, उस समय भालचन्द शर्मा आए और उन्होने कारपोरेशन का चुनाव लड़ने का प्रस्ताव रखा परन्तु धर्मचन्दजी ने काम को प्राथमिकता देते हुए पहले टाटा के आफिस ही गए। मजा यह कि शर्माजी के विवश करने पर जव मात्र ५ मिनट ही शेप रह गए थे तव फार्म भरा गया। और भाग्य ने ऐसा साथ दिया कि इनके अचल से जो अन्य तीन व्यक्तियो ने फार्म भरे थे वे स्कूटनी मे गलत निकल गए तथा धर्मचन्दजी निर्विरोध चुन लिए गए। राज्यसभा की सीट भी इसी तरह इनके मत्थे मढा गया था। वगाल के कांग्रेस के प्रखर नेता अतुल्य घोप ने आग्रह किया कि राज्यसभा मे आपको जाना है। जवकि ऐसे अवसर की ताक मे अनेक लोग वैठे हैं। धर्मचन्दजी चुनाव क्षेत्र मे उतर पड़े। धर्मचन्दजी थे कि शान्ति से वैठे रहे। जिस दिन वोटो की गिनती हो रही थी उसी दिन पांच वजे संध्या को तत्कालीन मुख्यमत्री पी० सी० सेन ने धर्मचन्दजी से कहा कि आपको जिताने का काफी प्रयास किया गया पर आप मात्र २ वोटो से चुनाव हार गए हैं। धर्मचन्दजी उस समय भी निर्विकार रहे। उसी दिन संध्या सात वजे धर्मचन्दजी राज्यसभा की सीट के चुनाव मे विजयी घोपित किए गए।

व्यापार के क्षेत्र मे भी धर्मचन्दजी को अवसर और भाग्य ने खूव साथ दिया। उस समय की वात है जव क्लाइव स्ट्रीट मे टाटा का आफिस जिस मकान में था, उसमे ही एक जापानी कम्पनी मित्सुवूमनकैसा के नाम से भी थी। उसे जो सज्जन पुराने लोहे का स्क्रैप सप्लाई करते थे, हिसाव-किताव मे गड़वड़ी होने के कारण हटाए गए और उस कम्पनी के अफसर ने धर्मचन्दजी को वुलाकर यह आर्डर दिया। उनके व्यवहार से वे वहुत खुश हुए। कुछ वर्प वाद जव उनका कोयले का सप्लायर वेईमानी करने लगा तो कम्पनी के वडे साहव ने धर्मचन्दजी को वुलाकर कहा, हमे कोयला चाहिए। क्या आप कोयले का काम जानते है? धर्मचन्दजी ने स्पष्ट कहा कि कोयले का काम कभी नही किया है पर आप वतावें जिस तरह का कोयला चाहिए हम वाजार से दाम लाकर आपको देंगे उस पर जो

कुछ मुनाफा आप हमे देंगे उससे हम सतुष्ट होगे। धर्मचन्दजी की स्पष्टवादिता पर जापानी अफसर बड़ा प्रसन्न हुआ और कोयले का काम उन्हे दे दिया। सयोग से उस साल जापान मे कोयले की बड़ी कमी थी। साल भर मे एक लाख टन कोयले की सप्लाई एक रुपए टन के मुनाफे पर ये करते रहे। भाग्य ने साथ दिया—जो माल खिदिरपुर मे पानी के जहाज से जाता था, बरसात के दिनो मे माल लदाई के समय पानी से भीग जाता था जिससे कोयले का वजन बढ़ जाता था। बिना गड़बड़ी के इन्हे बढती वजन का भुगतान कम्पनी करती रही।

दूसरी लड़ाई जब शुरू हुई और लोहे पर कण्ट्रोल लगा तो अग्रेज सरकार ने विभिन्न प्रान्तो मे व्यापारियो का एसोसियेशन बनाकर इन्हे कण्ट्रोल स्टाकिस्ट बना दिया। कलकत्ते मे यह काम धर्मचन्दजी को मिला। आप ईमानदारी से परमिट के अनुसार लोगो को माल दे देते पर व्यापारी उसी माल को बहुत अधिक मूल्य पर बेचते रहे। उस समय गोदाम, जिसमे लोहे का स्टाक रहता था, माजरहाट पुल के पास खिदिरपुर मे था। कलकत्ते पर जब बम वर्षा हुई, खिदिरपुर मे भी एक बम गिरा जिसका एक टुकडा इस मकान की छत पर भी गिरा। उस समय गोदाम मे टनो लोहा भरा था। भाग्य की बात कि बम कलकत्ते पर क्या गिरा इनके उस गोदाम मे रखा लोहा सोना हो गया। बात यह हुई कि कलकत्ते पर बम गिरने की वजह से यहाँ भगदड मच गई। खरीदार नही रहे तब इन्होने कट्रोलर को अपने स्टाक के पडे रहने की सूचना दी और कन्ट्रोलर ने इन्हे किसी भाव मे, किसी को भी माल बेचने की अनुमति दे दी। इससे कई लाख रुपयो की आमदनी हो गई। लोहे के व्यापार मे जितने पारसी, बगाली, क्रिश्चियन आफिसर टाटा आयरन स्टील, इण्डियन आयरन स्टील और हिन्दुस्तान स्टील मे थे उनपर धर्मचन्दजी की ईमानदारी की इतनी बडी छाप पड़ी कि जब इन्होने एजेसी के स्थान पर गारटी ब्रोकर बनाने की योजना बनाई तो आधे हिन्दुस्तान का गारन्टी ब्रोकर धर्मचन्द जी को बनाया। खिदिरपुर का गोदाम १५०० रु० मासिक पर केवल एक साल के लिए लिया पर अब ६० वर्ष की लीज मे इन्हे मिल गया जिससे काफी आमदनी होती है। शम्भू मल्लिक लेन के मकान मे रहते हुए नन्दो मल्लिक लेन मे बिना सलामी का मकान मिला। इसी तरह एस्प्लेनेड का मकान जबर्दस्ती ४८ हजार मे लेना पडा। लड़ाई लगी तो सैनिको के लिए सरकार ने इस पर कब्जा

कर लिया मगर लडाई के खत्म होते ही सरकार ने ५६ हजार रु० मुआवजे के साथ इन्हे वह लौटा दिया।

इस प्रकार यह स्वतः सिद्ध हो जाता है कि वृत्ति और प्रवृत्ति मानव समाज के आधारभूत मूल्य है, जिसके निर्दोप सतुलन और निर्वाह पर ही मनुष्य की समाज मे पहचान वनती है। इस आधार पर धर्मचन्दजी के जीवन-प्रवाह की गति प्रकृति शेखावाटी के उद्गम से प्रवाहित होकर शस्यश्यामला वगाल की गगा मे अटूट लहरो मे, काल-खड के अवतरण के वावजूद, आज भी तरगित है।

शरीर चर्या

आप ८२ वप की आयु मे भी आज एड़ी से चोटी तक, वाहरी और भीतरी वीमारियो से मुक्त है और स्वस्थ हैं। विदेशो की यात्रा के समय मैकफेडन, स्टेनले लीफ, थमसन, गेहमन, रोटडी आदि उमर वाले, साथ ही स्वस्थ दीर्घजीवी प्राकृतिक चिकित्सको से साक्षात्कार हुआ तो इनके हृदय पर यह छाप पडी कि मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए प्राकृतिक भोजन के साथ लोक सेवा मे लगे रहना, चिन्ता रहित जीवन और व्यायाम की नितान्त आवश्यकता है। ये गत ४० वर्षो से वरावर कडा व्यायाम करते हैं और जो लोग व्यायाम नही करते ऐसे लोगो से हिदायतें सुनते है कि ४०-५० की उम्र के वाद मनुष्य को कडे व्यायाम नही करने चाहिए, उसमे कुछ डाक्टर भी होते हैं और कुछ वुजुर्ग भी। पर शरीर पर व्यायाम का कोई वुरा प्रभाव नही पडते देख उन्हे आप हँसकर कह देते हैं कि अभी तो मेरी उतनी उम्र हुई ही नही है जव उतनी उम्र होगी तव आपकी सलाह के अनुसार कडा व्यायाम छोडकर केवल घूमने का व्यायाम किया करूगा। आज ८२ वर्ष की आयु मे भी १६ घन्टे कार्य करने की आप मे क्षमता है।

आजकल इनका जीवनक्रम इस प्रकार है —

१—सुवह ५ वजे उठकर एक चुटकी कच्चे चावल मुँह मे रख पानी के साथ निगल जाना। यह क्रिया लीवर को मजवूत करने के लिए वडी अच्छी है। जिन जिन लोगो को इन्होने वतलाया और जिन्होने अपनाया, उन्हे भी वहुत लाभ हुआ। फिर उपापान करना है।

२—ताड़ आसन करते है। इस आसन मे दोनो पैरो के पजो के वल पर खड़ा होकर दोनो हाथ को ऊपर उठाकर खडा होना पड़ता है।

३—शौचादि से निवृत होकर कपड़छान किए हुए सेंधा नमक और कड़वे तेल से बने दतमंजन से दाँत साफ करते है। इससे हिलते हुए दाँत ठीक हो जाते है औरपायरिया की बीमारी तक चली जाती है। महगे दन्त मजन और ब्रस का उपयोग ये नही करते। फिर ठडे जल से गमछे से रगड़कर नहाते है, साबुन का उपयोग नही करते।

४—प्रातः ६ बजे कर्जन पार्क मे चले जाते हैं। वहां लाठी चलाने का अभ्यास करते है। और फिर प्राणायाम कर वापस घर लौट आते हैं।

५—दो ब्राह्मी पत्ती खाते है, ४ घिसे हुए कागजी बादाम लेते है। साथ ही एक पाव जल मे २ चम्मच मधु और एक कागजी नीबू मिलाकर पीते हैं और एक पाव दूध भी धीरे धीरे पीते है।

६—बडाबाजार युवक सभा की व्यायामशाला में जाते हैं और वहां एक घन्टे तक कठिन व्यायाम, चीनिंग, बेंच प्रेस, पैरललबार, वालबार, मुग्दर और आसन आदि करते है।

७—दिन मे डेढ और दो के बीच दो पहर का भोजन करते है। पहले एक-पोतिया लहसुन के दो दाने खाते है, फिर मौसम के साग-सब्जी के साथ एक अन्न यानी किसी दिन मकई, किसी दिन बाजरा, किसी दिन ज्वार, किसी दिन आटे की रोटी, किसी दिन चावल लेते है। रोज नए तरह का भोजन होता है जो रुचि-कर होता है और बहुत तरह की चीजें न होने से अधिक खाया भी नही जाता और पचने में आसान होता है। भोजन के अन्त मे एक पाव मट्ठा लेते है।

८—भोजन के बाद लघुशका कर घन्टे भर आराम करते है। उस समय पेट की वायु निकल जाए, उसके लिए सीधे चित्त सोकर ८ लम्बे सास, दाहिने करवट बदलकर १६ सास, फिर बाई करवट बदलकर ३२ सांस लेते है। इस तरह वायु नाक से या गुदा से निकल जाती है और नीद आ जाती है।

९—रात्रि ८ बजे तेल की मालिश एक घन्टे कराते हैं।

१०—९ बजे मौसम के फल यानी आम की ऋतु मे आम, संतरे की ऋतु मे सतरे, लीचू की ऋतु में लीचू, अनारस की ऋतु मे अनारस और दूध आदि लेते है। जाडे के मौसम मे सतरो के साथ मेवे जिसमे अखरोट, काजू, किसमिस, छुहारा, जरदाला, नाजा आदि रहते हैं।

११—सप्ताह मे एक दिन मगलवार को १२ घन्टे का उपवास करते हैं। व्यायाम मगलवार को भी करते हैं और बुधवार को भी, परन्तु किसी प्रकार की कमजोरी महसूस नही करते।

१२—प्रकृति की कृपा से बिस्तर पर जाते ही एक मिनट मे इन्हें नीद आ जाती है। किसी समय मुँह मे इलायची भी रह जाए तो वह नीद आ जाने के कारण उसे चबा भी नही पाते, पडी रह जाती है। इसी प्रकार सुबह भी जब शौच को जाते हैं तो एक मिनट मे पेट साफ हो जाता है और फिर २४ घण्टे शौच जाने की आवश्यकता नही रहती।

इन्होने उपवास के सम्बन्ध मे साहित्य तो बहुत पढा है पर सबसे बड़ी प्रेरणा आदरणीय मोरारजी देसाई से इन्हे मिली है। जब उनके सम्पर्क मे आए और देखा कि वे अपने व्यस्त जीवन मे भी सप्ताह मे एक दिन उपवास कर इस आयु मे इतने स्वस्थ हैं तो इन्होने भी गत ३० वर्षो से इस प्रकार का साप्ताहिक उपवास आरम्भ कर दिया और इसका प्रत्यक्ष लाभ उठाया। अब तो इनकी स्त्री भी मगलवार को उपवास करती हैं। और साथ रहने वालो ने भी अपनी मर्जी से साप्ताहिक उपवास करना आरम्भ कर दिया है।

गत वर्ष जब ये सध्या के समय दुकान मे बैठे थे, 'बाडी बिल्डर' मनोतोष राय के लड़के मलय राय दुकान मे स्वास्थ्य और योग सम्बन्धी पुस्तक खरीदने आए। इन्होने अपना उसी साल के व्यायामशाला मे व्यायाम करते हुए चित्र दिखलाए। उन्होने कहा, आज अभी भी ऐसे व्यायाम करते है ? उनके हाँ कहने पर वे कहने लगे कि आपकी आयु ६० की होगी। इन्होने कहा हाँ—इसी के आस-पास है।

व्यायामशाला मे कोई भी उनकी उम्र का व्यायाम करने नही आता। उनके पोते और दोहतो के उम्र के आते है। ये उनके साथ कड़े व्यायामो की कम्पीटिसन करते है। कोई भी इनकी आयु पुराने जमाने मे पचास से अधिक और आजकल साठ से अधिक नही आकते। जब कोई लडका इनकी आयु ८२ बताता है, तब वे लडके आपस मे झगड़ा कर लेते है। उन्हे विश्वास नही होता कि इनकी आयु इतनी होगी। ये यह मानते है कि यह सारी कृपा व्यायामशाला की है। और प्राकृतिक खान पान की है। □

विमान चलानें की तैयारी मे धर्मचन्दजी ।



पश्चिम बगाल के राज्यपाल स्व० राजगोपालाचार्य, श्री गणेश प्रसाद सराफ
के साथ धर्म



स्व० [illegible]राज टेवर, स्व० वैजनाथ सरावगी, श्री चन्द्रकुमार,
स्व० विष्णुदत्त शुक्ल के साथ धर्मानन्दजी।



[illegible] साथ धर्मानन्दजी।



राष्ट्रपति स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद, स्व० डा० बी०सी० राय के साथ धर्मचन्दजी ।



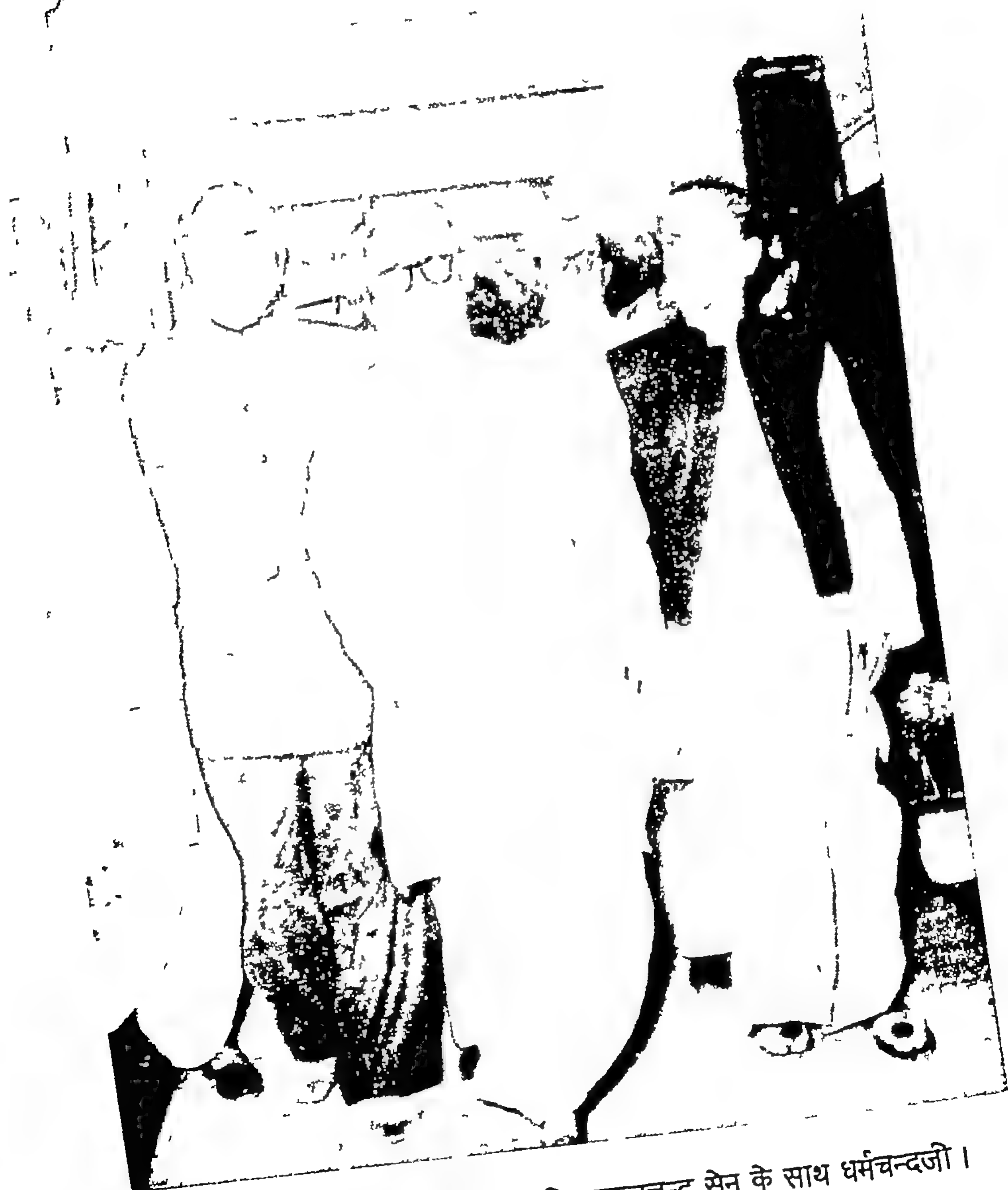
मर्चेन्ट चेबस्र ऑफ कामर्स के सभापति धर्मचन्दजी साथियो के साथ ।



दहेज विरोधी अभियान में स्व० बसतलालजी मुरारका के साथ धर्मचन्दजी ।



प्रधान मत्री स्व० जवाहरलालजी के साथ त्रिमूर्ति भवन मे धर्मचन्दजी ।



राधाकृष्णजी कानोडिया, मुख्य मत्री प्रफुल्लचन्द्र सेन के साथ धर्मचन्दजी।

प्रकृति निकेतन में बृक्षारोपण करते हुए स्व० विनोबा भावे, चन्द्रकुमार, निर्मल कुमार, लक्ष्मी राजगढिया के साथ धर्मचन्दजी ।



स्व० बैजनाथजी सरावगी की पुण्य स्मृति में बनने वाले भवन का शिलान्यास के अवसर पर राजस्थान के मुख्य मत्री स्व०मोहनलालजी सुखाड़िया के साथ धर्मचन्दजी ।

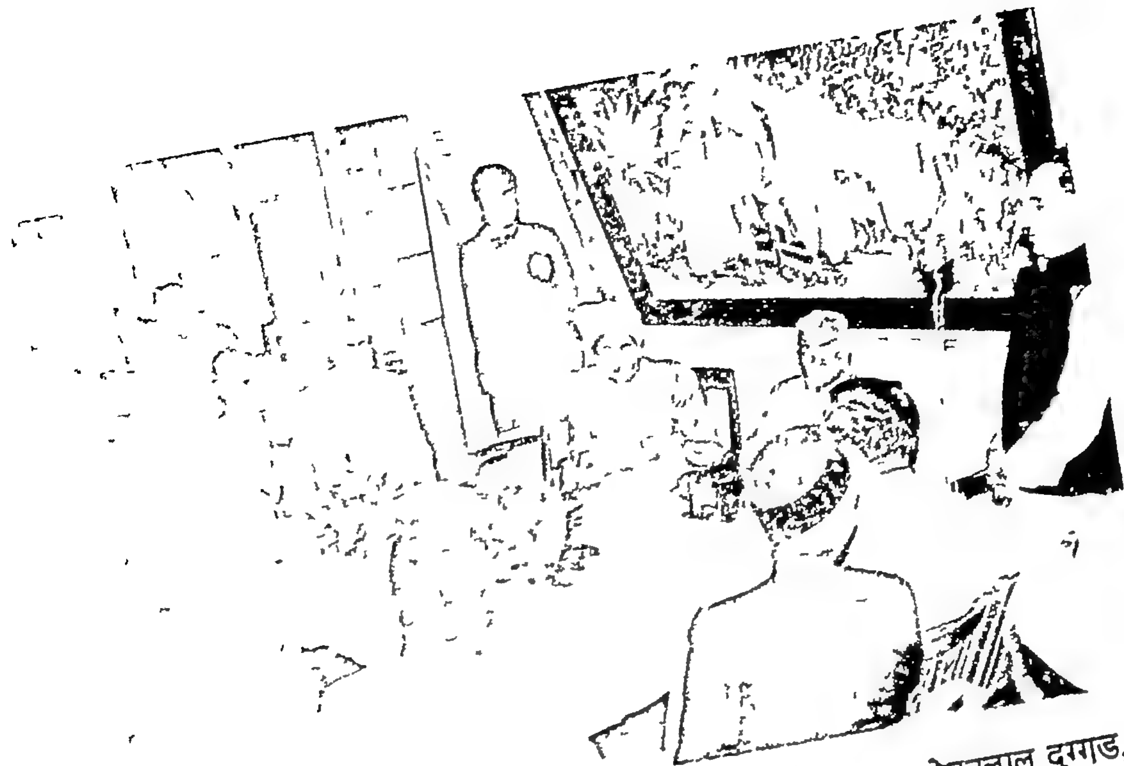
प्रकृति निकेतन में श्री मोरारजी देसाई के साथ धर्मचन्दजी ।



प्राकृतिक चिकित्सा के ८ वें अधिवेशन पर श्री विजयसिंह नाहर,
स्व० श्रीमन्नारायण के सा



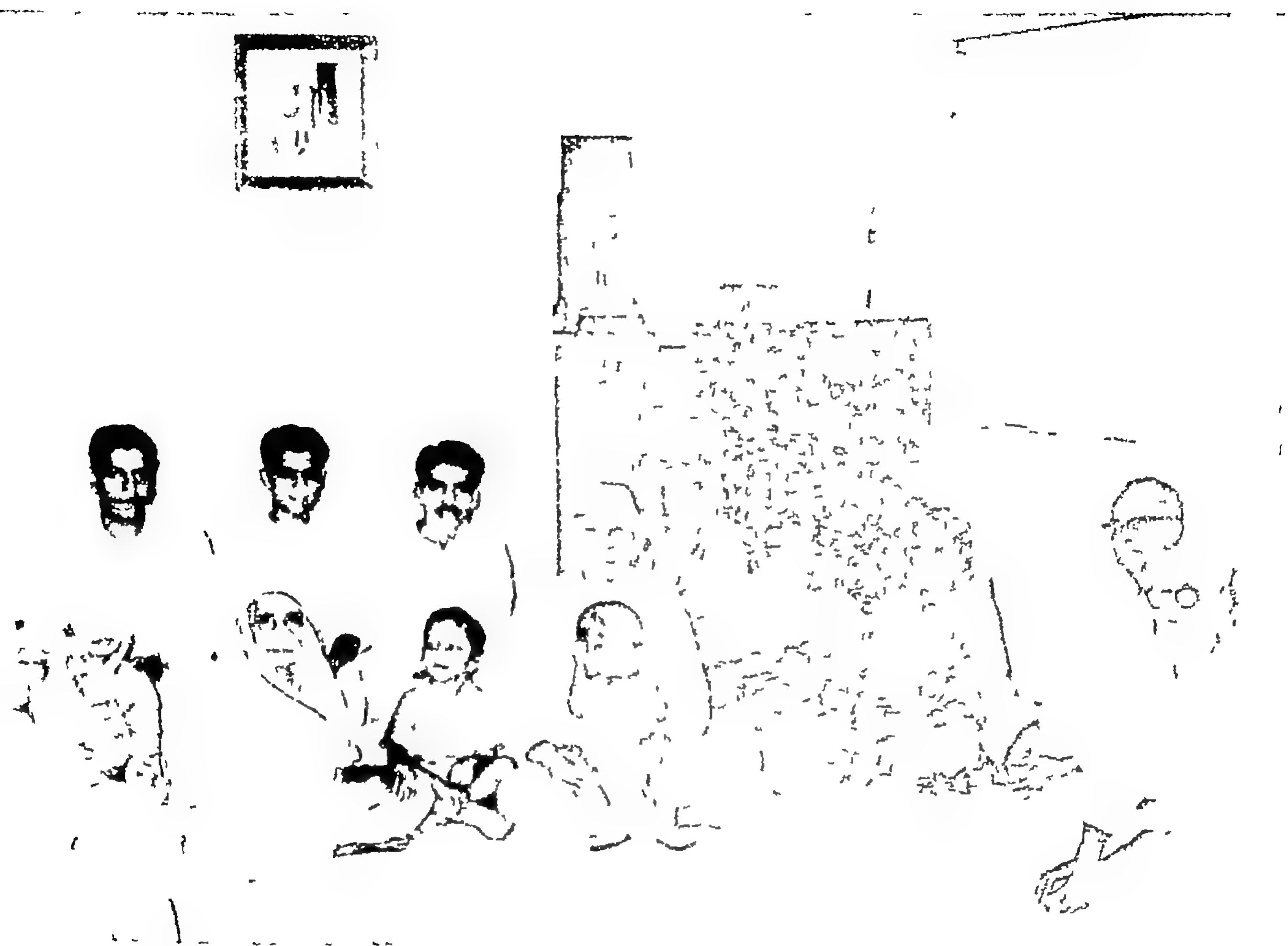
होली पर फेन्सी ड्रेस में स्व० ईश्वरदास जालान, स्व० सोहनलाल दुगगड के साथ धर्मचन्दजी नेहरूजी की वेश भूषा मे ।



...० सोसाइटी मे मुख्य मत्री स्व० पी० सी० घोष; स्व० सोहनलाल दुगगड,
स्व० डा० कुलरजन मुखर्जी, स्व० तुलसीराम सरावगी,
श्री गणेश प्रसाद सराफ के साथ धर्मचन्दजी ।



स्व० उऊगराज ढेवर, स्व० अतुल्य घोप, श्री विजयसिह नाहार के साथ धर्मचन्दजी



जैन हाउस मे श्री मोरारजी देसाई । (पीछे) निर्मलकुमार सरावगी, राजगोपाल सुरेका, चन्द्रकुमार सरावगी, इन्दु सरावगी, शान्ति सुरेका, लक्ष्मी राजगढिया, श्यामलाल सुरेका । (सामने) धर्मचन्दजी, मोती देवी, स्व० जानकी देवी, सजीव, श्री मोरारजी देसाई । गोद में सगीता ।

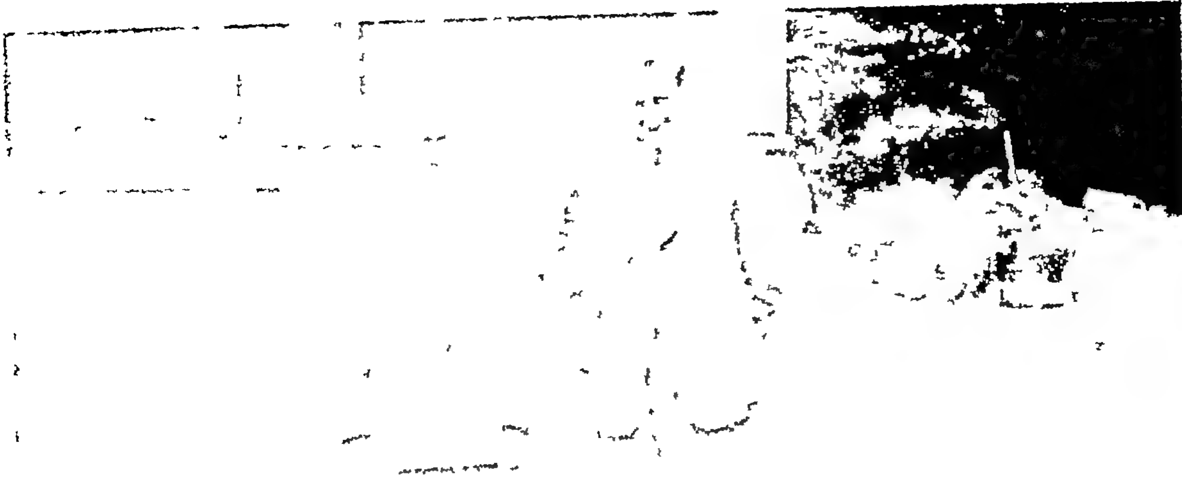


नेशनल फिजिकल एफेशियेन्सी टेस्ट में ३५ वर्ष के युवकों
के साथ श्री स्टार विजेता धर्मचन्दजी

माहेश्वरी व्यायामशाला के वार्षिक उत्सव पर सभापति के पद से पुरष्कार देते हुए धर्मचन्दजी।



बड़ाबाजार युवक सभा में योगा शिविर के समापन के बाद पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री त्रिभुवन नारायण सिंह के साथ धर्मचन्दजी।



[illegible] के प्राकृतिक चिकित्सक श्री सेसली थामसन के साथ धर्मचन्दजी ।





जापानी प्राकृतिक चिकित्सक
श्री आगाशा के साथ धर्मचन्दजी ।



प्रथम अतरिक्ष यात्री मेजर यूरी गैगरिन से हाथ मिलाते हुए धर्मचन्दजी ।



[illegible] के सभापति विवेकानन्द शतवार्षिक
जुलूस पर बोलते हुए धर्मचन्दजी ।



राजस्थानी पोशाक मे धर्मचन्दजी ।



मोती देवी के साथ राजस्थानी वेश भूषा में धर्मचन्दजी ।



मोती देवी के साथ बगाली वेश-भूषा मे धर्मचन्दजी ।



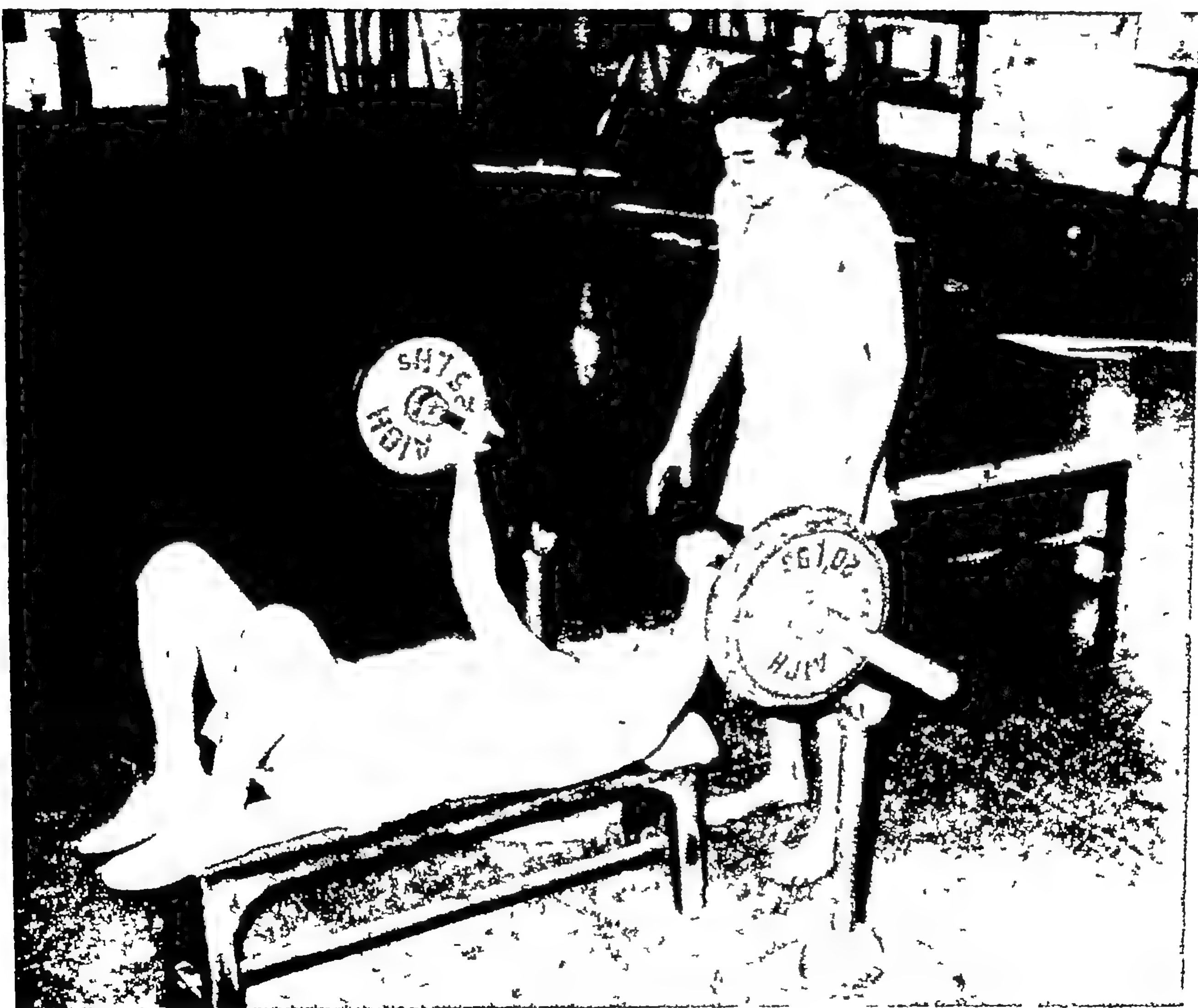
मोती देवी के साथ पारसी वेश-भूषा में धर्मचन्दजी।



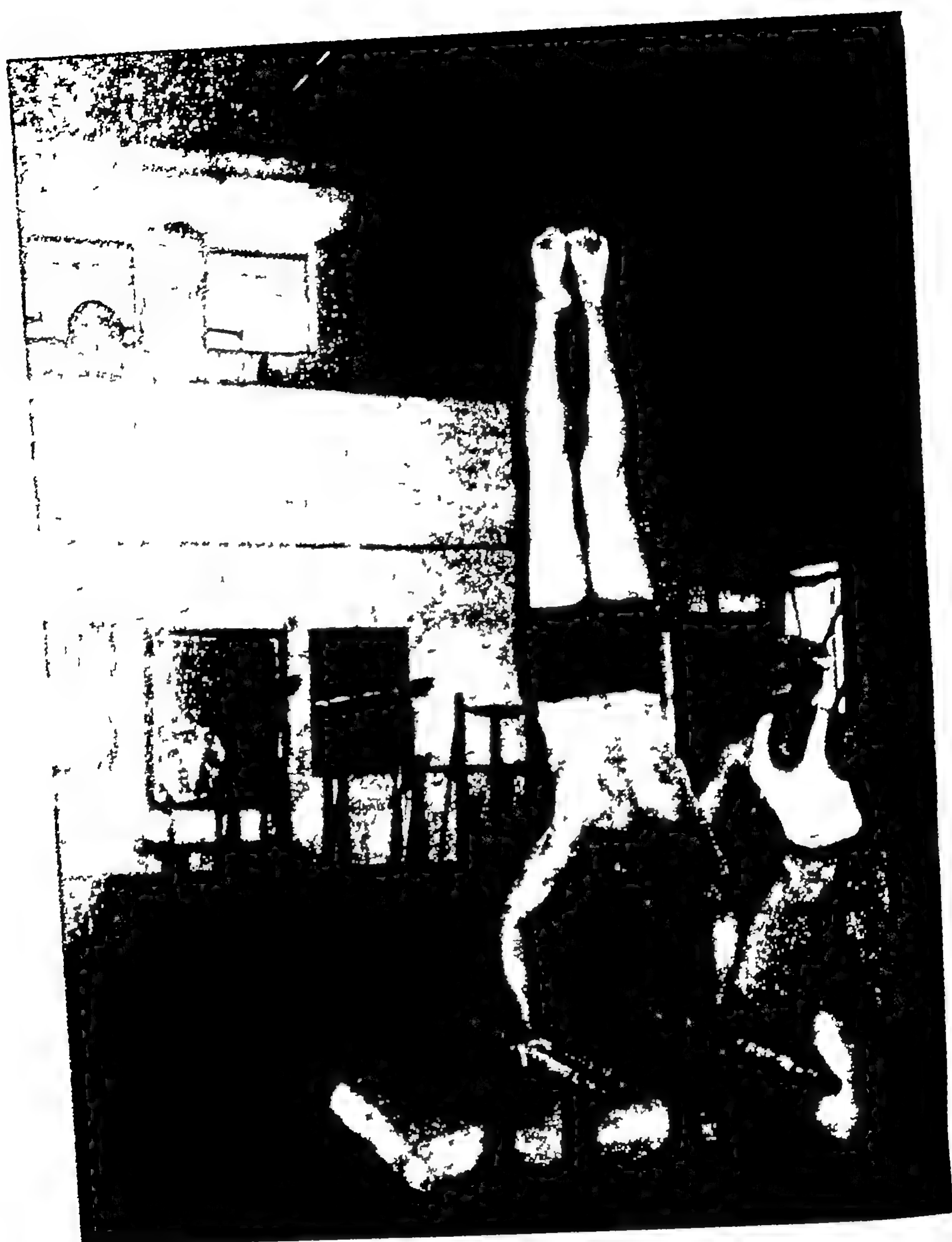
मोती देवी के साथ आधुनिक पाश्चात्य वेश-भूषा में धर्मचन्दजी ।



प्रार्थना घर में स्वाध्याय करती हुई मोती देवी, चर्खा कातते हुए धर्मचन्दजी।



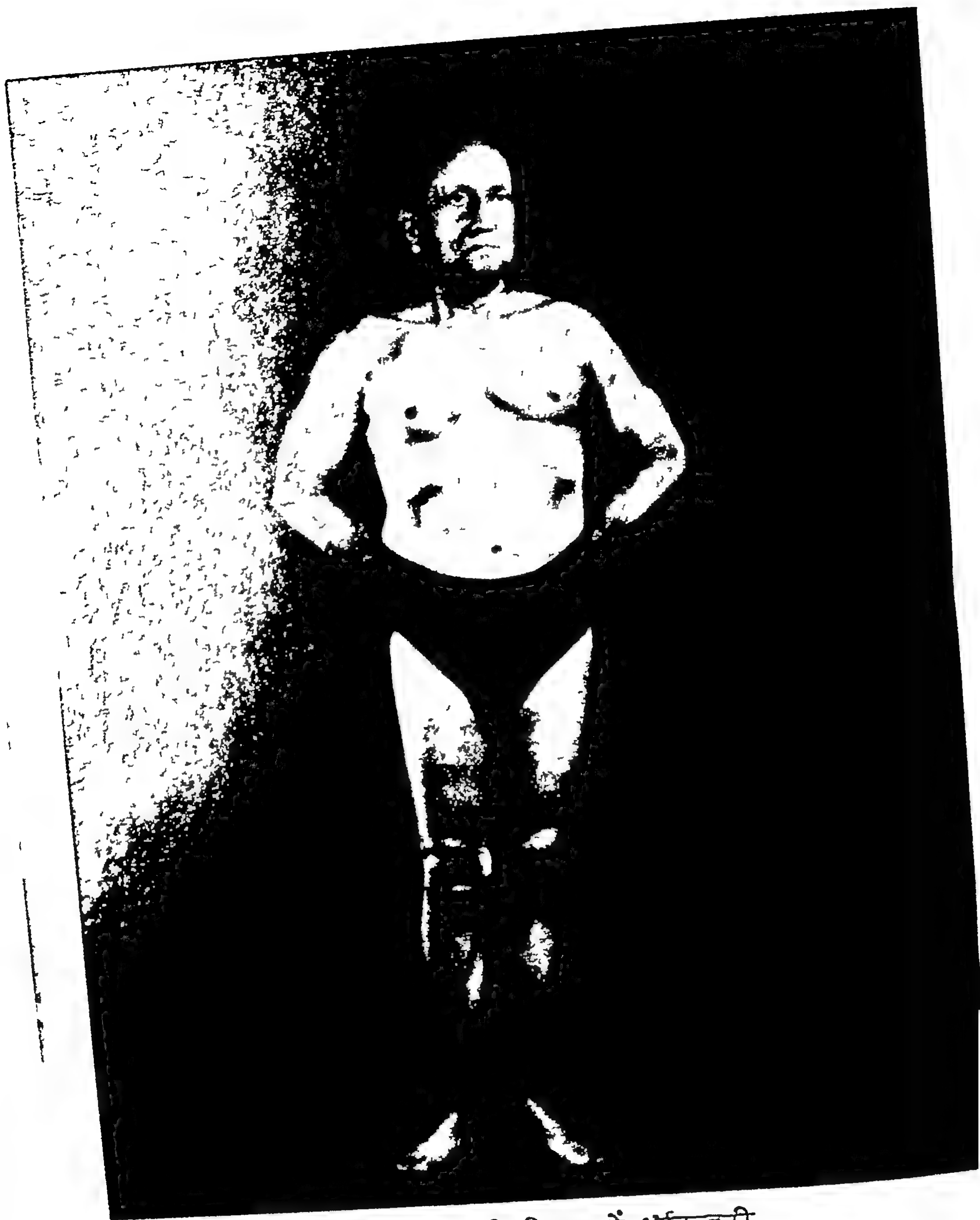
बेंच प्रेस करते हुए धर्मचन्दजी ।



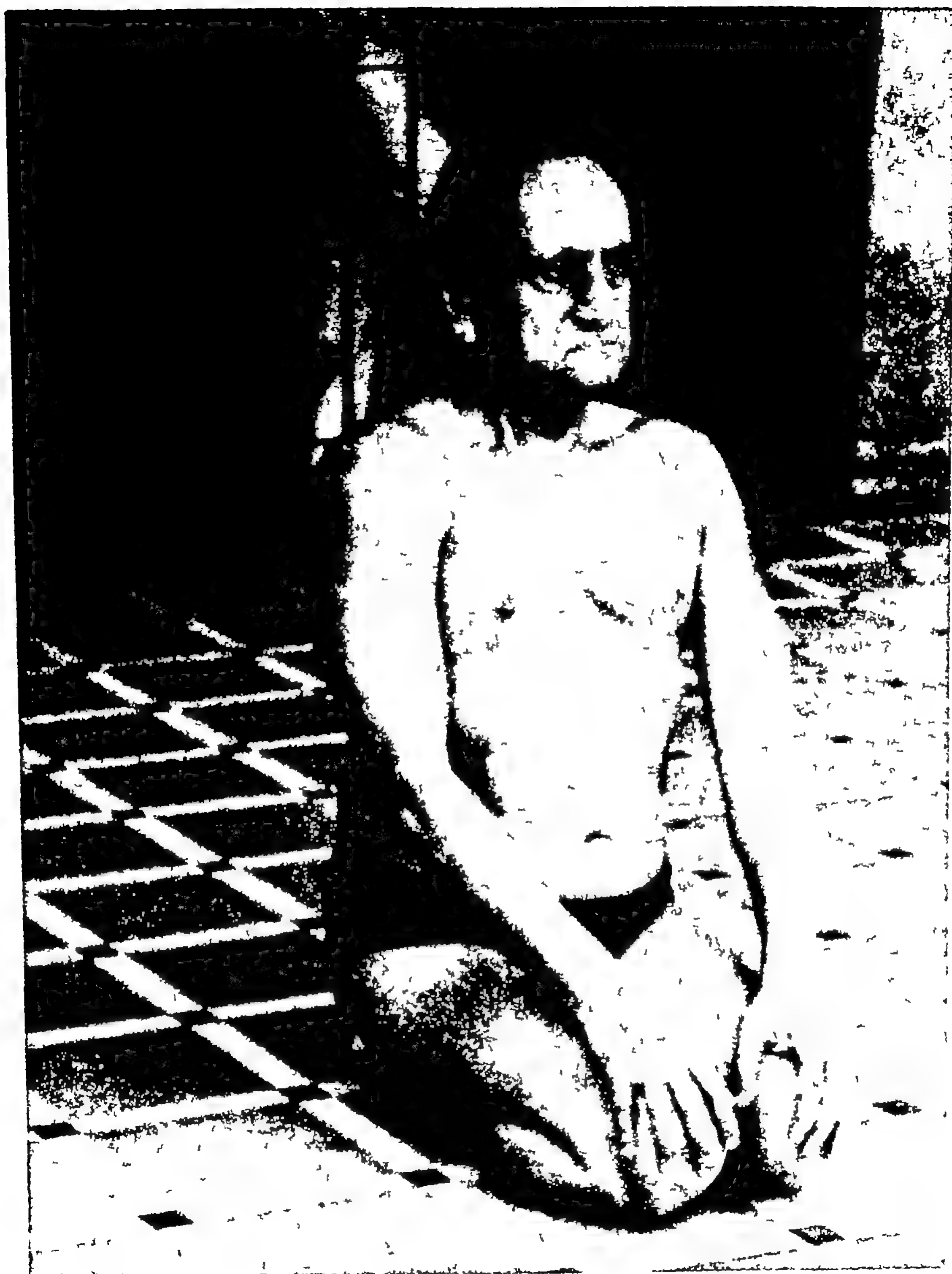
परलल वार पर व्यायाम करते हुए धर्मचन्दजी ।



चौवन वर्ष की उम्र में धर्मचन्दजी



चौहत्तर वर्ष की उम्र में धर्मचन्दजी



बज्रासन में बैठे हुए धर्मचन्दजी ।



युवक सभा में बैडमिंटन खेलते हुए धर्मचन्दजी।



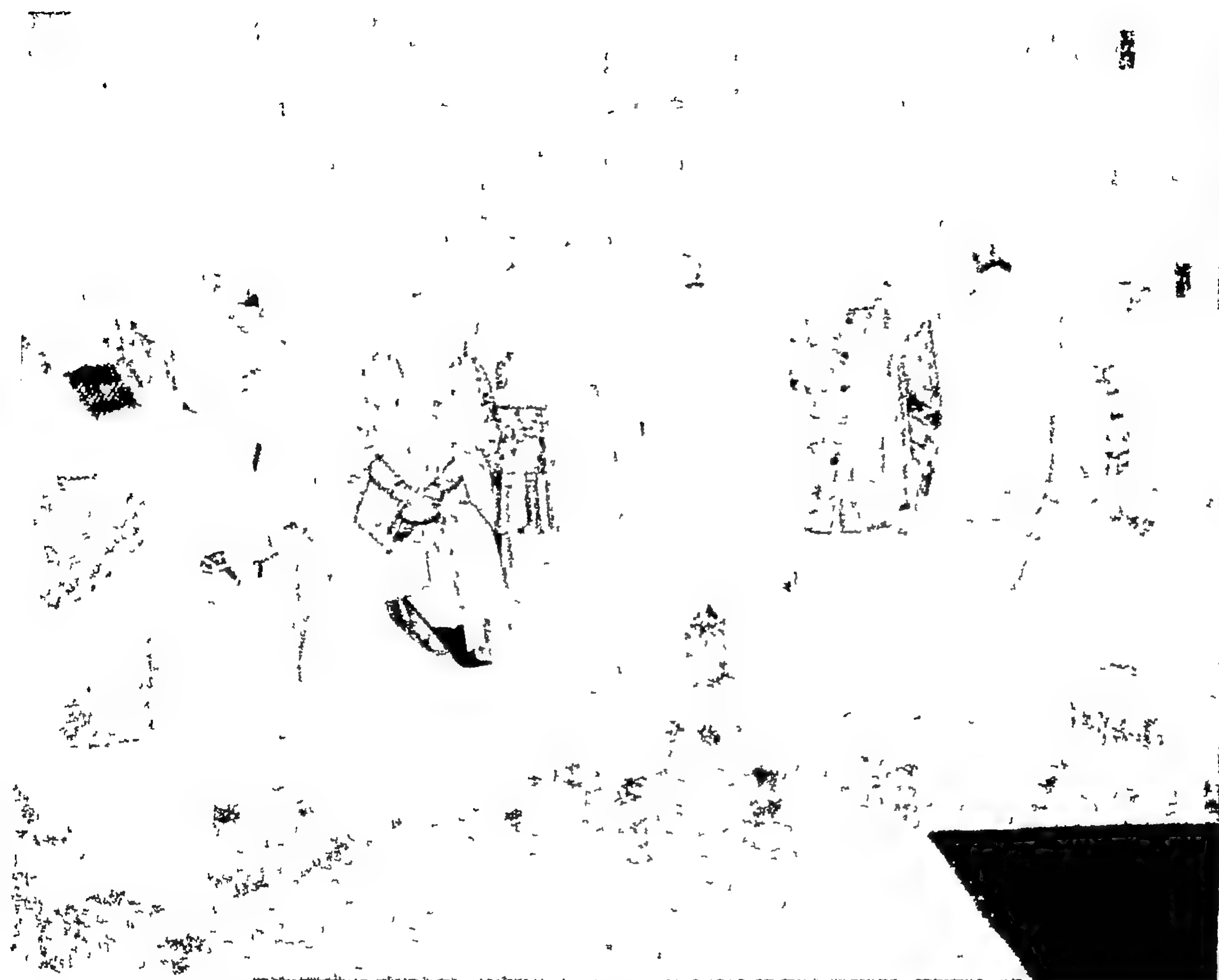
जैन हाउस के बाहर का दृश्य ।



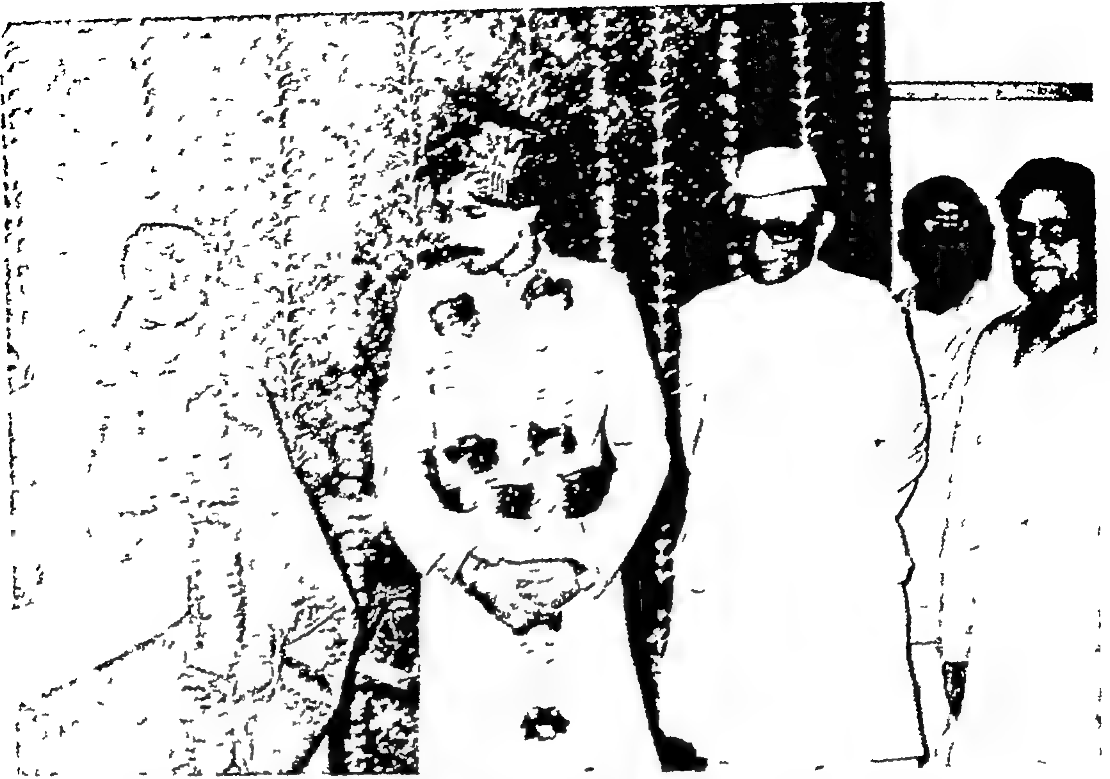
आफिस में काम करते हुए धर्मचन्दजी ।



छिहत्तर वर्ष … जी द्वारा बनाया गया तैल चित्र



अपनी पोती सगीता के विवाह पर (बाएँ से) : राजश्री देवी, चन्द्रकुमार,
मोती देवी, सिद्धार्थ दुधोड़िया, सगीता दुधोड़िया, धर्मचन्दजी,
निर्मलकुमार, इन्दू देवी ।



छोटी लडकी लक्ष्मी राजगढिया के लड़के सजीव राजगढिया के विवाह पर
नीना राजगढिया, सजीव राजगढिया, श्री मोरारजी देसाई के साथ धर्मचन्दजी।



वडी लडकी शान्ता सुरेका के परिवार के साथ (बैठे हुए) श्यामलाल सुरेका,
शान्ता सुरेका, धर्मचन्दजी, मोती देवी, (पीछे खडे हुए) अर्चना सुरेका,
सुशान्त सुरेका, अमन सुरेका, राजगोपाल सुरेका।

संस्मरण

संस्मरण की सूची

मेरा प्रथम परिचय सामाजिक कार्यों मे उनकी रुचि देखकर हुआ। उनके सात्विक विचार, समाज सेवा की लगन के फलस्वरूप मेरा उनसे घनिष्ट सम्बन्ध उत्तरोत्तर बढता गया। उस समय मारवाडी रिलीफ सोसाइटी एक मात्र सस्था थी जो देश मे आनेवाली विपत्तियों—बाढ, अकाल, महामारी—मे पीड़ित लोगो की सेवा करने के लिए समाज के युवको को आह्वान करती थी और विपत्ति से पीड़ित असख्य परिवारो की जीवन-रक्षा करती थी। सोसाइटी उस समय एक तीर्थ के समान विद्यमान थी जिसमे प्रवेश कर युवकवृन्द विना किसी भेद-भाव के समाज सेवा का प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रामाणिक समाज सेवी वनते थे। श्री धर्मचन्दजी ने इस दिशा मे सोसाइटी के द्वारा आयोजित सेवा कार्यों मे वड़े उत्साह के साथ भाग लिया। उसका उदाहरण विहार का भूकम्प, कलकत्ते मे दगा पीडितो की सेवा, नोआखाली मे महात्मा गाँधी के नेतृत्व मे सोसाइटी द्वारा चलाये गये कार्यों मे सहयोग, भारत के विभाजन के समय सन्-१९४७ में सोसाइटी द्वारा आयोजित पजाव मे शरणार्थियो के १५ बडे-बड़े कैम्पो का निरीक्षण, आसाम मे ब्रह्मपुत्र नदी के जल-प्लावन के समय डिब्रूगढ और पलासवाड़ो (गौहाटी) मे भूस्खलन के समय हजारो परिवारो की अन्न, वस्त्र, औषधि से सहायता, वगाल के भीषण अकाल में मिदनापुर के कैम्पो का निरीक्षण, राजस्थान मे वीकानेर क्षेत्र मे भीषण अकाल के समय गोसदन द्वारा पशुओ की प्राण-रक्षा के सेवा कार्यो मे उनकी उत्साहजनक सेवाएँ आज भी मैं तथा मेरे साथियो के समक्ष प्रतिविम्बित है। सोसाइटी के प्रधान मत्री वन कर उन्होंने वडी सजगता और कर्मठता के साथ सेवा कार्य सपादित किए यह सोसाइटी के इतिहास मे स्वर्णाक्षरो मे अकित रहेगा।

एक वार जव नोआखाली मे महात्मा गाँधी के सरक्षण मे सोसाइटी द्वारा वे पीडित, त्रस्त व उखड़े हुए अनेक हिन्दू परिवारो के सेवा कार्यों मे सलग्न थे उस समय रामगढ कैम्प मे महात्मा गाँधीजी से धर्मचन्दजी के साथ मैंने मुलाकात की तो गाँधीजी ने सोसाइटी द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों की सराहना की और वगाल सरकार द्वारा वितरण किये जाने वाले खराव वदवूदार चावलो के नमूने की पोटली श्री धर्मचन्दजी को दी और कहा कि इन चावलो को वे कलकत्ता पहुँचकर सर्वप्रथम वगाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री सुहरावर्दीजी को दिखलाकर कहे कि शरणार्थियो मे इस प्रकार के खराव चावल वितरण करना वन्द करें और अच्छे किस्म के चावल भिजवाने की व्यवस्था करें।

इसी प्रकार दूसरी अविस्मरणीय घटना उस समय की याद दिलाती है जव श्री धर्मचन्दजी सरावगी व श्री तुलसीरामजी सरावगी के साथ मैंने मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के शिष्ट मडल के रूप मे महात्मा गाँधी को वताया कि पजाव के शरणार्थी वडी सख्या मे पानीपत मे एकत्रित हैं। और उनकी स्थिति वडी व्यथापूर्ण है किन्तु सोसाइटी अपने सीमित साधनो के द्वारा ही भोजन, वस्त्र, दवाई से उनकी सेवा कर रही है वह साथ ही पंजाव मे और भी अन्य १५ कैम्प

चला रही है। गाँधीजी पानीपत के शरणार्थियों की व्यथा सुनकर द्रवित हो गए और कहा कि सोसाइटी को वहाँ पर उपस्थित शरणार्थियो के लिए कई लगर खोल देने चाहिए। उसमे जितने धन की आवश्यकता होगी उतनी सारी मैं (गाँधी-जी) घनश्याम दास के साथ झोली फैलाकर राशि एकत्रित कर सोसाइटी को दे दूँगा। आप अपना कार्य पूर्ण उत्साह के साथ सचालित करिए। निकट भविष्य मे मैं भी उसे देखने आऊँगा।

बहुत कुछ लिखना है श्री धर्मचन्दजी के बारे में किन्तु गागर मे सागर भर-कर यही कहूंगा कि श्री धर्मचन्दजी जैसे परोपकारी, प्रतिभाशाली उर्वर मस्तिष्क, वाले पुरुष इस देश मे कम ही है। इन्होने प्राकृतिक उपचारो के द्वारा अनेक परिवारो को डाक्टर, वैद्यो के फन्दे से मुक्ति दिलाकर नवीन स्वास्थ्य के साथ जीवन-दान दिया, साथ ही प्राकृतिक चिकित्सा का भारतव्यापी प्रचार किया है। देश के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ, महात्मा गाँधी, श्री जवाहरलाल नेहरू, श्री नेताजी सुभाष बोस, श्री हीरालाल शास्त्री, श्री जयनारायण व्यास आदि से इनका गहरा सम्पर्क रहा और भारत के भूतपूर्व प्रधान मत्री श्री मोरारजी देसाई, श्री ढेबर भाई व गुजरात के राज्यपाल श्री श्रीमन्नारायणजी उनके निवास स्थान पर अतिथि रह चुके है।

अत: यह समाज सेवी देश भक्त भारत के आकाश मे जाज्वल्यमान नक्षत्र के रूप मे दैदीप्यमान रहेगा और तरुण पीढी अपने जीवन विकास मे उनसे गहरी प्रेरणा प्राप्त करती रहेगी। □

धुन और साहस के धनी

□ □

राधाकृष्ण नेवटिया

कुछ लोग जीवन मे ऐसे आ जाते हैं।
भुलाना भी चाहें तो भुला नहीं पाते हैं ।।

जीवन-प्रवाह मे कभी-कभी कुछ ऐसे व्यक्ति मिल जाते है जो अभिन्न वन जाते है, मित्र वन जाते है। रूप, सौन्दर्य, धन, वैभव आदि की कसौटिया उनके सामने व्यर्थ हो जाती है। कोई अन्त प्रेरणा होती है जो दो आदमियो को जोड़ देती है।

सन् १९३० की घटना है, मैं अपने निवास स्थान से अपनी दुकान नारायण प्रसाद लेन स्थित गद्दी जा रहा था। हरिसन रोड मे, जो आज महात्मा गाँधी रोड है, सडक पर भीड लगी थी। मकान के ऊपर जोखीराम वैजनाथ की गद्दी थी। वैजनाथजी धर्मचन्दजी के पिता थे। उनसे हमारा व्यापार का सम्वन्ध भी था। मुझे उन्होने देख कर वुलाया और कहा—धर्मा विलायत से जाकर आया है। इतने मे धर्मचन्दजी भी आ गये। वैजनाथजी ने कहा—यही मेरा लडका है। वस एक नजर से उनको देखा। चेहरे पर साहस, गभीरता और निर्भयता थी। वस पहली मुलाकात यही से प्रारम्भ हुई। इस घटना को वीते आज ५५ वर्ष हो गये। उस समय समाज रूढिवादियो की वेडी मे जकडा हुआ

था। विलायत यात्रा, विधवा विवाह करना मानो जाति से बहिष्कृत होना था। ऐसे समाज में जन्मे एक २५ वर्षीय नवयुवक का घरवालो का कड़ा विरोध होने पर भी बगावत कर के विदेश-यात्रा करने से बढकर साहस का काम और क्या हो सकता है।

दूसरे एक बालबच्चे वाले नवयुवक का आकाश मे वायुयान का सीखना और एक पायलेट के रूप मे द्वितीय मारवाड़ी का गौरव प्राप्त करना प्राणो की ममता को छोडना कोई कम आश्चर्य की बात नही है। जो मनुष्य जीवन को हथेली पर रखकर आगे बढता है उसे सफलता तो मिलती ही है पर वह देश और समाज के सामने एक मार्ग-दर्शन का रास्ता भी खोलता है।

मनीषियो की वाणी है—**सेवा धर्म, परम गहनो योगिनामप्य गम्यः।**

सेवा धर्म परम गहन है। सेवा धर्म जिसमे स्व का विसर्जन कर देना पडता है। सेवा उत्सर्ग चाहती है। आसक्ति उसमे बाधा है। अहनिष्ठ वा आसक्त पुरुष समाज सेवी हो ही नही सकता। सेवा का अर्थ है दूसरो के लिए समर्पित हो जाना। सन् १९३४ की बात है बिहार मे भयकर भूकम्प आया। ऐसा लगता था कि बिहार का अस्तित्व ही खतरे मे है, सोसाइटी ऐसे कार्यों मे सेवा के लिए सबसे पहले पहुँचती थी। भूकम्प मे सेवा करने के लिए स्वयसेवको की जरूरत थी। जाने मे लोग भय खाते थे, दूसरे जीवन का खतरा था, पर धर्मचन्द जी भयभीत नही हुए और आगे बढकर सेवा करने बिहार पहुँच गए।

१९३८ की बात है, सोसाइटी के अन्तर्गत आयुर्वेदिक औषधियो के निर्माण के लिए एक रसायनशाला विभाग है, उसके कार्यों को आगे बढाना था। इस विभाग को सम्भालने के लिए एक मत्री को चुनना था। धर्मचन्दजी ने आगे बढकर इसके लिए अपनी सेवा देने की स्वीकृति दी। और अपने मत्रीत्व काल मे रसायन शाला की काया पलट की। जब-जब सेवा करने के कार्य आये, चाहे वे सामाजिक हो चाहे राजनैतिक हो, बाढ, अकाल, महामारी, सभी कार्यों मे वे तन-मन-धन से सहयोग करना अपना कर्त्तव्य समझते थे।

प्राकृतिक चिकित्सा के एकलव्य जैसे निष्ठावान

महात्मा गाधी प्राकृतिक चिकित्सा का प्रचार भारत के गाव-गाव, शहर-शहर मे करना चाहते थे, कारण एलोपैथिक दवाइयो से तो स्वास्थ्य बिगड़ता ही है पर साथ ही साथ इतना पैसा खर्च होता है कि एक गरीब और मध्यमवर्ग का आदमी उस खर्च का बोझ उठाने मे असमर्थ है। उन गरीब भारतवासियो के दु ख-दर्द ने धर्मचन्दजी के अन्तःकरण को झकझोर दिया और फिर उनके मन मे प्राकृतिक चिकित्सा का प्रचार-प्रसार कैसे हो, इस सम्बन्ध मे चिन्तन चलने लगा। अन्त मे कलकत्ते मे ही मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के अन्तर्गत प्राकृतिक चिकित्सा विभाग खोलने की योजना बनी। सोसाइटी के सभी सदस्य एलोपैथी के विश्वासी थे इसके पीछे कुछ खर्च करना नही चाहते थे। धर्मचन्दजी ने अपने

ट्रस्ट से रुपये देकर अप्रवेशित विभाग सन् १९४६ मे खुलवाया। धीरे-धीरे प्रचार बढ़ने लगा फिर श्री रूइया परिवार के अनुदान से सोसाइटी के नये भवन मे ३ तल्ले पर सन् १९५८ मे श्री धनश्यामदासजी विरला के करकमलो द्वारा अप्रवेशित विभाग का उद्घाटन हुआ। स्त्री और पुरुषो का उपचार होने लगा। वर्षो तक चला। हजारो रोगियो को प्राण-दान मिला। पर दुर्भाग्य की बात है कि सोसाइटी के सदस्यों ने सन् १९८३ मे उसे बन्द कर दिया।

धर्मचन्दजी चुप बैठने वाले नही थे। उनके मन मे तो भारत के गरीबो के उपचार की व्यवस्था गांव-गाव मे कैसे हो इसका चिन्तन चल रहा था। एक दिन मेरे पास आये और एक योजना के सम्बन्ध मे परामर्श चाहा। कहने लगे भारतवर्ष मे प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार के लिए एक अखिल भारतवर्षीय प्राकृतिक चिकित्सा का मच बनाया जाय जिसमे भारत के प्राकृतिक चिकित्सको को एक साथ बैठाकर सगठित किया जाय। हर प्रान्तो मे, शहरो मे, गाँवो मे चिकित्सालय खुल सके। मुझे उनकी योजना पसन्द आई और मैने सुझाव दिया कि एक अखिल भारतवर्षीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद की स्थापना की जाए और वह कलकत्ते मे हो और वृहद् रूप मे आयोजन किया जाय। यह सुझाव उनको पसन्द आया। इसकी रूप-रेखा बनाने का भार मुझे दिया गया। उस समय विनोवा भावे के छोटे भाई वालकोवा भावे कलकत्ते मे थे।

वे सत, तपस्वी, त्यागी पुरुष है उनको स्वागताध्यक्ष बनाया जाय और काग्रेस के अध्यक्ष ढेवर भाई को सभापति बनाने का सुझाव दिया। दोनो सुझाव धर्मचन्दजी को जँच गये।

अखिल भारतवर्षीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद की स्थापना सन् १९५६, सुनहला दिवस था। वालकोवा भावे स्वागताध्यक्ष बने और ढेवर भाई सभापति तथा मैं स्वागत मन्त्री बना। स्वागत समिति बनी, वाहर से प्राकृतिक चिकित्सा के प्रेमी चिकित्सक काफी सख्या मे आये, मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के नव निर्मित नये भवन के बडे हाल मे बडी धूम-धाम से दो दिन का सम्मेलन हुआ। वह एक स्थाई सगठन बन गया और प्रथम प्रधान मन्त्री धर्मचन्दजी बनाए गए। उनका स्वप्न साकार हुआ और आज ३० वर्ष से उसके वार्षिक अधिवेशन हर प्रान्तो मे होते रहते है और सारे भारतवर्ष मे सैकड़ो प्राकृतिक चिकित्सालय खुल गये जो सेवा कर रहे है।

कलकत्ते मे भी एक आदर्श प्राकृतिक चिकित्सालय

आपस मे चर्चा चली कि एक कल्पना तो साकार हो गई पर कलकत्ते वालो को एक ऐसा आदर्श उपस्थित करना चाहिए ताकि प्राकृतिक चिकित्सा का आधुनिक शिक्षा का केन्द्र बने। धर्मचन्दजी मे उत्साह था, लगन थी, और कुछ करके दिखाने की तमन्ना थी। तय हुआ कि एक तीन वर्षीय प्राकृतिक चिकित्सा का कोर्स बनाया जाय जो अन्य मेडिकल कालेजो के समकक्ष हो और उसके साथ वैज्ञानिक शोध प्राकृतिक

चिकित्सालय हो। सिद्धान्त रूप से सबको जँच गई। सवाल था स्थान का। धर्मचन्दजी की एक जमीन थी १८ बीघा डायमण्ड हार्बर रोड पर, उसमे, सुन्दर बगीचा बना था। मैने कहा, यह आप प्राकृतिक कालेज और चिकित्सालय के लिए उपहार स्वरूप दे दीजिए। एक दिन सोचने का समय लिया, दूसरे दिन स्वीकृति दे दी। इतना विशाल हृदय देखकर मित्र लोग आश्चर्य करने लगे। सब दिशाओ मे कार्य आरम्भ कर दिया गया, तीन वर्ष का कोर्स बन गया, मकान बनने लगे। मोरारजी भाई से मकान की कोणशिला करवाई गयी। दो वर्ष मे कालेज एव चिकित्सालय बन कर तैयार हो गया। एक ट्रस्ट बनाया गया। सरकार से भी मदद अधिक मिली, और दाताओ ने भी दिल खोलकर चन्दा दिया।

भारतवर्ष के कोने-कोने से विद्यार्थी आ गये। साथ ही रोगी भी भर्ती होने लगे। नामकरण हुआ '—"प्राकृतिक निकेतन" कालेज एव चिकित्सालय।" आधुनिक उपकरणो एव साज-सज्जा से सजाया गया और बडी धूम धाम से उद्घाटन श्री ढेबर भाई के करकमलो द्वारा हुआ। मैं मन्त्री और विजय सिंहजी नाहर सभापति, और धर्मचन्दजी उप सभापति बने।

प्राकृतिक चिकित्सा जगत् मे यह प्रथम प्राकृतिक चिकित्सा का कालेज खुला और आधुनिक ढग का प्राकृतिक चिकित्सालय खुला। कई कारणो से कालेज और चिकित्सालय बन्द हो गया और लगभग १० वर्ष बन्द रहा। पर मौका पाते ही धर्मचन्दजी ने १९८४ के जनवरी मास मे श्री लक्ष्मी निवासजी बिरला के कर कमलो से उसका उद्घाटन कराया जो मजे मे चल रहा है। उसके मन्त्री भाई आनन्दीलाल गोयनका है।

प्राकृतिक चिकित्सा जगत मे, प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार-प्रसार मे अगर किसी का नाम अमर रहेगा तो वह धर्मचन्दजी सरावगी का ही रहेगा। आज भी ८१ वर्ष की उम्र मे वही लगन, वही उत्साह है। ईश्वर उन्हे सौ वर्षों से अधिक उम्र प्रदान करे। □

कर्मठ पुरुष

□ □

विजय सिंह नाहर

प्राकृतिक चिकित्सा जगत् मे धर्मचन्दजी सरावगी एक नाम है। मुझसे इनका सम्पर्क अनेक वर्षों का है। इनके पिताजी स्व० बैजनाथजी प्रतिवर्ष दीपावली पर भगवान महावीर निर्वाण उत्सव पर पावापुरी जाया करते थे। वृद्धावस्था मे भी उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा था।

धर्मचन्दजी को बचपन से ही कारीगरी के काम का बहुत शौक था। इनका स्टील का कारखाना था जिसमे ये अपने दिमाग से नई-नई चीजें बनाने का प्रयत्न करते रहते थे। सूर्य की किरणो से खाना बनाने का चूल्हा निकला तो इन्होंने अपने कारखाने मे उसमे थोड़ा परिवर्तन करके उसको और भी अधिक उपयोगी बना लिया। चरखा कातने का भी इन्हे बराबर शौक रहा है। चरखे मे भी वे अपने मन मे आवश्यक संशोधन करके काम मे लेते हैं।

इनके मकान की छत पर लगा बगीचा भी देखने लायक है। उसमे अनेक साग-सब्जी और फूलो के पौधो के साथ नीम्बू और नारियल के पेड भी लगे है।

सन् १९४८ मे जयपुर मे काग्रेस का अधिवेशन हुआ था। मेरे एक मित्र डा० रहीम के पास एक छोटा हवाई जहाज था। जिससे हम दोनो जयपुर जा रहे थे। रास्ते मे इलाहाबाद के पास हवाई अड्डे पर जब हम तेल लेने के लिए

उतरे तो वहाँ एक दूसरा छोटा हवाई जहाज आकर उतरा। मैंने देखा उस जहाज मे धर्मचन्दजी का परिवार था और स्वय धर्मचन्दजी उसे चला रहे थे। शाम हो जाने के कारण हम सभी एक साथ कानपुर मे ठहर गए। फिर सुबह जयपुर के लिए रवाना हुए। धर्मचन्दजी इस प्रकार के साहसिक कार्य बडे उत्साह से करते थे।

प्रतिदिन मन्दिर मे दर्शन करने तो जाते ही है। व्यायामशाला मे जाकर स्वयं व्यायाम करना और दूसरो को भी सिखाना इनका नियमित कार्य रहा है। अब अस्सी बरस की उम्र मे भी वे लाठी घुमाना सीख रहे है, यह उनकी जिन्दादिली का सबूत है।

सामाजिक और राजनैतिक कार्यो मे भी धर्मचन्दजी बराबर भाग लेते है। कलकत्ता कारपोरेशन के कौसिलर के रूप मे भी इन्होने काफी सेवा-कार्य किया। एकबार इन्होने राज्यसभा का चुनाव लडा और जीत भी गये लेकिन काग्रेस के एक सदस्य हार गये। उन्हे दिल्ली भेजना जरूरी था। फिर अतूल्य बाबू के आग्रह पर इन्होने इस्तीफा दे दिया। दिल्ली जाकर शपथ भी नही ली। कितना बड़ा त्याग का आदर्श धर्मचन्दजी ने रखा।

वे छः साल के लिए राज्य सभा के सदस्य रहते परन्तु इन्हे जरा भी लोभ मोह नही हुआ। ऐसा दृष्टान्त विरला ही मिलेगा। कांग्रेस के लोग इनके इस त्यागपूर्ण कार्य से बहुत प्रभावित हुए और बाद मे इनको काग्रेस की ओर से पश्चिम बगाल विधान परिषद् का सदस्य चुना गया। इस प्रकार ये अपने कामो से सभी का मन जीत लेते है।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी मे पद पर रहकर इन्होने काफी वर्षों तक सवा-कार्य किया। इन्ही के प्रयत्न से वहाँ पर प्राकृतिक चिकित्सा विभाग भी खुला। डायमण्ड हार्बर में इनका अपना बहुत सुन्दर बगीचा था जिसको दान देकर इन्होने वहाँ "प्रकृति निकेतन" की स्थापना की। जगह ही नही, इन्होने इस काम में लाखो रुपयो का दान दिया। धर्मचन्दजी का यह कार्य स्वर्णाक्षरो में लिखा जाएगा। प्राकृतिक चिकित्सा पर इन्होने अनेक पुस्तकें लिखी हैं जो बहुत उपयोगी है।

वास्तव मे धर्मचन्दजी बहुत प्रेमी सज्जन है। गरीबो की सहायता करना और गुप्त-दान देना इनका स्वभाव है। इस प्रकार के कर्मठ पुरुषो की हमारे देश को बहुत आवश्यकता है। मेरी कामना है कि धर्मचन्दजी पूर्ण स्वस्थ और दीर्घायु प्राप्त करते हुए सदा इसी उत्साह से समाज की सेवा करते रहे। □

साथी हो तो ऐसा

□ □

बजरंगलाल लाठ

श्री धर्मचन्दजी सरावगी से मेरा परिचय ६० वर्ष पहले से है। उनकी और मेरी ससुराल एक ही परिवार मे होने के कारण यह परिचय गहरा होता गया। सेवा सस्थाओ के माध्यम से श्री सरावगीजी के साथ कार्य करने का अवसर भी लम्बे समय तक मिलता रहा। मैं जब भी ससुराल जाता था वहाँ भी सरावगीजी के दृढ विचार, उत्साही और साहसी जीवन की बाते सुनने को मिलती थी।

सरावगीजी के मन मे विदेश-भ्रमण की उत्कट इच्छा थी। अपने माता-पिता के इकलौते पुत्र होने के कारण माता-पिता उनको विदेश भेजने का साहस नही जुटा पाते थे। सरावगीजी के पिता स्व० बैजनाथजी सरावगी का समाज मे बडा सम्मान था और वे व्यवसायी प्रतिष्ठानो मे पदाधिकारी रहकर तथा मन्दिरो के माध्यम से सदा सेवा-कार्य करते रहते थे। फिर उस समय भारत के बाहर जाने का विचार लोग कम ही रखते थे।

कुछ दिनो बाद ही श्री सरावगीजी ने लदन जाने का निश्चय किया। इनका दृढ निश्चय देख कर, न चाहते हुए भी पिताजी ने जाने की अनुमति दे दी। जब पिताजी ने धर्मचन्द को वापिस बुलाने के लिये लदन मे उन्हे पत्र

लिखा तो धर्मचन्दजी ने उत्तर लिखा कि जल्दी तो हवाई जहाज से आया जा सकता है अतः आप अनुमति दे तो आ जाऊँ। आखिर धर्मचन्दजी ने लंदन से करांची तक की यात्रा हवाई जहाज से ही की। धर्मचन्दजी शायद पहले भारतीय थे जिन्होने हवाई जहाज से यह जोखिम भरी यात्रा की। इस प्रकार सरावगीजी प्रारम्भिक जीवन से ही कुछ कर दिखाने का साहस रखते थे और जो निश्चय कर लेते उसे कार्य रूप मे परिणत करके ही छोडते थे।

श्री सरावगीजी जब लदन जाकर वापिस लौटे तो समाज ने इस यात्रा का कडा विरोध किया। यद्यपि सरावगीजी का पूरा परिवार ही धार्मिक था, पर समाज ने उनके मन्दिर प्रवेश पर रोक लगा दी। बाद मे प्रायश्चित स्वरूप पूरे जैन तीर्थों का भ्रमण करके आए तभी इन्हे मन्दिर मे जाने की अनुमति मिल सकी। इस सदर्भ मे जो संघर्ष हुआ उसकी अखबारो मे काफी चर्चा रही। आगे चलकर तो सरावगीजी अपनी पत्नी, पिता और पुत्र के साथ अनेको बार विदेश भ्रमण करने गए।

मुझे सरावगीजी जैसा साथी मिला जिससे मेरा मन भी सार्वजनिक कार्यों मे उत्साह से लगा रहा। बडाबाजार लाइब्रेरी और कुमारसभा पुस्तकालय मे तो मुझे सरावगीजी का साथ नही मिला पर १९३८ मे मैं जब मारवाडी रिलीफ सोसाइटी की कार्यकारिणी का सदस्य चुना गया तब फिर हम दोनो साथ ही गए। इसके बाद तो कभी वे कार्यकारिणी मे रहे और मैं मत्री बना, कभी वे मत्री बने और मैं कार्यकारिणी मे रहा। अन्य सस्थाओ मे भी वर्षो उनके साथ कार्य करने का सुअवसर मिलता रहा।

डायमड हार्बर मे उनका अपना बगीचा था जहाँ उन्होने प्रकृति-निकेतन बनाने का निश्चय किया। उसके लिए निर्माण कार्य, अर्थ-संचय और व्यवस्था-कार्य के लिए एक ट्रस्ट का निर्माण हुआ जिसमे ढेबर भाई, विजय सिंह नाहर, श्रीमन्नारायणजी अग्रवाल, राधाकृष्णजी नेवटिया, आनन्दीलालजी गोयनका, धर्मचन्दजी और मैं स्वय भी था। उन्होने प्रकृति निकेतन के लिए न केवल अपना बगीचा दान मे दे दिया बल्कि लाखो रुपये भी उसके लिए खर्च किए।

इस प्रकार मैंने देखा कि सरावगीजी जिस कार्य मे लगे जी खोल कर लगे, सेवा भावना से प्रेरित होकर लगे, बिना किसी हिचकिचाहट के लगे।

मेरा पारिवारिक सम्बन्ध होने के कारण सरावगीजी से पारिवारिक बातें भी होती थी। वहाँ भी ये अपने नियमो को सामने रखकर चलते। घर मे एक ही समय पकाया हुआ भोजन बनेगा, बाकी समय फलो और दूध से काम चलाना होगा। मैं अपने पुत्रो का सम्बन्ध ऐसे ही परिवार से करूंगा जो उस नियम मे मेरा साथ दे—ऐसा सरावगीजी कहा करते। मैंने उनसे कहा कि लडकी के लिए इतना बडा नियम निभाना सम्भव नही होगा, तो बिना हिचकिचाहट के सरावगीजी ने कहा—"तब मेरे लिए भी सम्भव नही होगा।" इसी प्रकार खद्दर पहनते थे तो अपने चरखे से कते धागे से बना खद्दर ही पहनते।

सरावगीजी अपने जीवन-काल की कुछ कमजोरियो को भी मेरे आगे प्रकट कर देते थे। मैं सोचता रह जाता था कि देखो सरावगीजी कितने निर्भीक और बहादुर पुरुष है। वास्तव मे वे मुझे अपना मित्र और सखा ही समझते है।

सरावगीजी विवाह-उत्सवो मे भाग लेते और सदा सार्वजनिक सस्थाओ मे लगे रहते थे, पर इधर कुछ वर्षो से उन्होने अपना कार्य क्षेत्र सीमित कर लिया है। ठीक भी है, हमारे शास्त्रो मे लिखा है कि उमर के हिसाब से सभी कार्यो से मोह हटा लेना चाहिए।

खेलकूद और व्यायाम तो सरावगीजी को अत्यन्त प्रिय रहे है। उनके घर के सामने ही कर्जन पार्क मे आर० एस० एस० की शाखा लगती है, जहाँ जाकर वे अब लाठी घुमाना सीख रहे है। अस्सी की ढलती उमर मे उनका उत्साह देखकर जवानो को भी शर्म आने लगती है।

सरावगीजी के विकास मे जहाँ उनके माता-पिता के प्रेम और उनके सद्-जीवन का प्रभाव पड़ा, वही सरावगीजी की अपने माता-पिता के प्रति अगाध श्रद्धा भी रही। इनकी माताजी मुझे कहा करती थी कि, 'देखो वजरगजी! यह धर्मा कहता है कि माँ तू मरियो मत। भला मैं सदा जिन्दा कैसे रहूंगी।" ऐसा आत्मिक प्रेम था इनका अपने माता-पिता से। सरावगीजी ने अन्तिम समय तक दोनो की भरपूर सेवा की।

सरावगीजी की नई धर्म पत्नी भी एक आदर्श महिला है। हाथ से घर का काम करना, सरावगीजी के लिए स्वय वाजार जाकर उनकी पसन्द के फल खरीद कर लाना, मदिर के दर्शन करना आदि उनका नियमित कार्य है। नौकर-चाकरो के साथ और वेटे-वहुओ के साथ अपने ममतापूर्ण व्यवहार के कारण वे परिवार में आदर से पूजी जाती हैं।

सरावगीजी वड़े कर्मठ व्यक्ति है। जव इन्होने कारवार सभाला उस समय व्यापार की स्थिति अच्छी नही थी। इन्होने अपने परिश्रम और अध्यवसाय से ही उसे आगे वढाया और यश तथा धन दोनो अर्जित किया।

सेवा और त्याग तो इनके परिवार का स्वभाव रहा है। इनके स्व० पिता श्री वैजनाथजी अस्पताल मे जाकर रोगियो में फल वितरित किया करते थे और प्रत्येक रोगी मे वडी आत्मीयता से मिल कर उनकी सुख-सुविधा की चिंता किया करते थे। इस कार्य से उनको परम आनन्द प्राप्त होता था।

मैं सरावगीजी को अपने ज्येष्ठ भ्राता के तुल्य मानता आया हू। अत जिन भाइयो ने सरावगीजी का अभिनन्दन करने का निश्चय किया है उन्हे मैं हृदय से वधाई देता हूँ। □

समर्पित सेवक

□ □

गणेश प्रसाद सराफ

श्री धर्मचन्दजी सरावगी से मेरा सम्पर्क मारवाडी रिलीफ सोसाइटी मे विशेष रूप से हुआ। ऐसे हम दोनो एक दूसरे से बहुत पहले से परिचित थे किन्तु सम्पर्क बढने पर ही मनुष्य का मूल्याकन होता है। इसलिए उनके निकट आने पर ही मैंने उनको समझा। मारवाडी रिलीफ सोसाइटी मे दो पार्टिया थी, एक पार्टी मे मैं, धर्मचन्दजी आदि थे जिसके संयोजक श्री भालचन्द्रजी शर्मा थे। मैं गांधीवादी विचारो का समर्थक हूं एव कुछ महीनो तक साबरमती आश्रम की सेवा करने का भी सौभाग्य प्राप्त कर चुका हूँ। श्री धर्मचन्दजी सरावगी को भी मैंने गाधीवादी विचारो का उपासक एव प्रबल समर्थक पाया इसी कारण मेरा झुकाव उनकी ओर विशेष रूप से बढता गया।

श्री धर्मचन्दजी सरावगी ने मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के कई विभागो का दायित्व ग्रहण कर प्रधान मत्री तक बने। किन्तु सोसाइटी मे सबसे बडा एव अभिनन्दनीय कार्य जो उन्होने किया वह था प्राकृतिक चिकित्सा विभाग की स्थापना।

सन् १९४६ की बात है—हिन्दू-मुसलमानो का नरमेध! दानवता का वीभत्स ताण्डव! हाहाकार मचा था। कलकत्ते मे यह ताण्डव अभी शान्त भी नही हो पाया था कि पूर्वी बगाल की तरफ अग्रसर हो गया। यह १९४६ का अक्टूबर

माह खूनी माह के नाम से चिरस्मरणीय रहेगा। यह रक्तरंजित प्रतीक वन गया था। सामूहिक हत्याएँ, वलात्कार, अग्निकाण्ड एव वलात धर्म परिवर्तन कल्पना के वाहर था। मैं और श्री मगतूराम जालान पूर्वी वगाल के ग्वालन्दो मे रिलीफ कैम्प चालू कर एव नोवाखाली की रिपोर्ट सग्रह कर कलकत्ते लौटे ही थे कि महात्मा गाँधी से मिलने का कार्यक्रम वन गया। उस समय महात्मा गाँधी वेलियाघाटा मे ठहरे थे और शान्ति स्थापना का प्रयत्न कर रहे थे। सोसाइटी का एक प्रतिनिधि मडल वेलियाघाटा मे महात्मा गाधी से मिलकर पूर्वी वगाल का सेवाकार्य करने हेतु मिला। उक्त प्रतिनिधि मण्डल मे श्री धर्मचन्दजी प्रमुख थे। अन्य विपयो पर आलोचना होने के वाद महात्मा गाधी ने सोसाइटी मे प्राकृतिक चिकित्मा का एक विभाग चालू करने की सलाह दी। महात्मा गांधी प्राकृतिक चिकित्सा को राष्ट्र की सर्वोपरि चिकित्सा मानते थे। महात्मा गाधी द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा के सम्वन्ध मे दी गई प्रेरणा की छाप श्री धर्मचन्दजी पर विशेष रूप से पडी। मेरा ख्याल है उसी समय से श्री धर्मचन्दजी ने अपना जीवन प्राकृतिक चिकित्सा के लिए न्यौछावर कर दिया और तन, मन, धन से प्राकृतिक चिकित्सा की प्रगति मे जुट गए।

सोसाइटी मे प्राकृतिक चिकित्सा का अप्रवेशित विभाग खुलवाया। धीरे-धीरे प्रवेशित विभाग खुलवाने मे उन्होने सक्रिय प्रमुख भूमिका निभाई। केवल कलकत्ते मे ही नही प्राकृतिक चिकित्सा को अखिल भारतवर्षीय रूप देने मे वे प्रमुख रहे है। मासिक पत्रिका 'स्वथ्यजीवन' का प्रकाशन, प्राकृतिक चिकित्सा पर दर्जनो पुस्तक लिखकर इसका प्रचार किया। विष्णूपुर डायमण्ड हार्वर रोड पर प्राकृतिक चिकित्सा का अस्पताल एवं कालेज इन्ही की कीर्ति है। उसके लिए जमीन एव अर्थ का सहयोग धर्मचन्दजी का सराहनीय रहा है। आज भारत वर्ष में सैकड़ो प्राकृतिक चिकित्सा एव योग-केन्द्र स्थापित है। सभी केन्द्रो के अधिकारी श्री धर्मचन्दजी को श्रद्धा की दृष्टि से देखते है। एव समय-समय पर श्री धर्म चन्दजी से अनुदान प्राप्त करते रहते है। आज भी उन्हे जव यह पता चलता है कि कोई प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र अर्थ एव अन्य किसी भी कारण से शिथिल पडता जा रहा है तो वे वहुत ही कष्ट महसूस करते है एव यथासाध्य उन्हे सहयोग देने की चेष्टा करते है। वे वडे ही विनोदी एव हसमुख हैं। ८१ वर्ष की उम्र मे भी वे अपने को स्वस्थ रखते हुए कठिन व्यायाम करते हैं। उसका कारण उनकी विनोद प्रियता है। वे छोटी से छोटी चीज को भी वेकार नही समझते। मनुष्य जिसे वेकार समझ कर फेंक देता है उसे भी वे अपनी कलात्मक अभिरुचि से उपयोगी वना देते हैं। हमलोगो के साथी श्री मोहन धरनीधरका तो उनके इस कार्य की चर्चा वरावर करते है। वे उदार प्रकृति के दानी व्यक्तियो मे से है। वे अपना अनुदान उसी को देना चाहते हैं जिसका उपयोग होता है।

उनके आफिस मे टेवुल पर एक छपा हुआ मत्र है कि—

एक घण्टा चिन्ता कम करें, वदले मे एक घण्टा अधिक हसे।

एक दावत का मोह को छोड़ें—बदले मे घर का सादा भोजन करें।

एक घण्टे बिजली मे कम रहें-एक घण्टा सूर्य की हल्की किरण में अधिक रहे।

एक घण्टे मोटर मे कम चढ़ें—एक घण्टे पैदल चलें।

एक प्याली चाय कम पिये—एक प्याली दूध बिना चीनी का पिएँ। एक बार अन्न खाना छोड दें—एक बार फलाहार करे।

एक दिन का उपवास सप्ताह मे अवश्य करे।

इसी बीज मत्र पर चलकर श्री सरावगीजी ८१ वर्ष की उम्र मे भी बड़ा बाजार युवक सभा मे प्रति दिन एक घण्टे तक कठिन व्यायाम जैसे पेरलल वार, मुगदर, दण्ड-बैठक या व्यायाम नियमित रूप से करते है। लाठी चलाने का भी उन्हे शौक है। वे बड़े ही सौम्य एव सहृदय स्वभाव के व्यक्ति है। हंसते हुए सबसे मिलना, उनकी स्वास्थ्य सम्बन्धी खोज रखना—अस्वस्थ रहने पर उसके स्वस्थ रहने का उपाय बताना तो उनका दैनिक कार्यक्रम है।

ईश्वर उनको शतम जीवी करें जबतक इस ससार मे रहे स्वस्थ रहे जिससे दूसरो को भी प्रेरणा मिले। □

अस्सी में साठा और साठा में ?

□ □

डा० वी० एन० पाण्डेय

हमारे देश मे बहुत से दीर्घायु के व्यक्ति ग्रामो व नगरो मे जीवन यापन करते है। पर जो इक्यासी वर्ष के व्यक्ति काम करते हुए नाना विषयो मे रुचि रखते हैं ऐसे ही एक व्यक्ति, धार्मिक एव सामाजिक कार्यकर्त्ता, जो अनेक सार्वजनिक सस्थाओ से सम्बन्धित है—चिर परिचित, उदार चरित्र, शान्त और गम्भीर रस से परिपूर्ण श्री धर्मचन्द सरावगी की उदात्त भावनाओ से प्रभावित होकर मैं उनसे आकृष्ट हो जाता हूँ।

प्राकृतिक चिकित्सा जगत मे प्रायः हर व्यक्ति आपसे परिचित है एव प्रेरणा पाकर अपने को धन्य समझता है। इक्यासी वर्ष मे भी पूर्ण स्वस्थ है। आजतक दैनिक व्यायाम एव प्राकृतिक चिकित्सा आदि मे पूर्ण सहयोग दे रहे हैं। शरीर मे अखण्ड शक्ति, मन मे अखण्ड आनन्द एवं इन्द्रियो मे अखण्ड बल, ओज आदि को धारण किए हुए बच्चो के साथ बच्चे, एव तरुणो के साथ तरुण, वृद्धो के साथ वृद्ध बिना भेद-भाव के मधुर मुस्कान के साथ सबका अभिनन्दन करते है। कुछ लोग तो आप से मिलकर आशीर्वाद और प्रेरणा ही पाकर आनन्द विभोर हो जाते है। ज्ञान गर्भित और मेधा शक्ति वाले पूजनीय सरावगीजी प्राकृतिक चिकित्सा के शब्दकोष या ज्ञान के खजाना है। इन्होने

प्राकृतिक चिकित्सा पथ्याहार एव योगासन पर अपनी दैनिक जीवन रूपी प्रयोगशाला मे प्रयोग कर इस चिकित्सा को उपकृत किया है। इनके द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा सत्यं शिव सुन्दरम् बनकर भारतवर्ष में बट-वृक्ष के समान विकास की ओर अग्रसर है। प्रथम प्राकृतिक चिकित्सा का दर्शन एव मा० रि० सोसाइटी मे महात्मा गाँधी की प्रेरणा से बहिर्भाग का उद्घाटन हुआ। क्रमशः स्त्री प्राकृतिक चिकित्सा विभाग, इण्डोर चिकित्सा विभाग १९५७ मे आपके प्रयत्नो से प्रारम्भ हुआ एव पूर्ण सफलता के साथ १९८३ तक चला।

श्री धर्मचन्द सरावगी १९३४ मे मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के रसायनशाला के मत्री चुने गए। १९४५ मे मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के प्रधानमत्री चुने गए एव १९४७ में प्राकृतिक चिकित्सा के विशेष ज्ञान के लिए सपत्नीक विश्व भ्रमण किया। १९५६ मे अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा का प्रथम अधिवेशन कलकत्ता नगरी मे आयोजित किया जिसमे भारतवर्ष के कोने-कोने से प्राकृतिक चिकित्सको ने योगदान दिया एव सम्मेलन पूर्ण रूप से सफलीभूत हुआ।

फलस्वरूप आपने निर्विरोध प्राकृतिक चिकित्सा के महामत्री के रूप मे इस पद को सुशोभित किया।

१९५८ मे आप १५ वी विश्व शाकाहारी काग्रेस कलकत्ता के प्रधान मत्री चुने गए। इस काग्रेस में देश-विदेश के अनेक लोग उपस्थित थे। उस समय दस दिनो का उपवास करने के बाद भी शाकाहार पर सारगर्भित भाषण देकर आपने शाकाहार एव प्राकृतिक जीवन पद्धति की उपादेयता बताई। शाकाहारी भोजन, फल, दूध, सलाद, सब्जियां ही मनुष्य के दैनिक भोजन है। सन् १९६० ई० मे सपत्नीक एव अपने पिताजी के साथ रूस यात्रा पर गए। बाद मे आप बगाल फ्लाइ ग क्लब के कोषाध्यक्ष चुने गए एव उस पद को सुशोभित किया।

१९६२ ई० मे गो सम्वर्द्धन समिति के सदस्य चुने गए। बाद मे समिति मे राजनीति के समावेश से मन खिन्न हो गया।

१९६३ ई० में आपने जैन उद्यान को प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय के लिए प्रकृति निकेतन ट्रस्ट को दान स्वरूप देकर अपनी उदारता एव प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति अगाध प्रेम का परिचय दिया। इसी साल इन्होंने श्री मोरारजी

देसाई के करकमलो द्वारा कोणशिला की स्थापना करवाई। दूसरी वार जव विश्व भ्रमण के लिए विदेश गए तो प्राकृतिक चिकित्सा के ज्ञान की तलाश के लिए अनेक देशो का भ्रमण किया एव गहरे सागर मे प्रवेश कर मोती रूपी ज्ञान प्राप्त किया। श्री सरावगीजी प्राकृतिक चिकित्सा के रेडीरेकनर है। उन्होने करीव २५ पुस्तको की रचना करके प्राकृतिक जगत मे चिकित्सा एव पथ्य तथा सुलभ चिकित्सा से रोगो का निवारण करने का सहज तरीका वताया। यह हिन्दी साहित्य एव चिकित्सा क्षेत्र मे अमूल्य योगदान है। आज का मानव गठिया, वात रोगो, दमा, रक्तचाप इत्यादि रोगो से ग्रसित है। लोग इन कष्टदायक पुरानी वीमारियो से छुटकारा पाने की सुलभ विधि पुस्तको को पढकर स्वयमेव चिकित्सा कर सकते है इसका विश्वास जगाया। विश्व प्रसिद्ध डा० सेल्टन की पुस्तक "फास्टिग कैन सेभ योर लाइफ" का हिन्दी रूपान्तर "उपवास से जीवन रक्षा" का प्रकाशन कराया। इनकी लिखी हुई पुस्तकें अमूल्य निधि है। जनता की माग पर इनके अनेको सस्करण निकल चुके है। छोटे-छोटे रोगो पर २५ पन्नो की पुस्तिकाएँ लिखकर देश को उपकृत किया। लोगो को जलना, सर्दी, वुखार, खाँसी, जुकाम, दर्द, फोडे-फुसी को छोटे-छोटे प्रयोगो से दूर करने के लिए सावारण उपचार से घर वैठे चिकित्सा करना सिखाया।

१९६६ ई० मे आप पश्चिम वगाल विधान सभा के सदस्य चुने गए। १९६६ ई० मे श्री दिगम्वर जैन भवन के ट्रस्टी चुने गए। प्राकृतिक चिकित्सा के साथ लोगो को कुटीर उद्योगो, अध्यात्म व धर्म के सगम की त्रिवेणी मे स्नान करना सिखाया। शुद्ध मधु और पुस्तको के विक्री केन्द्र प्रारम्भ कर इसकी उपयोगिता वढाई। 'हेल्थ फूड स्टोर' विक्री केन्द्र की तीव्र इच्छा रखनेवाले सरावगीजी का दैनन्दिन भोजन देखकर आप लोग आश्चर्य चकित हो जाएँगे। आप प्रत्येक दिन का पथ्य डायरी मे लिखकर दूसरो को प्रेरणा देते रहते है। उपवास, फलाहार, दूध, दाल चावल, चोकरदार आटे की रोटी, सब्जी, सलाद, मधु का आहार प्रतिदिन इनके भोजन मे समाविष्ट है।

१९७२ मे छठी वार विदेश यात्रा पर गये तो वाद मे चित्रकला सीखना आरम्भ किया। सीखना उनका ध्येय है। दत्तात्रेय भगवान की तरह प्रत्येक साल किसी को गुरु वनाकर विभिन्न विपयो को जैसे, तैरना, हवाई जहाज चलाना

घुड़सवारी, छाती पर पत्थर रखकर तुड़वाना, चित्रकारी सीखना प्रारम्भ किया १९८५ मे ८० वर्ष की आयु मे लाठी चलाना सीखना शुरू किया है। यह उनकी जीवन संगिनी बन गई है।

१९७८ ईस्वी मे नेशनल फिजिकल एफिसियेंसी टेस्ट के ४५ वर्षीय वर्ग मे थ्री स्टार विजेता चुने गए। १९८४ मे नेचरक्योर एण्ड योगा रिसर्च इन्स्टीच्यूट के सभापति चुने गए।

जिन्दगी मे वक्त की वेजाँ रवानी है,
अगर जिन्दादिली है तो हर समय जवानी है।

उपरोक्त दोनो पक्तिया इस मनीषी पर पूर्णरूप से चरितार्थ होती हैं। अस्सी मे पाठा, मांसल पुष्ट वदन एव मासपेशिया, गौर एव उन्नत ललाट, चौडे वक्षस्थल देखकर सिर झुकाकर शत् शत् प्रणाम के आप अधिकारी हैं। इन्हे आशीर्वाद देने की धृष्टता तो नही कर सकता, सम्मान कर सकता हूँ यह कह कर नमामि हे उदीयमान, कान्तिमान, पुरुषसिह ! □

प्राकृतिक चिकित्सा के भीष्मपितामह

□ □

विट्ठलदास मोदी

श्री धर्मचन्द सरावगी से मेरा पहला परिचय उनके घर पर ही कलकत्ते मे हुआ था। वात सन् १९४३ की है। उस समय उनकी पहली पत्नी सग्रहणी से पीडित थी। उन्होने मुझसे ही नही अनेक प्राकृतिक चिकित्सको से अपनी पत्नी की चिकित्मा कराई। पुरानी सग्रहणी ने उनके शरीर को जर्जर कर दिया था। अत. वे बच न सकी पर उनकी वीमारी की वजह से धर्मचन्दजी अनेक प्राकृतिक चिकित्सको के परिचय मे आये। प्राकृतिक चिकित्सा को इन्हे समझने का मौका मिला और प्राकृतिक चिकित्सा इन्हे भा गई। सन् १९४२ का दिन और आज का दिन भी धर्मचन्दजी प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार और उत्थान मे अपने दृढ निश्चय के माथ अटूट भाव से लगे हुए है।

इनके चिंतन ने इन्हे पहली वात यह वताई कि यदि प्राकृतिक चिकित्सा को प्रस्थापित करना है तो इसका मगठन वनाना चाहिए। एतदर्थ इन्होने १९५६ मे

भारत के कोने-कोने से ज्ञात और अज्ञात प्राकृतिक चिकित्सकों को निमन्त्रित कर और आने-जाने का रेल किराया अपनी जेब से भेजकर कलकत्ते बुलाया और "अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद" की स्थापना की। इनके उत्साह को देखकर सबने सर्वसम्मति से इन्हे ही परिषद् का महामन्त्री चुना। अब प्रति वर्ष कही न कही परिषद् का वार्षिक सम्मेलन होने लगा। इस सम्मेलन मे प्राकृतिक चिकित्सक तो शामिल होते ही हैं हजारो की सख्या मे प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेमी और प्राकृतिक चिकित्सा से लाभान्वित व्यक्ति भी भाग लेने लगे।

प्राकृतिक चिकित्सा को अखिल भारतीय रूप मिले और सरकार तक आसानी से पहुचा जा सके इसके लिए हमेशा धर्मचन्दजी ने इसके सभापतित्व के लिए किसी न किसी प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेमी राजनेता की सेवाएँ प्राप्त की। इस क्रम में बालकोवा भावे, ढेबर भाई, मुरारजी भाई देसाई, कमलनयन बजाज, श्रीमन्नारायण, प्रो० सिद्धेश्वरजी और बहन विमला देश पाण्डे आते है। प्राकृतिक चिकित्सा को इन वर्षों मे इनकी सेवा और प्रयत्न के बावजूद जो स्थान मिलना चाहिए था वह नही मिला पर इतना तो है ही कि भारत की जनता के कान में प्राकृतिक चिकित्सा का नाम पडा, वह जान गई कि चिकित्सा की एक पद्धति प्राकृतिक चिकित्सा भी है और वह प्रभावशाली है।

कलकत्ते के निवासियो को प्राकृतिक चिकित्सा का लाभ देने के लिए धर्मचन्दजी ने मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के अस्पताल मे—जहा एलोपेथी, होम्यो पेथी, आयुर्वेद द्वारा चिकित्सा होती है—प्राकृतिक चिकित्सा का एक बहिरग चिकित्सालय खुलवाया और उसके चिकित्सक के तौर पर डा० कुलरंजन मुखर्जी की सेवाएँ प्राप्त की। फिर अपने मित्रो से एक बडी रकम एकत्रित कर सोसाइटी मे प्राकृतिक चिकित्सा का अन्तरग विभाग भी खुलवाया जिसका उद्घाटन स्वर्गीय घनश्यामदासजी बिडला से करवाया गया था।

पर धर्मचन्दजी के मन मे तो प्राकृतिक चिकित्सा को एलोपैथी के समकक्ष प्रस्थापित करने की थी। वे बार-बार परिषद मे प्राकृतिक चिकित्सा के प्रशिक्षण की बात चलाते और उसका पाठ्यक्रम बनवाते। प्रशिक्षण काल के सम्बन्ध मे तरह-तरह की राय मिलती। कोई एक वर्ष बताता कोई दो वर्ष पर धर्मचन्दजी हमेशा प्रशिक्षण चार वर्ष का हो इस पर जोर देते। चार वर्ष का कोर्स भी

इन्होने अपने प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेमी डाक्टरो से वनवा लिया था। सन् १९५७ मे आरोग्य मन्दिर मे जव परिपद् की कार्यकारिणी की वैठक हुई तो धर्मचन्दजी चाहते थे कि कोर्स चार वर्ष का हो उनकी यह राय मान ली जाय। पर कोई भी मानने को तैयार नही था। मैंने सवको समझाया कि यारो धर्मचन्दजी की वात मान लो। वात मान ली गई। धर्मचन्दजी की प्रसन्नता का पारावार नही था। वे उस चार वर्ष के कोर्स के सेलिवस को सिर पर यो रखकर कलकत्ते ले गए जैसे कोई गीता को सर पर रखकर ले जाता है।

प्रशिक्षणालय हो तो चिकित्सालय भी होना चाहिए। अन्यथा विद्यार्थी पढ़ेंगे क्या, देखेंगे क्या! अत. इन्होने प्राकृतिक चिकित्सालय और प्रशिक्षणालय की साथ-साथ योजना वनाई। कलकत्ते से २० किलोमीटर दूर अपनी कई एकड़ जमीन पर वना वगीचा और कई लाख रुपये दान मे दिए। आठ लाख रुपये कलकत्ते के दानियो से इकट्ठे किए, चार लाख केन्द्रीय सरकार से प्राप्त किए और चिकित्सालय तथा शिक्षालय वना। शिक्षालय के प्राचार्य लखनऊ के सरदार जसवत सिह नियुक्त हुए।

चिकित्सालय भी चला और प्रशिक्षणालय भी। पर कई कारणो से प्रशिक्षणालय को दो वर्ष मे ही वन्द करना पडा। शिक्षालय वन्द तो हुआ पर मरा नही। उसी के आधार और वुनियाद पर डा० वेंकटराव ने हैदरावाद मे गाँधी नेचरक्योर कालेज, उसी चार वर्ष के कोस को लेकर प्रस्थापित किया जो उस्मानिया युनिवर्सिटी से आज सम्वद्ध है और सफलतापूर्वक चल रहा है। चिकित्सालय तीन-चार वर्ष किसी तरह और चला और फिर वन्द हो गया।

प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार के लिए धर्मचन्दजी ने परिपद से 'स्वस्थ जीवन' प्रकाशित कराया जो आज भी चल रहा है। इसके प्रकाशन मे धर्मचन्दजी को जो श्रम करना पडा वह मै जानता हू। सम्पादक प्राप्त करने की हमेशा कठिनाई रही फिर भी जो भी सम्पादक मिला उसे स्वयं निर्देशन देकर पत्र के अनुरूप सामग्री जुटवाते और पत्र मे एक पृष्ठ प्रतिमास स्वय लिखते। इस एक पृष्ठ का मैटर कभी गम्भीर नही रहा।

धर्मचन्दजी इसमें व्यंग्य या चुटकुलों द्वारा लोगो के स्वास्थ्य सम्बन्धी अज्ञान पर चोट करते और सही दृष्टिकोण देते।

प्राकृतिक चिकित्सा के साहित्य की आपूर्ति के लिए भी धर्मचन्दजी हमेशा सजग रहे। "स्वस्थ जीवन" के कई बड़े-बडे विशेषाक निकलवाये, कइयो को प्रेरित कर अनेक पुस्तकें लिखवाई और जैसे भी बना स्वय पच्चीस छोटी-बडी किताबे लिखी। इन पुस्तको को प्राकृतिक चिकित्सा के पाठकों द्वारा हमेशा आदर मिला। ये पुस्तके प्राकृतिक चिकित्सा और योग के बारे में सीधे सरल शब्दो मे और शैली मे अपनी बात पाठक तक पहुचाने मे सर्वथा समर्थ है।

चिकित्सालय दस वर्ष तक बद रहा। बार-बार सरकार से आग्रह किया गया कि वह चिकित्सालय को लेकर स्वयं चलावें पर सरकार लेने को तैयार नही हुई। इसी बीच बगलोर के श्री सीतारामजी जिंदल ने सन् १९८० मे बगलोर मे अपने ट्रस्ट के मार्फत एक भव्य प्राकृतिक चिकित्सालय बनवाया। उसमें उन्होने उच्चवर्ग के लोगो के लिए सारी सुख-सुविधाएँ जुटाई। श्री जिंदल की यह समझ कि इस वर्ग को भी प्राकृतिक चिकित्सा की जरूरत है, काम आई और बगलोर का प्राकृनिक चिकित्सालय चल निकला।

बगलोर के चिकित्सालय को श्री बिमलप्रसादजी जैन ने देखा तो इनकी समझ मे आ गया कि ऐसे ही प्राकृतिक चिकित्सालय की कलकत्ते को भी जरूरत है। वे धर्मचन्दजी से मिले। फिर क्या था पुराने प्राकृतिक चिकित्सालय की मरम्मत की योजना बनाई, फिर श्री आनन्दीलालजी गोयनका मिल गये। तीस लाख रुपया इकट्ठा किया और चिकित्सालय का पुनर्निर्माण कराया। चारो तरफ सफाई कराई कि मच्छरो का प्रकोप न हो। श्री आनन्दीलालजी को अपने मन का काम मिला। वे और उनकी पत्नी इसी चिकित्सालय के रख-रखाव और देख-भाल मे लगे रहते है आज भी।

मैं पिछले साल १७ अक्टूबर से २७ अक्टूबर तक के दस दिन के पूज्य श्रीसत्यनारायणजी गोयनका द्वारा कलकत्ते मे सचालित विपश्यना ध्यान शिविर मे सम्मिलित होने गया था। २७ अक्टूबर को प्रातः दस बजे जब शिविर का समापन हुआ तो मैंने पहला काम यह किया कि सीधे प्राकृतिक चिकित्सालय

पहुंचा। वीच मे वड़ा-सा स्वच्छ तालाव, चारो ओर रोगियो के आवास और चिकित्सागृह, फूल-पत्तियो से लदा हरियाली से भरपूर वाग देखकर तवियत खुश हो गई। वहाँ इसके चिकित्सक मेरे पुराने मित्र डा० भरत नारायण पाण्डेय और उनके सहयोगियो से मिला। सवसे मिलकर वड़ी प्रसन्नता हुई। इत्तिफाक से वहाँ धर्मचन्दजी और उनकी पत्नी मिल गई। ये लोग हर शनिवार की सध्या को चिकित्सालय आ जाते है और वहाँ अपना स्वप्न साकार देखकर प्रसन्न मुद्रा मे सोमवार को सुवह कलकत्ते लौट जाते है। धर्मचन्दजी और उनकी पत्नी से खूव वातें हुई।

यह देखकर वड़ा सतोष हुआ कि धर्मचन्दजी का प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति उत्साह कम नही हुआ है। धर्मचन्दजी ने मुझे चिकित्सालय के उद्घाटन का वीडियो कैसेट दिखलाया। इसका उद्घाटन श्री लक्ष्मीनिवासजी विडला ने २०-१-८४ को किया था। देखकर लगा कि समारोह निश्चितरूप से वड़ा भव्य रहा होगा। दुख भी हुआ कि मैं समारोह मे उपस्थित न हो सका। अनेक वक्तृता और आशीर्वचनो के वाद चित्रपट पर एक आकर्षक युवक आया। लम्वा सफेद कुर्त्ता, जवाहर कट जैकेट, सफेद धोती, पैरो मे चप्पल। वह मुझे वडा स्वस्थ लगा। मैंने धर्मचन्दजी से पूछा "यह युवक कौन है?" धर्मचन्दजी मुस्कराकर वोले "आपके वगल में ही तो वैठा है।" मैं चौका और मेरे हृदय से निकला कि प्राकृतिक चिकित्सा का यह भीष्मपितामह इसी तरह हमेशा जवान बना रहे और प्राकृतिक चिकित्सा के उन्नयन के लिए प्रयत्नशील रहे। □

सहस्र धारा के प्रतीक-पुरुष

□ □

डा० हीरालाल

प्राकृतिक छटा के बीच शीतल वातावरण, राँची मे सन् १९०५ ई० मे श्री सरावगीजी का जन्म हुआ।

भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा जगत मे श्री धर्मचन्द सरावगी सप्तरश्मि से सुशोभित इन्द्रधनुष है। इन्द्रधनुष का दृष्टिगोचर होना ही होने वाले आनन्द वर्षा का प्रतीक है। कहावत है साझे धनुष सकारे पानी। श्री धर्मचन्दजी का नाम आते ही स्वास्थ्य-वर्षा की प्रतीक्षा करना स्वाभाविक है। फिर तो वह वर्षा सहस्र धारा के रूप मे प्रस्फुटित होती है।

यो तो श्री धर्मचन्द सरावगीजी का नाम प्राकृतिक चिकित्सा जगत मे सन्-१९४४ ई० से ही सुनता था पर साक्षात्कार तो मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, कलकत्ता मे प्राकृतिक चिकित्सा विभाग खोलने के लिये हुई बैठक मे प्रथम वार १९४६ मे मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी मे हुआ। प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र मे

कर्मवीर योगी स्व० श्री महावीर प्रसाद पोद्दार एवं डा० कुलरजन मुखर्जी आदि अनेक प्राकृतिक चिकित्सा के प्रेमी व भक्त उपस्थित थे। उस समय गौरवर्ण श्री सरावगीजी खादी की कुर्त्ता-धोती में पधारे। चेहरे पर मधुर मुस्कान, आँखो मे प्रेम ज्योति एवं चाल मे अनुशासनयुक्त सन्तुलन था। आये हुए लोगो का उन्होने स्वागत करते हुए आभार प्रदर्शित किया।

अनेक तथ्यो एव गाँधीजी की सामयिक मांग सामने रखते हुए प्राकृतिक चिकित्सा विभाग खोलने पर गम्भीर एव दिल खोलकर पक्ष-विपक्ष पर चर्चा हुई और प्राकृतिक चिकित्सालय खोलने का निर्णय हुआ। धन के नाम पर लोग, आये हुए दिग्गज धनी-मानी वगलें झाकने लगे और प्रश्न आया कि म्याऊँ का ठोर कौन पकड़े। अधिकांश लोगो मे धन लगाने के नाम पर उदासीनता देखकर उस चालीस वर्षीय नौजवान श्री धर्मचन्दजी ने मुस्कराते हुए अभिमान शून्य मधुर स्वर मे कहा कि यह भार मेरे कन्धे आसानी से सह सकते है। सवने इस घोषणा का हार्दिक स्वागत कर उन्हे वधाई से लाद दिया।

डा० कुलरजन मुखर्जी ने चिकित्सक का भार अपने सवल कन्धो पर लिया और केवल दो सौ रुपया मासिक की श्री धर्मचन्दजी की सहायता स्वीकार की। फिर तो दोनों त्यागियो के त्याग के चक्के ने प्राकृतिक चिकित्सा के रथ को सफलतापूर्वक खीचना शुरू किया।

प्राकृतिक चिकित्सा का कार्य दिन दूना रात चौगुना वढने लगा और अल्प काल मे ही प्रौढ़ नजर आने लगा। उसकी शोहरत शहर के कोने-कोने मे फैल गई। मरीज वढ़े तो स्टाफ की सख्या वढानी पडी। सफलता को देखकर धनी-मानी लोग दिल खोलकर सहायता करने लगे। जिस प्रकार जवाहरलालजी ने अपने पिता श्री मोतीलालजी को काग्रेस मे आने के लिये विवश किया ठीक उसी प्रकार श्री धर्मचन्दजी ने अपने माता पिता को प्राकृतिक चिकित्सा की ओर आकर्पित किया। फिर तो नित्य केवल श्री धर्मचन्द ही नही वलिक उनके माता-पिता भी झोले मे फल-सब्जी भरकर ले जाते और मरीजो मे अहकार से नही, वड़े प्रेम से वाँटते और जो उनकी भेंट स्वीकार करते वे उनका उपकार मानते कि उन्होने उन्हे सेवा का अवसर दिया। इस प्रकार उनकी माता श्रीमती जानकी देवी और पिता वैजनाथजी सरावगी तन-मन एव धन से रोगियो की

सेवा कर कृतकृत्य होते और अपने लायक बेटे को जीवेम शरद शतम् का आशीर्वाद देते। और आज उन्ही के आशीर्वाद का ही फल है कि श्री धर्मचन्दजी हर प्रकार से सम्पन्न होकर समाज की सेवा करते हुए प्रत्येक सामाजिक, धार्मिक एवं सात्विक राजनीति में अग्रसर है।

भारत मे श्री धर्मचन्दजी प्रथम व्यक्ति थे जिन्होने कि प्राकृतिक चिकित्सा के अध्ययन के लिये विद्यार्थियो, जैसे श्री गुलाबचन्दजी जैन एवं श्री बाबूलालजी जैन आदि को स्कालरशिप देकर चिकित्सालयो मे अध्ययन के लिये भेजा।

वह अपने स्वास्थ्य के लिये तो सदैव जागरूक थे ही और उनके अंतःपटल पर अकित था "नत्वह् कामये राज्य न स्वर्ग न पुनर्भवम्। कामये दुःख तप्ताना प्राणीनामार्त नाशनम्।" और इसी के अनुसार उनका चिंतन-मनन एव कार्य निरन्तर चलता रहा।

वे प्राकृतिक चिकित्सा को केवल कलकत्ता एवं कुछ धनीमानियो तक ही सीमित नही रखना चाहते थे। अतः उन्होने कुछ मित्रो, श्री राधाकृष्णजी नेवटिया एव श्री बिहारी भाई शाह के सहयोग से बिनोवाजी के अनुज कर्मयोगी श्री बालकोवाजी की अध्यक्षता मे अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद की नीव की १९५६ ई० मे कलकता मे देश के कोने-कोने से आये प्रतिनिधियोके बीच धूम-धाम से स्थापना की और लोगो के विशेष आग्रह पर स्वय महामत्री का भार ग्रहण किया। और इस सस्था के अध्यक्ष क्रमश श्री ढेवर भाई, श्री मोरारजी भाई एव श्री श्रीमन्नारायणजी आदि हुए और वर्तमान अध्यक्ष प्रो० सिद्धेश्वर प्रसाद, ऊर्जा मत्री, बिहार है।

हनुमान की भाति राम काज कीन्हे बिना मोहि कहां बिश्राम' के अनुसार श्री सरावगीजी गाँधीजो के काम को आगे बढाने के, प्रचार-प्रसार एव उत्थान के लिये सतत प्रयत्नशील रहे और उन्होने १९५७ मे 'स्वस्थ जीवन' को जन्म दिया और श्री राधाकृष्ण जी नेवटिया प्रधान सम्पादक एव स्वय प्रबन्ध सम्पादक का भार सभालकर प्राकृतिक चिकित्सा के वैज्ञानिक विकास मे चार चाँद लगा दिये।

ज्यो-ज्यो श्री सरावगीजी एव जनता का रस प्राकृतिक चिकित्सा मे बढता गया उनका उत्साह दिन दूना रात चौगुना होने लगा। उन्होने फलस्वरूप १९६३

मे प्रकृति निकेतन ट्रस्ट के अन्तर्गत भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा विद्यापीठ की तत्कालीन उप प्रधान मत्री श्री मोरारजी भाई देसाई से पवित्र धरती, जिसे श्री सरावगी जी ने दान दिया पर, नीव डलवायी और उसके प्रथम प्रिंसिपल वहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न वयोवृद्ध डॉ० एस० जे० सिंह हुए और कई वैच निकाले जो देश के कोने-कोने मे चिकित्सालयो का सचालन कर रहे हैं। विद्यापीठ के साथ ही खेमका प्राकृतिक चिकित्सालय की भी स्थापना कर इन्होने चोली दामन के सिद्धात को चरितार्थ किया।

इतने पर भी विश्राम कहाँ। उस प्रकृति निकेतन ट्रस्ट के अन्तर्गत चलने वाले प्राकृतिक चिकित्सा एव योग अनुसधान सस्थान (नेचर क्योर एण्ड योगा रिसर्च ईन्स्टीच्यूट) का श्री आनन्दीलालजी गोयनका के सचालन मे आधुनिकीकरण किया गया। आज तो यह चिकित्सालय हर प्रकार की भौतिक-सुख-सुविधाओ से सम्पन्न है। श्री गगाप्रसाद विडला के अनुदान से वहां महिलाओ के लिए विशाल चिकित्सालय की नीव पड़ गई है जो शीघ्र वनकर तैयार हो जायेगी।

मैं ज्यो-ज्यो श्री सरावगीजी के निकट आता गया उनके चतुर्मुखी गुणो से आकर्पित होकर उनके प्रति मेरी श्रद्धा उत्तरोत्तर वढती गई और गागर मे सागर का मुझे दर्शन हुआ जिन मे से कुछ का ही नमूने के तौर पर यहाँ मैं वर्णन करने जा रहा हूँ। अभी तक तो आपके समक्ष उनके प्राकृतिक चिकित्सा सम्वन्धी गुणो का ही सिंहावलोकन किया गया। आइये अव आपको और नजारो का दर्शन कराया जाय।

स्वावलम्वन लखपति पिता की एकमात्र सतान होते हुए भी अखवार वेचकर, नौकरी कर-कर धन सग्रह करके यूरप की सैर पर निकले। फिर तो पिताजी का दु.खी होना स्वाभाविक था।

होनहार विरवान के होत चीकने पात : कहावत को अपने जीवन मे चरितार्थ किया। १६ वर्ष की आयु मे ही कुशाग्रवुद्धि वालक कुशल मोटर चालक वन गया। इतना ही नही १९३० ई० मे वायुयानचालक भी वने और १९६१ मे वगाल फ्लाइग क्लव के कोपाध्यक्ष भी चुने गये।

जैसी चाह वैसी राह : वास्तव मे मनुष्य जो वनना चाहे वन सकता है। इसके प्रमाण श्री सरावगी जी हैं। स्कूल एव कालेज मे गये विना ही

विद्याव्यसनी, वीणावादिनी सरस्वती के उपासक श्री सरावगीजी ने केवल अंग्रेजी, हिन्दी, गुजराती, बगला एव महाजनी का अक्षर ज्ञान ही नही प्राप्त किया बल्कि उच्चकोटि के लेखक बन बीसो पुस्तको का सुन्दर सृजन एव पत्र-पत्रिकाओ में अग्रेजी, हिन्दी मे लेख लिखकर मानव का कल्याण किया।

अहिंसक राजनीतिज्ञ : सात्विक रूप से राजनीति मे भाग लेते रहे और स्वतन्त्रता की लडाई मे तन, मन एव धन से सहयोग करते रहे पर सब कुछ निष्काम भाव से। आजादी के बाद १९५२ मे कलकत्ता कारपोरेशन के निर्विरोध कौंसिलर चुने गए, १९४६ मे राज्य सभा के सदस्य चुने गए और १९६६ मे पश्चिम बगाल विधान सभा के सदस्य चुने गए।

विद्यार्थी जीवन : जीवन भर नई बात के जानने और सीखने की प्रवृत्ति ही उन्हे निरन्तर आगे बढाती रही। सन १९४१ मे घुडसवारी की शिक्षा ली। १९७५ मे चित्रकला के विद्यार्थी बने और १९८५ मे लाठी चलाने की कला सीखना आरम्भ किया। जब कभी कोई नई चीज उनके सामने आती है वे उसे सीखने का प्रयास करते है।

समाजसेवा समाज सेवा की लगन तो बचपन से ही थी और जो समय-समय पर प्रस्फुटित हुई। प्रत्यक्ष रूप से तो १९३४ ई० मे बिहार के भूकम्प पीडितो की सेवा के लिए वहाँ जाकर तन मन एव धन से केवल स्वय ही नही बल्कि अपने इष्ट मित्रो एव अन्य उदार व्यक्तियो को भी सेवा के लिये प्रेरित किया।

मारवाडी रिलीफ सोसाइटी की रसायनशाला विभाग के १९३७ मे मत्री पद का उत्तरदायित्व सभाल कर कार्य को अधिकतम गतिशील किया। मारवाडी रिलीफ नामक पत्रिका निकाली और १९४५ मे मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के प्रधान मत्री का कार्य सभाल कर कार्य को प्रगति दी।

विश्व भ्रमण : २४ वर्ष की आयु मे सन् १९२९ मे विदेश भ्रमण के साथ ही मास्को भी गए। उस समय ब्रिटिश शासन था तथा मास्को यात्रा करना मना था। १९४७ मे सपत्नीक विश्व भ्रमण, १९६० मे पत्नी एव पिताजी के साथ रूस यात्रा पर गये।

स्वास्थ्य के दीवाने : स्वास्थ्योन्नति एव स्वास्थ्य प्रदर्शन देखना भी श्री धर्मचन्दजी की हाबी है। १९५३ मे इगलैण्ड मे होने वाली स्वास्थ्य काग्रेस

मे कलकत्ता कारपोरेशन के प्रतिनिधि के रूप मे भाग लिया। कालेज स्क्वायर स्वींमिग क्लब के १९५९ मे सभापति चुने गए, १९७६ मे ओलम्पिक देखने मॅंनेइल (कनाडा) गए। १९७८ मे नेशनल फिजिकल एफिसियेंसी टेस्ट के ४५ वर्षीय वर्ग मे थ्री स्टार विजेता हुए।

कई संस्थाओ के पदाधिकारी : पद से दूर रहने की इच्छा व्यक्त करने के वाद भी लोगों के आग्रह पर १९५८ मे १५वी विश्व शाकाहारी काग्रेस, कलकत्ता के महामन्त्री चुने गये। १९६२ मे गो सवर्द्धन कौंसिल के सदस्य चुने गए। १९६७ मे श्री दिगम्वर जैन भवन के ट्रस्टी चुने गए और १९८३ मे वड़ावाजार युवक सभा के सभापति हुए।

मारवाडी सम्मेलन, युगान्तर क्लव, कुमारसभा पुस्तकालय, वडावाजार युवक सभा, दिगम्वर जैन नवयुवक समिति, मर्चेन्ट्स चेम्वर आफ कामर्स आदि सस्थाओ के पदाधिकारी रहे।

पारिवारिक जीवन : पारिवारिक जीवन का तो कहना ही क्या—परस्पर प्रेम, स्नेह, आदर, सम्मान सँजोया। इस समय तो घर मे वयोवृद्ध होने के नाते पूर्ण अधिकार सहित सचालक है पर किसी पर भी दवाव नही वल्कि प्यार ही आधार है।

आपके माता-पिता तो साक्षात मानव के अवतार तो थे ही, प्रथम पत्नी की तुलना भारतीय सस्कृति की देवी से की जा सकती हैं और वर्तमान द्वितीय पत्नी श्रीमती मोतीदेवी सरावगी तो सर्वगुण सम्पन्न भारतीय नारी होकर सरावगीजी के प्राकृतिक चिकित्सा कार्यो मे सहयोग देती है और उसका अपने जीवन, घर-परिवार मे वच्चो पर उपयोग करती है जिससे परिवार मे वर्षो से एलोपैथिक चिकित्सक नही आते और न आपरेशन होते हैं।

सम्पूर्ण परिवार आदर्श परिवार है और यदि समाज मे ऐसे परिवार वन जाएं तो मानव मे प्रेम उत्तरोत्तर वढे। □

अनुपम अनुकरणीय

□ □

इन्द्रप्रसाद गुप्त 'सेवक'

कर्मयोगी श्री धर्मचन्द सरावगीजी एक साधारण सद्‌गृहस्थ, कुशल व्यवसायी तथा सफल समाज सेवक रहते हुए भी, अपने दीर्घ जीवन के ८१वे वर्ष मे भी पूर्ण स्वस्थ, सुखी और सन्तुष्ट है। क्योकि अभी तक प्रतिदिन नियमित रूप से व्यायाम तथा प्राकृतिक आहारोपचार का सेवन करते रहते हैं। उनके आदर्श जीवन से उसी प्रकार शिक्षा एव प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए, जिस प्रकार ९१ वर्षीय नवयुवक, भारतवर्ष के भूतपूर्व प्रधान मत्री, माननीय मोरारजी देसाई से करते है।

यह कहना अतिशयोक्ति नही कि "अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद" तथा उसके मासिक मुख-पत्र 'स्वस्थ जीवन" को अबतक जीवित रखने का सर्वाधिक श्रेय वास्तव मे अभिमान रहित गुप्त दानी श्री धर्मचन्द सरावगीजी को ही है, जिन्होने दिसम्बर १९६६ मे पूर्ण हुए ११ वर्षो तक दोनो के प्रधान

कार्यालयो को स्वय अपने निवास स्थान (जैन हाउस, ८/१, एस्प्लानेड ईस्ट, कलकत्ता ६९) मे रखकर, अपने ही बच्चो के समान दोनो को लालन-पालन और पोषण प्रदान किया। उनकी मत्रणा, योजना एवं कृपा से ही मैंने "स्वस्थ जीवन" मासिक पत्र का प्रकाशन जनवरी १९६७ से दिसम्बर ६८ तक केवल दो वर्षो तक वाराणसी से करने के बाद हार मानकर या असमर्थ होकर "गांधी स्मारक निधि" नई दिल्ली के हवाले किया था।

सन् १९५३ ई० की इगलैंड मे हुई स्वास्थ्य कांग्रेस मे कलकत्ता कारपोरेशन के प्रतिनिधि के रूप मे भाग लेने वाले, सन् १९५६ मे अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के प्रधान मत्री चुने जाने वाले, प्राकृतिक जीवन के धनी श्री धर्मचन्द सरावगीजी ने सन् १९६३ मे विष्णुपुर, डायमण्ड हार्बर रोड, कलकत्ता स्थित अपने विशाल उद्यान "जैन उद्यान" मे "प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय" की कोणशिला माननीय श्री मोरारजी देसाई से लगवाई, जो आज एक आदर्श प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र तथा "नेचर क्योर एण्ड योगा रिसर्च इनस्टीच्यूट" के सुन्दर स्वरूप से भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा जगत मे शोभायमान है।

प्राकृतिक चिकित्सा का और अधिक ज्ञानार्जन करने हेतु सन् १९६५ मे दूसरी बार विश्व भ्रमण पर जाने वाले और तन-मन-धन से प्राकृतिक चिकित्सा के लिए समर्पित जीवन बिताने वाले प्रकृति-प्रेमी श्री धर्मचन्द सरावगी सन् १९८२ मे, अपनी तत्कालीन ७८ वर्ष की अवस्था मे एक अनुकरणीय नवयुवक की भाति "बड़ाबाजार युवक सभा" के सभापति चुने गये, और आज ८१वें वर्ष मे भी नित्य व्यायामशाला जाकर युवको की प्रेरणा बने हुए है। □

सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी

□ □

चन्दनमल 'चांद'

प्रत्येक व्यक्ति मे कुछ न कुछ विशेषता होती है। कुछ व्यक्ति किसी एक क्षेत्र मे अपनी प्रतिभा दिखाते है, लेकिन कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जिनकी प्रतिभा किसी एक क्षेत्र मे ही विकसित होकर रुकी नही रहती बल्कि एक साथ अनेक क्षेत्रो मे अपना प्रभाव व्यक्त करती है। ऐसे सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी है श्री धर्मचन्दजी सरावगी।

जीवन के बाल्यकाल से लेकर आज तक उनका कार्य क्षेत्र देखे तो आश्चर्य होता है कि एक ही व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रो मे अपनी बहुमुखी प्रतिभा से किस प्रकार चमक सकता है। समाज सेवा, प्राकृतिक चिकित्सा, गो सम्वर्द्धन, राजनीति, समाज सुधार, लेखन आदि अनेक प्रकार की प्रवृत्तियो मे आपने अपनी प्रतिभा दिखाई। अनेक बार विश्व भ्रमण किया। और मारवाडी समाज मे आप पहले व्यक्ति हैं जो वायुयान चालक बने। विविध भाषाओ के ज्ञाता और विविध

विपयो के हिन्दी और अंग्रेजी में सशक्त लेखक श्री सरावगीजी पश्चिम वगाल विधानसभा और राज्यसभा के सदस्य भी चुने गये।

उम्र के आधार पर दूर बैठे भले ही कोई उन्हे वृद्ध समझ ले, किन्तु वे आज के युवको से अधिक सक्रिय और युवा है। नियमित व्यायाम, प्राकृतिक चिकित्सा मे पूर्ण निष्ठा और प्राकृतिक जीवन आपकी विशेषता है। श्री सरावगीजी का एक उल्लेखनीय गुण है दूसरो के गुणों के प्रति अनुराग। छोटे-बड़े किसी भी व्यक्ति की विशेपता उन्हे आकर्षित करती है और वे उसके सम्वन्ध मे अपने विचार भी व्यक्त करते हैं। "जैन जगत" मासिक के प्रथम पृष्ठ पर हमने नमस्कार महामत्र का व्लाक छापा तो आपका तुरन्त प्रशसा का पत्र मिल गया। इसी प्रकार समय-समय पर जव भी जो अच्छा लगा उसके लिए प्रोत्साहन दिया और दे रहे है। दूर बैठे पत्र व्यवहार से आत्मीयता जोड़ने वाले श्री सरावगीजी स्नेहसिक्त व्यक्तित्व के धनी है।

सयम, साधना और सौजन्य जीवन की लम्वाई ही नही वढाते वल्कि ऊँचाई भी वढाते है। कोई व्यक्ति कितना लम्वा जीवन जीता है उससे अधिक महत्व-पूर्ण यह है कि वह कैसे जीता है और किसके लिए जीता है।

श्री धर्मचन्दजी का जीवन केवल उनके अपने लिए नही वल्कि हम सवके लिए प्रेरणास्रोत है। युवापीढी को उनसे वहुत कुछ सीखना चाहिए। उनकी जीवन पद्धति, उनका व्यापक चितन, उनके व्यक्तित्व के आयाम हमे प्रेरणा देनेवाले हैं। भारत जैन महामण्डल और "जैन जगत" परिवार से वे अनेक वर्षों से जुडे हुए है और समय-समय पर उनका मार्गदर्शन एव सहयोग प्राप्त होता रहता है। मैं व्यक्तिगत एव भारत जैन महामडल की ओर से उनके इसी प्रकार स्वस्थ एव सेवामय दीर्घायुष्य की कामना करता हूं। □

शतायु हों

□ □

डा० प्रभाकर माचवे

श्री धर्मचन्दजी सरावगी मेरे श्वसुर श्री यशवन्त महादेव पारनेरकर के अभिन्न मित्र है। पारनेरकर जी कलकत्ता जाते तो सतीशचन्द्र दासगुप्त के यहाँ ठहरते या धर्मचन्दजी के यहा। गो-सेवा सघ गाधीजी की एक रचनात्मक प्रवृत्ति थी, जिससे दोनो जुडे हुए थे। प्राकृतिक चिकित्सा मे भी दोनो का विश्वास था।

श्री धर्मचन्दजी सरावगी कई बार नई दिल्ली मे हमारे यार्क होटल के ऊपर के निवास मे और रवीन्द्रनगर मे भी, हमारे श्वसुर के साथ, अतिथि बनकर आते रहते थे। वे सिद्धान्त के पक्के व्यक्ति हैं। नियमित् योगाभ्यास-व्यायाम करने वाले व्यक्ति हैं। इसीलिए आयु का उनपर कोई असर नही हुआ। प्रौढ होकर भी वे नवयुवक की तरह सदा सक्रिय और प्रफुल्लित रहते है।

एक बार मैंने उनका एक लेख "धर्मयुग" मे छपा पढा था—उसे भी पन्द्रह-बीस साल हो गये, कि वे पहलवान गामा को हवाई जहाज मे उडाकर ले गये थे।

कौन-सा वह वाहन है जो वे चला नही सकते। अद्भुत जीवट और क्षमता है उनमे, काल की गति के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने मे उनका सानी नही।

कलकत्ता मे एक दिन मुझे और मेरी पत्नी को उन्होने भोजन के लिए बुलाया। उनके घर मे प्रतिदिन एक-एक प्रांत का विशेष शाकाहारी भोजन बनता है। एक दिन दक्षिण भारतीय, एक दिन गुजराती, एक दिन पजाबी, एक दिन मराठी आदि। उनके घर मे स्त्री-जन ऐसे विविध व्यजन बनाने मे दक्ष हैं। यह राष्ट्रीय एकात्मता का एक नया आयाम है। भोजन की विविध पद्धतियाँ हमे घर-घर में सीखनी चाहिए। उनका स्वागत करना चाहिए। भारत विविध-विधाओ की पाक-कला की विभिन्न छटाओ का देश है। हम क्यो आग्रह करें कि सब लोग एक जैसा ही खायें। धर्मचन्दजी विश्व-शाकाहारी सम्मेलन के सदस्य है—रूक्मिणी अरुडेल की तरह। शाकाहारी भोजन मे भी कितनी-कितनी स्वाद-छटाएँ है।

धर्मचन्दजी अद्भुत समाजसेवी है। चुपचाप, मौन, सेवाभावी। यशेपणा से दूर। मैंने कलकत्ता में एक पुरानी पीढी की प्रशसा सुनी है और उनमे से कइयो को देखा है . सीताराम सेकसरिया, भागीरथ कानोडिया, प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, विजयसिंह नाहर आदि-आदि दानवीर, गाँधी युग के लोग—जो सब काम समाज-देवता के चरणो मे करते है, करते थे—"इद न मम्" के भाव से। धर्मचन्दजी उसी कडी के एक सशक्त पुरुष है। वे जो कुछ करते है औरो के लिए करते हैं। अब ऐसे लोग कम होते जा रहे है।

इसी का एक उत्तम नमूना है उनका उद्यान प्रेम। अपने मकान की पाचवी मजिल पर धर्मचन्दजी ने कितने कितने वृक्ष लगाए—नारियल, नीबू, अमरूद, बिजोरा, केला, लता, वनस्पतियाँ है, परमात्मा जानें। यह प्रकृति-प्रेम उनकी प्राकृतिक चिकित्सा का मूल है। मेरा भी इस तरह की चिकित्मा मे विश्वास है।

मनुष्य प्रकृति के जितने निकट जायेगा, नीरोग रहेगा। श्री विट्ठलदास मोदी की और उरूली काचन मे एक चिकित्सा पद्धति है। श्री वेंकट राव की अमीरपेट, हैदराबाद मे दूसरी पद्धति है। (मेरी पत्नी वहा एक मास गॉल-ब्लैडर स्टोन के लिए रही थी)। धर्मचन्दजी की अपनी प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति है। मैं

उसके विवरण मे नही जाता, न यह स्थान उसकी चर्चा करने का है। सच्ची अहिंसा प्रकृति और मानव मे तालमेल रखने मे है। जो कृति प्रकृति के साथ चलेगी, वही सस्कृति बनायेगी। शेष सब आजकल जो हो रहा है—गो-सेवा के नाम पर, चिकित्सा के नाम पर, व्यायाम के नाम पर, वह या तो यशेपणा है, या नाटक मात्र विकृति है।

इसीलिए गाधीजी के बताये काम आज कोई ठीक नही चलते। सब "सरकारी" हो गये, और अ-सरकारी कम हो गये। कई ठप्प हो गये। धर्मचन्द जी ऐसी संस्थाओ और ढोगी व नाम के भूखे व्यक्तियो से दूर रहते हैं।

श्री धर्मचन्दजी सरावगी शतायु हो। पूर्णायु हो।□

सदा बहार धर्मचन्द सरावगी

□ □

कृष्णचन्द्र अग्रवाल

श्री धर्मचन्द सरावगी का सदा से एक अलग ही व्यक्तित्व रहा और युवा पीढी के ऐसे प्रतिनिधि बने कि विश्वास ही नही होता है कि देखते देखते वे अस्सी की सीमा पार कर गए। उनका नाम सुनते ही एव स्मरण आते ही एक फौलादी युवक की मुस्कराती हुई छवि उभर कर सामने आ जाती है जिसने आजन्म स्वास्थ्य का पाठ पढा एव जो उसके प्रचार मे ही अपने ढग से मगन रहे। इसमे कभी कोई हिचकिचाहट अनुभव नही की। बहुत वर्षों पूर्व की घटना है, उनके बगीचे मे एक उद्यान पार्टी हुई, ऐसा उस जमाने मे पर्दा प्रथा का अन्त करने एवं महिलाओ मे आत्म विश्वास जागृत करने के लिए समाज सुधारको द्वारा प्राय. आयोजन होता था। उद्यान पार्टी मे सब की भूख खुल गई थी और आशा की जा रही थी कि धर्मचन्दजी और उनके पूज्य पिता श्री बैजनाथ सरावगी जी अब शाम ढलने पर पूडी, कचौडी, दहीवडा और रसगुल्ला परोसने का आर्डर

करेंगे किन्तु उस समय सब के चेहरे शुष्क पड़ गये जब टोकरियो मे भरकर मौसमी फल सब के सामने भोजन के लिए रख दिये गये। उसके बाद भी आशा लगी थी कि शायद कम से कम चाय पकौडी आयेगी किन्तु उसका अन्त डाब जल से हुआ। पहले क्रोध के बाद सब को खूब हसी आई क्योकि यह याद आ गया कि एक कट्टर प्रकृति-प्रेमी परिवार मे भोजन करने आये है। अपने निवास पर भी एक बार एक केन्द्रीय मंत्री के सम्मान मे भोज दे ऐसा ही फलाहार परोसा।

धर्मचन्दजी ने सदैव अनोखी दुनिया मे पैर रखा। वे पहले मारवाडी हवाबाज हुए और सभी पत्र-पत्रिकाओ मे आपका चित्र एव विवरण प्रकाशित हुआ। व्यायाम और प्राकृतिक चिकित्सा के वे सदैव भक्त रहे और मारवाडो रिलीफ सोसाइटी मे इसका एक अलग कक्ष स्थापित किया। साथ ही बीस-बाईस वर्ष पूर्व आपने अपना विस्तृत बगीचा प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र स्थापित करने के लिए भेंट कर दिया जो अब बडा केन्द्र बन गया है।

जैन धर्म मे भी आपकी सदैव से रुचि रही है और अपने पिताजी की तरह ही वे जैनसमाज के सेवक है। मारवाडी रिलीफ सोसाइटी मे आपका प्रधान मंत्री एव अन्य पदो पर योगदान स्मरणीय रहेगा। समाज सुधार आन्दोलन, खादी प्रचार, राष्ट्र भाषा प्रचार, साहित्य सस्कृति के क्षेत्र मे सदैव जुटे रहते है और काफी समय देते है। बडाबाजार युवक सभा की उन्नति की। देश विदेश की विस्तृत यात्राएँ की और उसका सस्मरण दैनिक एव साप्ताहिक 'विश्वमित्र' मे सदैव प्रकाशित होता रहा है।

अपने ढंग से, बडे सुन्दर तरीके से, मनमौजी रूप मे धर्मचन्दजी अपना जीवन यापन कर रहे है। उनके दीर्घजीवन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ है। □

प्रकृति के अनन्य उपासक

□ □

यशपाल जैन

बबुवर धर्मचन्द सरावगी के साथ मेरा कई दशक पुराना परिचय है। यह तो याद नही आता कि सबसे पहले उनसे कहां मिलना हुआ था, किन्तु इतना अवश्य याद है कि जब वह प्रथम बार मिले थे तो उनके उत्साह, कर्मठता तथा मिलनसारिता की मेरे मन पर गहरी छाप पडी थी। बाद मे ज्यो-ज्यो मुझे उनसे मिलने का और उनके निकट सम्पर्क मे आने का अवसर प्राप्त होता रहा, उनके प्रति मेरी आत्मीयता बढती गई। वस्तुत. वह बडे जीवट के व्यक्ति है। जो ठान लेते है, उसे करके ही रहते है। उनका कलकत्ते की अनेक सस्थाओ के साथ बडा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है और है। उन सस्थाओ की अभिवृद्धि मे वह निरन्तर सहायक होते रहते है।

प्राकृतिक चिकित्सा मे उनकी अटूट श्रद्धा है। उसके लिए उन्होने कलकत्ते मे न केवल एक सस्थान की स्थापना कराई, बल्कि कलकत्ता नगर की घनी बस्ती

के बीच प्राकृतिक चिकित्सा सुलभ कराने का प्रयत्न किया। वह आज भी चालू है।

धर्मचन्दजी ने प्राकृतिक चिकित्सा से सम्बन्धित अनेक पुस्तको की रचना की है। ये सभी पुस्तकें बडी लोकप्रिय हुई, विशेषकर उनकी "सरल योगासन" पुस्तक के तो आठ सस्करण हो गये। इस पुस्तक मे उन्होने न केवल विभिन्न योगासनो का परिचय दिया है, अपितु स्वय उन आसनो को करके उनके चित्र पुस्तक मे दिए है। इन बीस चित्रो मे प्राय सभी प्रमुख आसन आ जाते है।

धर्मचन्दजी की सबसे बडी विशेषता यह है कि वह कोरे निर्देशक नही है। जो कहते है, उसे अपने जीवन मे भी उतारते है। उनके दीर्घायु होने और स्वस्थ रहने का सबसे बड़ा रहस्य यही है कि वे स्वयं अपने जीवन मे प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए बडे ही सयम से जीवन यापन करते हैं।

मुझे वे दिन याद आते है, जब हमे बार-बार कलकत्ता जाना होता था और जब कभी वहा जाते थे, धर्मचन्दजी के साथ कुछ समय अवश्य बिताते थे। मैंने देखा कि आहार-विहार मे वह बड़े ही नियमित और सयत है। एकाध बार वह हमे व्यायामशाला भी ले गये, जहा वह स्वय अनेक प्रकार के योगासन करते है। व्यायाम का यह क्रम वर्षो से नियमित चलता रहा है।

वह कम बोलते है, किन्तु जो भी बोलते है, वह अर्थपूर्ण होता है। उनके भाषण भी मैंने सुने है। अपने भाषणो मे वह शब्द-जाल नही रचते। जो कहना होता है, वह सीधे, सरल, शब्दो मे कह देते है।

प्रकृति के वह अनन्य उपासक हैं। मैं कलकत्ते मे जब कभी उनके यहा जाता हूं तो वह छत पर लगाये अपने बगीचे को दिखाना नही भूलते। अपने उस बगीचे मे उन्होने पेड-पौधे ही नही लगाये, साग-भाजिया भी उगाते है।

उस बगीचे को देखकर मैं बार-बार सोचता हूं कि व्यक्ति मे प्रकृति के लिए अनुराग हो तो वह उसके सान्निध्य का साधन कही भी जुटा सकता है।

एक प्रसग मुझे भूले नही भूलता। राची के निकट किसी विदेशी महिला को, जिसके पति का देहान्त हो गया था, अपना फार्म बेचना था। मैं उन दिनो

कलकत्ते गया हुआ था। धर्मचन्दजी ने अनुरोध किया कि मैं उनकी मित्र-मडली के साथ राची चलूं। हमलोग कार से राची पहुंचे और वहां से एक दिन मैकलॉस्कीगज जाकर देखने का निश्चय किया। वहा एक प्राकृतिक चिकित्सा का केन्द्र स्थापित करने की उनकी योजना थी।

राची से हम कार द्वारा वहाँ गये। ठीक याद नही, पर शायद ७०-८० मील से ऊपर का फासला था। धर्मचन्दजी गाड़ी चला रहे थे। भाई बद्रीप्रसाद बाँयवाला साथ थे। हमलोग मैकलॉस्कीगज पहुंचे। स्थान बड़ा सुन्दर था। फार्म बडा विशाल और हरियाली से परिपूर्ण था। हमलोग फार्म की स्वामिनी विदेशी महिला से बातें करते रहे, जलपान करते रहे, फार्म देखते रहे। उसमे बहुत समय निकल गया और लौटते समय अंधेरा हो गया।

रास्ता निरापद नही था। कभी-कभी डाकू सडक पर आ जाते थे और यात्रियो को लूट लेते थे। धर्मचन्दजी का प्रयत्न था कि गाड़ी तेज चलाकर जल्दी मे जल्दी राची पहुँच जाएँ। गाड़ी की रफ्तार को देखकर मैंने उनसे कहा, "थोडा धीमे चलिए। यदि कुछ देर हो गई तो कोई बात नही है।" उन्होने मुस्कराकर उत्तर दिया, "क्यो, गाडी की रफ्तार से आपको परेशानी होती है। मैं तो पायलट रह चुका हूं। मैंने विमान चलाया है।" मै आश्वस्त हो गया।

लेकिन थोडी देर मे देखता क्या हूं कि गाड़ी जब ६० या ७० मील प्रति घन्टे की रफ्तार से चल रही थी, उसका एक टायर जवाब दे गया। गाडी सड़क से नीचे उतर गई लेकिन धर्मचन्दजी ने साहस नही खोया। उन्होने गाडी को पेड मे टकराने से रोका। उस पर नियत्रण रखकर आगे एक ओर ले जाकर खडा कर दिया। यदि उनके हाथ-पैर फूल गये होते तो हम सबके प्राण निकल गये होते।

गाड़ी को एक किनारे खडी करके धर्मचन्दजी ऐसे बातें करने लगे मानो वह कोई सामान्य घटना हुई है।

आगे जो हुआ, वह बहुत ही दिलचस्प था। हमलोग सड़क पर खड़े होकर जो भी गाडी आती, उसे रोकने का प्रयत्न करते, लेकिन हमे अवांछनीय मानकर

कोई भी गाड़ी नही रुकी। आधी रात बीत गई और सड़क पर खड़े विनोद-पूर्वक बातें करते रहे।

अन्त मे एक ट्रक आया। हमलोग बीच सड़क पर खड़े हो गये। ड्राइवर ने ट्रक को रोका और जब उसे भरोसा हो गया कि हम भले आदमी है तो वह एक व्यक्ति को राची ले जाने को तैयार हुआ।

उधर जब हमारे अन्य साथियो ने देखा कि आधी रात बीत गई है और हम-लोग नही पहुँचे है तो उन्हे भय हुआ कि कही हमे डाकुओ ने न पकड लिया हो। उन्होने बन्दूकधारी आदमियो के साथ दो गाडिया भेजी। जब वे गाडिया हमारे पास पहुँची तो हमने साथियो को अपनी पूरी दास्तान सुनाई। उसके बाद सबने मिलकर जो अट्टहास किया, वह आज भी मुझे विभोर कर देता है।

धर्मचन्दजी ने संसार के बहुत से देशो की यात्रा की है और उन यात्राओ के सम्बन्ध मे अपने सस्मरण भी लिखे है। निस्सन्देह वे बडे ही साहसी व्यक्ति है। खतरो से वह घबडाते नही, बल्कि चुनौती सामने आने पर उनका साहस दूना हो जाता है।

सामाजिक कार्यो मे उनकी बडी अभिरुचि रहती है। समाज की भलाई के लिए, वह जो कुछ कर सकते है, सदैव करने को तत्पर रहते है। मारवाडी रिलीफ सोसाइटी तथा अन्य सस्थाओ के द्वारा उन्होने समाज की जो सेवा की है, वह अत्यन्त सराहनीय है

धर्मचन्दजी काम मे विश्वास करते है, नाम मे नही। यही कारण है कि उन्होने कभी यश की लालसा नही की और न कभी पदो की कामना की है। यह नही कि उन्हे पद नही मिले, बहुत से पद मिले है, किन्तु उनके लिए उन्होने कभी प्रयत्न नही किया। यश मिला है, लेकिन उसकी कभी आकाक्षा नही की।

वह अभी अपने जीवन मे अनेक वसन्त देखें और खूब स्वस्थ रहे।□

हमारे आत्मीय

□ □

सोहन लाल

श्री धर्मचन्दजी आदर्श, प्रगतिशील, प्रेरक, उदार, उत्साही, सहृदय, सरल, लगनशील आदि गुणो से विभूपित है। सर्वगुण सम्पन्न। उनके सहयोग, सद्भाव, स्नेह एव मस्त स्वस्थ-सुन्दर, सम्पन्न, मिलनसार, मृदुभापी प्रकृति से मैं प्रभावित हूं।

श्री धर्मचन्दजी सरावगी और इनकी पत्नी दोनो ही एक दूसरे के पूरक है, सतोप और शांति दोनो मे झलकती है। दोनो प्रेम के प्रतीक हैं। दोनो का आकर्पक व्यक्तित्व सुप्रकाशित हैं।

हम दो वार दोनो पति-पत्नी कलकत्ता इनके निवास पर गये। हमे प्राकृतिक चिकित्सालय, व्यायामशाला, अन्य संस्थाएँ, अपने घर का भोजन-कक्ष और छत पर लगाये वगीचे को दिखाया अपने अनुभवो का लाभ आत्मीय सत्सग सम्पर्क दिया।

आपने वापू चिकित्सालय, जयपुर के प्राकृतिक चिकित्सालय मे एक कोठी भी वनाई जो रोगियो की सव प्रकार ठहरने की सुविधा से युक्त है।

आप गुणो के भण्डार है। प्रकृति-प्रेमी और प्रभु के कृपापात्र है। साहित्य प्रेमी, कला प्रेमी हैं, पत्राचार और अन्य सभी प्रवृत्तियो मे उत्साह-उमग से ओत-प्रोत हैं। हर आयोजन और कार्यक्रमो मे रुचि लेना दोनो पति-पत्नी का साथ-साथ हर काम मे भाग लेना इनकी विशेपता है। □

एक अनुकरणीय हिन्दी-प्रेमी

□ □

रामावतार गुप्त

श्री धर्मचन्दजी सरावगी समाज के उन इने-गिने व्यक्तियो मे है, जो दूसरो को अपने कार्यों द्वारा रास्ता दिखाते हैं। व्यायाम, शाकाहारी आन्दोलन, प्राकृतिक चिकित्सा, दैनिक जीवन मे हिन्दी के उपयोग, गो सवर्द्धन, पीड़ितो की सेवा, उद्देश्यमूलक भ्रमण इत्यादि अनेक विषयो मे उन्होने अपना तन, मन, धन तीनो लगाया है।

गत् ४१-४२ वर्षों से प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार मे लगे हैं। इस विषय का उन्होने गम्भीर अध्ययन किया है। जनता को प्राकृतिक चिकित्सा से लाभान्वित करने के लिए उन्होने २५ से अधिक पुस्तकें हिन्दी मे लिखी है, जिससे प्राकृतिक चिकित्सा का तो प्रचार हुआ ही है, राष्ट्रभाषा हिन्दी की भी अनुपम सेवा हुई है।

व्यायाम के प्रति धर्मचन्दजी का प्रेम आज की पीढी के लिए अनुकरणीय है। ७३ वर्ष की अवस्था मे "नेशनल फिजिकल एफिशियेन्सी टेस्ट" के ४५ वर्षीय वर्ग

मे "थ्री-स्टार" विजेता बनकर उन्होने प्रमाणित किया कि नियमित व्यायाम द्वारा वृद्धावस्था को दूर रखने में कितनी सफलता पायी जा सकती है। ८० वर्ष की अवस्था में उन्होने लाठी चलाने का अभ्यास आरम्भ किया, जो आश्चर्य-जनक है। विभिन्न विषयो मे उनकी रुचि है, यह जानकर भी आश्चर्य होता है। वे एक सफल व्यापारी एवं उद्योग-संचालक है। कलकत्ता कारपोरेशन के कौंसिलर, राज्यसभा के सदस्य और पश्चिम वगाल विधान सभा के सदस्य रह चुके है। इन सारी व्यस्तताओ के वावजूद वे विमानचालक, घुडसवारी, तैराकी, चित्रकारी अपने मकान की छतपर वागवानी इत्यादि के लिए भी समय निकाल लेते हैं। जिन विषयो मे उनकी रुचि है, उनके अध्ययन के लिए उन्होने अनेक वार विदेश-यात्राएँ, जिनमे विश्वभ्रमण भी शामिल है, की हैं। श्री सरावगीजी एक कर्मयोगी का जीवन विता रहे है। वे दीर्घकाल तक हम सभी का पथ प्रदर्शन करते रहे यही मेरी कामना है।□

चिरयुवा

□ □

हर्षनाथ

सरावगीजी से मेरा व्यक्तिगत परिचय प्रायः तीस-पैंतीस वर्षो से है और कालक्रम से वह परिचय घनिष्ठता और उनके प्रति आदर के रूप मे परिणत हो गया है। उनकी जीवन पद्धति और उनकी विचारधारा से जैसे-जैसे परिचित होता गया, उनके प्रति आदर और सम्मान की भावना बढती गई और अब तो लगता है, सरावगीजी मेरे परिवार के एक बुजुर्ग है, जिनसे मैं अपनी किसी समस्या पर परामर्श कर सकता हूं और मुझमे कोई खामी देखकर वर्जना करने का उन्हे अधिकार भी है। अंग्रेजी की एक कहावत है: To know him is to lone him सरावगीजी के सम्बन्ध मे मेरे लिए वह पूर्णतया सटीक बैठती है।

उनसे व्यक्तिगत सम्पर्क होने के बहुत पहले से मैं सरावगीजी के नाम से परिचित था मेरे अग्रज श्री देवनाथ लाल 'लालाजी' मारवाडी रिलीफ सोसाइटी अस्पताल के व्यवस्थापक थे और अस्पताल मे प्राकृतिक चिकित्सा विभाग का

सचालन सरावगीजी करते थे। भाई साहव सरावगीजी के प्राकृतिक चिकित्सा सम्वन्धी प्रेम की चर्चा वरावर करते रहते थे। प्राकृतिक जीवन पद्धति और स्वास्थ्य के प्रति मेरी भी अभिरुचि रही है। इसलिए धर्मचन्दजी के प्रति मेरे मन मे आकर्षण था। इसके अतिरिक्त उनके साहसिक कार्यो, जैसे आज से पचास-पचपन वर्ष पूर्व व्यक्तिगत चालक की हैसियत से विमान उड़ाना, रामगढ़ विहार कांग्रेस महाधिवेशन के अवसर पर अपने जहाज से कांग्रेस अध्यक्ष के ऊपर पुष्प वर्षा करना आदि से उनके प्रति आकर्षण स्वाभाविक ही है। सन् १९५६ मे जब धर्मचन्दजी कालेज स्क्वायर स्वीमिग क्लव के सभापति थे, मैं उस क्लव का एक सदस्य था; उस दौरान उनसे आत्मीयता घनिष्ठ हो गई।

प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति सरावगीजी का प्रेम केवल मौखिक नही है, वल्कि उसके दर्शन को अपने जीवन मे उन्होने अक्षरश ढाला है, उसके प्रचार-प्रसार मे अथक श्रम किया है और इसी हेतु 'स्वस्थ जीवन' मासिक पत्रिका को जन्म देकर वर्षो तक उसका संचालन-सम्पादन किया, देश के विभिन्न भागो मे प्राकृतिक चिकित्सा को फैलाने के लिए वैज्ञानिक आधार पर शिक्षित प्राकृतिक चिकित्सा के स्नातक तैयार करने तथा इस चिकित्सा पद्धति को मेडिकल कालेजो की तरह वैज्ञानिक आधार एव पूर्णता देने के लिए कलकत्ता के समीप उन्होने प्राकृतिक महाविद्यालय की स्थापना की, इसके लिए उन्होने अपनी कई एकड भूमि, उसमे स्थित अपना भवन तो दिया ही उसके विकास एव सचालन के लिए प्रचुर धन व्यय किया एव उसके कार्य को समुचित दिशा प्रदान की।

'स्वस्थ जीवन' का सम्पादन जव धर्मचन्द जी और श्री राधाकृष्ण नेवटिया कर रहे थे, तव उस कार्यभार को सम्भालने के लिए उससे मैं भी सम्वद्ध था। उस समय उन्हे और भी निकट से देखने परखने का मौका मिला और उनकी प्राकृतिक चिकित्सा के सम्वन्ध मे कथनी और करनी मे कही अन्तर नही लगा। उन्होने स्वास्थ्य सम्वन्धी प्राय: दो दर्जन पुस्तकें लिखी है। वे प्राकृतिक चिकित्सा सम्वन्धी पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तके विदेशो से मँगाते रहते है। मैने अनुभव किया कि किसी तथ्य की जानकारी प्राप्त करने मे चाहे जितना भी श्रम लगे और विलम्ब हो, वे विचलित नही होते हैं।

दूसरो को उपदेश देना आसान है, किन्तु अपने जीवन मे उसे ढालना वडा कठिन है। सरावगीजी मे मैने यही विशेषता देखी कि जो वात स्वास्थ्य के

सम्बन्ध मे वे दूसरो से कहते है, उसे स्वय अपने जीवन मे ढाल लेते है। भोजन खान, पान, रहन-सहन के बारे मे प्राय: मेरी उनसे बातें होती रहती थी। तीन चार वर्षो तक उनके रात्रिकालीन भोजन के समय, कार्य के सिलसिले मे मैं उपस्थित रहता था पर आहार सम्बन्धी नियमो को उल्लघन करते मैंने नही देखा। रात के भोजन मे मैंने अन्न खाते उन्हे नही देखा, दूध और मौसम के फल, वह भी नियमित और सतुलित मात्रा मे। जो बातें वे कहते है, वह मात्र सिद्धांत नही, बल्कि अनुभव सिद्ध है। किसी बात को समझाने का उनका ढग बिलकुल अनोखा है। उदाहरण के लिए कुछ व्यक्तिगत बातो का उल्लेख करना प्रासगिक होगा।

एक बार उन्होने मुझसे पूछा : सबेरे के नाश्ते मे क्या लेते हैं ?

मैंने उत्तर दिया : उबले अण्डे और टोस्ट या सिकी पावरोटी।

मेरी बात सुनकर मुस्कराते हुए उन्होने कहा : अगर मैं अपने घर की बासी रोटी आपको नाश्ते मे दूं तो खाए गे ?

आश्चर्य से मैं उनकी ओर देखता रह गया। मैंने कहा : बासी रोटी मै क्यो किसी के घर की खाऊँगा।

उन्होने हँसते हुए कहा : तो यह पावरोटी क्या है ? बेकरी में एक दिन पहले बनी, तरह-तरह के लोगो के हाथो मे घूमती और दूकानो पर बिकी, यह तो बासी नही, दूषित भी हो गई।

यदि कोई कोरे उपदेश की बातें कहता तो मेरे ऊपर कोई प्रभाव नही पडता किन्तु इस उदाहरण का मेरे ऊपर प्रभाव पडा। इस बात को बीते प्राय. पच्चीस वर्ष हो गये। अभी इसी ८६ के फरवरी-मार्च मे मैं उनसे मिला तो मुझे देखते ही उन्होने कहा : आपका स्वास्थ्य काफी अच्छा है। नाश्ते मे क्या लेते है ?

मैंने हँस कर कहा : एक बार पहले भी आपने यह प्रश्न किया था। आजकल मैं नाश्ते मे बासी रोटी नही खाता। आजकल मैं चिउडा और दूध या चने का सत्तू और दूध लेता हूँ।

पुरानी बात का स्मरण कर वे भी हसने लगे।

सरावगीजी के मन मे कोई कुण्ठा नही है और किसी भी श्रम के काम को वे छोटा बड़ा नही मानते। यह विदेशो मे बार-बार भ्रमण करने और वहाँ श्रम की प्रतिष्ठा को अपनी आँखो से देखने के कारण है। इसका एक व्यक्तिगत अनुभव है। मैं उनके व्यक्तिगत कक्ष मे बैठा हुआ था। मेरे लिये पीने के लिए उन्होने छाछ मगाई। पीने के पश्चात गिलास हाथ मे लिए मैं सोच ही रहा था कि कोई नौकर आये तो उसे दूँ, तब तक उन्होने हाथ बढाकर बिना किसी आडम्बर के वह ले लिया। कार्य के प्रति यह उनके परिष्कृत दृष्टिकोण का परिचायक है।

समय की पाबन्दी, श्रम, कार्य के प्रति लगन, धैर्य और निष्ठा और उसे सुव्यवस्थित रूप से करने का आग्रह आदि गुण धर्मचन्दजी के जीवन की सफलता का रहस्य है। राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता, लेखक, पत्रकार और उद्योग-व्यापार अनेक रूपो मे उन्होने जीवन जीया है और सभी क्षेत्रो मे उन्होने इस व्रत का पालन किया है।

सरावगी जी जब साठ वर्ष के थे, तब अपने निवास 'जैन हाउस' की सीढिया तीन तल्ले तक दौडते हुए चढ जाते थे और साक्षी के रूप मे मैं भी उनका अनुगमन करता था। हमारे यहाँ साठ साल की उम्र बुढापे की उम्र मानी जाती है। सरावगी जी अब अस्सी पार कर गये, किन्तु उम्र उनसे टकरा कर वापस लौट जाती है। हमारी भारतीय परम्परा मे १२५ वर्ष को मनुष्य की पूर्ण आयु स्वीकारा गया है। लगता है, सरावगी जी उस मार्ग के चिर युवा पथिक हैं। □

सुन्दर स्वास्थ्य के धनी

□ □

आनन्दी लाल गोयनका

श्री धर्मचन्द सरावगी से मेरा बहुत पुराना सम्बन्ध रहा है परन्तु प्राकृतिक चिकित्सा मे उनकी और मेरी अभिरुचि के कारण हम लोगो का सम्बन्ध घनिष्ठ हुआ।

पश्चिम बगाल मे डायमण्ड हार्बर रोड स्थित प्राकृतिक चिकित्सालय, जो कि "नेचर क्योर-एण्ड योगा रिसर्च इन्स्टीच्युट" के नाम से प्रख्यात है, के कारण हम लोग बहुत निकट सम्पर्क मे आये और आज भी कन्धे से कन्धा मिलाकर इस चिकित्सालय के लिए कार्य कर रहे हैं। धर्मचन्दजी इस चिकित्सालय के अध्यक्ष है और मुझे मैनेजिग ट्रस्टी का भार दिया गया है। धर्मचन्दजी ने इस प्राकृतिक चिकित्सालय को बहुमूल्य सहयोग दिया है। इन्ही के द्वारा प्रदत्त १८ बीघा जमीन पर निर्मित यह चिकित्सालय लोगो की सेवा कर रहा है। उत्तर-पूर्वी भारत वर्ष मे यह अपनी तरह का एक मात्र आधुनिक प्राकृतिक

चिकित्सालय है, जहाँ से हजारो लोगो ने आरोग्य का लाभ उठाया है। यह चिकित्सालय दिनोदिन विस्तार और प्रगति पथ पर अग्रसर है।

प्राकृतिक जीवन मे सरावगीजी का अटूट विश्वास है और आपने इसे जीवन मे उतारा भी है। यही कारण है कि आज ८१ वर्ष की आयु मे भी आपका स्वास्थ्य बहुत सुन्दर बना हुआ है और अब भी नियमित व्यायाम, योगासन और प्राणायाम एव सात्विक आहार ही वास्तव मे इनके सुन्दर स्वास्थ्य की कुंजी हैं। प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार-प्रसार के लिए केवल आर्थिक एव शारीरिक सहयोग देकर ही नही अपितु इन्होने प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी अनेक पुस्तकें लिखकर भी इस चिकित्सा प्रणाली को आगे बढाने मे बहुमूल्य सहयोग दिया है। इसके अतिरिक्त शारीरिक उन्नति के लिए प्रयत्नशील व्यायामशालाओ, तैराकी सस्थाओ तथा स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य कर रही अनेक संस्थाओ को सक्रिय सहयोग दिया है। ईश्वर से प्रार्थना है कि श्री धर्मचन्दजी का स्वास्थ्य पूर्ण दीर्घायु प्रदान करे जिससे कि देश और समाज को आपके अनुभव और सेवाओ का लाभ आगे आनेवाले बहुत-बहुत वर्षों तक मिलता रहे। □

सेवाभावी व्यक्ति

□ □

राधाकिशन कानोड़िया

भाई धर्मचन्दजी सदा से ही काफी परिश्रमी रहे। उन्होने जिस किसी काम को हाथ मे लिया उसको पूरी लगन के साथ एव तन-मन-धन से किया। परिणाम स्वरूप उन्हे हर कार्य मे सफलता मिली।

जब धर्मचन्दजी ने हवाई जहाज चलाना सीखना आरम्भ किया तो कई लोग उनकी हँसी उडाते थे कि वे कभी भी हवाई जहाज नही चला सकेंगे। लेकिन धर्मचन्दजी पूरी लगन व निष्ठा के साथ वायुयान चलाने की शिक्षा लेते रहे और सचमुच ही उन्होने यान चलाना सीख लिया तब उन लोगो को—जो उनकी हसी उडाते थे—बडी प्रसन्नता हुई और उन्होने धर्मचन्दजी की होशियारी की भूरी-भूरि प्रशसा की।

धर्मचन्दजी ने अपने पिताजी को व्यापार मे बहुत सहयोग दिया और होशियारी व योग्यता के बल पर व्यापार को बढाया। व्यापार से उन्हे अच्छी आय होती है।

प्रारम्भ से ही धर्मचन्दजी को प्राकृतिक चिकित्सा मे विश्वास है। वे खान-पान का पूरा ध्यान रखते है। उनका सारा परिवार भी उनके कहने के अनुसार खान-पान मे उनका अनुसरण करता है। मोरारजी भाई की सलाह पर वे अपने वगीचे मे प्राकृतिक चिकित्सा की क्लासें भी लेने लगे। उन्होने कई आदमियो को वहाँ रखा, उन्हे काम की वातें वताई और इस तरह उन्हे काफी लाभ पहुचाया। उसके वाद तो उन्होने अपना वहुत ही मूल्यवान वगीचा दान मे दे दिया। आज उस वगीचे मे वहुत वडा प्राकृतिक चिकित्सालय है।

वड़ा वाजार युवक सभा के तो आप प्राण ही रहे। मैं जव युवक सभा का सभापति था तो वरावर देखता था कि वे वडी लगन से काम करते थे। वे रोज स्वयम् व्यायाम करते। उन्हे हर तरह का व्यायाम करने का शौक है। अभी भी वे नियमित रूप से व्यायाम करते है। यही कारण है कि इस उम्र मे भी उनका स्वास्थ्य इतना अच्छा है। धर्मचन्दजी दान भी वहुत देते है। वे जो भी सुझाव देते सवको अच्छे लगते। इससे जनता को काफी लाभ मिला और आजतक मिल रहा है। आप कालेज स्क्वायर स्वीमिंग क्लव मे तैरने भी जाया करते थे। वहाँ पर तैरना सीखने आने वालो को वे स्वयम् कई तरह की वातें वताया करते थे और उन्हे तैरने की प्रेरणा देते थे। आगे चलकर वे इस स्वीमिंग क्लव के सभापति भी वने।

विहार मे जव भीषण भूकम्प आया था उस समय वहाँ जाकर उन्होने पीडित व्यक्तियो की वहुत वड़ी सेवा की।

समाज को इनकी योग्यता पर पूरा विश्वास है। जव कलकत्ता नगर मे काफी सुधार की आवश्यकता थी तव ये कारपोरेशन के निर्विरोध काउन्सिलर चुने गये। ये राज्य सभा एव पश्चिम वगाल विधान सभा के सदस्य भी चुने गए।

धर्मचन्दजी ने अंग्रेजी व हिन्दी मे अनेक लेख लिखे है और उनके माध्यम से जनता को उपयोगी जानकारी दी है। गौ के प्रति आपकी सदैव आस्था रही। वे गौ सवर्द्धन कौन्सिल के सदस्य भी रहे।

भाई धर्मचन्दजी मेरे मित्र हैं। भगवान से प्रार्थना है कि वह इन्हे जीवन पर्यन्त सुखी रखे और इनकी सेवा भावना इसी तरह वनी रहे। □

व्यक्तित्व के धनी

□ □

रामकृष्ण सरावगी

श्री धर्मचन्द एक ऐसे व्यक्ति है जिनसे ईर्ष्या होनी स्वाभाविक है। ईर्ष्या उनके व्यापार अथवा रहन-सहन से नही, बल्कि उनके स्वास्थ्य से होती है। ८१ वर्ष की आयु मे भी वे उतने ही स्वस्थ एव सक्रिय है जितने तीस वर्ष पहले थे। स्वास्थ्य, प्राकृतिक जीवन और चिकित्सा के क्षेत्र मे कलकत्ता महानगर मे उनका नाम सदैव श्रद्धा के साथ लिया जाता है—हमारे जैसे मित्रो के लिए श्रद्धा के साथ-साथ ईर्ष्या से भी। किन्तु यह ईर्ष्या बड़ी सुखद है।

वैसे धर्मचन्दजी मेरे मित्र नही, मेरे पिताजी (स्व० तुलसीरामजी सरावगी) के निकट के मित्रो मे से है। सार्वजनिक क्षेत्रो मे वे पिताजी की प्रेरणा से आये इस नाते गुरु भाई कहा जा सकता है। किन्तु एक बात जो ४० वर्षों के सम्पर्क के बीच सदैव देखी है, वह यह कि उन्होने कभी अपने आपको बुजुर्ग की परिभाषा मे रखकर उपदेशक बनने को चेष्टा नही की। प्रत्येक के साथ मृदुल

भापी, कटु सत्य को भी मोठेपन के साथ कहने का स्वभाव और शायद इस स्वभाव के कारण वे सभी के प्रिय रहे हे।

सन् १९५२ मे वे कलकत्ता कारपोरेशन के कौन्सिलर निर्विरोध निर्वाचित हुए। उस जमाने मे कारपोरेशन के कौन्सिलर का पद वड़े महत्व और गौरव का माना जाता था। वगाल के सभी शीर्षस्थ नेता कभी न कभी कौन्सिलर हुए थे। देशवन्धु चितरजन दास, नेताजी सुभापचन्द्र वोस, फजलुल हक, डा० विधानचन्द्र राय आदि आदि। शान्त-स्थिर स्वभाव के धर्मचन्दजी ने अपने पार्षद काल मे एक वड़ा काम कर दिया। वह था ट्राम-वस मे धूम्र-पान का निपेध। यह निपेधाज्ञा आज भी चालू है और किसी ट्राम या वस मे जव कन्डक्टर किसी यात्री को वीडी-सिगरेट निकालते देख धूम्रपान न करने के लिए कहता है तो ऐसा लगता है कि धर्मचन्दजी हा वोल रहे है। यह एक काम उन्हे कलकत्ता कारपोरेशन मे सदा के लिए उल्लिखित कर गया।

सन् १९६४ मे काग्रेस पार्टी ने उन्हे राज्य सभा के लिए अपना अतिरिक्त उम्मीदवार चुना। पश्चिम वंगाल विधान सभा मे अपनी सदस्य सख्या की औसत गणना के अनुसार तीन उम्मीदवार सहज ही विजयी वनाए जा सकते थे, उतने उम्मीदवार स्थिर कर दिए जाने के वाद भी एक अतिरिक्त एक उम्मीदवार और खड़ा करना चाहते थे और इसलिए धर्मचन्दजी को चौथा उम्मीदवार वनाया गया कि वे कांग्रेस के अतिरिक्त अन्य दलो के वोट सग्रह कर लें तो शायद वे जीत जाएँ।

चुनाव हुआ और नतीजा वडा आश्चर्यपूर्ण था। धर्मचन्दजी को सवसे अधिक मत मिले थे और जिसे काग्रेस पार्टी के सवसे अधिक मत मिलने थे, वह हार गया था। काग्रेस के तत्कालीन शीर्पस्थ नेताओ के लिए यह अत्यत शोचनीय स्थिति थी। इस दुविधापूर्ण स्थिति से उवारा धर्मचन्दजी ने और एक-दो दिनो के भीतर ही इन्होने राज्य सभा से त्यागपत्र दे दिया। यह स्पष्ट था कि अपनी लोकप्रियता के कारण धर्मचन्दजी को निश्चित सख्या से अधिक मत मिले थे लेकिन दल को दुविधापूर्ण स्थिति से उवारने के लिए उनका तत्काल त्यागपत्र दे देना एक ऐसे आदर्श का परिचायक है जो आज के जमाने मे दुर्लभ ही देखा जाता है।

धर्मचन्दजी मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के अन्यतम कार्यकर्ताओ मे से थे। सन् १९४५ मे प्रधान सचिव भी वने। शायद १९६० तक उनका सक्रिय सहयोग

सस्था को मिलता रहा। सेवा कार्यों में वे सदैव आगे बढकर योग देने वालो मे है और क्षतिग्रस्त क्षेत्रो मे जाकर सहायता कार्य करने मे कभी झिझकते नही।

प्राकृतिक चिकित्सा में उनकी रुचि सर्वविदित है। अनेक ग्रन्थ उन्होने लिखे और प्रकाशित किये। उनकी पत्रिका 'स्वस्थ जीवन' सदैव सम्मान के साथ पढी जाती रही। डायमण्ड हार्बर रोड स्थित अपनी बहुमूल्य सम्पति उन्होने "प्राकृति निकेतन" की स्थापना के लिए प्रदान की और आज भी उसमे उनका पूरा सहयोग है।

धर्मचन्दजी शतायु हो, यह कहना, उनके स्वास्थ्य को देखते हुए, उनकी आयु को कम करना होगा लेकिन यह निश्चित है कि अपने जीवन को वे भली-भाति जी रहे है और मनुष्य कैसे स्वस्थ एव प्रसन्न रह सकता है, इसका वे एक सजीव उदाहरण प्रस्तुत कर रहे है। □

बात के पक्के

□ □

दीपचन्द नाहटा

सरावगीजी से हमारा विगत ४० वर्षों से निकटतम सम्पर्क रहा है। हमने उनको नजदीक से देखा है वे जो कहते हैं वही करते हैं। ४० वर्षो पहले यहाँ पर दंगा हुआ था। वे मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के प्रधान मत्री थे। हमलोगो ने उस समय शरणार्थियो को खिलाने के लिए कैंटीन खोला था। मगर उस वक्त आटा तथा चावल नही मिलते थे। हमलोग सरावगीजी के पास गये। वे बैंज लगाये सोसाइटी मे काम कर रहे थे। उन्होने हमे तुरन्त ही बोरो मे चावल तथा आटा भर के दिलाया। सरावगीजी ने सोसाइटी मे प्राकृतिक विभाग खुलवाया। "प्रकृति निकेतन" भी उन्ही की देन है जहाँ पर दूर-दूर से लोग आकर इलाज कराते हैं। सरावगीजी कहते हैं कि पहले तो खान-पान, रहन-सहन ऐसा रखो कि बीमार ही न पडो अगर बीमार भी पड गये तो प्राकृतिक पद्धति से इलाज कराओ।

एक दिन वे हमे अपने रसोई घर मे ले गये। वहाँ पर सब डिब्बो मे जो था उन पर उसमे रखी गयी वस्तुओ का नाम लिखा था। बाद मे एक चार्ट दिखलाया जिसमे महीने भर मे किस दिन क्या खाना बनेगा पहिले ही से लिखा था।

पुराने जमाने मे जिसे कर्जन पार्क कहते थे उसका नाम आजकल सुरेन्द्रनाथ पार्क हो गया है। हम वर्षो से वहाँ घूमने जाते है। वही आर० एस० एस० वाले धर्मराज नाम की शाखा लगाते हैं जहाँ सूर्य नमस्कार, लाठी चलाना, प्राणायाम तथा और कई तरह के व्यायाम उस शाखा मे आने वाले लोगो को सिखाया जाता है। गत १५ वर्षो से उसके अधिकारी गौड़जी है। बड़े सज्जन पुरुष है। धर्मचन्दजी भी यहाँ गत दो वर्षो से सपत्निक घूमने आते है। लगभग डेढ वर्ष पहले धर्मचन्दजी ने गौड़जी से लाठी सीखने की इच्छा प्रकट की। वे बोले, आपकी उमर हो गई है आप क्या लाठी सीखेंगे। धर्मचन्दजी ने उन्हे व्यायाम-शाला मे व्यायाम करते हुए अपने चित्र दिखलाये और कहा, आप पचास के होगे, मैं साठ का हू। दूसरे लोग लाठी चलाना जो पाँच दिन मे सीखते है मुझे दस दिन लग जायेगे। धर्मचन्दजी के उत्साह को देखकर गौड़जी ने उन्हे लाठी के दाँव सिखाने आरम्भ कर दिये। वे अबतक नव दाव सीख गये। फिर गत वर्ष धर्मचन्दजी के ८० वें जन्म दिन पर पत्रो मे चित्र देखे तो गौड़जी ने धर्मचन्दजी से कहा आपने तो हमे अपनी उम्र गलत बताई, तो धर्मचन्दजी हसकर बोले यदि गलत नही बताता तो आप मुझे लाठी चलाना थोडे सिखाते।

वे कई सस्थाओ के पदाधिकारी, अध्यक्ष रहे। शनै. शनैः सबसे विराग ले लिया। कहते हैं हर एक व्यक्ति को दूसरे कार्यकर्त्ता के लिए स्थान खाली करना चाहिए। इस तरह वे बडे गम्भीर विचार वाले है। व्यापार यद्यपि आज उनका बहुत अच्छा है मगर एक दिन उन्होने रास्ते मे खडे होकर अखवार भी वेचे तथा दो पैसा कमाकर विदेश मे भी कई बार घूम आये। उनका खान-पान तथा रहन-सहन सयममय है। उनके ऑफिस मे भी जाइये साफ-सुथरा एव हर एक चीज अपने निश्चित स्थान पर ही मिलेगी। ऐसे महापुरुषो के जीवन से हमारा युवक प्रेरणा लेकर अपनी उन्नति कई क्षेत्रो मे कर सकता है। हम पुनः उनके स्वस्थ जीवन की मगल कामना उनके ८१ वें वर्ष मे प्रवेश करने पर करते है। □

आधी बात चेहरे की मुस्कराहट कर लेती है :

□ □

नथमल केडिया

कलकत्ते के हिन्दी भाषी क्षेत्र के स्वतन्त्रता प्राप्ति की पहले की पीढ़ी के नेताओं मे दो व्यक्ति मुझे एकदम अलग पंक्ति मे खडे दिखाई देते है। उनकी शक्ल-सूरत, उनकी चाल-ढाल, उनका वेश-परिवेश, उनकी बातचीत का लहजा—सब उनके एक विशिष्ट स्तर की सूचक-सी लगती है। उनमे प्रथम थे सीतारामजी सेकसरिया तथा दूसरे है धर्मचन्दजी सरावगी।

आदरणीय सरावगीजी से मेरा सम्पर्क मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के माध्यमसे हुआ पर उन्होंने उसके पहले से ही अपना अनुबन्ध प्राकृतिक चिकित्सा के साथ कर लिया था, कहना चाहिए उसके प्रति एकदम समर्पित हो गये थे। इतनी दीर्घ अवधि बीत जाने पर भी यह सुखद आश्चर्य लगता है कि आज तक उन्होंने अपनी इस निष्ठा को बरकरार रखा है। आश्चर्य इसलिए कि पिछले चार दशकों मे एलोपैथी का जिस तरह से अन्धाधुन्ध प्रचार-प्रसार हुआ, उसके

साथ जो ताम-झाम तथा सहूलियत, सुविधाएँ रही और आधुनिक विज्ञान का जो वरद हस्त उस पर रहा, ऐसे माहौल मे उसको नकारना अपने आप मे एक बहुत बड़े जीवट का काम है। उससे हमे सरावगीजी के विचारो की अडिगता का परिचय मिलता है। विचारो की बात चली तो मैं एक बात कहना चाहूँगा जो इधर मे उनके साथ बातचीत करने से मुझे महसूस हुई है। उनके विचारों मे कही भी सकीर्णता नही है और इसका जो कारण मुझे लगा वह यह है कि ये अध्ययनशील रहे हैं। नयी-नयी देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओ में स्वास्थ्य सम्बन्धी नयी-नयी खोजो और उपलब्धियो से इन्होने अपने को परिचित रखा है। स्वस्थ रहना ही जीवन का सार है और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति स्वस्थ रहने का एक सफल माध्यम है—यह इनकी मान्यता है। इसके अलावा व्यायाम, तैराकी व योगाभ्यास का भी इनके जीवन मे स्थान है। अपने पोते की उम्र के लड़को के साथ इस ८१ वर्ष की उम्र मे लाठी चलाने का अभ्यास करना अपने समाज के अधिकतर लोगो को एकदम अविश्वसनीय ही लगेगा पर आप इनको लाठी चलाने का अभ्यास करते रोज देख सकते है।

आइये ! विचारो की बात एक बार फिर करे—हम सब जानते हैं कि जो व्यक्ति अध्ययनशील होगा उसको नये विचार, नया प्रकाश और नया आकाश मिलेगा ही मिलेगा। और जहाँ आकाश की बात आती है वहाँ सकीर्णता कैसे रह सकती है। हा, सरावगीजी के अध्ययन ने समाज का बहुत लाभ किया है। उन्होने करीब २५ पुस्तको का प्रणयन किया है। हालाकि वे सब स्वास्थ्य सम्बन्धी है पर मैं इस बात को और भी महत्वपूर्ण मानता हूं कि इन्होने एक विषय चुना, उसका अध्ययन किया, उसको जीया और तब लिखा—आजकल ऐसे लेखक कितने होते है ? वैसे भी, जिस समाज व क्षेत्र के सरावगीजी और हम लोग है उसमे २५ पुस्तको के लेखक का होना एक विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त करने का परिचायक माना जाना चाहिए। क्योकि इस तरह के लेखको की सख्या उगलियो पर गिनने लायक ही है। मै इनकी इस उपलब्धि पर अपना हार्दिक अभिनन्दन ज्ञापित करना चाहूंगा। और भी अपने मन की एक बात यहाँ प्रकट कर दूँ—मै जब भी इनसे मिलता हूँ—और कोई बात होती है—तब इनके बोलने के पहले इनके चेहरे पर एक मुस्कराहट खेलने लगती है—इनकी आधी से ज्यादा बात तो यह मुस्कराहट ही कर लेती है।

इस तरह के व्यक्तियों के अभिनन्दन के अवसर पर दूसरे लोगों की तरह मेरी भी उत्कट इच्छा होती है कि मैं इनके सौ वर्ष जीने की, शतायु होने की कामना ज्ञापित करूँ पर मैंने एक बार पढा था—महात्मा गांधी के ७० वें जन्म दिन पर महामना मदनमोहन मालवीय ने उन्हे टेलीग्राम द्वारा शुभकामना भेजी कि आप शतायु प्राप्त करें। तो बदले में गांधी जी ने उन्हे जो टेलीग्राम भेजा उसमे विनोद मे लिखा—आपने तो एक ही झटके मे मेरे २५ वर्ष कम कर दिये।

बस इसी बात को ध्यान मे रखते हुए मैं सख्याओ मे नही बंधकर इनके सुदीर्घ जीवन की कामना करता हूं। हाँ यह मुझे विश्वास है कि ये ता-उम्र अपने को पूर्णतया स्वस्थ रखेंगे। यह गुर उनको बखूबी मालूम है। □

स्वस्थ जीवन के जीवंत प्रतीक

□ □

विनायकप्रसाद हिम्मतसिंहका

जीवन-प्रकृति और परमात्मा की दी हुई सबसे अनमोल निधि है। भगवान शकराचार्य ने कहा है कि जीवन को शुभ और अशुभ मार्ग पर ले जाना मनुष्य के अपने विवेक पर निर्भर करता है। जो लोग जीवन को अधिक सुन्दर, सार्थक और उज्जवल बनाने का प्रयास करते हैं वे ही सत्पुरूष कहलाते हैं। जीवन को सौन्दर्य, क्रियाशीलता और क्षमता प्रदान करता है उत्तम स्वास्थ्य। इसकी सिद्धि प्राप्त करने वाला तपस्वी होता है।

भाई धर्मचन्दजी ऐसे ही तपस्वी है। वे 'स्वस्थ जीवन" के जीवत प्रतीक है। मेरे लिए तो वे सदा प्रेरणा के स्त्रोत रहे हैं। मैंने भी अपने जीवन मे उत्तम स्वास्थ्य की सिद्धि के लिए उसी मार्ग पर चलने की चेष्टा की है, जिसपर अविराम चलते रहकर वे अस्सी वर्ष की आयु पूर्ण कर लेने पर भी शारीरिक और मानसिक ऊर्जा से सम्पन्न हैं और उनकी क्रियाशीलता बनी हुई है।

भाई धर्मचन्दजी के मन मे युवावस्था से ही अपने जीवन को ऊँचाई की ओर ले जाने की महत्वाकाक्षा वलवती रही है। इन्होने इसके लिए मानव सेवा का कठिन पथ चुना, आदर्शो, सयम-नियम, नैतिकता और सदाचार के दुर्गम शिखरो पर चढने का प्रयास वरावर जारी रखा। सन् १९३० ई० मे वे प्रथम मारवाडी वायुयान चालक वने। इनका साहस, अदम्य उत्साह और दृढ आत्मविश्वास मुझे ही नही, उनके सभी परिचितो और स्नेही स्वजनो को आश्चर्य चकित, प्रभावित और अनुप्राणित करता रहा है।

प्राकृतिक चिकित्सा मे उनकी गहरी आस्था है। इस विशुद्ध भारतीय चिकित्सा पद्धति तथा शाकाहार को न केवल उन्होने अपने अध्ययन का सर्वाधिक प्रिय विषय वनाया, वल्कि विदेशो का भ्रमण करके इनके अधिकारी विद्वानो के विचारो का भी सकलन किया। भाई धर्मचन्दजी ने पूर्ण स्वस्थ और सक्रिय रहकर वहुत काम किया है। इनके अवदान से समाज की अनेक कीर्तिलब्ध सस्थाएँ उपकृत है। इन्होने प्राकृतिक चिकित्सा और स्वास्थ्य सम्वन्धी अनेक पुस्तकें भी लिखी है।

हमारे समाज के नवयुवको को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। मैं तो कहूंगा कि जिन्हे सर्वदा निरोग रहने और शतायु होने की इच्छा हो, वे उनका सान्निध्य प्राप्त करके इसकेलिए उनसे व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करें। उनके सद्‌गुणो के अनेकानेक प्रशसको मे से एक मैं भी हूं। मेरे प्रति उनके हृदय मे जो स्नेह भाव है, मैं इसका आदर करता हूं। इनका अभिनन्दन सर्वथा उचित है। अभिनन्दन का वास्तविक अधिकारी वही है जो जनसाधारण के लिए प्रेरणा का स्रोत और प्रकाश स्तम्भ वनने की असाधारण योग्यता से सम्पन्न हो। भाई धर्मचन्दजी का व्यक्तित्व ऐसा ही है। वे दीर्घायु हो और इनसे हमारा समाज आगामी वर्षों मे और अधिक लाभान्वित हो ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है।□

सदा बहार एक साथी

□ □

कालीकृष्ण रोहतगी

सुदर्शन व्यक्तित्व वाले धर्मचन्दजी पहली दृष्टि मे ही आदमी को अपनी ओर आकर्षित कर लेते है। मेरा उनसे परिचय बहुत पुराना है। बचपन से ही मुझे व्यायाम और खेल-कूद का बेहद शौक रहा है। बडाबाजार युवक सभा प्रारम्भ ही से हिन्दी भाषी युवको के लिए शारीरिक प्रशिक्षण का केन्द्र रहा है। मैं नियमित रूप से व्यायाम करने के लिए युवक सभा मे जाता था। और भी अनेक युवक साथी वहा व्यायाम और खेल-कूद मे भाग लेने आते थे। धर्मचन्दजी उन सबसे कुछ अलग विशेषता रखने वाले युवक रहे। उनके हसमुख चेहरे, सुन्दर शरीर, परिहासप्रिय स्वभाव, और उत्साहजनक व्यवहार के कारण मैं उनसे बहुत प्रभावित रहता था।

सन् १९४६ मे मैं कालेज-स्क्वायर स्वीमिंग क्लब का प्रधान मन्त्री बना। धर्मचन्दजी भी स्वीमिंग क्लब मे बराबर आते थे। वही इनके साथ घनिष्ठता

वढी। मै वहां पर सन् १९५२ तक मन्त्री रहा। क्लव का जो भी कार्यक्रम वनता उसमे धर्मचन्दजी सदा तन-मन-धन से मेरा साथ दिया करते। भोला खत्री क्लव का वहुत उत्साही कार्यकर्त्ता और अच्छा खिलाडी था। उसकी आकस्मिक मृत्यु से मेरे मन पर वहुत धक्का लगा। उसकी वेवा पत्नी की सहायतार्थ हमने सिनेमा शो करके रुपये इकट्ठे किये लेकिन थोडे दिनो वाद भोला खत्री की पत्नी ने अपना दूसरा विवाह कर लिया उसे सहायता की आवश्यकता नही रही। वे रुपये मेरे पास ही रह गये।

धर्मचन्दजी सन् १९५९ मे कालेज स्क्वायर स्वीमिंग क्लव के सभापति चुने गये। इन्होने एक ट्रस्ट वनाकर ट्रस्ट के नाम से वेंक मे रुपये जमा कर दिये। समय वीतता गया और रुपये वढकर ८८०० (आठ हजार आठ सौ) हो गये। फिर १९७३ मे भोला खत्री की यादगार मे वाटर पोलो खेलने का कालेज स्क्वायर के तालाव मे क्लव के सामने ही प्लेटफार्म और रेफरी प्लेटफार्म वना दिया गया। साथ ही भोला खत्री की पत्नी पुष्पा देवी, जिसने वे रुपये नही लिये थे, उसका नाम भी मार्वल पर अकित करवा दिया। इस प्रकार मैंने देखा कि धर्मचन्दजी सेवाभावी, ईमानदार, और हिसाव-किताव के वडे पक्के आदमी है।

धर्मचन्दजी स्वय तो व्यायाम, खेल-कूद और सामाजिक गतिविधियो मे भाग लेते ही दूसरे कार्यकर्त्ताओ मे भी अपने जैसा उत्साह भरने का प्रयास करते रहते। स्वय सीखने के साथ-साथ उसका प्रदर्शन करने की ललक भी इनके मन मे वेहिसाव रहती थी। इनका कहना था कि प्रदर्शन देखकर अन्य लोगो के मन मे व्यायाम के प्रति रुचि उत्पन्न होती है। जितने अधिक लोगो को हम स्वास्थ्य के प्रति सजग कर सकें उतना ही समाज वलवान और शक्तिशाली हो सकेगा। ये तो यह भी कहते है कि समाज को स्वस्थ और निरोग रखना है तो प्रत्येक नागरिक को नियमित व्यायाम के ऊपर अपनी दिनचर्या मे अनिवार्य ध्यान देना होगा। व्यायाम केवल शौक पूरा करने या मनोरजन का साधन मात्र नही है वल्कि हमारे सपूर्ण सुख, समृद्धि और भविष्य के विकास की आधार शिला है। स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मस्तिक, स्वस्थ परिवार, स्वस्थ समाज और स्वस्थ राष्ट्र। विकास की इस स्वस्थ प्रक्रिया को जवतक निष्ठापूर्वक स्वीकार नही किया जायेगा तवतक राष्ट्र निर्माण के समस्त प्रयास अधूरे ही रहेंगे।

सच तो यह है कि धर्मचन्दजी प्राकृतिक जीवन के प्रति समर्पित व्यक्ति है। प्राकृतिक जीवन और चिकित्सा पद्धति के विकास के लिए इन्होने अथक प्रयास और त्याग किया है। डायमण्ड हार्बर मे इन्होने अपने बगीचे की भूमि दान कर दी और भरपूर पैसा लगाकर प्राकृतिक चिकित्सा की स्थापना की जो आज भी नये नाम और नये उत्साह के साथ चल रहा है। इस सस्थान की स्थापना कर के धर्मचन्दजी ने अपने परिवार के लिये एक कीर्ति-स्तम्भ खड़ा कर दिया है। आनेवाली पीढियां धर्मचन्दजी के इस कार्य से सदा प्रेरणा लेती रहेगी।

पहला सुख 'निरोगी काया' के मत्र को सिद्ध कर दिखाने वाले धर्मचन्दजी अस्सी की उमर पार करके भी अभी तक नियमित रूप से युवक सभा मे जाते है और व्यायाम करते है। उनके इस युवकोचित उत्साह भरे जीवन को देखकर नयी प्रेरणा और ऊर्जा से हृदय भर जाता है और गर्व से माथा ऊँचा हो जाता है।

धर्मचन्दजी एक सच्चे मित्र और विश्वासी साथी है। इनके सम्पर्क मे रहने वाले व्यक्ति के पास निराशा तो कभी फटक भी नही सकती। मुझे याद है कारबार के बारे मे बातचीत चलने पर उन्होने मुझे स्टील फर्नीचर बनाने की सलाह दी। मै जितना फर्निचर बनाता था वे अपने शो-रूम मे रखवा लेते थे। और मुझे पेमेन्ट कर दिया करते थे।

व्यापारिक लेन-देन मे इतना साफ-सुथरा व्यवहार रखनेवाला आदमी मैंने अपने जीवन मे दूसरा नही देखा काम को समय पर करना और सलीके से करना इनका स्वभाव है। अपने मृदु व्यवहार और सही व्यवहार के कारण धर्मचन्दजी दूसरो से काम करवा लेने की कला मे भी माहिर है। मैने कभी किसी कर्मचारी को इनसे नाराज होते नही देखा।

इन्द्रधनुषी छटा लिए धर्मचन्दजी के जीवन के अनेक रग है। प्रसिद्ध हवाबाज बनकर इन्होने मारवाडी समाज के सामने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। कलकत्ता कारपोरेशन के निर्विरोध काउन्सिलर चुने गये। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी और अनेक सामाजिक संस्थाओ के पदाधिकारी रहकर शानदार काम किए।

एम० पी०, और एम० एल० सी० चुने गए। अनवरत सेवा-कार्यों का दीर्घ-कालीन कार्यक्रम इनके जीवन से सम्बन्धित अनेक संस्मरण मेरी स्मृति के आकाश मे समय-समय पर उद्भाषित होते रहते है, उन सबको लिख पाना मेरे लिए सम्भव नही है। मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि धर्मचन्दजी जैसे कर्मवीरो की आज समाज को नितात आवश्यकता है। मेरी कामना है कि वे सौ वर्षों वाद भी इसी प्रकार जवान रहकर युवको का मार्ग दर्शन करते रहे। □

वज्र-पुरुष

□ □

राधाकृष्ण सोंथलिया

श्रद्धेय धर्मचन्दजी का सम्बन्ध मेरे परिवार से सात दशक से भी अधिक से है। ये मेरे पिताजी की उम्र के है। बाल्यावस्था मे काफी चर्चाएँ हमारे परिवार मे हुआ करती थी। ये उस समय समाज मे प्रगतिशील विचारो के माने जाते थे तथा समाज के प्रथम हवाई जहाज चालकों मे थे। उस समय के हिसाब से यह काफी हिम्मत एव लगन का काम था। आज से करीब ३० वर्ष पहले सुबह बडाबाजार युवक सभा मे ये अचानक आये। उस समय मैं तथा भाई मदनलाल भावसिंहका और भी कई साथी व्यायाम कर रहे थे। इन्होने अपनी इच्छा व्यायाम करने के लिए जाहिर की। हमलोगो को कुछ अटपटा लगा कि इस उम्र मे ये क्या व्यायाम करेंगे। खैर, इन्होने नियमपूर्वक आना शुरू किया एव सिर्फ व्यायाम ही नही, एक पहिये की साइकिल चलाना, दो पहिए को साइकिल पर सरकस वाले जो खेल दिखाया करते है, करना सीखा। साथ

ही तार पर चलना, छाती पर पत्थर रखकर रॉड कटवाने का अभ्यास किया। एक वार हमारा वार्षिक प्रदर्शन हो रहा था, उस दिन के सभापति स्वर्गीय मूलचन्दजी अग्रवाल "विश्वमित्र" के मालिक थे। धर्मचन्दजी ने छाती पर पत्थर रखकर रॉड कटवाने का प्रदर्शन किया। उस प्रदर्शन के समय इनके पिताजी और माताजी भी उपस्थित थे। जव धर्मचन्दजी की छाती पर पत्थर रखकर रॉड कटवाने के लिए हैमर मारे जाने लगे तव, (माता का हृदय तो माता का होता है) इनकी माताजी विह्वल होकर कहने लगी "मेरे लडके को क्या कर रहे हो।" खैर प्रदर्शन तो सानन्द सम्पन्न हो गया। फिर मूलचन्दजी ने धर्मचन्दजी को ऐसे खतरनाक प्रदर्शन करने के लिए मना कर दिया।

पर ये हमारे वार्षिक उत्सवो मे पेरलल वार, वेंच प्रेस आदि के खेलो का प्रदर्शन युवको के साथ किया करते थे। वड़ा वाजार युवक सभा मे जव इनडोर राईफल रेंज चालू हुआ तो इन्होने राइफल का निशाना सीखा और योग्यता हासिल की। इनकी इच्छा वरावर कुछ सीखने की रहती है। ये अपनी उम्र से छोटे लोगो से भी नम्रतापूर्वक पेश आते है और उनसे सीखते है। जव टेवल टेनिस और वैडमिन्टन हमारे यहाँ आरम्भ हुआ वह भी इन्होने सीखा। भारत सरकार द्वारा नेशनल फिजिकल एफिसियन्सी ड्राइभ प्रतियोगिता चलाई जाती थी। ७७-७८ की प्रतियोगिता मे धर्मचन्दजी ने ४५ वर्ष की उम्र के लोगो के साथ "तीन स्टार" जीता।

ये आज भी व्यायामशाला जाकर वारल वार, उठवैठ, दण्ड, चीनिंग, वेंच प्रेस, रीग और पेरलल वार, मुगदर चलाना, योगासन आदि कभी कुछ, कभी कुछ करते रहते है तथा दूसरो को सीखने की प्रेरणा देते रहते है। एक दिन उनसे चर्चा हो रही थी तो कहने लगे कि कडे व्यायाम करने का मेरा अभ्यास तो था ही पर पिछले दिनो पत्रो मे पढा कि अमेरिका के राष्ट्रपति श्री रीगन भी वेंच प्रेस आदि कड़े व्यायाम करते है इससे मुझे वल मिला। एक नई घटना पच्चासी साल मे घटी वताते थे कि उनके मकान के सामने कर्जन पार्क मे आर० एम० एम० वालो का लाठी चलाना सिखाने का कैम्प लगता है। धर्मचन्दजी की इच्छा लाठी सीखने को हुई। ये उनके अधिकारी से मिले और लाठी सीखने की इच्छा प्रगट की। उन्होने कहा कि आपकी तो उम्र हो गई है, आप क्या लाठी सीखेंगे। ये अधिकारी से बोले मेरी उम्र तो साठ की है। मैं तो वडावाजार

युवक सभा मे बराबर व्यायाम करता हूं। आपलोग मुझसे दस-पन्द्रह वर्ष छोटे होगे। आपको जो दाँव सीखने में पाँच दिन लगेंगे हो सकता है मुझे दस दिन लगे। इनके उत्साह को देखकर वे धर्मचन्दजी को लाठी सिखाने लगे। साल के अन्त मे धर्मचन्दजी के ८० वें जन्म दिन पर "सन्मार्ग" मे उन्होने इनका चित्र देखा तो कहने लगे आपने तो हमलोगो को अपनी उम्र कम बताई, आप तो अस्सी के हो गये। धर्मचन्दजी उनसे हँसकर बोले 'मैं आपको उम्र कम नही बताता तो आप मुझे लाठी चलाना थोड़े ही सिखाते।"

तैराकी मे भी इनकी इतनी अधिक रुचि रही है कि ये मेरे बच्चो को भी नित्य मोटर से ले जाया करते थे तथा तैरना सिखाते थे। ये जिस सस्था मे जुडते है उसकी तन-मन-धन से सेवा करते हैं।

धर्मचन्दजी ने आज सिद्ध कर दिया है कि व्यायाम करने की उम्र कभी समाप्त नही होती बल्कि बड़ी उम्र मे व्यायाम की अधिक आवश्यकता है। आजकल अधिकाश डाक्टर भी इस बात को मानने लगे है। वर्तमान मे धर्मचन्दजी बड़ाबाजार युवक सभा के सभापति है तथा कुछ अतिशयोक्ति न होगी यदि यह कहा जाए कि आज के दिन इनका अनुदान इस सस्था मे सर्वोपरि है एव इन्होने यह सिद्ध कर दिया है कि भारी व्यायाम सिर्फ नौजवानो के लिए नही बल्कि बडी उम्रवाले भी बखूबी कर सकते हैं। युवको को इनसे काफी प्रेरणा मिली है और मिलती रहेगी। भगवान् से प्रार्थना है कि ये शतायु हो तथा हमलोगो का मार्ग प्रदर्शन करते रहे। □

क्रांति के अग्रदूत

□ □

प्यारेलाल जैन

धर्मचन्दजी का नाम लेते ही एक ऐसा व्यक्तित्व सामने आ खडा होता है जो जीवन का प्रत्येक क्षण कार्य करते हुए जीता है। प्रति दिन सूरज उगता है और धर्मचन्दजी जहा होते है वहाँ से एक कदम और आगे वढ जाते हैं। कुछ करने के लिए उठना और कुछ करके सोना इनका नियम है। चरैवेती-चरैवेती के मत्र को क्रियान्वित करने वाला यह प्रगतिशील पुरुप आज की अकर्मण्य दुनिया को कुछ अजूवा लगे तो कोई अजीव वात नही।

अपनी स्मृति के झरोखे से झाकता हू तो मेरी आँखो के आगे धर्मचन्दजी का वह रूप स्पप्ट होने लगता है जव धर्मचन्दजी अपनी चालीसी मे भी पच्चीस-तीस के पूर्ण युवा लगते थे। गठा हुआ शरीर, मुस्कराता हुआ मुख मण्डल और चमकती हुई आँखे। जैन युवको की मण्डली मे अलग से पहचाना जाने वाला आकर्पक और लुभावना व्यक्तित्व।

हमारा परिवार पुराने विचारों का था और जैन की जगह नाम के सामने लिह्ला लिखा करता था। धर्मचन्दजी मेरे पिता की उम्र के बराबर के हे। आज से ५५ वर्ष पहले जब वे विदेश से लौट कर आये तब हमलोगो के परिवार वालो ने इन्हे जाति से बहिष्कृत करने का प्रयत्न किया पर वे नवयुवको के सामने सफल नही हुए। इस बीच नये मन्दिर मे चलने वाला बच्चो का स्कूल भी बन्द हो गया था। धर्मचन्दजी ने नवयुवको को लेकर आन्दोलन चलाया कि बच्चो के लिए यह स्कूल अवश्य खुलना चाहिए और बेलगछिया मन्दिर के बगीचे मे हो तो सोने मे सुगन्ध हो जाए। क्योकि २५ बीघे मे बने सुन्दर उद्यान मे पहले विद्यालय बने और आगे चलकर कालेज बन जाए। बच्चो को दूर-दूर से लाने के लिए बसें हों। साधारण स्थिति के बच्चे जो बस का भाडा नही दे सकते है वे ट्रामो से आ जाये। क्योकि सुबह बेलगछिया जाने वाली ट्राम खाली मिलती है और शाम को बेलगछिया से आने वाली ट्राम भी खाली रहती है। इसके अलावा वहा तालाब है जहाँ बच्चो को तैरने की शिक्षा दी जा सकती है। काफी खुली जगह है जहाँ बच्चे कई तरह के खेलकूद सीख सकते हे। मन्दिर है जहाँ बच्चे रोज दर्शन करने का अभ्यास कर सकते हे। यह स्थान केवल साल में ४-५ दिन कार्तिक उत्सव पर काम मे आता है। इस आन्दोलन मे मैं भी शामिल था पर समाज के मठाधीशो के कारण स्कूल बेलगछिया मे न बन सका पर तुलापट्टी मे बन गया जो बडी सफलता से चल रहा है। इसके अन्तर्गत बालिका विद्यालय अग्रेजी मीडियम का स्कूल भी बच्चो के लिए बन गया।

इसके बाद धर्मचन्दजी ने नया आन्दोलन छेड़ा। मन्दिरों का अधिकार जो पीढी-दर-पीढी एक ही सेठ के अधिकार मे रहता है वह न रहकर हर दो या पाँच वर्ष बाद चुनाव हो। साथ ही मन्दिर का खर्च और आमदनी का हिसाब भी जनता के सामने आवे और मन्दिरो की रकम सेठो मे जमा न रहकर बैंकों मे जमा हो क्योंकि जबतक सेठजी की स्थिति अच्छी रहती है और सेठजी कहलाते हे तब कोई उनसे रुपया नही चाहता मगर भीतर ही भीतर सेठजी की स्थिति डाँवाडोल होती है तब-तब लोग रुपया चाहते हे और वे दे नही पाते यानी मन्दिर के रुपये डूब जाते हे। इस आन्दोलन मे धर्मचन्दजी को सफलता मिली और नये मन्दिर की एक कमेटी बनी जिसका सदस्य मैं भी हूँ। इस तरह

उनका चुनाव होता है और हर दो या पाँच वर्ष वाद नये आदमी के हाथ उसके सचालन का भार आता है।

महावीर पुस्तकालय जिसे मरणासन्न अवस्था से उठाकर धर्मचन्दजी और उनके साथी भाडे के स्थान पर चलाते थे समाज का अपना जैन भवन वन गया तो धर्मचन्दजी चाहते थे पुस्तकालय उसमे जाये, पर पुराने विचार के लोग इसके विरुद्ध थे। धर्मचन्दजी को इसमे भी सफलता मिली। आज महावीर-पुस्तकालय जैन-भवन मे है और अच्छी तरह चल रहा है। सयोग की वात है उन्ही दिनो जैन भवन के ट्रस्टियो का चुनाव होने वाला था, पुराने विचार के लोग कार्यकर्ता की जगह पैसे वालो को चुनना चाहते थे किन्तु धर्मचन्दजी उस चुनाव मे गये भी नही थे। नवयुवको ने इनका नाम रखा और जव वोट लिया गया तो धर्मचन्दजी जीत गये, फिर तो इन्होने काफी धनराशि अपने ट्रस्ट से देकर जैन भवन का काफी सुधार किया।

धर्मचन्दजी जो भी कार्य करते है खूव सोच-समझ कर और पूरी निष्ठा के साथ करते है। मन्दिर मे दर्शन करने जाते है और धर्म मे गहरी आस्था रखते है। इतना होते हुए भी समाज मे कुरीतियो और अध विश्वासो से सदा दूर रहते है और आवश्यकता पडने पर डटकर विरोध भी करते हैं। वस्तुत धर्मचन्दजी क्रान्ति के अग्रदूत हैं। प्रारम्भ से ही वे सामाजिक व्यवस्थाओ और मान्यताओ मे युगानुकूल परिवर्तन के हिमायती रहे है। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, सास्कृतिक, साहित्यिक आदि जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नही है जो धर्मचन्दजी की कर्मभूमि न वन सके। जीवन को उन्होने पूरी समग्रता के साथ ही स्वीकार किया है। इतना सव करते हुए भी पद और प्रतिष्ठा के लिए व्यग्र होते मैंने उनको कभी नही देखा।

प्राकृतिक चिकित्सा जगत मे धर्मचन्दजी सरावगी एक सम्मानित और समर्पित नाम है। प्राकृतिक चिकित्सा को ये चिकित्सा नही एक स्वस्थ जीवन दृष्टि या जीने की सार्थक कला मानते है। दो वर्ष पहले जव मैं गम्भीर रूप से अस्वस्थ हुआ तो इन्होने मुझे प्राकृतिक चिकित्सा अपनाने का सुझाव दिया। इनके वताये मार्ग पर चलकर मुझे स्वास्थ्य लाभ हुआ। तवसे मेरे पूरे परिवार मे चिकित्सा की यही पद्धति प्रिय है।

मुझे यह कहने मे जरा भी सकोच नही है कि धर्मचन्दजी के सान्निध्य ने मुझे स्वस्थ और नीरोग जीवन के प्रति पूर्ण सजग कर दिया।

धर्मचन्दजी एक व्यक्ति विशेष होते हुए भी उस सारी मानव जाति के लिए एक विश्वास भरा आश्वासन है जो दीर्घ और स्वस्थ जीवन की आकाक्षा रखता है। यह एक सशक्त साक्षी है इस बात की कि सौ वर्ष बाद भी मनुष्य की कर्मणा-शक्ति को सचेत और सजग रखा जा सकता है।

डायमण्ड हार्बर मे प्राकृतिक चिकित्सा प्रतिष्ठान की स्थापना के लिए अपने बगीचे, रुपये और तन-मन का जो त्याग धर्मचन्दजी ने किया है वह मानव कल्याण की दिशा मे किया गया एक अनुपम उदाहरण है। मेरा लडका सुबह कर्जन पार्क, जिसका नाम आजकल सुरेन्द्रनाथ पार्क है, घूमने जाता है। उसने उन्हे अपने लड़के और पोते की उम्र के लोगो के साथ लाठी चलाने का अभ्यास करते देखा और आकर मुझसे कहा। उसे जरूर कुछ आश्चर्य हुआ इसीलिए उसने मुझसे कहा। पर मैं जानता था कि धर्मचन्द बराबर नई चीज सीखने के शौकीन है इसीलिए वे कोई भी कार्य करे, कोई आश्चर्य की बात नही है।

अनेक साहसिक कार्यों के प्रदर्शन मे प्रथम स्थान प्राप्त कर तथा पुरस्कृत होकर धर्मचन्दजी ने समाज के गौरव को ऊँचा उठाया है। विभिन्न संस्थाओ मे पदाधिकारी रहकर धर्मचन्दजी ने जो व्यापक सेवा कार्य किया है उन सबका उल्लेख कर पाना यहा मेरे लिए सभव नही है। इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि समाज इस इक्यासी वर्ष के प्रयोग सिद्ध युवा से स्वस्थ जीवन जीने की कला सीखे। □

एक अनोखा व्यक्तित्व

□ □

हरिशंकर द्विवेदी

श्री धर्मचन्द सरावगी से मेरा परिचय आज से लगभग ४० वर्षों पूर्व हुआ, जब वे मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के प्रधान मन्त्री थे। उन्ही दिनो कलकत्ता मे तत्कालीन "मुस्लिम लीग" के आह्वान पर पाकिस्तान की माँग को लेकर 'प्रत्यक्ष कार्रवाई' हुई थी, जिसके परिणामस्वरूप कम से कम ५ हजार व्यक्ति २-३ दिनो के भीतर मारे गये। उन दिनो की कुछ बातें मुझे आज भी याद हैं। "सोसाइटी" के कुछ कार्यकर्त्ताओ का विचार था कि कार्य बहुत बडा है और उसके लिये काफी धन की आवश्यकता होगी, लेकिन यदि मुसलमानो को सहायता दी गयी तो शायद धनसग्रह मे कमी आएगी। धर्मचन्दजी ने दृढतापूर्वक यह तय किया कि 'सोसाइटी' सहायता के प्रश्न पर जाति या धर्म का विचार नही कर सकती। यह कहकर काम चालू रखने के लिये अपने कोष से काफी रुपये सोसाइटी मे भेज दिये। सहायता का कार्य हुआ फिर तो उस कार्य के लिये

धन की सहायता की बाढ आ गयी । रुपये लेना और रसीद देना असम्भव हो गया। धर्मचन्दजी ने तय किया कि टेबुल पर सभी सहायतार्थी अपनी सहायता की रकम छोड जायें, क्योकि अलग-अलग रसीद लिखना सम्भव नही था। उनका दृढ विश्वास था कि सहायता की जो रकमे उस टेबुल पर पडी रहेगी, उन्हे चुराने की बात तो अलग है, कोई छू भी नही सकता। वैसा ही हुआ भी। रुपये बरसते रहे, लेकिन किसी ने एक पैसा भी उनमे से लिया नही। जो चार-छः व्यक्ति रुपये गिनने और रसीदे काटने मे व्यस्त होते, वे भी आहतो एव शरणार्थियो की सेवा मे लगे रहे। मनुष्यता विभाजित नही की जा सकती और सामूहिक विपत्ति के समय बुरे से बुरे लोग भी अच्छे बन जाते है—इन मान्यताओ को चरितार्थ होते मैने देखा।

कलकत्ता के बाद नोआखाली का दगा हुआ। धर्मचन्दजी ने नोआखाली जाने का अपना विचार प्रकट किया, तो यह आम धारणा पायी गयी कि 'सोसाइटी' के प्रधान मन्त्री का कलकत्ता में ही रहकर धन सग्रह करना तथा सहायता की योजनाओ को बल प्रदान करना अधिक सही कदम होगा। नोआखाली जाने के लिए एक टीम बनी, जिसमे मैं भी शामिल था उसमे अन्य व्यक्ति थे स्व० तुलसीराम सरावगी और भालचन्द्र शर्मा। जब यह टीम वापस आयी, तब धर्मचन्दजी ने कहा—"आपलोग मुझसे अधिक भाग्यशाली निकले।" उन्होने खतरो से खेलने को भी "भाग्य की बात" माना। दूसरी टीम मे धर्मचन्दजी प्रधान बनकर गये। सेवा कार्य के साथ वे बापू से वहाँ प्राकृतिक चिकित्सा की प्रेरणा लेकर आये और अपने पास से रुपये देकर प्राकृतिक चिकित्सा का विभाग खुलवाया।

अब भी, जब मै कलकत्ता आता हू, चौरगी मे ८१ वर्ष के इस नौजवान को अकडता हुआ, सामने से आता देखता हूं, तो मन प्रसन्नता से भर जाता है। दैनिक व्यायाम और प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति उनकी निष्ठा अनुपम है। जब कभी भारत मे प्राकृतिक चिकित्सा के प्रसार का इतिहास लिखा जाएगा, तब धर्मचन्दजी का नाम ऊपर की पक्तियो मे ही लिखा जायेगा। □

अद्भुत व्यक्तित्व के व्यक्ति

□ □

जमनालाल जैन

धर्मचन्दजी सरावगी का नाम मैंने तब सुना था जब मेरी आयु बारह-तेरह वर्ष की थी। यानी यह ५० वर्ष पहले की बात है। तभी यह सुना था कि ये प्रथम जैन वायुयान चालक हैं। फिर कुछ समय बाद वर्धा में आपके पिता वैजनाथजी सरावगी के भी दर्शन हो गये। मुझे याद है कि उनको इस बात की बडी लगन थी कि जिन मन्दिरो की भित्तिया वढियाँ पेंट की हुई हो और उनपर धर्म-वचन, दोहे आदि लिखे रहे ताकि दर्शनार्थी उन्हे पढकर कुछ ग्रहण कर सकें। नित्य पूजा-पाठ के गुटके भी वे छपाते थे और वितरण करते रहते थे।

धर्मचन्दजी से मेरा भारत जैन महामण्डल के नाते पत्र-व्यवहार भी होता रहा। महामण्डल की एकता विषयक प्रवृत्तियो मे तथा 'जैन जगत' मासिक मे उनकी हार्दिक दिलचस्पी शुरू से ही रही है। लेकिन उनका निजीतौर पर, प्रत्यक्ष परिचय बहुत बाद मे हुआ। अब यह स्मरण नही है कि सर्वप्रथम परिचय

कब कहाँ और किस सिलसिले मे हुआ। इसका कोई प्रयोजन भी अब नही है। जब साक्षात् परिचय मे आया, तब मैं इनके व्यक्तित्व से अभिभूत-सा हो गया।

यकीन कीजिए, ऐसा अद्भुत, शिष्ट, स्वस्थ, व्यवस्थित व्यक्तित्व बहुत कम देखने मे आता है। जो व्यक्ति ७५ और ८० वर्ष की अवस्था मे भी जवान बने रहने की साधना कर सकता है, उसका सयम पराकाष्ठा का ही हो सकता है। इसे शारीरिक आसक्ति कहना अध्यात्म का अपमान करना है। एक बार ये कलकत्ता से दिल्ली जा रहे थे। मै दूध लेकर सबेरे मुगलसराय स्टेशन पहुचा। जानता था कि ये प्राकृतिक जीवन और चिकित्सा के जाने-माने प्रयोगवीर है, फिर भी दूध तो ले ही लेगें। लेकिन इन्होने गरम किया हुआ दूध लेने से साफ इन्कार कर दिया। आरामबाग (प० बगाल) मे सर्व सेवा संघ का अधिवेशन था वहां मेरी इनसे भेंट हुई। दो-तीन दिन साथ रहे, काफी चर्चा हुई। भोजन के विषय मे इनके नियम आश्चर्य मे डाल देते थे। कब, कितना, क्या खाना है, सब सिद्धात और स्वास्थ्य के आधार पर। हम चाहते थे कि सर्व सेवा सघ प्रकाशन से प्राकृतिक चिकित्सा की विभिन्न रोगो पर पुस्तक-माला निकले। धर्मचन्दजी से चर्चा हुई और उन्होने ऐसी पुस्तके लिख देने का आश्वासन दिया। हमे हार्दिक प्रसन्नता है कि उन्होने पथरी, चर्मरोग, बवासीर, लकवा, ब्लड प्रेशर, दमा, हार्निया आदि रोगो पर पुस्तकें लिखी और प्रचारित भी की। सैकडो रोगियो का उपचार भी आपने किया है। ऐसे उपचारो के सस्मरण भी आपने लिख रखे है। यह पुस्तक प्रकाशित होनी चाहिए। प्राकृतिक चिकित्सा की इनकी लगन सचमुच आश्चर्यजनक है। ये इसकेलिए हजार काम छोडकर तैयार हो जायेंगे।

इनके पिताजी के नाम पर एक ट्रस्ट भी है, जिसके द्वारा अभावग्रस्त होनहार छात्रो को छात्रवृत्ति आदि दी जाती है। रोगियो की भी सहायता की जाती है। सन् १९६७ की बात है। हमारे मकान के काम मे हाथ लगा था। एक दिन अचानक हमारे घर मे चोरी हो गयी। बहुत नुकसान हुआ। आर्थिक स्थिति पहले ही नाजुक थी, इस चोरी से तो बधिया ही बैठ गयी। लोगो ने तरह-तरह की सलाह दी, सारनाथ छोड देने तक की सलाह दी। धर्मचन्दजी तक भी चोरी का समाचार पहुंचा। इन्होने तत्काल कुछ राशि का चेक भेज दिया। मैं ऐमी सहायता नही चाहता था; उचित भी नही था आखिर इन्होने लिखा कि इसे मैं स्वीकार कर लू, अन्यथा दु ख होगा इनके इस निरपेक्ष, सहज स्नेह का मूल्य मैं

कैसे आँक सकता था। समय की उस साधारण-सी सहायता से मेरा मनोबल कितना बढा, कहना कठिन है। बिना मागे, कहे-सुने जो काम हो जाता है, वह अपने मे बडी उपलब्धि है।

कभी-कभी मैं सोचता हूं कि एक व्यस्त और दायित्वो से लदा व्यवसायी या उद्योगी व्यक्ति समाज सेवा के बहुत सारे कार्य कैसे कर लेता है। कभी-कभी किसी विशिष्ट महानुभाव के विषय मे ये इतनी बातें पूछ लेते है कि पूछो मत इसका मतलब यह है कि ऊपरी स्तर पर नही, भीतर की टोह लेकर ये सम्पर्क बनाते है और उसके उपयोग मे आते है।

धर्मचन्दजी सरावगी के कार्य-कलापो से, मित्रता से, सेवा भावना से अनेक लोगो ने, सस्थाओ ने प्रेरणाएँ ली है, लेती रहती है। इस अभिनन्दन के द्वारा हमारे देश की तरुण पीढी भी स्वस्थ प्रेरणा लेगी, इसमे सन्देह नही।

अपने बुजुर्ग (जवान) मित्र का शत-शत अभिनन्दन। □

योजनाबद्ध व्यवस्थित जीवन

□ □

राधाकृष्ण बजाज

भाई धर्मचन्दजी सरावगी से मेरा निकट का परिचय रहा है। मुझे वे परिवार का एक सदस्य ही मानते हैं। पू० ढेबरभाई के साथ तथा अकेले में भी अनेक वर्ष उनके यहा ठहरता था। उनके व्यवस्थित जीवन की मुझ पर बहुत बड़ी छाप है। वे नियमित चर्खा कातते हैं तब देखा कि उनका चर्खा साफ-सुथरा व्यवस्थित, जहां का तहा, रखा जाता था। बार-बार न टूटे इसलिए माला हवाई जहाज के रेशम के डोरे की बनाई थी। मुझे भी एक-दो माला दी थी। वे आसन सीखने के लिये जाते थे। नित्य नियमित व्यायाम करते हैं। सप्ताह मे एक दिन का उपवास रखते हैं। खान-पान नियमित, प्राकृतिक आहार, स्वास्थ्य उत्तम।

प्राकृतिक चिकित्सा मे आपकी बहुत अधिक दिलचस्पी रही है। कलकत्ते मे प्राकृतिक चिकित्सा का एक विद्यापीठ इन लोगो ने स्थापित किया था। इन्ही की तरह से इनके साथी राधाकृष्णजी नेवटिया का जीवन भी बहुत नियमित

रहा है। ये लोग घडी के अनुसार बराबर चलते थे या कहिए इनके जीवन से घड़ी का बोध हो सकता था। ऐसे लोग जो समय के नियमित होते हैं, उनके स्वभाव मे कुछ आग्रह आ जाता है। बिना आग्रह के नियमितता चल भी नही सकती। इसे पू० विनोवाजी गुण रक्षणार्थ दोष कहते थे। ब्रह्मचारी लोग अक्सर तेज स्वभाव के क्रोधी और आग्रही देखे जाते है। उनमे आग्रह का यह दोप ब्रह्मचर्य के रक्षणार्थ होता है। धीरे-धीरे जब ब्रह्मचर्य स्वाभाविक हो जाता है तब आग्रह का दोष कम हो जाता है।

प्राकृतिक उपचार विद्यापीठ मे अनेक तेजस्वी लोग इक्ट्ठे हुए थे, उम्मीद थी कि एक आदर्श विद्यापीठ चलेगा। लेकिन इन तेजस्वी व्यक्तियो के आग्रह को स्नेह न मिला, आग्रह टकरा गये, विद्यापीठ का सपना क्षीण हो गया, वह अब चिकित्सालय के रूप मे चल रहा है।

भाई धर्मचन्दजी ने प्राकृतिक चिकित्सा पर अनेक किताबें लिखी है। उनमे से कई किताबें सर्व सेवा सघ प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित हुई है। साररूप में लिखी ये किताबें काफी चल रही है।

भाई धर्मचन्दजी का जन्म और मेरा जन्म एक ही साल का है। उनका जन्म रांची के ठण्डे प्रदेश में हरीभरी भूमि मे हुआ है। मेरा जन्म राजस्थान के सीकर जिले मे आषाढ की गरमी मे हुआ है। इस कारण दोनो के स्वभाव मे थोडा-सा अन्तर है। नियमितता, आसन आदि के कारण आज भी वे स्वस्थ है। उनकी सेवाएँ २० साल तो सहज ही मिल सकती है। अभी तो वे जवान हैं, मैं भी अपने को जवान ही मानता हूं, फिर भी वे मुझमे जवान हैं। हम चाहते है कि वे शतायु हो एव राष्ट्र की सेवा मे योग देते रहे। कलकत्ते मे पू० प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका ही ऐसे व्यक्ति है जो हमसे १० साल बड़े होने पर भी जवान है। नियमित जीवन का प्रभाव है।

गोसेवा मे इनकी पूरी रुचि रही है। केन्द्रीय गो-सवर्द्धन कौंसिल के ये सदस्य रहे है। इनका घर मे गोदूध लेने का आग्रह रहा है।

इनके नियमित जीवन क्रम से सदा ही प्रेरणा मिलती है। राजस्थानी समाज मे इनकी-सी नियमितता और विचारशीलता, प्राकृतिक आहार-विहार और आसन-व्यायाम आदि चलने लगे तो राजस्थानी समाज हर प्रकार से अपनी भी उन्नति करेगा और देश को भी उन्नत बनाएगा। □

एक अच्छे दानी

□ □

सुखबीर सिंह

जब मैं निसर्गोपचार आश्रम उरूलीकाचन मे जुलाई १९५९ मे आया तब प्राकृतिक चिकित्सा परिषद का गठन हो चुका था और उस समय इस परिषद के अध्यक्ष पू० बालकोबाजी थे। दूसरे सदस्यो मे धर्मचन्दजी का नाम भी था। उस समय "स्वस्थ जीवन" नामक पत्रिका का सम्पादन भी धर्मचन्दजी ही कर रहे थे। इस पत्रिका के द्वारा भी इनके नाम की चर्चा होती थी। बीच-बीच मे पू० बालकोबाजी धर्मचन्दजी के विषय मे बताया करते थ। परन्तु इनके प्रत्यक्ष दर्शन नवम्बर १९५९ मे यहाँ आश्रम मे ही हुए। जब यहाँ प्राकृतिक चिकित्सा परिषद की कार्यकारिणी की मीटिंग हुई थी। इस मीटिंग मे श्री यू० एन० ढेबर, मदालसा बहन, डा० विठ्ठलदास मोदी, डा० वैंकट राव, डा० एस० जे० सिंह, डा० खुशीराम 'दिलकश', डा० सिधवा, डा० डी० एन० शाह आदि आदि भी थे जिनका नाम सुनते थे। उन सबसे मुलाकात हुई और

परिचय भी हुआ। धर्मचन्दजी के साथ-साथ राधाकृष्णजी नेवटिया का नाम भी था और वे भी इस मीटिंग मे आये थे। इस मीटिंग मे जितने भी सज्जन आये थे उनका स्वास्थ्य सामान्य था परन्तु धर्मचन्दजी का शरीर स्वस्थ तो था ही सुडौल भी था और चेहरे पर तेज की आभा थी। कुछ इस कारण से और कुछ इस कारण से भी कि इस मीटिंग का जो भी खाने-पीने का खर्च हुआ था वह धर्मचन्दजी ने ही दिया था सो इनका याद रह जाना एक विशेष वात हुई थी। पू० वालकोवाजी अपने दानियो का नाम वीच-वीच मे लेते थे उनमे मीटिंग का सारा खर्च इन्होने उठाया इसका भी गुणगान वरावर करते थे और आभार मानते थे कि धर्मचन्दजी ने आश्रम पर भार न पड़ने दिया।

इसके वाद धर्मचन्दजी का प्रत्यक्ष दर्शन अप्रैल १९६६ मे हुआ जव मैं प्रकृति निकेतन देखने सपत्नीक कलकत्ता गया था। उस समय डाक्टर शरण प्रसादजी नही थे। उस समय इनकी दिनचर्या, इनका खानपान देखकर प्रत्यक्ष लगा कि सच्ची प्राकृतिक चिकित्सा वे ही कर रहे है। वाद मे इनसे भेंट लखनऊ प्राकृतिक चिकित्सा अधिवेशन मे हुई जव उस अधिवेशन का उद्‌घाटन भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति वी० वी० गिरिजी ने किया था। यह जुलाई १९७३ की वात है। उस अधिवेशन मे मैंने प्राकृतिक चिकित्सा की मर्यादाएँ वताई थी और वीमारियो को कार्मिक (Functional) और अवयवीय (Organic) मे वर्गीकरण करके समझाने की कोशिश भी थी कि किन-किन अवस्थाओ मे प्राकृतिक चिकित्सा काम कर सकती है। इस विचार को धर्मचन्दजी ने पसन्द किया और मुझे इसके लिए सराहा भी था। परन्तु मैंने तो इसे एक आशीर्वाद ही माना था। इसके वाद से शायद इनके दर्शन नही कर सका हूं। वीच-वीच मे पत्र आते है और विचारो का अदान-प्रदान होता है, खुशी होती है कि इस आयु मे धर्मचन्दजी प्राकृतिक चिकित्सा के प्रेरणा स्रोत वने हुए हैं।

धर्मचन्दजी ने प्राकृतिक चिकित्सा के मर्म को समझा है और उसी पर चलकर आज ८१ वर्प मे भी युवक हे। यह प्राकृतिक चिकित्सा या पद्धति का ही फल है। उन्होंने जो लिखा है, पढा है उसे अपने जीवन मे उतारा है, अपनाया है और सिद्धातो का जजाल अपने ऊपर न रखकर खुद सिद्धान्त वने हैं जो स्वस्थ जीवन का मूल है। उनके विपय मे ७-८ साल पहले भी पढा था कि अपने से कम वयस्कों के साथ व्यायाम मे इन्होने भाग लिया था और ईनाम प्राप्त किया था। आज

प्राकृतिक चिकित्सा जगत मे कुछ इनेगिने ही ऐसे व्यक्ति हैं जो प्रेरणा दे सकते है। प्राकृतिक चिकित्सको को इनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए और उसीके अनुसार अपना जीवन वे ढाले। मुझे काफी बड़े लोगो के जीवन देखने को मिले है। धर्मचन्दजी भी उनमे से एक है और हमारे प्रेरणा स्रोत है। शुरू मे प्राकृतिक चिकित्सा को जिन कुछ व्यक्तियो ने प्रारम्भ किया था उनका जीवन था कि काफी काम कर गये—आज प्राकृतिक चिकित्सा मे सैकडो लगे है पर जीवन के अभाव मे कुछ कर नही पा रहे हैं। जो आज प्राकृतिक चिकित्सा के डाक्टर बनने की कोशिश मे है परन्तु प्राकृतिक चिकित्सा मे जीवन कैसा हो इसका उन्हे भान नही है। जब तक यह नही होगा प्राकृतिक चिकित्सा अधूरी लगेगी और इसका प्रसार धीमा होगा। यह प्रेरणा—जीवन की प्रेरणा सब वे धर्मचन्दजी से लें। □

कीर्तिवान् व्यक्तित्व

□ □

जयदेव मालपुरी

कर्मवीर सरावगीजी से मेरा परिचय बहुत पुराना होते हुए भी पिछले दशको से कुछ निकटतम और घनिष्ठ-सा हो गया। उसका कारण सरावगीजी द्वारा निरौषध (प्राकृतिक) चिकित्सा पद्धति मे अर्पित सेवापूर्ण जीवन है। मैं भी अपनी संस्था निरामय योग सगम के माध्यम से निरौषध चिकित्सा पद्धतियो की उपासना मे रत हू, और इसी कार्य हेतु सरावगीजी से समय-समय साक्षात्कार होता रहता है। साक्षात्कार के इस परिवेश मे सरावगीजी के व्यक्तित्व और कृतित्व से मैं प्रभावित हुआ। उसी आदर्शमय प्रभावशाली व्यक्तित्व के सस्मरण अपने तुच्छ शब्दो मे अर्पण करते हुए मैं यह कहूंगा कि सरावगीजी महात्मा गांधी, लुई-कुने तो है ही नही जिन्होने प्राकृतिक जगत मे अपनी अक्षुण्ण अमरता को प्राप्त किया। परन्तु यह नि.सन्देह है कि सरावगीजी मे उपरोक्त दोनो महापुरुषो के आदर्श जीवन की छाया

अवश्य है। छाया ही सुख और विश्रान्ति का मुख्याधार है। सरावगीजी का मौलिक जीवन चरित्र राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक व साहित्यिक स्तर पर बने विशाल सुखद भवन की भाति है।

आज के परिवर्तनशील अर्थ प्रधान युग मे जब सासारिक उन्नति व उपादेयता का बोलबाला है और जहाँ धार्मिक तथा सामाजिक विचार-भावना अनावश्यक समझी जाती है, वहाँ सरावगीजी दोनो ही स्तरो पर पूर्ण प्रोत्साहन देते हुए कर्मक्षेत्र मे डटे हुए है। आज के युग मे महापुरुषो की कोई कमी नही है और अतीत मे भी नही थी। महर्षि अरविन्द, महात्मा गाधी, महामना मालवीय, युगपुरुष टण्डन, सन्त विनोवा जैसे अनेक महापुरुषो ने मानव कल्याण के लिये धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक साहित्यिक क्षेत्रो मे अपने जीवन को समर्पित किया है। ये सभी महान अनुकरणीय होते हुए भी आज के युग के युवको के लिए उपरोक्त महापुरुषो द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलना बहुत कठिन है। लेकिन सरावगीजी ने "कर्मण्येवाधिकारस्ते"— भगवान श्री कृष्ण के इस आदर्शमयी प्रेरणा के द्वारा पूर्ण निष्ठा, सच्ची लगन-रूपी कर्मठता से यह सिद्ध कर दिया है कि एक साधारण व्यक्ति भी उपरोक्त महापुरुषो के आदर्शो का अनुकरण करते हुए सासारिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, सामाजिक, साहित्यिक क्षेत्रो मे उन्नत पथ पर अग्रसर हो सकता है। यह उनकी योग्यता, अध्यवसाय, कार्यक्षमता व व्यवहार से स्पष्ट हो जाता है।

सरावगीजी का जीवन सदा ही सादगी पूर्ण, नियमित व अध्ययनशील रहा है। जिसके बल पर वे अपनी शारीरिक स्वस्थता से सम्पन्न, सुन्दर दैहिक गठन और चिर यौवनपूर्ण युवक-से दिखाई पडते है। जिसका मुख्य कारण है नित्य नियमित व्यायाम, आसन सन्तुलित आहार, सादा विचार व कल्याण-कारी स्वास्थ्य-साहित्य का अध्ययन। उन्होने अपने जीवन को निरौषध (प्राकृतिक) चिकित्सा पद्धति पर ही अवलम्बित रखा है। कभी भी क्रूर एव विषाक्त औषध का सेवन नही किया। आप अपने जीवन मे राजनैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एव व्यावसायिक क्षेत्रो का सम्पादन बडी कुशलता के साथ करते रहे है। पर एक क्षेत्र ऐसा भी है जिसकी चिन्ताधारा से वे आज भी चिन्तित है। वह है औषध जगत मे भटके हुए मानव का उद्धार। उन्होने मानव स्वास्थ्य नीति को अपने जीवन का मुख्य अग बनाते हुए प्राकृतिक या

निरौपध विज्ञान को सर्वोपरि रखा। प्राकृतिक विज्ञान को सर्वोपरि रखा। प्राकृतिक विज्ञान का प्रचार-प्रसार करने के लिए जो भी हो सका सभी उपाय किया। साहित्य प्रकाशन, प्राकृतिक साहित्य का वितरण, प्राकृतिक विज्ञान की सस्थाओ को आर्थिक प्रोत्साहन, प्राकृतिक चिकित्सालयो का निर्माण, कठिन व असाध्य रोगियो को वनस्पति व प्राकृतिक पद्धतियो का सेवन कराना आदि।

सरावगीजी के कथनी और करनी मे कोई अन्तर नही देखा गया। वे जो कुछ करते है वैसा ही दूसरे को करने के लिये प्रेरित करते है और यही कारण है कि उनके पास जाने वाला व्यक्ति उनके वास्तविक व व्यवहारिक व्यक्तित्व से प्रभावित होता है और उनके मार्गदर्शन को अपने जीवन मे उतार लेता है। इनके आदर्श जीवन का अनुकरण आधुनिक युग के नवयुवको के लिये सुगम, लाभप्रद व कल्याणकारी है।

गोस्वामी तुलसीदासजी के शब्दो मे—"नीति प्रीति पुरुपारथ स्वारथ कोउ न राम सम जानु यथारथ।" यह उदाहरण सरावगीजी के जीवन की उपादेयता है। प्राय यह देखने मे आया है कि असाधारण व्यक्ति किसी एक क्षेत्र मे अपनी प्रतिभा के कारण जनसाधारण मे ऊँचे उठता है पर सरावगीजी एक ऐसा व्यक्तित्व है जो अगुलियो पर ही गिना जा सकता है। ऐसे व्यक्ति बहुत कम होते है जो विकट परिस्थितियो का सामाना कर विरोधी दिशाओ मे विचरण करते हुए विभिन्न विपयो मे एकता और सन्तुलन बनाये रखकर सम्पन्नतापूर्ण सफलता के लक्ष्य को प्राप्त कर सके। उनमे एक सरावगीजी हैं।

अन्त में मैं प्रकृति प्रेमी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्ववाले धर्मचन्दजी सरावगी का अभिनन्दन करते हुए परब्रह्म परमात्मा मे उनके सुखद दीर्घ जीवन की शुभेच्छापूर्ण कामना करता हूँ। □

जिन्दादिल इन्सान

□ □

वैद्य रामाधीन शर्मा "वशिष्ठ"

सफलता के लिए उद्योग करने वालो के सम्मुख कठिनाइयो का आना स्वाभाविक है। मनुष्य को चाहिए कि उनसे घबराना छोडकर अपने उद्यम और उद्योगशक्ति मे अटूट विश्वास रखे। पुरुषार्थ एव परिश्रम के तेज से ही जीवन मे चमत्कार उत्पन्न होता है। साहस एव सकल्प द्वारा ही वाधाएँ दूर होती है। अडिग विश्वास और अदम्य उत्साह द्वारा ही लक्ष्य प्राप्त होता है। सैद्धान्तिक आदर्शों के साथ अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर अभियान करने वाले ही पुरुषार्थी पुरुष जीवन मे पूर्ण सफलता प्राप्त करते है तथा लोक मगल कार्य करते हुए समाज को आदर्श एव गौरवमय नेतृत्व प्रदान करते है।

भाई धर्मचन्दजी सरावगी को मै विगत तीन दशको से भी अधिक समय से जानता हूं। उनका जीवन उपरोक्त वैचारिक त्रिवेणी से पूर्णतया ओतप्रोत है। यही कारण है कि महानगर की प्रतिष्ठित सभी सामाजिक सस्थाओ को उन्होने

समय-समय पर अपना सफल नेतृत्व प्रदान किया है। आरोग्यमय जीवन के लिए तो वह समाज मे स्वास्थ्य चर्चा होने पर उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत किए जाते है। अपने सघर्पमय जीवन मे उन्होने हमेशा ही अदम्य उत्साह के साथ कार्य किया एव लक्ष्य की प्राप्ति की। चाहे घरेलू कार्य हो, चाहे व्यापार, चाहे सामाजिक, जिस कार्य को भी लिया नई दिशा दी। आज हजारो हजार कार्यकर्ता सरावगीजी से प्रेरणा लेकर अपने आपको स्वस्थ रखे हुए है तथा सतत व्यायाम करते है।

मुझे याद है एक वार सरावगीजी ने प्राकृतिक चिकित्सा परिषद की वैठक मे कहा था कि जिस व्यक्ति ने कार्य करने का दृढ सकल्प कर लिया है उसे कोई भी वाधा नही रोक सकती वह अपने लक्ष्य पर पहुचेगा ही। उदाहरण के तौर पर प्राकृतिक विद्यापीठ (डायमण्ड हार्वर रोड) एव वडावाजार युवक सभा उसी दृढ सकल्प की देन है। नौजवानो के प्रेरणाश्रोत सरावगीजी "जीवेम् शरद शतम्" की युक्ति को चरितार्थ कर स्वास्थ्य के क्षेत्र मे क्रान्ति कर अन्यो के लिए "जिन्दादिल इन्सान" के रूप मे आदर्श है और रहेगें। □

एक गौरवमय जीवन

□ □

कुमारी सुशीला आत्मारामजी पडित

तपोनिष्ठ व्यक्तित्व तथा अभिनव चिंतन के धनी, मानव जीवन के उत्कर्ष मे जिसने रात-दिन सेवा को ही जीवन-लक्ष्य बनाया है और शारीरिक स्वस्थता, निरोगी काया और आरोग्यमय जीवन ही जिनका जीवन-ध्येय और लक्ष्य आज-तक रहा है, उनका अभिवादन और अभिनन्दन करते आनन्द होता है।

इनका जीवन एक आदर्श को लेकर है। आज जगत का इतिहास ऐसे पुरुषार्थी, कर्मयोगी के जीवन से सुवासित हो रहा है। इसकी दिव्य अभिव्यक्ति उनके स्वय के जीवन से व्यक्त होती है।

इस तपस्वी ने आजतक अपने जीवन और कार्य से एक ऐसा उदाहरण वर्त्तमान जनता के सामने रखा है कि इनके द्वारा आरोग्यमय सस्कृति का प्रकाश तो फैल रहा है, साथ ही दृढव्रती है ये दिखाई दे रहे है।

वे स्वय अपने जीवन की कृतार्थता अनुभव करते ही होगे पर हम भी आज जो इनके निकट के परिचय में आये है अपने को धन्य समझते है।

आजतक और आज भी इन्होने अपने क्रिया-कलाप से जो उदाहरण रखा है वह प्रशसनीय है। इसीमे समाज का हित दृष्टिगोचर होता है। इन्होने व्यायाम को जीवन का एक सर्वागीण कर्म और शिक्षण समझ कर अपनाया है।

इनके द्वारा धर्म-सेवा, समाज-सेवा, राष्ट्र-सेवा के साथ-साथ आरोग्य धारण करने की सेवा जो सतत हो रही है, इसे कौन नही जानता।

इनका प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेम और व्यायाम को जीवन मे स्थान देना प्रशमनीय है और इसी ने मेरे ऊपर जो प्रभाव डाला है वह कभी भुलाया नही जा सकता। मेरी पुस्तक "नैसर्गिक नारी सौन्दर्य" मे इन्होने जो सहयोग प्रदान किया है—वह अविस्मरणीय रहेगा।

निःस्वार्थ श्रद्धा और लगन से भरा कार्य सदैव सफलता प्राप्त करता है, कर रहा है।

स्वय एक उत्तम लेखक होने के नाते देश-विदेश मे तो भली प्रकार परिचित हुए ही बगाल तथा भारत की विभिन्न जातियो मे तथा संस्थाओ द्वारा सामाजिक, धार्मिक और राजकीय क्षेत्र मे भी सुयश प्राप्त कर रहे है।

इनके जीवन से पता चलता है कि ये सभी व्यवहारो मे कुशल तथा निपुण है।

आज हमारे देश को आवश्यकता है इन जैसे निःस्वार्थ, नवयुवक और युवतियो की, जो वर्त्तमान लोगो के जीवन को स्वस्थ, सुदृढ और आजीवन निरोगी रख सकने का मार्ग बतावें।

परम देव परमात्मा से यही प्रार्थना है कि उन्हे "शत जीव-शरदः" बनावे और इनके रचनात्मक जीवन और कार्य अमर बने रहे। मैं स्वय व्यायामप्रिय प्रचारिका हूं, इनका आदर्श त्यागी जीवन मेरे लिए गौरव का विषय है।

ओम् शान्तिः शान्तिः शान्ति □

मेरे चाचाजी

□ □

ज्ञानवती लाठ

चाचाजी के सम्बन्ध मे लिखने की कल्पना ने मेरे सारे अचेतन आवरण को खोल दिया। पुरानी बातो ने मूर्त रूप से स्मृति के झिलमिलाते पर्दे से झाकना आरभ कर दिया। बचपन की कुछ घटनाए ऐसी होती है जो बालमन पर अमिट छाप छोड़ जाती हैं।

मेरे चाचाजी कितने सौन्दर्य प्रेमी है ये कम लोग समझ पाते है। एक दिन ले गये पकड़ कर अपने हरिसन रोड के पीछेवाली गली के मकान के दो तल्ले पर। आह ! क्या स्नान घर था, कितना अपूर्व पत्थर, टाईल्स, फव्वारा, आधुनिक साधनो से युक्त, मुग्ध-सी देखती रही। पूछा आपने ये सब क्या लगाया है चाचाजी ! ऊपर पानी कैसे आ जाता है ? छत से नीचे तक घुमाकर उसका पूरा विवरण समझाया। समझ मे कुछ आया, कुछ नही। पर उस चमत्कार की इतनी छाप पड़ी की आज भी याद है।

चाचाजी का मन नए-नए आधुनिक उपादानो की तरफ दौडता रहता है। एक दिन अचानक आकर दादीजी को कहा कि 'मामीजी मैं इसको हवाई जहाज पर उडाने ले जा रहा हूं।" दादीजी अवाक। कुछ उत्तर दें उसके पहले ही उनके पास से उडाकर ले गए हवाई अड्डे तक। स्वयं चालक की जगह बैठे और मुझे पीछे बिठाकर सारे कलकत्ते के तीन चक्कर लगाए और मुझे बताते रहे कि कहा क्या है। किन्तु मेरी कल्पना तो राम-सीता की पुष्पक विमान पर लका से अयोध्या तक की यात्रा के सस्मरण मे खोई हुई थी।

हमारे परिवार मे शादी-व्याह के सारे छोटे-मोटे कार्य पुरानी प्रथा से होते थे। मेरी शादी के समय मेरी उम्र साढे बारह वर्ष की थी। मैं चाचाजी के साथ सीतारामजी सेकसरिया का भाषण सुनने एक सभा मे गई थी। वहाँ पर उन्होने पर्दा विरोधी प्रथा पर भाषण दिया था। मेरे किशोर मन पर उसकी गहरी छाप पडी और मैंने प्रतिज्ञा की कि कभी पर्दा नही करूगी। मेरा विवाह नरमदा प्रसादजी लाठ के पुत्र मोहनलालजी लाठ से तय हुआ था। नरमदाप्रसादजी गोला कोरणनाथ मे एक चीनी मिल के मैनेजर थे और वही रहते थे। मेरे पीहर वाले व्याह के लिए वहा गए थे। चाचाजी भी साथ गए थे। चाचाजी को भी मैंने अपनी प्रतिज्ञा की बात बताई। उन्होने कहा कि समय आने पर ठीक कर लेगे। शादी के समय हगामा हुआ और चाचाजी की सहायता से मेरी शादी बिना पर्दे के हुई।

दूसरा प्रसग था चाचाजी का दूसरा विवाह आरा के पारसदासजी जन के यहा तय हुआ।

ये लोग देशी अग्रवाल है। इनके यहाँ मारवाडी समाज की तरह पर्दे की प्रथा नही है। पर लडकी वालो ने सोचा मारवाडी परिवार मे सम्बन्ध किया है इसलिए चाचीजी को घूघट कर के विवाह मे बैठा दिया। फिर मेरे कहने पर चाचीजी का पर्दा हटाया और शादी बिना पर्दे के हुई।

बात यही शेष हो जाती मगर चार साल पहले इन्होने फोन पर मुझसे कहा- "सुना तुम अमेरिका जा रही हो।" मेरे हाँ कहने पर उन्होने कहा 'चूहा भगाने की मशीन" मेरे लिए एक लेती आना। मैं कुछ कहू उसके पहले उन्होने

बता दिया कि उसके पास उनका पूरा व्योरा है। अमेरिका मे मैंने जब अपने छोटे लडके राजा को बताया तो उसने कहा यहा ऐसी कोई चीज है ही नही। मैंने कहा जो भी हो तुम्हे उसका इन्तजाम करना ही होगा अन्यथा कलकत्ता पहुचते ही उनका फोन आयेगा कि मेरा सामान लाई कि नही। और वापस आना होगा। जब उसने कागज पढा तो अवाक रह गया। बोला—"अद्भुत हैं तुम्हारे चाचाजी ! कहां से उनको इसका पता चला ! पूरा पता फोन नम्बर सब दिए है। सबसे बडा आश्चर्य मुझे तब हुआ जब मैं मशीन लेकर उनके पास गई तो वे बोले—"यहां हमलोग भी ऐसी मशीन बनाएँ। तुम्हे क्या जचता है। मैंने कहा—"चाचाजी कभी आपका अन्वेषण शेष भी होगा।"

आपने शायद देखा हो मेरे चाचाजी की छत पर एक बहुत बड़ा रूफ गार्डेन है। उसमे चूहे आयेंगे ही। इस मशीन मे एक तरह की खास आवाज होती है जिसकी आवाज से चूहे भाग जाते हैं।

इनके इस उम्र मे लाठी चलाने की बात कोई करता है तो मुझे इनका यौवन याद आता है जिसमे इन्ही हाथों ने विमान चलाया था और आज भी न जाने कितनी नई चीजो की खोजो मे व्यस्त रहते है ये मेरे चाचाजी। □

स्वप्नों को साकार करने वाला व्यक्तित्व

□ □

जगदीश्वरानन्द

सम्मान्य सरावगीजी का निष्ठावान व्यक्तित्व धरती तल पर ऐसे विरले ही स्वनाम धन्य महामानव है जो वस्तुतः जीवन जीते हैं। यों केवल श्वास-प्रश्वास करना कोई जीवन नही है।

यो तो (काको पि जीवति चिर च वलि च भुड्क्के) कौवा भी जीता है वलि खाकर समय विताता है। जीना वही है जव स्वपर पर का हित सावन करे।

निष्ठावान व्यक्तित्व सरावगी जी एव जो भी जी रहे हैं प्राकृतिक सिद्धान्तो, विचारो को जीवन मे अपनाकर जी रहे है।

स्वप्नों को साकार करने वाला व्यक्तित्व

मानव जीवन का पहला साफल्य है कि वह जैसा सोचे उसे जीते जी पूरा कर ले अर्थात स्वप्नो को साकार हुआ देखे।

सम्मान्य सरावगीजी वर्षों से जो विचार मन मे सजोए हुए थे कि कलकत्ता में सुविधा सम्पन्न आधुनिक ढग का एक सुन्दर प्राकृतिक चिकित्सालय बन जाए वह बना और स्वप्न साकार हुए।

यह विशिष्ठ व्यक्तित्व है। अन्यथा अनेक मानव अपने मनमें अनेक छोटे-बड़े स्वप्न संजोए रहते हैं, जिन्हे वे अपने जीवन मे पूरा नही कर पाते। उनकी अपूर्णता की एक टीस अपने साथ ले जाते है।

सरावगीजी एक रासायनिक प्रयोक्ता है—

आयुर्विदशास्त्रो मे रसायन की परिभाषा करते हुए कहा गया है कि—

रसायनं तु तज्ज्ञेय यज्जरा व्याधिनाशनम् ॥

जो जरा बुढापे को हटाए तथा व्याधि को दूर भगाए वह रसायन है। इस प्रकार रसायन मानी जाने वाली आँवला, च्यवनप्रास (अमृता), गिलो जैसी वस्तुओ की चर्चा की गई। अन्य अनेक शक्तिवर्द्धक टानिक भी बनाए गए। तब हमारे सम्मान्य सरावगी जी क्या इन दवाओ का प्रयोग करते हैं ऐसा मैं नही कहने जा रहा फिर भी मैंने लिखा कि सरावगीजी रसायन प्रयोक्ता है तब प्रश्न होगा कि वह किस रसायन का सेवन करते हैं।

फेफडो व हृदय के लिए सबसे बडा टानिक है—शुद्ध वायु, आक्सीजन प्राणपद-वायु। वह प्राणपदवायु विधिवत् तब अधिकाधिक ग्रहण की जाती है जब विधिवत् योगासनो के साथ यौगिक व्यायाम मे प्राणायाम होता है। सरावगीजी नियमित व्यायाम करते हुए शुद्ध प्राणपद वायु सेवन करते है। अतः मैंने सरावगीजी को रसायन सेवी के रूप मे रसायन प्रयोक्ता लिखा। इसी रसायन सेवन के परिणामस्वरूप ही वह स्वस्थ है। दीर्घायुष्य मे सक्रिय है। उनकी सक्रियता एव स्वस्थता के मूल मे जो रसायन सेवन निहित है वह हम लोगो के लिए अनुकरणीय एव सेवनीय है।

विदेश में पचहत्तरवर्षीयवृद्धो की व्यायम-प्रतियोगिता मे सम्मिलित होना—

लगभग पाच वर्ष पूर्व मुझे पत्र लिखा, तब लिखा, कि मै विदेश जाने की बात सोच रहा हूँ जहाँ वृद्धो की व्यायाम प्रतियोगिता मे सम्मिलित होना है।

सरावगीजी एक गुणग्राहक व्यक्ति हैं—

पचास वर्ष से भी अधिक हुए होगे प्राकृतिक चिकित्सा के सम्पर्क मे आए हुए। सम्पर्क भी दूर से ही नही अत्यन्त निकट से। सम्भवतः "स्वस्थ जीवन" मासिक पत्रिका का जव प्रकाशन आरम्भ हुआ तव उन्होने उसे प्रकाशन का निकट से दायित्व भी निभाया होगा। अनेक अग्रेजी-हिन्दी की प्राकृतिक चिकित्सा की पुस्तकें पढी होगी। अनेक योग्य अनुभवी चिकित्सको का सान्निध्य पाया होगा। प्राकृतिक चिकित्सा की वीसो पुस्तके स्वयं भी लिखी। फिर क्या जानने को अवशेप रहा। वस्तुतः गुणग्राहक जिज्ञासु के लिए वहुत कुछ अवशेष वना रहता है।

"गुण न हरानो गुणग्राहक हरानो है"

पाच वर्ष पूर्व जव मुझे वुलाया, अपने जैन हाउस मे ही ठहराया तव जल नेती, तेल नेती, वमनादि क्रिया विधिवत् सीखी। अपने पोते की चिकित्सा का चार्ट वना चिकित्सा कराई। स्वय तज्ञ होकर भी अन्यो से लेने की वृत्ति, विद्यार्थी भावना इनकी आज भी वनी हुई है। नीतिशास्त्र के इस उपदेश को हृदय मे आत्मसात् किए हुए है।

अजरामरवत् प्राज्ञ विद्याम् अर्थच्च वितयेत।

विद्या व धन कमाने मे सदा उद्यत रहे, न स्वय को वूढा मानो, न ही करने वाला मानो। □

सजीवता की साकार प्रतिमूर्ति

□ □

कल्याणमल लोढ़ा

धर्मचन्दजी कलकत्ता के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता, अनेक सामाजिक व धार्मिक सस्थाओ के प्राण, प्राकृतिक चिकित्सा के उद्बोधक और प्रचारक एव अनुकरणीय व्यक्तित्व के धनी है। मेरा उनसे परिचय आज से लगभग चालीस वर्ष पूर्व हुआ था, जब वे मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के प्रधान मत्री चुने गए थे। मैं अपने एक परिचित की चिकित्सा कराने वहा गया था और प्रत्यक्ष परिचय न होने पर भी जिस सौहार्द और सौजन्य का परिचय उन्होने दिया एवम् जिस तत्परता के साथ उन्होने व्यवस्था की, वह आज भी मुझे स्मरण है। उसके उपरान्त हम दोनो का परिचय घनिष्ठ होता गया। उनके व्यक्तित्व की उन्मुक्तता ने, उनके वैचारिक खुलेपन और आचार की सरलता ने मुझे सदैव प्रभावित किया। उनकी निश्छल और अकृत्रिम मुस्कराहट और सहज स्नेहिल मुखाकृति प्रत्येक व्यक्ति को आकृष्ट और प्रभावित करती है। उनका व्यक्तित्व जितना विविध है उतना ही

उदार और गंभीर—वे जैन है, जैन धर्म के प्रति उनमें अगाध विश्वास और आस्था है, पर अंध विश्वासी नही। उनमे धर्म का व्यामोह नही है—है उसकी मर्यादाओ के अनुपालन की क्षमता। वे अनेक सस्थाओ से सक्रिय रूप से सवद्ध रहे हैं—सम्बद्ध ही नही, उनके विकास मे उनका अभूतपूर्व योगदान रहा है—पर यह सब होते हुए भी वे कभी आत्म श्लाघा या आत्माभिमान से ग्रस्त नही रहे। यह वह विशेपता है, जो आज प्रायः दुर्लभ है। प्राकृतिक चिकित्सा मे उनका अडिग विश्वास है, वे इसके पुरोधा, प्रचारक और विचारक है। अनेक प्राकृतिक चिकित्सा संस्थाएँ उनकी कर्म कुशलता और कार्य निपुणता के प्रमाण है। मुझे अब भी स्मरण है कि राधाकृष्णजी नेवटिया के साथ जव उनका प्राकृतिक चिकित्सा के सम्वन्ध मे विचार-विमर्श होता था, तव मुझे वहुत कुछ सीखने को मिलता था। उनकी जीवन-प्रक्रिया प्राकृतिक चिकित्सा और स्वस्थ जीवन विज्ञान का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

व्यक्तित्व की सजगता और समाज के प्रति नि स्पृह सेवा-भावना मनुष्य के अंतरग और वाह्य जीवन को सामर्थ्य प्रदान करती है और यह सिद्धान्तो को व्यावहारिक रूप देने मे ही निर्भर रहती है। विचार और आचार की एकता ही जीवन का श्रेय और प्रेय है। भाई धर्मचन्दजी सरावगी के मन, वचन और कर्म मे यही ऐक्य है। उन्होने कई वार विश्व भ्रमण किया—प्रथम मारवाडी वायुयान चालक वने, संतरण-कौशल प्राप्त किया, गो-सम्वर्द्धन योजना मे हाथ वंटाया, राज्य सभा और पश्चिम वग विधान सभा के सदस्य रहे—धार्मिक सस्थाओ मे उनका सक्रिय योगदान रहा—अनेक ग्रन्थ, हिन्दी मे लिखे पर उनमे कभी वह अभिमान नही आया, जो कुछ न करने पर भी वहुतो को होता है। वहुत कुछ करके भी उन्होने यही समझा कि वहुत अल्प कार्य किया। यही वह गुणवत्ता है जो मनुष्य को गौरव प्रदान करती है और उसके जीवन को उच्चता। सरावगीजी मे मैंने यही गौरव और उच्चता देखी।

मैं कभी-कभी सोचता हूं कि जीवन के आठ दशक पार करने पर भी ऐसी मानसिक और शारीरिक स्फूर्णा, ऐसी वैचारिक क्षमता और दृढता एव जिजीविषा की सजीवता उन्हे कहा से मिली। लगता ही नही कि वे 'वृद्ध' हो गए हैं। उनके मानस की यह युवा शक्ति अद्भुत है और वे सचमुच वदनीय हैं। उन्हे मेरा प्रणाम। □

कठिन व्यायाम के प्रेमी

□ □

वासुदेव थरड

भाई धर्मचन्दजी हमारे अर्द्ध शताब्दी से अंतरग मित्र है। आप मारवाडी रिलीफ सोसाइटी मे प्रथम बार १९३३-३४ मे पधारे। तभी से मेरी इनकी मित्रता है। आप १९४५-४७ तक सोसाइटी के प्रधान मन्त्री रहे है। इस अवधि में हमलोगो ने मिलकर सोसाइटी मे अवर्णनीय कार्य किया और एक साथ कधा से कधा मिलाकर सहयोग लिया दिया।

आपका प्राकृतिक चिकित्सा मे अतीव प्रेम है। इस प्रणाली पर आपने बहुत-सी पुस्तकें लिखी है, जैसे—दमा, लकवा, हृदय रोग, बवासीर, पथरी, ब्लड प्रेसर, एपेण्डिसाइटिस, घरेलू चिकित्सा, मोटापा, अनिद्रा, तन्दुरूस्त रहने के उपाय।

आप एलोपैथी के इलाज मे कभी विश्वास नही करते और न किसी को इस पद्धति मे इलाज करने की शिक्षा देते है।

योगासन पर भी आपने कितावें लिखी है और भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू से भी आपका योग को लेकर सम्पर्क रहा है। प्रधान मन्त्री ने एक जगह योग पर लिखा है कि मैं सत्तर साल पार कर रहा हूं और नित्य यौगिक आसन करता हूँ।

व्यायाम मे आपका वहुत अधिक प्रेम है। "वडावाजार युवक सभा", जिसका मैं भी सस्थापक हूँ—से आपका सम्वन्ध ४०-४५ वर्षों से है। इस संस्था की स्वर्ण जयन्ती १९७३ मे मनाई गई थी तव आप कार्यकारिणी के सदस्य थे। वर्त्तमान मे आप इस सस्था के सभापति है।

प्रति दिन व्यायामशाला पधारते है और रोज व्यायाम करते है। साधारण व्यायाम नही, कड़ा व्यायाम करते है। वजन उठाने मे आप नव्वे पौण्ड तक वजन उठा लेते है। आपका, ८० वर्ष की उम्र मे, स्वास्थ्य सुन्दर और सराहनीय है। हम दोनो समवयस्क है शायद मैं उनसे ५-७ महीने वडा हूं। व्यायाम के सम्वन्ध मे हम दोनो एक ही विचार रखते है और उनका यह वड़प्पन है कि व्यायाम सम्वन्धी विपयो मे हमसे सलाह करते ही रहते है।

विशेप क्या—जगत जननी माता से मेरी हार्दिक प्रार्थना है आपको १०१ वर्ष से भी ज्यादा आयु प्रदान करें और आपका शेप जीवन स्वस्थ एव निरोग रहे। □

प्राकृतिक जीवन का ज्वलंत उदाहरण

□ □

डा० आनन्दी प्रसाद

वर्तमान युग मे प्राकृतिक जीवन से अपने को संतुलित वना कर दीर्घायु तक स्वस्थ बनाए रखने का अद्वितीय उदाहरण पेश करने वालो मे महात्मा गांधी का नाम सर्वप्रथम आता है, जिन्होने यह दावा किया था कि वे बीमार पड कर नही मरेंगे और १२५ वर्ष तक जीएँगे। इस दृष्टि से अगर कोई दूसरे व्यक्ति का उदाहरण हो सकता है, तो वह है—धर्मचन्द सरावगीजी, जिन्होने ८० वर्ष की आयु मे भी लाठी चलाना सीखना प्रारम्भ किया है। अभी भी वे जो अभिनव स्वास्थ्य की सानी रखते है। उन्हे देखकर युवको को भी मात खानी पडती है।

कलकत्ते जैसे अत्यत घनी एव व्यस्त आवादी वाले शहर मे आज के प्रदूषित वातावरण के वीच कोलाहलमय जीवन में भी अपने को स्वस्थ एव दीर्घायु वनाए रखने का ज्वलत उदाहरण प्रस्तुत करना आसान नही। परन्तु यह उम यौगिक

प्राकृतिक जीवन का ही परिणाम है, जिसे दृढता से इन्होंने पालन कर आदर्श उपस्थित किया है।

यो तो कई बार विभिन्न प्रसगो मे धर्मचन्द सरावगीजी से मिल चुका था। परन्तु करीब १९७४ ई० मे मैं उनसे जब उनके निवास पर मिला तो उनके प्राकृतिक रहन-सहन, आहार-विहार एव व्यस्तमय जीवन के प्रतिफलस्वरूप इस उमर मे भी उनकी स्फूर्ति, डीलडौल एव अभिनव स्वास्थ्य देखकर स्तम्भित रह गया। प्राकृतिक जीवन तथा योग एव प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति अपने प्रयोग एवं अनुभव के द्वारा उन्होने जो सेवा की है, वह तो सदा अमर रहेगा ही, परन्तु अहकारमय जीवन से ऊपर उठकर उनके नित्य नवीन साधना एव शोध को कभी भूला नही जा सकता।

उस समय तक वे प्राकृतिक जीवन एव चिकित्सा की दृष्टि से ६ बार विश्व का भ्रमण कर चुके थे। जब मैंने इन सारे अध्ययन एव अनुभवो के बाद एक आदर्श चिकित्सा पद्धति की इनकी कल्पना के विषय मे इनसे पूछा तो उन्होने बड़े ही विस्मय के साथ बताया कि इस विषय मे अभी भी वे कोई अन्तिम निर्णय पर नही पहुच पाये है। इन्होने एक जापानी चिकित्सा का अनुभव सुनाया, जिससे यह साबित करने का प्रयत्न किया कि प्राकृतिक जीवन एव उपचार का माध्यम मात्र फल-सब्जी का अधिकाधिक प्रयोग नही है, बल्कि अन्न प्रयोग से बहुत सारे रोग अच्छे हो सकते हैं। इन्होंने अपनी पत्नी पर अतिसार की अवस्था मे भूजे चावल के प्रयोग का सफल परिणाम का प्रदर्शन किया था।

इस तरह सरावगीजी एक सफल साधक ही नही बल्कि शोधक भी हैं। □

अनुकरणीय जीवन

□ □

श्रीचन्द मेहता

भाई धर्मचन्दजी को मैं सन् १९४६ से जानता हूं। मेरा भी कार्यक्षेत्र बडाबाजार था। वे उस समय से ही योगासन, व्यायाम व प्राकृतिक चिकित्सा क्षेत्र मे विशेष रुचि रखते थे। मैं व मेरे साथी सामाजिक क्रान्ति व परिवार नियोजन के कार्यो मे विशेष रुचि रखते थे। उनके निर्विरोध कारपोरेशन के सदस्य चुने जाने से मुझे बहुत खुशी हुई थी।

आज मैं सोचता हूं कि सामाजिक सुधार के कार्यों मे लिप्त रहने के कारण उस समय प्राकृतिक चिकित्सा मे रुचि रखते हुए भी उसमे अधिक समय नही दे पाया।

कलकत्ता छोडने के पश्चात् श्रद्धेय डा० सरदारमलजी ढूगड के सम्पर्क मे आया और प्राकृतिक चिकित्सा क्षेत्र मे थोड़ा काम करने लगा। मैं और मेरी श्रीमतीजी ने एन० डी० (लखनऊ) की परीक्षाएँ पास की और अवमर मिलते

ही० डा० दूगड साहब की प्रेरणा से अमरीका मे डा० शेल्टन के हैल्थ होम मे जाकर रहा। डा० शेल्टन व श्री श्रीमती डा० वेटरानो से सम्पर्क बढा। डा० वेटरानो ने भारत आने का वादा किया। भाई धर्मचन्दजी भी डा० शेल्टन के प्रशसकों में थे। लौटने पर उन्होने मुझसे सम्पर्क किया और डा० शेल्टन के बारे मे जानकारी प्राप्त की। उस समय उनके बलिष्ठ व हृष्ट-पुष्ठ शरीर को देखकर मन बड़ा प्रसन्न हुआ। उन्होंने अपने रहन-सहन की प्रत्येक वस्तु का चुनाव बहुत समझदारी व होशियारी से किया था। धर्मतल्ला या एस्प्लेनेड जैसे घनी आबादी वाले क्षेत्र मे रहकर वे प्राकृतिक जीवन का आनन्द लेते हैं। अपने जैन हाउस के शोरूम व आफिस की छत पर टैरेस गार्डन लगा रखा है। दैनिक जीवन बडा ही नियमित है। खान-पान शुद्ध व सात्विक ही नही बल्कि पौष्टिक तथा प्राकृतिक चिकित्सा के अनुरूप है। इतने लम्बे समय मे मैंने उन्हे बीमार नही के बराबर ही पाया। "पहला सुख निरोगी काया" का वे अक्षरश. पालन कर रहे हैं। हम दोनों के कई कामन प्लेटफार्म थे जैसे मारवाडी सम्मेलन, युगान्तर क्लब तथा जैन सभा। धर्मचन्दजी सभी सामाजिक व राजनैतिक कार्यो मे रुचि रखते थे तथा अपना व्यवसाय भी देखते परन्तु उनका जीवन प्राकृतिक चिकित्सा के लिए समर्पित रहा और आज भी है।

मैं उन्हे बडे भाई का आदर पहले तो देता ही था परन्तु अब विशेष आदर प्राकृतिक चिकित्सा के कारण देता हूं।

पैसे वालो के घर मे जन्मने तथा सुन्दर व आकर्षक व्यक्तित्व रखने पर भी धर्मचन्दजी ने अपना क्षेत्र सार्वजनिक कार्यकर्त्ता का रखा वर्ना कलकत्ते नगरी मे उन्हे फिसलने के कम अवसर नही आए। मारवाड़ी व जैनी युवको के लिए उनका जीवन अनुकरणीय है।

परमात्मा उन्हे स्वस्थ दीर्घायु प्रदान करें जिससे वे समाज की अधिक सेवा कर सकें। □

प्रेरणा स्रोत

□ □

ओंकारलाल बोहरा

देश भर में राजस्थानी समाज का न केवल सख्या की दृष्टि से ही कलकत्ता महत्वपूर्ण केन्द्र है बल्कि राष्ट्रीय, सामाजिक, शैक्षणिक एवं सेवा के क्षेत्र मे भी कलकत्ता ने राजस्थानी समाज का गौरव बढाया है।

धर्मचन्दजी सरावगी का नाम एक प्रेरणास्रोत व्यक्तित्व के रूप मे सामने आता है। वे पूरे राजस्थानी समाज मे पहले व्यक्ति है जो २५ वर्ष की आयु मे वायुयान "पायलोट" बने और इसी आयु मे क्रान्तिकारी देश साम्यवादी रूस की भी यात्रा कर आये। सन् १९२९-३० मे सरावगीजी के प्रगतिशील कदम पिछडे हुए मारवाडी समाज की दृष्टि से अपने आप मे बडा मूल्य रखते हैं। प्रारम्भ से ही सरावगीजी स्वाधीनता आन्दोलन से जुडे रहे। मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के माध्यम से मानव सेवा के कार्यो मे इनकी भूमिका अनुकरणीय एव सराहनीय रही है।

मैं सन् १९४८ मे लोकनायक जयनारायणजी व्यास द्वारा स्थापित (राजस्थानी रियासतो के एकीकरण के लिए स्थापित) रियासती लोकसघ के मुखपत्र

"रियासती आवाज" का सम्पादन करने कलकत्ता पहुँचा। तव उपरोक्त समाजसेवको की प्रथम और द्वितीय पंक्ति के सभी अग्रणीय नेताओ और कार्यकर्त्ताओ के निकट सम्पर्क में आने का न केवल अवसर मिला, उनका स्नेह भाजन भी वना।

निस्सन्देह सरावगीजी के सौम्य व्यक्तित्व से भी मेरा प्रभावित होना स्वाभाविक था। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के व्यवस्था-सचालन के दौरान मुझे उनको अधिक निकट से देखने समझने का अवसर मिला। प्राकृतिक चिकित्सा के तो वे प्राण ही है। आगे चलकर अ० भा० प्राकृतिक चिकित्सा परिपद के संस्थापक एव महामत्री के रूप में 'पायोनियर' रहे। आनन्दीलालजी जैसे लोकप्रिय कर्मठ नेता के सहयोगी के रूप मे सरावगीजी का वडावाजार की राजनीतिक हलचल मे उल्लेखनीय स्थान रहा। वे कलकत्ता नगर निगम के कौन्सिलर रहे। वाद मे प० वगाल विधान परिपद् के एम० एल० सी० रहे। यह उस युग की चर्चा है जव राजनीति 'रोटी' का नही "सेवा" का पर्याय थी। इस क्षेत्र मे वे ही निमत्रित होते थे जिनके दामन साफ रहते थे।

सरावगीजी वडावाजार कलकत्ते के शीर्षस्थ कार्यकर्त्ताओ मे हैं। जैन परिवार से सम्वन्धित सरावगी जी का जीवन जैन आदर्शो से अनुप्राणित रहा है। वे शाकाहारी आन्दोलन मे भी गहरी दिलचस्पी रखते हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से निरन्तर सजग सरावगीजो न केवल स्वय आदर्श है वल्कि युवा पीढी की निरन्तर प्रेरणा वने हुए हैं।

कलकत्ता जैसे नगर मे प्रारम्भ मे जहाँ "श्मशान वैराग्य" की तरह समाजसेवा की लहर उठती है वाद मे सभी धन कमाने की होड मे लग जाते है सरावगीजी का मानस इस दृष्टि से भी सन्तुलित रहा। वे अपने आदर्शों पर अडिग रहे। और परिस्थिति के अनुसार किसी न किसी समाज सेवा के कार्य मे अपना नम्र योगदान देते रहे हैं।

कलकत्ता मे उनके जैसे शालीन, सौम्य, उदार व्यक्तित्व के धनी समाजसेवी कम ही नजर आते हैं। वे इस आयु मे भी युवा हृदय हैं। तन और मन से चिर युवा हैं। उनके सौम्य, सरस, शान्त व्यक्तित्व से सन्तोष झलकता है। वे शतायु हों। इन्ही शुभकामनाओ के साथ नमन। □

अविस्मरणीय

□ □

डॉ० बृजकिशोर भटनागर

लगभग ३० वर्ष से अधिक ही हुए होगे जब मुझे धर्मचन्दजी का परिचय मिला और फिर सम्पर्क हुआ। तब से अब तक उनसे सम्पर्क बना हुआ है। वे बहुत समय से स्वास्थ्य जगत मे प्राकृतिक चिकित्सा और योग के प्रचार, प्रसार और प्रगति के लिये, तन, मन धन से सहयोग दे रहे है। उन्होने अपनी बहुत बडी जमीन, शायद एक पूरा बागीचा देकर और बहुत धनराशि लगाकर कलकत्ते मे प्रकृति निकेतन की स्थापना तो की हो बल्कि सन् १९५५ मे अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा की कलकत्ते मे ही नीव डाली और मुझे भी तार देकर यहाँ बुलाया। उसके बाद प्राकृतिक चिकित्सा का एक कालेज जैसा कि उससे पहले कभी नही बना और 'स्वस्थ-जीवन' एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी किया। यह सब सस्थाए अभी तक सफलता पूर्वक चल रही है और सस्थापक के रूप मे वह भी याद किये जाते है। जब तक यह

संस्थाए चलती रहेगी उनका नाम भी अमर रहेगा। मैं पहले दिल्ली प्राकृतिक चिकित्सा सघ का अध्यक्ष और मंत्री रहा और वाद मे प्राकृतिक चिकित्सा परिषद की स्थापना के वाद दिल्ली प्रदेश प्राकृतिक चिकित्सा परिषद का कभी अध्यक्ष और कभी मन्त्री रहता रहा हूँ। इसलिये जव भी वह दिल्ली आते है तो मुझे साथ अवश्य रखते। मुझे याद है कि कितनी लगन, परिश्रम और धन व्यय करके वह प्राकृतिक चिकित्सा के लिये काम करते थे। रात ११-१२ वजे तक विभिन्न केन्द्रो मे जाते और चिकित्सको से मिलते। चिकित्सको और चिकित्सालयो को सुविधा और प्रगति के लिये व्यवस्था करते थे। एक बार उन्होने मुझे एक पूरा स्टीम चेम्वर कलकत्ते से उपहार स्वरूप भेजा था। उन्ही के सहयोग और उत्साहित करने से मुझे इस दिशा मे सफलता मिली है। इस समय मैं भारत का एक सुप्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त योग-स्वास्थ्य, शिक्षा एव असाध्य रोग चिकित्सा योग-प्रकृति उपचार का विशेपज्ञ हूं और तीन वार इन्ही विपयो पर कार्य करने विदेश भी जा चुका हूं। यह सव धर्मचन्दजी के सहयोग और प्रेरणा से ही हुआ। मैं उनका सदा आभारी रहूंगा। अपने प्रवचनो मे अक्सर श्री मोरारजी भाई तथा धर्मचन्दजी जो उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घजीवन के हमारे देश मे उत्तम उदाहरण है, वताया करते है। इधर धर्मचन्दजी ने स्वास्थ्य, योग और प्राकृतिक चिकित्सा पर कितने ही उपयोगी प्रकाशन किये है जिनके द्वारा लोगो को स्वास्थ्य लाभ हुआ, ऐसे मेरे पास कितने ही समाचार आते रहते है। मैं भी ७१वां वर्प पूरा कर रहा हूं और चिकित्सा कार्य के अतिरिक्त स्वास्थ्य शिक्षा एव प्रारम्भिक योगाभ्यास के एक-एक सप्ताह शिविरो का सचालन करता हूं और लोगो को स्वस्थ रहने तथा रोगो से वचे रहने का प्रशिक्षण देता हूं। दो बार हिमाचल प्रदेश का दौरा किया है और मध्य प्रदेश का दूसरी वार दौरा करके हाल ही मे लौटा हूं।

मेरी भगवान से प्रार्थना है और मुझे विश्वास है कि श्री धर्मचन्दजी तथा मोरारजी भाई देसाई दोनो ही २१वीं सदी मे भी उत्तम स्वास्थ्य तथा दीर्घ जीवन का उदाहरण जनसाधारण की प्रेरणा के लिये उपस्थित करेंगे। □

अच्छे कार्यकर्त्ता

□ □

लक्ष्मी निवास बिरला

धर्मचन्दजी जिन-जिन सस्थाओ मे भाग लेते रहे हैं वह तो सर्वविदित ही है। धर्मचन्दजी जैसे कार्यकर्ताओ की आज सख्त जरूरत है। पहले तो कुछ होते भी थे लेकिन अब तो ऐसे कार्यकर्ता मिलना बहुत कठिन है।

धर्मचन्दजी शतायु हो व जनता की सेवा मे कार्यरत रहे यही भगवान से प्रार्थना है। □

वरिष्ठ कार्यकर्त्ता

□ □

प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका

यह जानकर हमे प्रसन्नता है कि वडाबाजार के सामाजिक तथा धार्मिक वरिष्ठ कार्यकर्त्ता, अनेक सार्वजनिक सस्थाओ से सबधित प्रकृति निकेतन के सस्थापक, मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के भूतपूर्व मत्री एव प्राकृतिक विभाग के सस्थापक धर्मचन्दजी सरावगी अपने स्वस्थ जीवन के इक्यासीवें वर्ष मे पूर्ण सक्रिय सहयोग दे रहे है।

धर्मचन्दजी बाल्यकाल से ही सार्वजनिक कार्यो मे भाग लेते रहे हैं और अभी भी प्रत्येक कार्य विशेषकर व्यायाम सबधी कार्यों मे दिलचस्पी लेते है।

मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि वे शतायु हो, स्वस्थ रहे और सार्वजनिक कार्यो मे भाग लेने की उनमे शक्ति बनी रहे। □

प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचारक

□ □

भगवती प्रसाद खेतान

धर्मचन्दजी के परिवार मे देश, समाज एवं धार्मिक सेवा की परम्परा है। मेरे पिताजी जब राची मे जेलर थे तब इनके परिवार से घनिष्ठता हो गई थी और इसी वजह से धर्मचन्दजी के पिता का मेरे प्रति स्नेह था। धर्मचन्दजी ने भी वह स्नेह निभाया और पारिवारिक परम्परा को योग्यता से आगे बढाया। कार्यक्षेत्र अलग-अलग होने से बहुत मुलाकात न होने पर भी जब भी कभी मुलाकात होती है धर्मचन्दजी बडे प्रेम से मिलते हैं। जिस समय मे ये राजनीतिक क्षेत्र मे थे उस समय नेता लोग इनके साथ बडे आदर का संबध रखते थे। □

अभिनन्दनीय

□ □

सिद्धराज ढड्ढा

धर्मचन्दजी सरावगी का व्यक्तित्व वडा आकर्षक रहा है। वे सिद्धान्त के पक्के तो है ही, पर उनकी विशेषता यह है कि वे अपनी मान्यताओ के अनुसार ही जीवन भी जीते है। सिद्धान्त और व्यवहार की एकरूपता के निर्वाह करने वाले वहुत कम मिलते है।

मेरी और धर्मचन्दजी की मित्रता काफी पुरानी रही है। एक वार तो कलकत्ते मे करीव महीने भर मैं उनके और उनके परिवार के साथ उनके घर मे ही रहा। उनके नपे-तुले और व्यवस्थित जीवन ने मुझे प्रभावित किया। कट्टरपंथी न होते हुए भी वे अपनी आस्थाओ के पक्के है।

धर्मचन्दजी की सार्वजनिक सेवाएँ भी विविधतापूर्ण और उल्लेखनीय रही है। पर अन्य वातो के अलावा प्राकृतिक चिकित्सा, प्राकृतिक जीवन और शाकाहार उनके प्रिय विषय रहे है। राजनीति मे भी उन्होने पर्याप्त हिस्सा लिया है। वे राज्य सभा के और पश्चिम वगाल विधान सभा के सदस्य भी रहे।

आज ८० वर्ष से ऊपर की उम्र में भी उनमें जवानों की-सी स्फूर्ति है। यह उचित ही है कि वे ७८ वर्ष की उम्र में "बड़ाबाजार युवक सभा" के सभापति चुने गये। व्यायाम उनका प्रिय विषय रहा है। ८० वर्ष की उम्र मे लाठी चलाना सीखना आरम्भ किया यह मुझे अभी ही मालूम हुआ।

विविध गुणो और उपलब्धियो से युक्त ऐसे व्यक्ति अभिनन्दनीय है। □

समाज के सच्चे सेवक

□ □

सिद्धेश्वर प्रसाद

सरावगीजी ने अपने जीवन मे सदा सेवाभाव से प्रेरित होकर विभिन्न रूपो मे समाज की सेवा की। यद्यपि उनका जन्म बिहार मे हुआ और उनका कार्य-क्षेत्र मुख्यतः बंगाल रहा फिर भी यह कहने मे मुझे तनिक भी सकोच नही है कि उनमे प्रान्तीयता तथा अन्य प्रकार की सकीर्णता का लेश भी नही है। उन्होने सदा लीक पर चलने से इन्कार किया और जहाँ कही जिस किसी के लिये आवश्यक हुआ उसकी सेवा के लिये चल पडे। १६३४ के बिहार के उस भयानक भूकम्प मे उन्होने भूकम्प पीड़ितो की सेवा कार्य का जिस रूप मे सचालन किया उसका स्मरण लोग आज भी करते हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा मे आरम्भ से ही उनकी रुचि रही है। देश-विदेश मे होने वाले अनेक आयोजनो मे उन्होने भाग लिया है। इसीलिए वे अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के प्रधान मन्त्री भी चुने गए। तब से आज तक उन्होने प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्तो के प्रचार-प्रसार के लिये हर सभव प्रयास करते आ रहे हैं। □

कोमल हृदय

□ □

कन्हैयालाल सेठिया

धर्मचन्द भाई जी
अति बल युग के भीम,
वज्र देह, कोमल हृदय
उर मे स्नेह असीम,

कर्मवीर, सेवाव्रती
मगल भाव पुनीत,
वीतराग के प्रति सदा
श्रद्धा सहज विनीत,

शत वत्सर तक ज्योतिर्मय
रहे प्राण प्रदीप,
यही कामना मन वसे
प्रभु के चरण समीप। □

एक जिन्दादिल व्यक्ति

□ □

रामनिवास लाखोटिया

प्राकृतिक ढग से जीवन व्यतीत करके न केवल पूर्ण स्वास्थ्य लाभ ही प्राप्त किया जा सकता है, वरन् एक मनुष्य खूब प्रसन्न एव जिन्दादिल भी रह सकता है, यही नही, जीवन के प्रति पूर्ण सजग भी। जीवन की कला का यह मर्म कम व्यक्तियो मे ही मैंने पाया। इस बारे मे जिस व्यक्तित्व ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया उनका नाम है धर्मचन्दजी सरावगी। उनके बारे मे निम्न शेर ठीक बैठता है—

"फूल बनकर मुस्कुराना जिन्दगी है, मुस्कराकर गम भुलाना जिन्दगी है।
खुद पूर्ण स्वस्थ हुए तो क्या हुआ, दूसरों का भी स्वास्थ्य बनाना जिन्दगी है॥

अपनी दिनचर्या मे योग एव व्यायाम को तो वे महत्व देते ही हैं लेकिन जिन्दादिली एव सहृदयता तथा हास्य को भी वे उतना ही महत्व देते हैं। पश्चिम बग प्राकृतिक चिकित्सा की स्थापना करवाकर उन्होने इसका प्रथम

सभापति मुझे बनाया और पूर्ण सहयोग दिया एव मार्ग दर्शन भी, यह बात मैं भूल नही सकता। इसी प्रकार प्राकृतिक चिकित्सालय, कोनचौकी की प्रवन्ध समिति का मैं सभापति उनके आग्रह पर बना, तो उन्होंने सभी बैठको मे उपस्थित रहकर हमारा मार्ग दर्शन किया तथा जिन्दादिली से कठिनाइयो का सामना करने के लिए प्रेरित किया। योग, व्यायाम, प्राकृतिक जीवन को रसमय एव हास्य परिपूर्ण बनाकर किस प्रकार जीवन का आनन्द लिया जा सकता है, यह मैंने उनसे सीखा। प्राकृतिक भोजन भी अति स्वादिष्ट एव रस से ओत-प्रोत हो सकता है, यह उन्होने मुझे सिखाया और मैं उसी सीख के कारण इसका यथासभव पालन करने मे सक्षम भी हुआ हूं। युवा पीढी के लिए उत्तम स्वास्थ्य के बारे मे आप वास्तव मे प्रेरणास्रोत है। आप शतायु हो एव हमारा मार्ग दर्शन करते रहे—यही ईश्वर से प्रार्थना है। □

सादा जीवन उच्च विचार

□ □

बजरंगलाल जाजू

मैं सरावगीजी के काफी नजदीक रहा हूँ। वे अपने आप मे एक संस्था है। इस तरह के व्यक्ति अपने स्वभाव एव व्यवहार से अनेक लोगो के जीवन मे अद्‌भुत परिवर्त्तन ला सकते है। उनका सरल स्वभाव, सादा जीवन, समय की पाबन्दी सराहनीय है। आपा-धापी के इस जीवन मे उन्होने जो सेवा व्रत प्राकृतिक चिकित्सा के लिए लिया है, उनका यह योगदान कलकत्ते मे ही नही सारे देश के लिए भी अनुकरणीय है।

भाई सरावगीजी अपने सरल स्वभाव से छोटे-बडे सभी के इतने प्रिय हो गये है कि लोग भूल जाते है कि वे हमसे उम्र, ज्ञान एव गुणो मे कितने ऊँचे हैं। उनका वरदहस्त सबको सब समय सुलभ है। यही समाज एव देश के लिए सौभाग्य का विषय है। □

निष्काम समाज-सेवी

□ □

मौजीराम

निष्काम समाज सेवी, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, प्राकृतिक चिकित्सा के सुविज्ञ, कर्मठ धर्मचन्दजी सरावगी ने अब तक मानवता की सेवा का कर्तव्यपरायण जो आदर्श भारतीय जन-जन के समक्ष उपस्थित किया है, वे जिस प्रकार धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष-फल चतुष्टय की ओर बढते जा रहे है, उससे भावी सन्तति के लिए वे मार्गदर्शक और प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं। क्षमता व परिश्रम के मूर्त्तिमान-स्वरूप सरावगीजी ज्योतिर्मय प्रदीप हैं। चिरकाल तक जगमगाते रहे।

अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद द्वारा भारत के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री मोरारजी देसाई के प्रधानत्व तथा सरावगीजी के महामन्त्रित्व मे जो सेवाएँ की गई, उसके लिए प्राकृतिक-चिकित्सा-जगत आपका सदा ऋणी बना रहेगा। □

एक लगनशील व्यक्तित्व

□ □

हकीम श्याम लाल गोयल

अपने अपूर्व सस्मरण के सन्दर्भ मे मेरा पहला साक्षात्कार सरावगीजी से वर्ष १९५७ मे अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के लखनऊ अधिवेशन में हुआ तथा उसी समय उन्होने मुझे भी परिषद की कार्यकारिणी का सदस्य मनोनीत कर लिया था। वर्ष १९५६ मे सरावगीजी ने समस्त भारत के प्राकृतिक चिकित्सकों व प्रेमियों को जमा करके "अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद" की नीव डाली और स्वय उसके महासचिव बने। इनका न केवल प्राकृतिक चिकित्सा मे विश्वास रहा बल्कि उसके प्रचार-प्रसार की बडी भारी लगन रही। इसके पश्चात् परिषद् के प्रत्येक अधिवेशन के अवसर पर मेरी उनसे मुलाक़ात होती रही। कुछ समय के बाद उन्होने प्राकृतिक चिकित्सा की शिक्षा के लिए कालेज स्थापित करने की योजना बनाई और कालान्तर मे उन्होंने डायमण्ड हारबर पर एक बिल्डिग बनाकर अपनी योजना

को मूर्त्त रूप दिया और वहाँ प्राकृतिक चिकित्सा के लिए एक कालेज स्थापित कर दिया।

सरावगीजी ने अपने जीवन को प्राय प्राकृतिक चिकित्सा के नियमो के अनुसार ढाल लिया है। सादा भोजन और सप्ताह मे एक दिन का उपवास भी वे करते आ रहे है। ईश्वर की अनुपम कृपा से वे अब भी, ८० वर्ष की आयु होने पर भी, पूर्ण स्वस्थ है और नौजवानो की तरह व्यायाम करते व मुगदर भाजते है।

सरावगी जी की सेवाए प्राकृतिक चिकित्सा समाज को भविष्य मे भी यथावत् मिलती रहे यही कामना है। □

नये प्रयोगों के धनी

□ □

गौरीशंकर डालमिया

धर्मचन्दजी सरावगी को मैं करीब ५० वर्षों से अधिक दिनो से जानता हूँ। मेरा उनसे प्राकृतिक चिकित्सा आदि को लेकर तथा और विभिन्न कार्यों को लेकर बराबर नजदीक का सबध रहा है। मैं भाई बैजनाथजी केडिया के साथ मारवाडी रिलीफ सोसाइटी, रसायनशाला विभाग का सदस्य होकर काम करता था, उस समय भी मुझे इनसे सम्पर्क रखने का मौका काफी मिलता रहा।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय ये डायमण्ड हारबर के पास अपनी जगह मे लोहे की कमी के कारण बास की पट्टियो, सीमेट से ढलाई करने का प्रयोग वे कर रहे थे, मुझे ले गये थे। वे बडे ही हँसमुख, दूसरे की पीडा मे पडकर उसे मदद करने वाले है। □

समाज सेवी

□ □

हरकचन्द जैन

श्री धर्मचन्द सरावगी का अपना विशिष्ठ व्यक्तित्व है। वे समाज सेवी व जनता को प्राकृतिक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देने वाले महान व्यक्तित्वो के धनी है।

इनका जन्म बिहार मे हुआ। समुचित शिक्षा के बाद व्यवसाय मे पूर्ण प्रगति की। मोटर चालक, वायुयान चालक बने, घुड सवारी सीखी। पत्नी एव पिता के साथ रूस यात्रा पर गये। सपत्नीक विश्व भ्रमण किया। अनेक धार्मिक एव सामाजिक सस्थाओ के आप पदाधिकारी रह चुके है। प्राकृतिक जीवन व्यतीत करना ही आपका पूर्ण लक्ष्य है। अत. अनेक प्राकृतिक चिकित्सा से सम्बन्धित पुस्तकें लिखी। अनेक पत्र-पत्रिकाओ मे हिन्दी मे समाजोपयोगी लेख लिखे। ८१ वर्ष की उम्र होते हुए अभी भी दैनिक व्यायाम एत्र प्राकृतिक चिकित्सा मे पूर्ण सहयोग देकर समाज एव राष्ट्र का स्वास्थ्य निर्माण कर रहे है।

ऐसे महान् समाज सेवी विशिष्ठ व्यक्तित्व के धनी धर्मचन्दजी जैन का मैं ८१ वर्ष प्रवेश के उपलक्ष मे हार्दिक अभिनन्दन करता हूं तथा उनके स्वस्थ दीर्घायु एव गौरवपूर्ण जीवन के लिए मगल कामना करता हूँ। □

मर्द की जबान एक

□ □

मदन अग्रवाल

करीब २० साल पहले की बात है, बडाबाजार युवक सभा का सदस्य बना था एवं वहां पर नियमित रूप से जाने लगा था। कुछ कम उम्र के व्यक्तियो से परिचय हो गया था एवं हँसी-मजाक के साथ समय अच्छा गुजर जाता था। एक रविवार को प्रातः करीब ९ बजे गया तो देखा कि मेरे वहा के मित्र एक व्यक्ति से काफी स्तरीय हँसी-मजाक कर रहे थे एव वह व्यक्ति जो देखने मे हमलोगो से काफी बडा लग रहा था, उनके हँसी-मजाक मे बराबर का साथ दे रहा था। उनके जाने के बाद मेरे मित्रों ने मेरे पूछने पर बताया कि उनका नाम धर्मचन्द सरावगी है। मुझे विश्वास नही हुआ। मैंने मारवाडी रिलीफ सोसाइटी, प्राकृतिक चिकित्सा एव कलकत्ता कारपोरेशन के साथ इनका काफी नाम सुना था। मुझे विश्वास नही हो रहा था कि इतना बडा आदमी बात-चीत एव व्यवहार मे इतना साधारण। लेकिन बाद मे वहा पर इनसे नियमित

मिलने के बाद मेरा वह भ्रम टूट गया। मैंने देखा कि वे जिस उम्र के व्यक्ति के साथ बात करते हैं उसी उम्र के बन जाते हैं।

वहाँ पर उनसे प्रत्येक विषय पर खुलकर बातचीत होती थी। चाहे विषय राजनीति हो, धार्मिक हो अथवा शृंगार रस की हो। वह निरोग रहने के काफी सरल एव घरेलू उपाय बताया करते हैं।

इसके कुछ साल बाद लायन्स क्लब मे उनके बड़े पुत्र निर्मल सरावगी से परिचय हुआ। जब मैंने उनसे बताया कि मैं उनके पिता से पहले से मित्रवत् परिचित हूँ, तो वह मुझे चाचा कहने लगा और आज तक चाचा कहता है।

निर्मल से परिचय हो जाने के बाद उनके घर काफी आना-जाना होने लगा। मैंने पाया कि धर्मचन्दजी का जीवन काफी नियमित एव सयमित है। निर्मल की बडी लडकी सगीता की शादी मे उनसे काफी देर तक बात होती रही। उसी समय उन्होने बताया कि डायमड हार्बर रोड पर एक प्रकृति निकेतन है जो बन्द पडा है। उसे चालू करने का प्रयास करना चाहिए। मेरे पूछने पर उन्होने उसकी पूरी बात बताई। मैंने उसे देखना चाहा उन्होने २-३ दिन के अन्दर ही मेरे साथ जाकर उसे चाव से दिखाया। उसके बाद उस विषय पर हमारी कई बार बैठकें हुई। काफी बार वहाँ पर जाना हुआ उसकी रूपरेखा, बजट एव चन्दा इकट्ठा करने पर काफी विचार-विमर्श हुआ। हर समय उन्होने पूरा सहयोग एव मार्ग दर्शन किया। उस समय मैंने महसूस किया कि इनके मन मे प्रकृति निकेतन के प्रति कितनी ममता एव समर्पण है। ये उसके बारे मे जब बात करते थे तब ऐसा लगता था कि कोई माँ अपने बेटे के बारे मे बात कर रही है।

उम्र के बारे मे जब भी उनसे बात होती है ये अपने को उम्र से २० वर्ष कम का बताते है और कहते हैं कि मैं अपने आपको इतने वर्ष का महसूस करता हू और जबतक जिन्दा रहूंगा वैसा ही बताऊगा क्योकि मर्द की जबान एक होती है।

मेरी परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि मैं इतना स्वस्थ रहूं कि इनके साथ १-१-२००० को नव शताब्दी दिवस समारोह मना सकू। □

पुरुषार्थी महापुरुष

□ □

मदनगोपाल सारडा

करीव ३५ वर्ष पुरानी वात है, 'विश्वमित्र' मे एक लेख छपा था, "कंकडो का साग", जिसके लेखक थे धर्मचन्दजी सरावगी। लेख बड़ा रोचक था। एक तेज और होशियार रसोइया लोगो से कहने लगा कि मैं ककडो का साग वनाना जानता हूं। लोगों ने उसकी वातो पर विश्वास नही किया और कहा, वनाकर दिखाओ तो तुम्हे पुरस्कार देंगे। उसने पुरस्कार पाने के लिए छोटे-छोटे गोल पत्थर इकट्ठे किये और उन्हे साफ-सुथरा कर उसमे तेल, मसाला वगैरह देकर साग वना दिया। परीक्षा के समय जब भोजन करने वाले वैठे तो भोजन परोसने के साथ ककड के साग को परोसा गया। थाली मे जव ककड गिरे आवाज हुई, लोगो ने अगुली से दवाकर देखा वे कड़े के कड़े थे। लोगो ने रसोइया से पूछा इसे कैसे खाएँगे ? रसोइया होशियार था उसने हसते हुए कहा आपलोग भोजन के समय जो साग खाते हैं तव, साग क्या चीज का है

उसका तो ध्यान नही रखते। आपलोग तो मसालो के स्वाद को ही जानते है। इसके कंकड़ छोड़ दीजिये मसालो के साथ रोटी खा लीजिये।

भोजन करनेवाले के पास कोई जवाब नही था। रसोइए की विजय हुई। लेख का उद्देश्य यह था कि अधिकांश लोग साग तरकारी उसके मसाले से मापते है। वे तरकारी को सही तरीके से नही खाते वरन् उसमे दिए मिर्च मसाले-खटाई मे लगाकर रोटी खाते है। कई वर्षो बाद धर्मचन्दजी से जब परिचय हुआ तब इस विषय पर प्रश्न करने पर उन्होने बताया कि जहा हरी सब्जियाँ शरीर को पोषक तत्व देती है, वहाँ मिर्च-मसाले हमारी पाचन-शक्ति को बिगाड़ते हैं। और इस विचार के पीछे उनका अपना विश्वास और अनुभव था। अपने दैनिक भोजन मे भी वे कम मसाले की उबली सब्जिया और अकुरित अनाज का उपयोग करते हैं।

समाज के प्रति सरल उदारता उनकी एक विशेषता है। जनवरी १९७८ मे नॉर्थ कलकत्ता लायन्स क्लब के अस्पताल को उन्होने करीब पन्द्रह हजार के अवदान से एक इ० सी० जी० मशीन एव इ० एन० टी० विभाग के लिए कई उपकरण प्रदान किये। इसके पश्चिम बगाल के मन्त्री श्री प्रसान्त सूर उद्घाटन कर्त्ता थे। जब इस कार्य के लिए सब सरावगीजी की प्रशंसा कर रहे थे तो उन्होने अपने भाषण मे कहा कि "प्रशसा का पात्र तो अवदान लेनेवाली सस्थाएं है। हमें तो इससे यश और पुण्य मिलता है। सस्था के कार्य मुक्का मारकर लाडु खिलाती है। आप लोगो ने जोर देकर यह कार्य करवाया इसके लिए आभारी तो आपका मैं हूं।

देकर आभार स्वीकार करने की हमारी सस्कृति की यह पुनीत विशेपता है। जिसका ज्वलत उदाहरण धर्मचन्दजी है।

बचपन में पढा था, आर्यो की युवावस्था ७५ वर्ष तक होती थी। लगता था यह आदर्श कल्पना है और अपने पूर्वजो की प्रशसा के लिए एक अलकार मात्र है। पर एक दिन आया जब यह तथ्य सर्वदा सत्य प्रतीत हुआ। करीब १९८० की बात है "विकास" की हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता "पोद्दार छात्र निवास" मे हो रही थी। धर्मचन्दजी सर ---्य अतिथि थे। उनकी आयु उस

समय ७५ वर्ष की थी। उसी समय 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में उनका चित्र छपा, लिखा था ७५ वर्ष का युवक। जब सरावगीजी का परिचय और प्रशंसा हिन्दुस्तान के लेख के उद्धरण से की गई कि वे ७५ वर्ष की आयु मे भी कितने स्वस्थ हैं, तो सरावगीजी ने अपने भाषण मे कहा कि 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के इस परिचय ने मेरा अहित ही किया है। मैं देखने में ६० का लगता हूं पर इसने सब जगह मेरी आयु का प्रचार कर दिया। यह उनके मनोबल, खुशमिजाजी, आहार नियन्त्रण और व्यायाम का परिणाम है कि इस आयु मे भी इतने स्वस्थ और चुस्त है। जीवन का दृष्टिकोण व्यक्तित्व के निर्माण मे बड़ा महत्वपूर्ण योगदान करता है। और धर्मचन्दजी का दृष्टिकोण बहुत संयत, आशावादी और उत्साहपूर्ण है। उनको प्रायः लोग कहते हैं कि इस उम्र मे कड़ी कसरत नही करनी चाहिए पर वे इसका एक ही उत्तर देते हैं कि जब मैं सुगमता से यह कर पा रहा हू तो मुझे इसके बन्द कर देने की क्या आवश्यकता है।

एक दिन मैंने धर्मचन्दजी से पूछा कि क्या आपको बढ़ती हुई उम्र से कमजोरी प्रतीत नही हो रही, तो उन्होने कहा कि संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन कितना चुस्त और कर्मठ है, मैं उससे केवल ९ वर्ष ही तो बड़ा हूं। यही जीवन का दृष्टिकोण सरावगीजी को स्वस्थ और युवा बनाए हुए है। ठीक ही है "मन के हारे हार है, मनके जीते जीत"। सरावगीजी मनोबल के जीते जागते प्रतीक है।

धर्मचन्दजी एक प्रभावशाली लेखक हैं जिन्होने प्राकृतिक चिकित्सा, योग आदि पर बहुत-सी पुस्तकें लिखी है। उनमे से अधिकाश सर्व सेवा सघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी से प्रकाशित है। एक दिन जब उनसे पूछा ' आप इतनी सस्ती कीमतो पर इन पुस्तको को कैसे दे पा रहे हैं, तो उन्होने कहा कि ये पुस्तकें बनिये की बेटो की तरह है। जैसे बेटी को पहना-ओढाकर दायजा देकर विदा करते हैं, वैसी ही हमारी पुस्तकें घर मे कुछ न कुछ खर्चा लगाकर लोगो के लाभ के लिए प्रकाशित होती है। उनका यह विचार एक ऐसी सेवा वृत्ति का द्योतक हैं जो सहज ही ध्यान मे नही आता। पुस्तक को उपादेय बनाने के लिए वे अपनी अनुभूति की बात कहते है।

योग पर अपनी पुस्तक मे योगासनो मे उन्होने अपने चित्र देकर यह प्रमाणित किया है कि केवल सिद्धान्तो मे नही वास्तव मे ही उनका विषय मे

बहुत प्रवेश और अनुभव है। उस पुस्तक के कुछ प्रयोगो से मुझे भी साइटिका रोग मे लाभ मिला है। उनकी पुस्तको का उद्देश्य समाज का हित है।

लायन्स क्लब की कार्य समिति की बैठको मे कई बार उनके घर जाने का मौका मिला। एक दिन छत पर उनका साधना कक्ष और सुन्दर बगीचा देखा तो आश्चर्य हुआ कि कितने विषयो मे उनकी रुचि है। भिन्न-भिन्न प्रकार के पौधे। एक तरफ एक पखा लगा था पूछने पर पता चला वे विमान चालन में भी सिद्ध हस्त थे और एक अपना छोटा-सा विमान था जो समय के चपेटे मे जीर्ण हो गया, उसीका यह पखा स्मृति स्वरूप रखा है। समाज मे अधिकाश लोग ऐसे मिलते है जो हर विषय पर धड़ाधड़ उपदेश देते रहते है पर अपने जीवन पर उतारे हुए अनुभूत उपदेश देनेवाले महान पुरुष यदाकदा ही मिलते है। धर्मचन्दजी सरावगी ऐसे ही एक पुरुषार्थी महापुरुष हैं जिनकी कथनी और करनी मे अन्तर नही है। किसी महान दार्शनिक ने कहा था "दूर से अधिकांश व्यक्तित्व मधुर लगते है पर हम जब पास जाते है तो उनमे पसीने की दुर्गन्ध आती है" पर धर्मचन्दजी का व्यक्तित्व ऐसा है जितना उनके पास जाते है हम आदर्श और यथार्थ के एकात्मा के सौरभ की सुगन्ध पाते हैं। उनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एव व्यावसायिक सब क्षेत्रो मे स्तुत्य रही है। ऐसे ही व्यक्ति समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत कर सकते हैं। □

एक अनोखा व्यक्तित्व

□ □

हनुमानमल वर्मा

सन् १९५९ मे मुझे कलकत्ता आए लगभग आठ वर्ष ही हुए थे। इस बीच कलकत्ता के सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओ से मेरा थोडा-बहुत परिचय हो चुका था पर सरावगीजी से व्यक्तिगत परिचय नही हो सका। हा पर स्थानीय समाचार पत्रो एव प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी लेखो के द्वारा उनके बारे मे जानकारी मिल जाया करती थी।

कलकत्ता मे अल्पकालीन प्रवास मे ही मुझे दमा की शिकायत हो गई थी। एलोपैथिक पद्धति से काफी उपचार करवाया पर लाभ नही हुआ। उस समय प्रवासी मारवाडी समाज मे डाक्टर किस्टो बाबू काफी प्रचलित थे। मेरी भी उनके प्रति अच्छी धारणा थी कि वे लोभी नही है और सही राय देते है। उन्होने कहा कि दमा की बीमारी मे लाभ चाहते हैं तो आप राधाकृष्णजी नेवटिया के पास मैदान मे चले जाएँ। वे योगासन प्राणायाम आदि से उपचार करवाते

है। नेवटियाजी से मेरा पहले से ही परिचय ही नही था बल्कि उनका मुझे बराबर ही स्नेह मिलता रहा है। अतः उनके सान्निध्य में मैंने आवश्यक योगासन व प्राणायाम की जानकारी, कलकत्ता मैदान स्थित यौगिक संघ मे, प्राप्त की।

प्राकृतिक चिकित्सा प्रेमी

उन दिनो प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी 'स्वस्थ-जीवन' नामक मासिक पत्रिका कलकत्ते से प्रकाशित होती थी। धर्मचन्द सरावगी उसके प्रवन्ध-सम्पादक थे। वह पत्र बराबर ही घाटे मे चलता था जिसकी पूर्ति धर्मचन्दजी अपने निजी प्रतिष्ठानो के विज्ञापन देकर किया करते थे। 'स्वस्थ-जीवन' कार्यालय की व्यवस्था के सम्बन्ध मे नेवटियाजी का आदेश था कि मैं उसका कार्यभार सम्भालू। मैं कलकत्ता स्थित रा० ब० विश्वेश्वरलाल मोतीलाल हलवासिया ट्रस्ट में कार्यरत था फिर भी मैं उनके अति स्नेहासिक्त आदेश को नही टाल सका और अशकालीन कार्य करने की स्वीकृति मैंने दे दी। दूसरे दिन ही उन्होने सरावगीजी से मेरा परिचय कराया। परिचय के समय उनके व्यवहार ने मुझे इतना प्रभावित किया कि मैं अपने कलकत्ता प्रवास तक (१९८२ के मध्य तक) अर्थात् लगभग २३-२४ वर्षो तक उनके यहा सेवारत रहा। कुछ वर्षों बाद जब 'स्वस्थ-जीवन' कार्यालय वाराणसी, नई दिल्ली चला गया तो भी उन्होने मुझे अपने पास ही अन्य प्रतिष्ठान मे लगाये रखा।

सरावगीजी प्राकृतिक चिकित्सा के अनन्य उपासक है। प्राकृतिक चिकित्सा जगत मे उस समय उनका कोई शानी नही था। जहा प्राकृतिक चिकित्सा थी वहां सरावगीजी थे और जहा सरावगी जी थे वहा प्राकृतिक चिकित्सा थी। मारवाडी रिलीफ सोसाइटी मे प्राकृतिक चिकित्सा का अलग विभाग सरावगीजी की ही देन है। ये प्राकृतिक चिकित्सा के लिए सदैव तन-मन, धन से तैयार रहते है। अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के जन्मदाता भी सरावगीजी ही है जिसका प्रथम अधिवेशन श्री वालकोवा भावे की अध्यक्षता मे कलकत्ता मे मनाया गया। सरावगीजी अनेक वर्षो तक इस अखिल भारतीय सस्था के महामत्री के पद पर रहे हैं। प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति उनकी इतनी अधिक आस्था है कि उन्होने अपने यहाँ से लाखो रुपयो का अपना उद्यान दान देकर प्रकृति निकेतन ट्रस्ट की स्थापना की है। उनकी ऐसी बरावर इच्छा रही कि सरकार उपचार की अन्य पद्धतियो के साथ-साथ प्राकृतिक

चिकित्सा उपचार को भी मान्यता प्रदान करें। यह एक प्रसन्नता की बात है कि सरकार आज प्राकृतिक चिकित्सा के मद मे लाखो रुपया खर्च करती है। भारत स्थित अनेक प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र को केन्द्रीय सरकार का अनुदान प्राप्त है। सरावगीजी इस दिशा मे यही पर रुके नही बल्कि उनकी ऐसी इच्छा थी कि एलोपैथिक, होम्योपैथिक व अन्य चिकित्सा पद्धतियो के लिए चिकित्सक तैयार करने के लिए जिस प्रकार मेडिकल कॉलिज हैं उसी प्रकार प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक तैयार करने हेतु एक कॉलिज की स्थापना की जाए। उन दिनो श्री मोरारजी देसाई केन्द्रीय मत्री मण्डल मे थे जो प्राकृतिक चिकित्सा के अनन्य उपासक हैं। उनका भी इस दिशा मे पूरा सहयोग मिला। प्रश्न जब जमीन-भवन व अर्थ का सामने आया तो सरावगीजी तन-मन-धन से कमर कस कर मैदान मे आ डटे। इस कार्य हेतु डायमण्ड हार्बर रोड स्थित अपने जैन उद्यान नामक वहुत वडी भूमि पर लगे वगीचे को प्रकृति निकेतन ट्रस्ट को कॉलिज स्थापना हेतु अर्पित करते हुए भवन निर्माणार्थ वहुत वडी राशि भी दान मे दी। इतना ही नही, अर्थ सचय हेतु स्वय भी निकल पडे। धुन के पक्के तो सदा से ही रहे हैं। जो जच गई उसे पूरा करके ही रहे। आखिर प्राकृतिक चिकित्सा कॉलेज की स्थापना होकर रही जहा चार वर्षीय डिप्लोमा कोर्स अध्यापन की व्यवस्था थी। इस कालेज के साथ-साथ प्राकृतिक चिकित्सालय भी चलता था जहा असाध्य बीमारी के रोगियो की चिकित्सा की समुचित व्यवस्था थी। कालान्तर मे सरकार की उदासीनता एव जन-मानस मे प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के प्रति उत्साह के अभाव मे उक्त कालेज वन्द हो गया। सुनने मे आया है कि आजकल वहा नेचर क्योर एण्ड योगा रिसर्च इन्स्टीच्यूट के नाम से अच्छे ढग का प्राकृतिक चिकित्सालय सुचारु रूप से चल रहा है जो प्रसन्नता का विषय है।

राष्ट्र भाषा प्रेमी

मेरा कुछेक साहित्यिको व राजनीतिज्ञो से परिचय है जो हिन्दी प्रेमी हैं पर इस दिशा मे जितनी कट्टरता सरावगीजी मे है उतनी मैंने किसी मे नही देखी। जैन हाउस मे घुसते ही मुख्य द्वार से लेकर ऊपर छत तक हम जायेंगे तो हमे ऐसा महसूस होगा कि ये कितने कट्टर हिन्दी प्रेमी हैं।

सत्य प्रेमी

मुझे इनके पास लगभग २३-२४ वर्षों तक कार्य करने का सौभाग्य मिला। मैंने ऐसा पाया कि ये सत्य भाषियो की कद्र करते हैं। एक वार मेरी थोडी-सी

असावधानी से 'स्वस्थ-जीवन' कार्यालय को कई हजार का नुकसान हो गया था। भूल नजर आते ही मैंने उनसे स्पष्ट कहा था कि मेरी असावधानी से ऐसा हो गया है। इन्होने बिना किसी प्रकार का उलहना दिये कहा कि ठीक है। उनका इस प्रकार का व्यवहार सत्य बोलने की प्रेरणा देता है। वे अपने व्यवसाय एवं अपने जिम्मे सौपे गये कार्य की इतनी अच्छी देखरेख रखते है कि उन्हे ठगना व धोखा देना सरल कार्य नही है।

सुलेख प्रेमी

प्राय सभी चाहते है कि सभी कागजात सुन्दर अक्षरो मे हो पर सरावगीजी ऐसा चाहते ही नही है अपितु उसका पालन भी करते है। वे अपने यहा १-२ कर्मचारी तो केवल स्वच्छ व सुन्दर अक्षर लिखने के लिए ही रखते है जो उनके निजी खाता-बहियो, रजिस्टरो आदि को सुन्दर अक्षरो से लिखते है। कोई भी व्यक्ति जो उनके रजिस्टर आदि देखेगा, प्रशसा किये बिना नही रहेगा।

नवीनता-प्रेमी व शौकीन तबियत के

बराबर ऐसी इच्छा रहती रही है कि कुछ नई चीज मेरे घर मे हो। ऐसा शौक बचपन से ही है। जब ये छोटे थे तब मन मे ऐसा विचार आया कि ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि दरवाजा खुलते ही बत्ती जल जाए व पखा चालू हो जाए। अपने दिमाग और बिजली मिस्त्री के सहयोग से उन्होने उस शौक को पूरा किया। आज भी उनके आवास कक्ष को देखें तो कुछ नवीनता अवश्य ही मिलेगी। एक बार स्व० सुखाड़ियाजी इनके घर चाय पान पर आये। सरावगीजी ने उनको अपना शयन कक्ष एव बाथरूम दिखाया। पर उन्होने अनुभव किया कि वास्तव मे बाथरूम देखने लायक ही है। उन दिनो बेसीन के नल के नीचे हाथ देते ही पानी का आना और सिस्टर्न की जजीर के खीचते ही गमले मे पानी के बहने के साथ-साथ चारो ओर सेण्ट की सुगन्ध, यह अद्भुत ही था। उनका हर कार्य कुछ न कुछ नवीनता लिए हुए होता है।

शौकीन तबियत के व्यक्ति तो है ही। भरपूर जवानी मे इनके वस्त्रो की सिलाई कलकत्ते के सर्वश्रेष्ठ दर्जी के यहा होती थी। आज तो वह शौक नही है पर इत्र व सेंट तो आज भी लखनऊ से मगाकर लगाते है। सफाई के प्रेमी है।

स्वास्थ्य-प्रेमी

प्राकृतिक चिकित्सा प्रेमी अथवा प्राकृतिक चिकित्सा के भक्त तो बहुत से व्यक्ति है पर उसका अक्षरशः पालन करना कठिन है। सरावगीजी इसके अपवाद हैं। अपनी प्रत्येक शारीरिक व्याधि को प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से ही दूर करते हैं। इस ८१ वर्ष की अवस्था मे भी वे नियमपूर्वक प्रतिदिन व्यायाम शाला जाकर श्रम साध्य व्यायाम करते हैं। व्यायाम के बाद वही दुग्ध पान करते हैं। खाने-पीने का नियम भी इनका बड़ा विचित्र है। केवल एक बार भोजन करते हैं। भोजन की तालिका भी उनकी बनी रहती है—प्रतिदिन प्रत्येक प्रान्त का भोजन। इस प्रकार इनके भोजन मे प्रतिदिन थोड़ा बहुत परिवर्त्तन होता ही रहता है। भोजन मे प्रायः मौसमी फलो का व्यवहार ही होता है, अनाज की मात्रा बहुत थोडी। सरावगी लोग धार्मिक दृष्टि से लहसुन नही खाते। हालाकि सरावगीजी मदिर जाते हैं तथा अनेक धार्मिक सस्थाओ से सबधित है पर स्वास्थ्य के मामले मे इनका दृष्टिकोण उदार है अर्थात् लहसुन का प्रतिदिन सेवन करते हैं। खाने के भी सरावगीजी शौकीन हैं। आइसक्रीम, जलेबी आदि खाने की इच्छा होती है तो अवश्य खाते है। इस प्रकार नियम पूर्वक खान-पान, व्यायाम व प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्तो का पालन करते हुए आज भी वे इस आयु मे पूर्ण स्वस्थ हैं। कभी-कभी कहते है कि प्राकृतिक चिकित्सा ने कम से कम मुझे जीना तो सिखाया ही है। पिछले ४० वर्षो से इन्होने किसी प्रकार की औषधि नही ली है।

नियतिवादी

सरावगीजी सदा से ही भाग्य मे विश्वास करते आये हैं। विश्वास ऐसा भी नही कि अजगर करे न चाकरी ·। क्रियाशील तो प्रारम्भ से ही रहे है पर तदवीर के साथ-साथ तकदीर को भी मानते हैं। कहते है जहा भी मैंने हाथ दिया, प्रभु ने मुझे दिया ही दिया, जबकि मैंने कई ऐसे क्रियाशील व्यक्तियो को देखा जो निष्ठापूर्वक धधा करते हैं पर उन्हे असफलता ही मिलती है। अत भाग्य पर अविश्वास कैसे हो वे मजाक मे कभी-कभी यहा तक भी कह देते है कि मैं तो तकदीर का साड हूं।

हरफन मौला व मौज-मस्ती वाले

सरावगीजी मस्त तबियत के व्यक्ति हैं। हसी-मजाक प्रिय। साथियो मे हमेशा हसी-मजाक करते ही रहते है। हास्य व शृगार रस के प्रेमी हैं अतः

जहाँ कही भी हास्य रस का कवि सम्मेलन होता सपत्नी वे अवश्य पहुंचते। जीभर कर सुनने के लिए कभी-कभी हास्य रस के कवियो को अपने निवास स्थान पर सादर आमत्रित कर लेते हैं।

यदि वे चाहे तो २-४ धधे और भी शुरू कर सकते है पर इनका विचार है कि इससे सिवाय मानसिक अशान्ति के लाभ कुछ होने वाला है नही। भगवान ने इतना दे रखा है कि खूब आराम से जीवन यापन कर लेता हूं, किसी बात की कमी नही है। अपने लिए यथेष्ठ है तथा बच्चो के लिए भी काफी है फिर किस लिए परेशानी मोल लेनी। कभी मजदूरो का हड़ताल तो कभी मामले बाजी, कभी इनकम टैक्स, सेलस टैक्स के झझट·· इस प्रकार परेशानी भरा जीवन आखिर क्यो ? वर्त्तमान अवस्था मे कितना आनन्द है।

इतने वर्षो के सम्पर्क मे मैंने यह भी पाया कि इनके कार्य मे उतावलापन, हडबडी आदि नही है। प्रारम्भ मे तो तेज स्वभाव के थे पर जैसा कि वे अक्सर कहते रहे कि बड़े-बडे व्यक्तियो के सम्पर्क मे आने के बाद उन्होने सीखा कि क्रोध नही करना चाहिए। इस प्रकार उन्होने अपने स्वभाव मे बहुत बडा परिवर्त्तन करके अपने आप को सुखी ही बनाया है।

बालहट

जैसा कि मैंने ऊपर लिखा कि वे धुन के पक्के है। जो बात जंच गई वह करके ही रहते है। बालहट की तरह अपनी बात मनवा कर रहते है या करके रहते है चाहे उसके लिए कितना ही प्रयास करना पडा हो अथवा खर्च करना पडा हो। विलायत जाने की धुन सवार हुई तथा वायुयान चालक बनने का शौक हुआ। इकलौते पुत्र होने के कारण इनके माँ-बाप इनकी इन दोनो ही इच्छाओ की पूर्ति से सहमत नही थे पर बालहट जो ठहरा, माँ-बाप को मनवा कर रहे और सन् १९२९-१९३० मे, जब मारवाडी समाज मे विरले ही सुसम्पन्न व्यक्ति विलायत यात्रा पर जाते थे और जब मारवाडी समाज मे एक भी वायुयान चालक नही था तब उन्होने अपने शौक पूरे किये अर्थात् विलायत यात्रा पर गये और वायुयान चालक बने। यही नही, उन्होने निज का वायुयान भी खरीदा जिस पर सपत्नी सम्पूर्ण देश का भ्रमण किया। निजी वायुयान का एक पखा आज भी उनके निवास स्थान पर यादगार मे सुरक्षित टगा है।

जिज्ञासु

सरावगीजी क्रियाशील बराबर ही रहे हैं। कुछ न कुछ सीखने की इच्छा हरवक्त रहती है। सर्कस मे साइकिल के विभिन्न खेलों को देखकर इनकी इच्छा भी उन्हे सीखने की बलवती हुई और आखिर सीखकर ही रहे तथा समय-समय पर इसका प्रदर्शन भी किया अभी कुछ वर्ष पहले ही इनको चित्रकार बनने का शौक जागृत हुआ। चारो ओर पत्र व्यवहार करके साधनो को जुटा-कर सीखना शुरु किया और अल्प समय मे ही चित्रकार बन गए। इनके द्वारा बनाये गये कुछ चित्र इनके निवास स्थान पर जहाँ-तहाँ लगे अवश्य मिलेंगे।

फोटोग्राफी का भी इनको अजीब शौक था। अपने पास अगुली जितना लम्बा और एकदम पतला एक छोटा-सा कैमरा शायद आज भी विद्यमान है जिससे वे स्वय फोटो खीचते रहे। अपने बाल्यकाल, यौवनावस्था, सार्वजनिक जीवन, राज-नैतिक जीवन के शायद सैकडो ही फोटो होगे जो अनेको एलबमो मे लगे हुए हैं।

अपने जीवन मे इन्होने अनेको शौक पूरे करने के साथ-साथ घुडसवारी, नौका विहार, तैरना आदि भी सीखा। इस अवस्था मे अभी लाठी चलाना सीखना प्रारम्भ किया है। इनके एलबमो को देखने के बाद मैंने पूछा कि आपने कौन-सा शौक पूरा नही किया ? उन्होने हसकर उत्तर दिया कि दुनिया मे शौक तो बहुत है, कौन सब पूरा कर सकता है पर हाँ जिस शौक की इच्छा हुई उसे प्रभु ने पूरा करने मे मेरा बराबर सहयोग किया। एलबमो को देखने के बाद मेरे मन मे एक प्रश्न आया कि सरावगीजी को मैंने राजनैतिक व सार्वजनिक जीवन मे अनेक रूपो मे देखा है पर कही भी इनको मैंने एक सगीतज्ञ के रूप मे नही देखा। शायद इस ओर उनका ध्यान ही नही गया हो अथवा रुचि ही जागृति नही हुई हो। सुरीले कण्ठो के अभाव मे, जो एक नैसर्गिक देन है वे एक गायक नही बन सके हो पर किसी भी प्रकार के वाद्य यन्त्र पर अधिकार रखना इस प्रकार के लगन शील व्यक्ति के लिए कठिन नही है। इस दिशा मे अब भी शौक जागृत हो जाए तो कोई बडी बात नही।

राजनैतिक व सार्वजनिक कार्यकर्ता

सरावगी जी केवल प्राकृतिक चिकित्सा व स्वास्थ्य प्रेमी ही नही है अपितु एक अच्छे राजनैतिक कार्यकर्त्ता भी रहे है। काग्रेसी कार्यकर्त्ता के रूप मे

कारपोरेशन के कौंसिलर बने, पश्चिम बंगाल विधान परिषद के सदस्य रहे राज्य सभा के सदस्य रहे भी निर्वाचित हुए। राजनीति से तो अब इन्होने शायद सन्यास ले लिया है। सार्वजनिक क्षेत्र में भी शायद सैकड़ो सस्थाओ से किसी न किसी रूपसे सम्बन्धित रहे है। आज भी प्रकृति निकेतन, बड़ाबाजार युवक सभा व अन्य कुछेक सस्थाओ मे सक्रिय भूमिका अदा करते है। राजनैतिक व सार्वजनिक क्षेत्रो मे तथा प्राकृतिक चिकित्सा जगत मे अहम भूमिका निभाते रहने से इनका उच्चकोटि के नेताओ से निकट सम्पर्क हो गया। श्री मोरारजी देसाई, श्री यू० एन० ढेबर, श्री मन्नारायण जैसे नेता जब कभी कलकत्ता आते तो श्री सरावगीजो के यहा ही ठहरते थे। सरावगीजो चाहते तो इस प्रकार के नेताओ के परिचय का व्यापारिक क्षेत्रो मे किसी न किसी रूप से लाभ उठा सकते थे पर इन्होने इन लोगो से कभी भी इस प्रकार के विपय पर चर्चा तक नही की।

श्री मोहन लाल सुखाडिया धर्मचन्दजी के यहाँ जब अल्पाहार के लिए आये तब धर्मचन्दजी की सफाई, छतका बगीचा, कार्यालय आदि की सुव्यवस्था देखकर इतने प्रभावित हुए कि उन्होने धर्मचन्दजी को कहा कि राजस्थान के व्यापार मत्रालय की जिम्मेवारी लेने के लिये, व्यापार मत्री बनने की स्वीकृति दे दें तो बाकी का कार्य वह खुद कर लेंगे। पर धर्मचन्दजी ने कहा : मेरे पिताजी अवकाश ग्रहण कर चुके है। बच्चे दोनो छोटे है। मुझे अपना व्यापार सँभालना है। मुझे क्षमा करें।

सरावगीजी एक कार्यकर्त्ता ही नही एक लेखक भी है। इन्होने प्राकृतिक चिकित्सा पर अनेको पुस्तकें लिखी है : 'स्वस्थ जीवन' मे तो बराबर ही "डायरी के बोलते पन्ने" स्तम्भ मे इनके सुरुचिपूर्ण प्राकृतिक चिकित्सा सबधी अनुभव व सस्मरण आते रहे है। धर्मयुग, इलस्ट्रेटेड वीकली, साप्ताहिक हिन्दुस्तान आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओ मे इनके यदाकदा स्वास्थ्य सम्बन्धी लेख प्रकाशित होते रहते हैं। ये अग्रेजी, हिन्दी, बगला मे अच्छे वक्ता भी है।

सरावगीजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। इस प्रकार के व्यक्ति के अभिनन्दन का हमे पुनः अवसर मिले यही प्रभु से कामना है। □

इक्यासी वर्ष के नवयुवक

□ □

डा० जी० के० सराफ

अस्सी वर्ष की उम्र मे किसी व्यक्ति को स्वस्थ देखना एक आश्चर्यजनक बात है। खासकर, मारवाडी वर्ग मे ऐसे व्यक्ति को पाना और भी मुश्किल है। धर्मचन्द सरावगी ८१ वर्ष की अवस्था मे भी बिल्कुल स्वस्थ हैं और अभी भी प्रतिदिन कठिन व्यायाम और योगासन करते है तथा नवयुवको की तरह अभी भी सीधे है तथा बलिष्ठ भुजाओ के मालिक हैं। वे अपने स्वास्थ्य के प्रति हमेशा अनुशासित तथा सजग रहते है तथा उनके लिए उदाहरण है जो अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह रहते है।

श्री धर्मचन्द सरावगी एक भद्र, नम्र और मधुर व्यवहार, कुशल व्यक्तितत्व वाले व्यक्ति हैं, यह भी प्रकृति की ही देन है। नेचर क्योर हास्पीटल, जिसकी स्थापना इन्होने जोका मे की है, देश के इस भाग के व्यक्तियो के लिए एक महान कार्य कहा जायेगा। १९३० मे ये प्रथम मारवाड़ी वायुयान चालक बने। १९३४

मे बिहार मे भूकम्प-पीड़ितों की सेवा इन्होने मन लगाकर की। मारवाडी रिलीफ सोसाइटी में महासचिव के रूप मे भी इन्होने सेवा की। अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के महासचिव भी थे। इन्हे एक "आल राउण्डर" की सज्ञा दी जा सकती है, जिन्होने सभी वर्ग के लोगो के लिए तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी योजनाओ के लिए निःस्वार्थ सेवा की। ये एक अच्छे चित्रकार भी हैं। इन्होंने कई बार विश्व-भ्रमण भी किया है। श्री धर्मचन्द सरावगी एक उदाहरण है—खासकर मारवाड़ी वर्ग के लिए जहां अधिकतर व्यक्ति सिर्फ पैसा कमाने और भोजन करने मे ही व्यस्त रहते है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वे स्वस्थ और दीर्घजीवी हो जिससे अधिक से अधिक व्यक्ति उनकी सेवाओ से लाभान्वित हो सके। □

सौम्यता की प्रतिमूर्ति

□ □

आचार्य हरिगोपाल

चिर युवा श्री धर्मचन्द से मेरा परिचय सन् १९४७ में हुआ जब मैंने मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की रसायनशाला के व्यवस्थापक के रूप मे कार्य सम्भाला। धर्मचन्दजी उस समय उक्त सस्था के प्रधान मत्री थे। रसायनशाला के कार्य की देख-रेख मे मुझे सरावगीजी से बडा ही सुन्दर मार्ग दर्शन प्राप्त होता था।

सरावगीजी का एक विशेष गुण यह है कि वे कार्यकर्त्ता की बडी कद्र व उसका सम्मान करते हैं जिससे उसका उत्साह-वर्द्धन होता है। मैं उनके इस गुण से काफी प्रभावित एव लाभान्वित हुआ। वे सबके साथ खूब प्रेम से घुलते-मिलते है तथा इतने साधन सम्पन्न व उच्च पद प्राप्त करने के बावजूद भी इनमे किसी भी प्रकार का अह नही हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा के प्रेमी होने के नाते धर्मचन्दजी से मेरा सम्पर्क घना हुआ। सरावगीजी तो इस पद्धति के पृष्ठपोषक रहे है तथा इस क्षेत्र मे

इन्होंने काफी अध्ययन व गवेषणा भी की है। जिसके लिए इन्होने अनेक वार विदेशों का भ्रमण किया एवं इस विषय मे अनेक पुस्तके लिखी तथा भारत में इस क्षेत्र मे कार्य करने वालो को अपनी पुस्तको के माध्यम से काफी सामग्री प्रदान की जिससे इस प्रणाली से भारत मे अपना कार्य सुचारु रूप से चलाने मे वड़ी मदद मिली है।

सरावगीजी के ही प्रयास से कलकत्ते मे सन् १९५६ मे "अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद्" की स्थापना हुई और आप इसके सस्थापक प्रधान मत्री चुने गए। आपको इस सस्था का प्राण भी कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। इस सस्था का एक अधिवेशन कलकत्ते मे सन् १९६३ मे गुजरात के भूतपूर्व राज्यपाल एव सुप्रसिद्ध गाधीवादी स्व० श्रीमन्नारायण अग्रवाल की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ था। उस समय प्राकृतिक चिकित्सा के अनन्य पृष्ठ पोषक श्री मोरारजी देसाई इस सस्था के अध्यक्ष थे। उस अधिवेशन के स्वागत मत्री स्व० श्री मोतीलालजी पोद्दार थे तथा सयुक्त मत्री का भार मुझे सौपा गया था। उस अधिवेशन के प्रमुख सूत्रधार सरावगीजी थे तथा आपके मार्ग दर्शन व देख-रेख में वह अधिवेशन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ था।

आपके प्रयास से कलकत्ते मे प्राकृतिक चिकित्सा एव इसके शिक्षण के निमित्त कलकत्ते मे डायमण्ड हार्बर रोड पर जोका के निकट "प्रकृति निकेतन" की स्थापना की गई जिसके लिए सरावगीजी ने "जैन उद्यान" नामक अपना वगीचा प्रदान कर दिया। जिसमे प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति द्वारा विभिन्न प्रकार के रोगो की चिकित्सा करने व इस पद्धति के चिकित्सको की शिक्षण व प्रशिक्षण की व्यवस्था है, जिससे काफी सख्या मे लोग लाभान्वित होते हैं। इस सस्था का नाम बदलकर अब "नेचर क्योर एण्ड योगा रिसर्च इन्स्टीच्यूट" हो गया है तथा सरावगीजी इसके सभापति के रूप मे आज तक इससे सलग्न है। आप प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार व प्रसार मे पूर्ण रूप से प्रतिवद्ध है। ८१ वर्ष की अवस्था मे भी आप पूर्ण स्वस्थ है तथा नियमित रूप से सभी प्रकार के व्यायाम करते हैं। आप अभी भी युवा है तथा वृद्धावस्था का इन पर कोई प्रभाव नही पडा है। इन्हे चिर युवा कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। श्रद्धेय श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका की तरह आप भी युवको के प्रेरणा स्रोत है। आप कलकत्ते की सुप्रसिद्ध व्यायामशाला वड़ावाजार युवक सभा को वरावर आर्थिक सहयोग देते रहे हैं

तथा आज भी वहा जाकर नियमित रूप से व्यायाम करते है। तथा वहा आकर व्यायाम करने वालो को मार्ग दर्शन व प्रेरणा प्रदान करते हैं। सन् १९८३ मे आप इस सभा के सभापति भी निर्वाचित हुए थे।

सरावगीजी हिन्दी के बडे पृष्ठपोपक है। अपने व्यवसायिक कार्यो मे भी हिन्दी का प्रयोग करते हैं। भगवान से प्रार्थना है कि इस कर्मयोगी चिर युवा एव सौम्यता की प्रतिमूर्त्ति को दीर्घायु करे ताकि सुदीर्घकाल तक ये सहस्रो युवको को मार्गदर्शन प्रदान करते रहे व उनके प्रेरणास्रोत बने रहे। यह बडी ही प्रसन्नता का विपय है कि सौम्य मूर्त्ति एव सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओ के पृष्ठपोपक के अभिनन्दन का आयोजन इनकी ८१ वी वर्षगाठ के अवसर पर कलकत्ते के सुधी-जनो द्वारा किया जा रहा है जो बडा ही स्तुत्य है। □

अद्भुत त्याग के धनी

□ □

यतीन चक्रवर्ती

सबसे पहले मैंने धमचन्दजी को १९६६ मे देखा जब वे पश्चिम बंगाल विधान परिषद के सदस्य चुने गए यद्यपि ये हमारी विरोधी काग्रेस पार्टी की ओर से आए थे और उन्ही की पक्ति मे बैठा करते थे। इनके बारे मे सुना कि १९६४ के चुनाव मे राज्यसभा की सीट जीतकर भी काग्रेस पार्टी के अध्यक्ष श्री अतुल्य घोष के कहने पर दूसरे सदस्य के लिए राज्यसभा मे बिना शपथ लिए ही अपनी सीट से इस्तीफा दे दिया। ऐसा अद्भुत त्याग बहुत थोडे लोगो मे पाया जाता है इसलिए उस वक्त के मुख्यमन्त्री श्री प्रफुल्लचन्द्र सेन, श्री विजय सिह नाहर तथा काग्रेस पार्टी के और सदस्य भी उन्हे वडी श्रद्धा से देखा करते थे। हमलोगो ने भी यह बात सुनी तो उनके त्याग के कारण उनके प्रति एक अच्छी भावना उत्पन्न होना स्वाभाविक था।

धर्मचन्दजी का स्वास्थ्य अच्छा है। वे उस समय अपनी जेब मे घर के लगाए हुए पान और खुशबूदार सुपारियां रखा करते थे जिसे पास बैठे हुए सदस्य उनके पहुंचने पर या खुद देरी से आने पर उनके पास बैठकर पान-सुपारी ले लिया

करते थे। जो दूर बैठे रहते थे वे अवकाश के समय जब सब बाहर निकलते तो उनसे पान सुपारी ले लिया करते थे। धर्मचन्दजी मिलनसार व्यक्ति हैं और अपना समय खत्म होने के बाद फिर वे चुनाव नही लडे।

धर्मचन्दजी ने अपने मकान के नीचे ही स्टील फर्नीचर की दुकान साथ ही स्वास्थ्य सम्बन्धी पुस्तको की दुकान कर रखी हैं जिसमे वे खुद सध्या को ५-३० बजे के बाद घण्टे, डेढ-घण्टे बैठते हैं। उनकी दुकान मे सब चीजो पर दाम लिखे हैं और वे कहा करते हैं कि कोई परिचित आजाए या कोई सस्था वाले आ जाएँ तो हम उसे कुछ दाम अवश्य कम कर देते है। और वे यह भी कहा करते हैं कि कोई सस्था वाला दाम देना नही चाहे पर हमारे ट्रस्ट का नाम ली हुई वस्तु पर दाता रूप मे लिखने की अनुमति दे तो हम उसे बिना मूल्य दे सकते हैं।

मुझे भी मेरे अन्तर्गत चलनेवाली सस्थाओ के लिए लेने का मौका मिला जिन चीजो का दाम दिए उसमे उन्होने दाम कम कर दिए और जिन चीजो पर हमने उनके ट्रस्ट का नाम लिख दिया उसे बिना मूल्य प्रेमपूर्वक दिया।

उपरोक्त मौके पर जब कई बार उनके यहाँ गया तो उनके अच्छे स्वास्थ्य का राज पूछा तो उन्होने बडाबाजार युवक सभा में जाकर व्यायाम करने की बात बताई। और फिर व्यायामशाला मे शारीरिक प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण के लिए मुझे बुलाया।

यह व्यायामशाला महाजाति सदन के एकदम पीछे है। हमे बराबर महाजाति सदन जाना पडता है पर कभी व्यायामशाला नही गए थे। उस दिन वहाँ की सारी व्यवस्था देखकर बडी प्रसन्नता हुई। वहां अखाडा, बास्केटबाल बालीबाल, जिमनास्टिक, टेबुलटेनिस, बेडमिन्टन, योगासन, कराटे, रायफल आदि की सारी व्यवस्था है।

धर्मचन्दजी ने भी यहाँ इस सस्था के उत्थान मे काफी धन-राशि दी हैं और १९८३ से इसके सभापति है।

मैंने उनसे एक बार अपनी लीवर की गड़बडी के लिए और भोजन के बाद वायु होने की बात बताई। तब उन्होने अपने जीवन मे आजमाए हुए बिना पैसे

के दो नुस्खे बताए। लीवर के लिए उन्होंने बताया कि एक चुटकी चावल सुबह-सुबह बिना चबाए निगल जाना चाहिए।

वायु के लिए बताया कि भोजन के बाद सीधे लेट कर आठ लम्बे सांस लें और फिर दाहिनी करवट होकर सोलह लम्बे सास लें फिर बाये करवट होकर ३२ लम्बे सास ले। जिससे वायु मुँह से या गुदा से निकल जाएगी।

सबसे विशेष बात है कि धर्मचन्दजी ८१ वर्ष की उम्र के बावजूद भी एक नौजवान जितना उत्साह रखता है उससे भी ज्यादा उत्साह रखते हैं। यह इसलिए सम्भव हुआ है कि वे युवा अवस्था से ही ब्रह्मचर्य साधना करते है। इतने बड़े व्यवसाई होते हुए भी इनका व्यवहार बहुत ही नम्र है जिसका नई पीढी को अनुकरण करना चाहिए। हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वे शतायु हो। □

प्रकृति-प्रेमी पुरुषार्थ

□ □

किशोरीलाल ढांढनिया

सन् १९५९-६० मे, मैं जब कलकत्ता कारपोरेशन मे डिप्टी मेयर चुना गया तभी से धर्मचन्दजी का सान्निध्य मुझे प्राप्त रहा है। धर्मचन्दजी उस समय निर्विरोध रूप से चुन कर आने वाले मारवाडी कौन्सिलर के रूप मे विख्यात हो चुके थे। कलकत्ता कारपोरेशन के लिए मैं जब स्थाई आर्थिक स्रोतो की खोज कर रहा था तो धर्मचन्दजी का प्रत्येक कार्य मे मुझे सराहनीय सहयोग रहा। बसो और ट्रामो मे धूम्रपान-निषेध करवाने मे धर्मचन्दजी ने जोरदार भूमिका निभाई थी।

आगे चलकर वे बगाल राज्यसभा के सदस्य चुने गए। इस चुनाव मे काग्रेस की ओर से तीन सदस्यो का चुनाव होना था। धर्मचन्दजी का स्थान यद्यपि पाचवाँ था और उनके चुने जाने की कोई आशा नही थी। किन्तु जब परिणाम निकले तो सभी चकित रह गए। धर्मचन्दजी इस चुनाव मे विजयी हो गए। स्व० अतुल्य घोष उस समय बगाल प्रादेशिक काग्रेस के अध्यक्ष थे। उनके आग्रह करने पर धर्मचन्दजी ने अपनी जीती हुई सीट दूसरे वरिष्ठ कार्यकर्ता के लिए छोड दी। धर्मचन्दजी ने यह त्याग बिना किसी प्रकार की हिचकिचाहट के, उत्साह और प्रसन्नता से किया। इस असाधारण त्याग के कारण काग्रेस अधिकारियो की दृष्टि मे धर्मचन्दजी बहुत ऊँचे उठ गए। धमचन्दजी के इस अभूतपूर्व त्याग का मेरे मन पर भी गहरा असर पडा।

इसके बाद तो धर्मचन्दजी को मैने अनेक सस्थाओ मे काम करते देखा जिसकी भूली-बिसरी यादें समय-समय पर मेरी स्मृति मे उभर आती है। मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के मन्त्री पद पर रहते हुए इन्होने हिन्दू-मुस्लिम

दगे के समय गाधीजी के निर्देशानुसार जो राहत कार्य किया वह भुलाया नही जा सकता। बाढ और भूकम्प के समय मे स्वय घटनास्थलो पर जाकर साहसिक कार्य किया करते थे।

वस्तुत धर्मचन्दजी का जीवन बहुमुखी रहा है। व्यायाम के प्रति भी इनकी रुचि अद्‌भुत है। आज भी अस्सी की उमर पार कर भी वे नियमित रूप से बडाबाजार युवक सभा मे व्यायाम करने के लिए जाते है। बुढापे और रोग से मुक्त इनका सुगठित सुन्दर शरीर आज भी जवानो को चुनौती देता-सा दिखाई देता है।

इनके स्वस्थ जीवन का राज इनका प्राकृतिक-चिकित्सा प्रेम भी है। अब तो ये सभी कामो से अलग हट कर मात्र प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के प्रचार-प्रसार के लिए ही समर्पित जीवन जी रहे है। इस कार्य के लिए इनका त्याग भी अपूर्व है।

डायमण्ड हारबर मे इन्होने अपने हरे-भरे बगीचे की भूमि दान देकर वहाँ जिस प्राकृतिक चिकित्सा सस्थान (नेचर क्योर एण्ड रिसर्च इन्स्टीच्यूट) की स्थापना की है वह धर्मचन्द जी का अमर कीर्ति-स्तम्भ बन गया है।

धर्मचन्दजी ने जो यश और सम्पत्ति अर्जित की है वह उनके अथक परिश्रम और अध्यवसाय का ही परिणाम है। वे आज जो कुछ भी है, किसी की कृपा से नही, अपने ही बलबूते पर खडे है। मानवीय दृष्टि से धर्मचन्दजी मे स्वावलम्बन के साथ-साथ सहिष्णुता का गुण भी है। मैंने उनको विपरीत से विपरीत परिस्थितियो मे भी मानसिक सन्तुलन खोते या उत्तेजित होते नही देखा। धर्मचन्दजी सभी प्रकार के लोगो को साथ लेकर चलने की क्षमता रखनेवाले व्यवहार-कुशल व्यक्ति है। अपने कारण ये श्री मोरारजी भाई देसाई, श्री श्रीमन्नारायण और श्री ढेवर भाई जैसे भारतविख्यात व्यक्तियो के साथ गहरी आत्मीयता स्थापित कर लेने मे भी सफल रहे है।

धर्मचन्दजी मेरे विश्वासी मित्र और सबल साथी है। नित्य नए काम करने का गुर और दीर्घकाल तक स्वस्थ जीवन जीने की कला इनसे सीखी जा सकती है। भगवान करे सौ साल बाद भी ये ऐसे ही स्वस्थ और प्रसन्न रहकर समाज को प्रेरित करते रहे। □

विचारवान व्यक्तित्व

□ □

सूरजमल सरावगी

श्री धर्मचन्दजी से मेरा सम्बन्ध चाचा-भतीजा का है, वे मेरे चाचाजी हैं, अर्थात् उनके पिता श्री वैजनाथजी सरावगी मेरे पिता श्री छगनलालजी के सगे चाचा थे। मेरी उम्र इस समय ६७ वर्ष की है और धर्मचन्दजी की ८१ वर्ष। अत धर्मचन्दजी मुझसे १४ वर्ष वडे हैं। मुझे अपने वाल्यकाल से ही उन्हे निकट से जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इनका व्यक्तित्व हमेशा से ही हमारे परिवार के अन्य सदस्यो से भिन्न रहा है। राची से उनका विशेष लगाव रहा, क्योकि राची ही उनका जन्मस्थान है और उनको जो भी आज प्राप्त है वह पूर्वजो की वदौलत और विशेषकर राची की वदौलत है, ऐसा कह सकता हू। वाद मे तो उनका कार्यक्षेत्र वरावर कलकत्ता रहा जो आज भी है। हमारे परिवार के सव सदस्यो से उनका विशेष लगाव रहा जो आजतक उसी भाति वरकरार है।

इसमे किंचित मात्र भी सदेह नही है कि प्राकृतिक चिकित्सा की भावना इनमे कूट-कूट कर भरी हुई है। परिणामस्वरूप हमारे परिवार मे भी प्राकृतिक चिकित्सा-पद्धति ने विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। मेरे पिता श्री छगनलाल

जी स्वयं शत-प्रतिशत प्राकृतिक चिकित्सा के अनुयायी थे और रांची मे उन्होने एक प्राकृतिक चिकित्सा गृह की स्थापना भी की थी जिसका सचालन उन्ही की देख-रेख मे होता था। स्वतन्त्रता सेनानी डाक्टर सचीन्द्रचन्द्र होम मुख्य चिकित्सक थे। एक बार चाचाजी की गर्दन मे 'एक्जीमा' (दाद) हो गई थी, तब प्राकृतिक चिकित्सा का अनुसरण करते हुए उन्होने उसका उपचार किया था और उसे जड से हटाया था।

धर्मचन्दजी को मोटर गाड़ियो से विशेष रूप से 'स्टूडी बेकर' गाड़ी से बहुत प्रेम था। एक बार राची से भी एक नई गाडी भेजी गई थी।

उन्होने प्रथम योरप यात्रा, जैसी मुझे जानकारी है, जलपोत द्वारा की थी। यात्रा की व्यवस्था थामस कुक नामक कम्पनी द्वारा की गई थी। १९४७ की विश्व भ्रमण यात्रा मे मेरे पिता श्री छगनलालजी भी उनके साथ थे परन्तु वे लन्दन और फ्रास की यात्रा तक ही साथ रहे, फिर अकेले ही वापस आ गए थे।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जब कलकत्ता पर जापानियो ने बम-वर्षा की थी तब धर्मचन्द जी सपरिवार कलकत्ता छोडकर राची आ बसे थे और उन्होने अपना सारा लश्कर राची भेज दिया था। कलकत्ता आना-जाना उनका बना रहता था और काफी समय तक राची मे ही उनका एव उनके परिवार का निवास रहा।

एकबार वे निजी वायुयान लेकर राची भी आए थे और तव उन्होने हमलोगो को हवाई उडान का आनन्द दिलवाया था।

राची प्रवास के दौरान भी उनका जैन मन्दिर जाने का कार्यक्रम प्रतिदिन का रहता था। इसके लिए उन्होने यहाँ एक बी० एस० ए० साइकिल रख छोड़ी थी जिस पर घर से मन्दिर तक की सवारी किया करते थे।

वे बडे ही बौद्धिक एव विचारवान व्यक्तित्व के स्वामी हैं। सादगी, सफाई और अनुशासन उनकी उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं जो मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ। यही कारण है कि वे आज इतने स्वस्थ है। वीर प्रभु से प्रार्थना है उन्हे दीर्घ आयु प्रदान करें। ◻

पर दुःख कातर

□ □

विमल प्रसाद जैन

धर्मचन्दजी के पिता और मेरे पिता के वीच काफी गाढी मित्रता थी तथा वे दोनो वहुत दिनो तक पारसनाथ मे एक साथ रहकर वहा भगवान पारसनाथजी की पूजा, सेवा एव प्रसिद्ध पूज्य सन्तश्री गणेश प्रसाद वनी की देख-रेख मे जैनधर्म का अध्ययन एव पूजा-साधना किया करते थे। मुझे यदाकदा वहा जाने एव उनसे मिलने का अवसर मिलता था। उनकी सादगी एव मानव मात्र की सेवा भावना देखकर मुझे उनके प्रति श्रद्धा थी।

चार साल पहले मैं धर्मचन्दजी के पास यह सलाह करने के लिए गया कि कलकत्ता मे भी वगलोर के जैसा एक प्राकृतिक चिकित्सा का अस्पताल वने। कुछ घण्टो की वातचीत के दौरान ही मुझे पता चल गया कि धर्मचन्दजी अपने पूज्य पिता के वशानुगत मानव की सेवा भावना का गुण ग्रहण कर चुके हैं।

पहली मुलाकात मे ही उन्होने मुझे समझा दिया कि नया अस्पताल वनाने के वदले डायमण्ड हार्वर रोड पर प्रकृति निकेतन नाम का अस्पताल कई वर्षो

से बन्द पड़ा है उसे ही चालू किया जाए। हम दोनो इसपर सहमत हो गए और इस अस्पताल के जीर्णोद्धार के लिए धन इकट्ठा करना शुरू कर दिया। इस अवधि की घनिष्टता मे मुझे इस बात का अनुभव हुआ कि वे बहुत ही विशाल हृदय के व्यक्ति है दूसरो के दोष देखने के बजाए उसके गुण देखते है तथा दूसरो की सेवा में काफी धन दान करते हैं। पूर्ण मनोयोग से अपना समय भी परोपकार में लगाते हैं। वे सच्चे अर्थों में जैनी है।

पिछले दिनो व्यायामशाला मे जाकर देखा वे ८१ वर्ष की आयु मे भी बराबर व्यायामशाला जाते है और कठिन व्यायाम एव आसन करते है। खान-पान मे जैसी नियमितता ये रखते हैं वैसा शायद ही कोई रख सके। यही उनके स्वस्थ रहने का राज है।

भगवान इन्हे दीर्घ जीवन दे ताकि आने वाली सुनहरी २१वी सदी की उपलब्धियो का भी वे दिग्दर्शन करें और करा सकें। □

धर्मप्राण धर्मचन्द

□ □

नागरमल जैन

धर्मचन्दजी मेरे सखा हैं, मित्र हैं। मेरा इनके साथ सम्पर्क धार्मिक और सामाजिक कामो को लेकर ही विशेष रहा। धर्मचन्दजी के स्वर्गीय पिता श्री वैजनाथ जी को भी मैंने काफी निकट से देखा है। वैजनाथजी अग्रवाल जैन-समाज मे सदा आदरणीय वनकर रहे। ये वडे निष्कपट, धर्मानुरागी और सेवाभावी व्यक्ति हैं। विखरे-विखरे जैन समाज मे एकता की भावना पैदा करने, उनमे धार्मिक अनुराग जगाने, मन्दिरो का जीर्णोद्धार करने तथा महिलाओ और वालक-वालिकाओ मे शिक्षा का प्रचार करने मे उन्होने अपना पूरा जीवन लगाया था। ये व्यवसाई होते हुए भी वडे साधु प्रकृति के व्यक्ति हैं। धर्मचन्दजी जव मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के मन्त्री थे तव वैजनाथजी प्रायः अस्पताल मे मरीजो का कुशल-मगल पूछने जाया करते थे और वडे प्रेम से कभी फल, कभी मालाएँ और धार्मिक कितावें उनको भेंट किया करते थे। धर्मचन्दजी की माताजी भी धर्मपरायणा सती-साध्वी महिला थी।

अपने माता-पिता के अलौकिक गुणो की गहरी छाप धर्मचन्दजी के जीवन पर भी पडी। धर्मचन्दजी यद्यपि प्रारम्भिक जीवन से ही युग परिवर्तन और नवीन विचारो के हामी रहे हैं। पर आज भी ये नियमित रूप से अपनी धर्मपत्नी के साथ मन्दिर मे पूजा करने जाते हैं, धार्मिक कामो मे रुचि रखते हैं, सेवा और

लोकोपकारी कामो मे पैसा लगाते है। ये सब पैतृक संस्कार इन्हे विरासत मे मिली है।

नया मन्दिर के जब धर्मचन्दजी मत्री थे तभी से मेरा उनका साथ हुआ। उस समय मैं भी मन्दिर कमेटी का सदस्य था। बाद मे मैं मन्त्री वना और ये कमेटी मे रहे। इस प्रकार हम लोगो ने मिलजुलकर मन्दिर व्यवस्था को सभाले रखा। दिगम्बर जैन-भवन के आजीवन ट्रस्टियो का जव चुनाव हुआ तो हम दोनो भी ट्रस्टी चुने गए। जैनभवन के रूप-सुधार मे धर्मचन्दजी का पूरा सहयोग रहा। इन्होने अपने खर्चे से भवन मे मोजाइक का काम भी करवा दिया। निर्माण-कार्य के लिए चन्दा लेने मैं और धर्मचन्दजी साथ-साथ गये। यह सुखद आश्चर्य ही रहा कि एक दिन घूमने के बाद फिर हमे किसी के पास दुवारा जाने की आवश्यकता नही रही। फिर तो लोग अपने आप ही चन्दा देने आ जाते।

कलकत्ते मे "अहिंसा प्रचार समिति भवन" के निर्माण मे भी धर्मचन्दजी का सराहनीय अवदान रहा है। ये इस भवन के सस्थापक सदस्य है।

अपने नए विचारो और क्रातिकारी कार्यो के कारण धर्मचन्दजी को सामाजिक विरोध का सामना भी करना पडता है। फिर भी धर्मचन्दजी समाज से छिटक कर नही समाज के साथ रहकर ही अपना विचार प्रचार करते रहते है। निर्भयता तो धर्मचन्दजी मे है ही सहनशीलता भी कम नही है।

प्राकृतिक चिकित्सा के सम्वन्ध मे धर्मचन्दजी द्वारा लिखित अनेक उपयोगी पुस्तको का प्रकाशन हुआ है जिनको पढकर हजारो लोग उपकृत हो रहे हैं। अपनी जगह और नगद रुपयो का दान कर कलकत्ते मे इन्होने जो प्राकृतिक चिकित्सा सस्थान वनाया है वह इनकी सेवा भावना और प्राकृतिक चिकित्सा प्रेम का अनुपम उदाहरण है।

"पहला सुख निरोगी काया" के रहस्य और महत्व को जैसा धर्मचन्दजी ने समझा है वैसी समझ यदि हम सवको भी आ जाए तो जीवन मे सदा सुखों के दीप जलें और आनन्द के फूल खिलें।

धर्मचन्दजी का सदावहार जीवन और युवकोचित उत्साह नई पीढी के लिए भी सदा अनुकरणीय है। उन्हे मेरा शतशःवन्दन, अभिनन्दन। □

भारत का वरनर मेकफर्डन

□ □

डा० एम० एम० भमगरा

मेरी अभिलाषा है कि हम सभी धर्मचन्दजी के समान ही अपने स्वास्थ्य एव तन्दुरुस्ती पर ध्यान दें। दु:ख है अधिकतर भारतवासी खेलकूद, व्यायाम मे खुद भाग लेने के बदले उसे दूसरो को खेलते देखना ज्यादा पसन्द करते है। कभी-कभी इस क्षेत्र मे मानसिक रूप से उत्तेजित भी होते है। दौडने एव उछलने का व्यायाम करते है किन्तु इन दोनो से हमे कोई विशेष लाभ नही मिलता क्योकि हम उसे ठीक रूप से एव नियमित ढग से भी नही करते। हममे से बहुत से ऐसे हैं जो व्यायाम करने की सोचते हैं पर फिर आलस उन्हे घेर लेता है वे दूसरे कामो का बहाना कर व्यायाम नही कर पाते।

भगवान की दया से धर्मचन्दजी की तरह शारीरिक व्यायाम के शौकिन भी हमलोगो के बीच मे है। हम उन्हे भारत का वरनर मैकफर्डन कह सकते है जो अपनी ८० वर्ष की आयु मे भी हवाई जहाज से पैराशूट से कूदता था और सारे जीवन व्यायाम और खान-पान मे सुधार का प्रचार करता था। उसने बहुत पुस्तकें लिखी प्राकृतिक चिकित्सा की। इनकी तुलना डा० पार्ल वर्ग से करू जो अपनी ८५ वर्ष की आयु मे भी शारीरिक व्यायाम, दौड इत्यादि करता था। या डडले ह्वाइट से करूँ जो अमेरिका के कई राष्ट्रपतियो के हृदय विशेषज्ञ के रूप मे काम करते हुए भी शारीरिक व्यायाम, साइकिल सवारी वगैरह अपने ९४ वर्ष की उम्र पर्यन्त भी करते रहे।

धर्मचन्दजी अपनी ८१ वर्ष की आयु मे व्यायामशाला जाकर कडे व्यायाम करते है। लाठी चलाते हैं, कराटे सीखते है। साथ ही प्राकृतिक चिकित्सा का प्रचार करते है। वे स्वस्थ रहकर शतायु हो यही भगवान से प्रार्थना है। □

कर्मवीर

□ □

ताराचन्द बड़जात्या

धर्मचन्दजी कर्मवीर है। उनका जीवन सभी लोगों के लिए प्रेरणादायक है तथा वे व्यक्ति बहुत ही भाग्यशाली हैं जो उनके सम्पर्क मे है।

प्राकृतिक चिकित्सा के उत्थान के लिए तो उन्होने अपना जीवन ही अर्पित कर दिया है। और इस क्षेत्र मे ये जो कर रहे है वह चिरस्मरणीय रहेगा एव प्रशसनीय भी। □

मैं जीवन संगिनी बनी

□ □

मोती देवी

समाज मे जो अभिनन्दन ग्रन्थ निकले उनमे अनेक पढी-लिखी पत्नियो के सस्मरण पढे। मैं साधारण पढी-लिखी हूँ। फिर भी मैं लिखने बैठ गई, आज से ४२ साल पहले जब हमारी शादी हुई यानी हम दोनो दु ख-सुख के साथी बने तब की बातें ध्यान मे आने लगी। पीहर वाले साधारण स्थिति के खाते-पीते बिहार के जैनी हैं, और ये लोग राजस्थान के पैसे वाले। इनका और उनका कोई मेल नही था। फिर कभी-कभी असम्भव बातें सम्भव में परिवर्तित हो जाती हैं। मेरे सम्बन्ध की बात मेरे पिताजी के परममित्र सीताराम, पन्नालाल टोपीवाले के द्वारा मेरे पूज्य स्व० पिताजी के पास आई। एक मारवाडी लडका है, लडके की उम्र २९ साल की है, उसके ४ बच्चे है। सुन्दर सुशील, लडका अपने माता-पिता का आज्ञाकारी, धर्म मे श्रद्धा रखने वाला सुधारक परिवार का है। इन दोनो की जोडी अच्छी रहेगी, उम्र तो २६ की जरूर है पर २५ से ज्यादा नही लगता। लडका विलायत गया हुआ है पर कोई बुरे व्यशन नही है। ये सिर्फ लडकी खोज रहे हैं।

पिताजी को अपने आप पर विश्वास नही हुआ कि मेरी उनकी जोड़ी कुछ भी नही है और बोले कि आप क्या बोल रहे है, कहा राजा भोज मैं गगुवा तेली। मैं गरीब सिर्फ लडकी है, और वे पैसेवाले। पर पन्ना भाई साहब ने समझाया ऐसा सम्बन्ध मिलता नही है। सास-ससुर सब धार्मिक वृत्ति के है। लडके का सस्कार अच्छा है। लडका खुद सुधारक प्रवृति का है। उनको सिर्फ लडकी चाहिए। उनके यहा रहन-सहन मारवाडी जैसा नही है। फिर लडकी दिखाने की बात आई। जैनभवन मे मेरा परिवार और इनके परिवार के लोग देखने आए। इनके पिताजी ने भक्ताम्भरजी की २-४ लाइन सुनी तब पसन्द कर लिए पर ये लोग हाँ नही बोले। फिर सुना कई जगह कानपुर, बनारस, पटना, आरा, लखनऊ, लड़की देखी पर जची नही क्योकि मेरे जैसा भाग्य किसी और लडकी का नही था। फिर इन्होने अपने परममित्र, गुरू, हितैषी, उचित सलाह देने वालो मे जो थे स्व० विष्णुधरजी शुक्ल से सलाह करके हां भर दिया। फिर पिताजी ने मुझसे पूछा और मेरी स्वीकृति मिलने पर सम्बन्ध की बात आगे बढाई।

सगाई के लिए माजरहाट जैनकुंज के मकान मे बुलाई गई। वही से सगाई का रस्म हुआ। सगाई के बाद मेरे ससुरजी ने पिताजी को जैनकुज मे मिलने को बुलाया। मेरे ससुरजी से मिलकर वे बडे प्रसन्न हुए। उनका व्यवहार और सज्जनता देखकर एव घर देखकर वे जब वापस लौटकर आए तब स्पष्ट बाते बताई। अपना चुनाव उत्तम रहा। ऐसा सम्बन्ध तो कोई विरले को ही मिलता है। माजरहाट मे एक छोटा-सा मकान बास के ऊपर मे निर्मित किया हुआ ४-५ कमरो का था। मोजाइक किया हुआ आधुनिक सर्वसाधन उपलब्ध घर था। बडी छत, मोजाइक के दोनो तरफ फूलो की क्यारिया जो मन को प्रफुल्लित करती थी। बीच मे एक छोटा-सा चैत्यालय था उसमे धर्मनाथ की सुन्दर-सी प्रतिमा वेदी पर विराजमान थी। यही सब लोग पूजन करते थे। नीचे गोदाम था जहाँ रेल से माल गिरता था। बगल मे खटाल था जिसमे गाएँ रहती थी। अगल-बगल एक छोटी-सी बाटिका थी जिसमे फूल और थोड़ी बहुत सब्जी आदि होती थी। सौफ और मकई भी लगा हुआ था। हमारे ससुरजी ने मेरे पिताजी को मकई खाने को कहा। उस जमाने मे लड़की के घर पानी पीना पाप समझा जाता था, तब मेरे पिताजी कैसे खाते, ना कर दिया, पर इनके पिताजी भी पीछे हटने वाले नही थे, सुधारक थे, बोले लडकी देना पाप नही है। अपने भाई

सम्बन्ध बनाया बिगाड़ा नही, आप जरूर खाकर देखें। पिताजी ससुरजी के आग्रह को टाल नही सके आखिर उन्हे खाना ही पडा। मकई खाकर बड़े खुश हुए क्योंकि वह बहुत मीठी मुलायम और स्वादिष्ट थी।

हमलोगो की शादी हुई तब हम हसपोखरिया मे रहते थे और ये लोग चोर बगान में। ये सुधारवादी होने के नाते बगैर ताम-झाम के बारात लेकर आ धमके। लोगो के कहने पर कि बारात आ गई नीचे चलने के लिए मा से बोला गया। माँ को विश्वास नही हो रहा था बिना गाजा-बाजा एव बगैर आतिश-बाजी के बारात कैसे आ जाएगी। पर नीचे गई तो वहाँ पासा उल्टा ही नजर आया। लड़का सादगीपूर्ण ड्रेस मे सिम्पल लग रहा था। न जोडा-जामा, न सेहरा। माँ देखती रह गई अपने होने वाले दामाद को और नेग करके चली आई।

फेरो के वक्त मुझे परदा कर बैठाया गया। उस समय ज्ञानवतीजी लाठ मुझसे मण्डप मे बोली, चाची तू परदा करेगी तो दुनिया क्या कहेगी। चाचा परदा विरोधी हैं। हमलोगो का विवाह जैनपद्धति से कराया गया और मुझे इनकी अर्धांगिनी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

जब मैंने पति-गृह मे पदार्पण किया, यहा मां तुल्य वात्सल्य से ओत-प्रोत। मा साहब (सासूजी) धर्मपरायणा, पितातुल्य ससुरजी और चार बच्चे थे। शान्ति की सगाई श्री दुर्गादत्तजी के एकलौते पुत्र श्री श्यामलालजी से हो चुकी थी मेरी शादी के ६ महीना बाद उसका विवाह हुआ। बाकी ये ३ बच्चे चि० निर्मल कुमार, चि० लक्ष्मी, चि० चन्द्रकुमार छोटे थे। ये चारो बच्चे हँसमुख सुशील और मिलनसार एव अच्छे सस्कार मे पले हुए थे। छोटे से बडे, नौकर चाकर सभी को सर्वसाधन रहते हुए भी हाथ से काम करने की आदत थी। ये गाधियन विचार के आदर्शवादी थे। मासाहब का नित्य देवालय जाना, दर्शन, पूजा-पाठ का नियम था। बगैर दर्शन के पानी नही पीती। महीने मे चार यानी चौदस, अष्टमी को निर्जला उपवास करती, रात्रि भोजन का त्याग था ही। घी, आटा, बेसन, सब घर का होता था। वे आटा, बेसन ८० वर्ष होने तक पोस लेती थी। उनका कहना था चक्की चलाने से तबियत ठीक रहती है। पिताजी धर्म के काम मे आगे रहते। दान देना, मन्दिरो का जिर्णोद्धार करवाना, जो मन्दिर नही जाते उनको

मन्दिर जाने का नियम बताना, दूसरे के दुख को अपना मानकर जल्दी से जल्दी दूर करने का प्रयास करना। नित्य पूजा-पाठ की गुटका जिसमे नित्य पाठ करने के नियम थे पढना। रोज सुबह "नेचर क्योर" डिपार्टमेट मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी मे फल, सब्जी, मट्ठा, बच्चो को खुश करने के लिए खिलौने आदि बाटना। रोगियो से उनके दुख-सुख की बातें पूछते यानी घर मे रहकर समाज का काम निःस्वार्थ करते। गद्दी से जो रुपया उठाते वह सब गरीबो मे बाट देते। अपने पास सिर्फ अपने भाडा का पैसा रखते। रोज बेलगछिया मन्दिर दर्शन के लिए जाते। पत्र खूब लिखते धर्म के काम के लिए। जब उनके हाथ का काम पूरा नही होता तब रात का कितना ही बजे पूरा करके ही छोडते थे।

इनमे भी अपने माता-पिता का सस्कार पडा था। सत्य बोलना, धर्म मे अनुराग, रात्रि भोजन का त्याग। दूसरो के दुःख को अपना मानना। देश-भक्ति। किसी ने किसी काम के लिए कहा तो उसे जैसे भी हो पूरा करना। छोटी से छोटी चीजो की इज्जत करना एव यथास्थान रखना। ये अपने हर काम को बडे सुचारु ढग से यानी खूबसूरती से करते है। कहते है चीज की इज्जत नही करने से चीज क्या इज्जत करेगी। इन्होने अपने माता-पिता और बच्चो को लेकर छोटा-सा घर बनाकर सुखी ससार बसा रखा था। ये अपने माता-पिता के भक्त रहे। इनको अपनी मा से बहुत लगाव था। मेरी शादी से पहले ६ मास के लिए विदेश गए थे। वहा पर भी अपने नियम का पूरा पालन किया। रात्रि भोजन नही करते। काफी, सिगरेट, चाय, शराब, जुआ, मास को छुआ तक नही जहा कि पग पग पर सारी चीजें रहती है। अपने नियम को तोड़ा नही यहाँ तक कि क्लब मे गये वहाँ का नियम था कि ह्विस्की की बोतल नही लेने वालो को बैठने नही देंगे। इन्होने खरीदा और खरीद कर दूसरो को दे दिया। इस तरह अपने नियम की रक्षा की। सुबह नित्य पूजा-पाठ का नियम था वह वहाँ भी करते थे। मैं शादी के बाद इनके साथ विदेश गई तब देखा कि अपने नियम की रक्षा किस चतुराई से ये करते है। इनको सिर्फ पान का शौक था जिसे भी अब छोड दिये हैं। अध्ययन का बडा शौक है। रात मे १-२ कितना भी क्यो न बजे पूरा करके ही सोते हैं। सुबह जल्दी ५ बजे उठ जाते क्योकि प्रात. सामूहिक प्रार्थना, महापुरुषो की जीवनी का पाठ एव मासाहार और बच्चो सब का सूत कातना यह क्रम काफी दिनो तक चला फिर मन्दिर और व्यायामशाला जाना तो

आज तक चलता आ रहा है। इन्होने व्यापार में सच्चाई का पालन किया उसमे भी सीमा बनाई। लालच कही नही की, गलत तरीके से धन उपार्जन नही किया। व्यापार मे, नाते-रिश्ते, घर मे सबसे मधुर व्यवहार और गम खाने का बडा गुण रहा। जहाँ देखा बात बढती या मामले-मुकदमें का-सा ढग वही पर बात को समाप्त कर दिया। कभी किसी के लडाई-झगडे मे नही पडे। जहा तक बन पडा दूसरे का घर बनाया बिगाडा नही। कभी किसी की आलोचना नही सुनी।

मेरे पीहर वालो का हर तरह से ध्यान रखते है। ये और हमारे बच्चे जरा-सी तकलीफ आराम मे तुरन्त पहुँच जाते है। बस मालूम पड़ना चाहिए। मेरे पिताजी इनसे बडे प्रसन्न रहते थे। मुझे आगे बढाने के लिए ये मीटिंगो मे साथ ले जाते। पढाई के लिए शिक्षिका रखी जिससे सगीत, अंग्रेजी तथा हिन्दी पढ सकूँ। पर कई कारणो से सीख नही पाई। पीहर मे, ऐसे परिवार मे धर्म की तरफ ज्यादा ध्यान रहा।

इसी प्रकार बच्चो की शादी की। बहुओ को लाए। चुनाव मे भी बडी सफलता मिली। बड़ी बहू इन्दु और छोटी बहू राजश्री सुशील, मधुर और नम्र मिलनसार स्वभाव की ही मिली।

कई साल पहले जब मैं बीमार पड़ी जीवन से आशा छोड चुकी थी। निर्मल, बडा लडका और इन्दु बहू बेटी के रूप मे आई, उसने अथक परिश्रम से मौत के मुँह से खीचकर नई जिन्दगी दी व उसने मेरी बीमारी मे रात-दिन एक कर दिया। घर का सारा काम बीमारी के अतिरिक्त सारा भार इनके नाजुक कधो पर पडा। मैं पडी-पडी यही सोचती कि मै कितनी भाग्यवान हूँ कि इतनी सुन्दर और सुशील सहनशक्तिवाली बहू मिली। मैं कुछ दिन, करीब एक महीना 'नेचर क्योर' सस्था मे रही। तब भी इसने अपने ससुर के खाने-पीने का इन्तजाम बडे सुचारु ढग से किया। हर तरह से बाहर-भीतर वालो का ध्यान रखती। अच्छे घर की अच्छे सस्कार मे पली लडकिया बहू के रूप मे आती हैं तो घर को स्वर्ग बनाती है।

घर के सुन्दर वातावरण के कारण निर्मल के बच्चो का व्यवहार भी बडा मधुर है। भगवान से प्रार्थना है कि इसी प्रकार का जीवन चलता रहे। □

ऐसे हैं मेरे काकोजी

□ □

शान्ति सुरेका

मेरे काकोजी उनके लिए लिखना तो बहुत चाहती हूँ पर समझ नही पाती कि क्या लिखूं और क्या नही।

काकोजी के सोचने और कार्य करने की पद्धति हमेशा अपने समय से १०-१५ वर्ष आगे की रही है। मै उनकी पहली सन्तान हूं उस जमाने मे भी उन्होने मुझे लडकियो की तरह नही पाला। अच्छी शिक्षा की व्यवस्था की। मिशन स्कूल की टीचर आती और मॉंटेसरी पद्धति से पढाती थी। मारवाडी बालिका विद्यालय मे भर्ती करवाया ताकि मेरी शिक्षा का परिवेश भारतीय रहे। मेरे बाबाजी भी स्त्री शिक्षा के ज्यादा ही समर्थक रहे।

घर मे गाडी रहते हुए भी उन्होने मुझे ट्राम-बस मे सफर करना सिखाया। ट्राम मे कैसे चढना-उतरना चाहिए यह सब कुछ इन्होने मुझे स्वय अपने साथ ले जाकर सिखाया। एक बार जब हमलोग नन्दो मल्लिक लेन मे रहते थे तब वे मुझे धर्मतल्ले से घर आने वाली ट्राम पर लेकर चढ़े और कैसे टिकट लेनी है, कहाँ उतरना है सारी बातें समझाई फिर पूछा कि यदि मैं उतर जाऊँ तो तुम अकेली घर चली जाओगी क्या? मैंने जोश मे हा भर दी और काकोजी हरिसन रोड के पास उतर गए। मेरा मन कुछ देर बाद घबराने लगा और घर करीब आते-आते तो धडकने लगा पर उपाय भी क्या था। जब मैं ट्राम से उतरने के लिए गेट पर आई और उतर ही रही थी कि देखा काकोजी गेट के पास ही खडे

देख रहे थे कि मैं सफर ठीक तरह से कर रही हूं या नही। उन्हे देखकर मेरी जान मे जान आई। मैं रो पडी। आखिर पिता के हृदय ने उन्हे ट्राम से उतरने नही दिया। आज भी इस घटना को यादकर मैं रोमाचित हो जाती हूं।

जवसे मैंने होश सम्भाला उन्हे हमेशा व्यवस्थित और नियमित पाया। वे जिस चीज को जहा रखते है प्रयोग के बाद दुबारा ठीक उसी स्थान पर रखते है यह आदत उन्हे शुरू से है। बचपन मे उत्सुकतावश उनका कोई भी सामान छू लेने पर वह तुरन्त समझाते थे। उस समय तो बडा आश्चर्य होता था पर आज समझ मे आता है कि इसका कारण उनका चीजो को सदैव एक निश्चित स्थान मे व्यवस्थित रूप से रखना ही था।

काकोजी ने हम सभी बहन भाइयों को बराबर एक ही शिक्षा दी है कि कभी गलती हो भी जाए तो आदमी को स्वीकार करने मे कोई सकोच नही करना चाहिए। बच्चे तो गलतिया करते ही हैं पर उन्होने गलती स्वीकार करने पर हमे नही डांटा।

परिवार एव समाज दोनो के प्रति अपना दायित्व समान रूप से निभाते आ रहे हैं समय की पावन्दी एव नियम का पालन उनका स्वभाव बन गया है।

द्वितीय विश्व-युद्ध के समय हमारा पूरा परिवार रांची मे रहा। वे अकेले ही कलकत्ते की गद्दी मे रहते थे तब हर शुक्रवार की रात कलकत्ते से रवाना होकर राची आते एव दो दिन हम लोगो के साथ विताकर सोमवार सुबह कलकत्ता पहुंच जाते थे।

अपनी जिम्मेवारी के प्रति सतर्कता हम भाई बहनो को विरासत मे मिली है।

मेरा विवाह उस समय की प्रथा के अनुसार १४ वर्ष की उम्र मे सुरेका परिवार मे हुआ। जहा थोडे रूप मे पर्दा प्रथा थी। पर काकोजी पर्दा प्रथा के विरोधी होते हुए भी मुझे कभी पर्दे के लिए मना नही किया। हमेशा यही कहते थे कि जिसमे तुम्हारे सास-ससुर खुश रहे वही तुम्हे करना चाहिए। भाग्य से मेरी सासुजी एव ससुरजी का स्वभाव बहुत ही अच्छा था। मैं ससुराल मे एकलौती बहू होने की वजह से शादी के बाद बहुत कम ही मायके रह पाई।

पर उन्होने कभी भी मेरे ससुराल की किसी भी बात मे हस्तक्षेप नही किया। हम सभी भाई-बहन जब तक छोटे थे तब तक उन्होने अपनी पूरी जिम्मेदारी समझी। शादी के बाद कभी भी बिना मांगी सलाह नही दी और न अपने विचार ही हमलोगो पर थोपे। न ही अपने पोते-पोतियो और दुहतो को झूठे लाड मे बिगाड़ा।

काकोजी अपनी मां को बहुत ही प्यार करते थे। अभी भी कहते हैं कि मां का बदला कभी भी उतारा नही जा सकता है। वे हमेशा उनकी छोटी-छोटी बातो का ध्यान रखते हैं। मेरी मा भी जबतक दादीजी जिन्दा थी उनके खाने-पीने का पूरी व्यवस्था अपने हाथ से ही करती थी। दादीजी हमलोगो को आशीर्वाद भी बहुत ही देती थी। काकोजी अपनी मां की गोद मे जब तब लेट जाते थे। उन्हे देखकर ऐसा महसूस होता जैसे मा की गोद मे उन्हे बड़ी शान्ति मिलती है।

काकोजी स्वभाव से बड़े ही सवेदनशील हैं। अपनी एकमात्र बहन के स्वर्ग-वास के बाद उन्होने कभी भी राखी नही बन्धवाई। उनकी बहन (हमारी बुआजी) का स्वर्गवास १९४७ मे हो गया था।

ज्यादातर लोग समय पाकर स्वभाववश कुछ चिडचिडे हो जाते हैं पर अब तो काकोजी बहुत ही सरल हो गये है। हम भाई-बहनो के बच्चो को खेलते देखकर माँ के साथ खुश होते रहते है। ऐसा सुखी परिवाद कम ही देखने को मिलता है। मैं भगवान से प्रार्थना करती हू कि सब लोगो को मेरी मां और काकोजी जैसे माता पिता मिले। □

काकोजी

□ □

निर्मल कुमार सरावगी

आदरणीय काकोजी शुरू से ही अनुशासन प्रिय रहे है। अनुशासन मे हम सवकी परवरिश हुई है। मेरे जीवन मे वहुत-सी घटनाएँ हैं। सवको लिख पाना यहा सम्भव नही—याद भी नही। हां, उनकी तत्परता व विनयशीलता की कुछ यादें अवश्य है।

हम भाई-वहन छोटे-छोटे थे जव हमारी माँ का देहान्त हुआ। मेरी उम्र ८-९ साल की थी। काकोजी की दूसरी शादी हुई। हम सभी भाई-वहन उनकी वारात मे गए थे। पिता की शादी में वच्चो का वाराती वन कर जाना उस समय के लिए अजीव बात थी मगर काकोजी तो पुरानी रूढियो को तोड़ने वाले है। शादी के वाद नई माँ घर मे आई और घर के वातावरण में समा गई। कभी-कभी कोई रिश्तेदार आते तो मुझसे पूछते-"मौसी कैसी है। तुमलोगो को ठीक से रखती है या नही।" उस समय मेरी समझ में यह नही आता कि ये माँ को मौसी क्यो कहते है। मौसी तो माँ की वहन को कहा जाता है। कैसी हैं—यह क्यो पूछते हैं। मा जैसी होती है, वैसी ही है। हमलोगो को कभी माँ के नही होने का आभास नही हुआ। माएँ अपने वच्चो को जैसे मानती है, लाड-प्यार करती है, देख-रेख करती हैं, इस माँ ने उससे ज्यादा ही किया।

यह बात हमारे बचपन की है। उन दिनो हवाई जहाज एक करिश्मा था। सुनते थे काकोजी हवाई जहाज चलाते है और बगाल फ्लाइ ग क्लब मे जाते हैं। इनके साथ हम भी क्लब मे गए और कभी-कभी वहा के जहाज मे उडे। विश्वयुद्ध खत्म हुआ तो डिस्पोजल से उन्होने १९४७ मे एक हवाई जहाज खरीदा। वह छोटा-सा चार सीटो वाला था। उसका नाम "पुष्पक" रखा गया। १९४८ मे जब काग्रेस का अधिवेशन जयपुर मे हुआ तो इसी पुष्पक विमान पर हम सभी को बैठा कर वे जयपुर ले गए और वहा उन्होने स्व० पडित जवाहरलाल नेहरू का अभिनन्दन पुष्प वृष्टि करके किया। हवाई जहाज की यात्रा आज की तरह उन दिनो घटे दो घटे की नही थी। हमलोग रुक-रुक कर जयपुर पहुँचे थे। छोटे जहाज मे रात को चलाने की सुविधा नही होती थी और बीच-बीच मे तेल भी लेना पडता था। अतः हमलोग इलाहाबाद, कानपुर, आगरा रुकते हुए गए थे। यह एक सुखद अनुभव था, कौतूहल था कि जहाज कैसे उडता है—इसके लिए हम कभी उनकी बगल की सीट पर जा बैठते थे और उसको चलाने का ढग देखते थे। वैसे हमारे लिए पीछे की सीट थी। उस समय मन ही मन गर्व भी हुआ था कि हम जैसा कौन होगा, जिसके पिता विमान चालक होगे।

काकोजी का शौक हमेशा नई वस्तुओ की ओर रहा है। वे जब कभी भी देश-विदेश भ्रमण पर जाते थे नई चीजें लाते थे, कलात्मक एव नवीन आविष्कार। ऐसे ही १९४७ की विदेश यात्रा से एक 'वायर रिकार्ड' लाए थे जिस पर आज के टेप रिकार्डर को तरह आवाज रिकार्ड होती थी। उन दिनो मैं हिन्दी हाईस्कूल की आठवी कक्षा का छात्र था। एक दिन कक्षा मे प्रिसिपल ने पूछा—'किसी ने भी अपनी आवाज स्वय सुनी है ?' उन दिनो के लिए यह एक अजीब बात थी। टेप रिकार्ड का प्रचलन अपने देश मे नही हुआ था। अपनी आवाज सुनने के दो ही साधन थे, एक ग्रामोफोन दूसरा आकाशवाणी जो कुछ विशिष्ट लोगो को ही उपलब्ध थी। पूरी कक्षा मे मैंने ही हाथ उठाया। किसी को भी विश्वास नही हुआ। काकोजी के लाए हुए रिकार्डर की बात बताने पर सबको यकीन आया। बाद मे कुछ मित्र घर पर आए, अपनी आवाज सुनी, उन्हे बडा मजा आया।

श्री अम्बिका सिह जी घर पर मेरे शिक्षक थे। मैं दसवी कक्षा मे था। पेपर बिगडने से परीक्षा फल खराब आया। श्री सिह मुझ पर काफी नाराज हुए।

उन्हे आशका थी कि उलाहना मिलेगा पर काकोजी ने उनसे कहा—'आपने अपना प्रयत्न किया, सफलता इस बार नहीं मिली फिर मिलेगी।' और मुझसे नही कहा। उनका नही कहना ही कहने से अधिक कह गया।

हमारे परिवार मे सुधार की प्रवृत्ति हमेशा से थी। सामाजिक सुधार के होने वाले आन्दोलनो मे काकोजी सक्रिय भाग लिया करते थे। मेरी शादी की समय की बात है। इस अवसर पर कई तरह के नेग-चार होते है। जिनमें से कुछ मुझे पसन्द नही थे, पर बुजुर्गों के डर से मन में एक द्वन्द्व चल रहा था। मैंने साहस करके एक दिन काकोजी के सामने अपने मन की बात रखी। सहजता से उन्होने मेरी बात मान ली। बारात निकलने के समय मैं साधारण पोशाक मे लोगो के सामने आया तो बुजुर्गो को अचरज हुआ और उन्होने टोका भी। काकोजी ने उन्हे समझा दिया। इससे मुझे बडा सन्तोष हुआ।

१९६३-६४ के आसपास की बात है। काकोजी का सम्पर्क देश के बडे नेताओ से रहा है। राजनीति मे भी काफी जानपहचान रही है। मैं और मेरे छोटे भाई चन्दर ने एक नए उद्योग लगाने की योजना बनाई। बडे उत्साह व कठिन परिश्रम से प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार की। उनकी दिल्ली यात्रा के समय फाइल उन्हे दे दी कि वे वहाँ इस विषय मे बातचीत करें। हम दोनो भाइयो मे बडा उत्साह था कि उनके सहयोग से काम बन जाएगा। दिल्ली से लौटने पर उन्होने अपने अनुभव सुनाए पर हमारी योजना का कोई जिक्र नही किया। हमारे पूछने पर फाइल देते हुए कहा—'अपने लिए मैंने कभी किसी से आजतक नही कहा, इस बार भी बात करना ठीक नही लगा। हम पर ईश्वर की कृपा रही है, आवश्यकताएँ पूरी होती रही हैं—और क्या चाहिए।"

मेरे छोटे भाई चन्दर के ब्याह के समय की बात है। चन्दर के ब्याह की बात बम्बई मे हमारे परिचित परिवार श्री ताराचन्दजी बड़जात्या के यहा से आई। काकोजी ने कहा कि "परिवार मेरा जाना हुआ है। लडकी चन्दर देख आए और उसे पसन्द आ जाए तो बात आगे बढे। चन्दर ने बम्बई से आकर स्वीकृति दे दी। ब्याह की तैयारियाँ होने लगी। विवाह बम्बई मे होना तय हुआ। बारात बम्बई ले जानी थी। बडा परिवार होने के कारण बारात कैसे छोटी हो यह समस्या थी पर काकोजी ने तय किया कि घर के लोग ही बारात मे

जाएँगे, और समय कम लगे इसलिए रेल से नही, हवाई जहाज से जाएँगे। बारात मे घर-परिवार के १५ व्यक्ति गये। इनके इस सामयिक निर्णय से सारा काम बडी सुविधा से सम्पन्न हो गया।

व्यवस्था इनके जीवन मे आरम्भ से रही है। दफ्तर हो या घर, सारी चीजें करीने से रहती हैं। पिछले ५५-६० वर्षो के चित्र, लेख व अन्य प्रमुख घटनाओ के विवरण आज भी सिलसिलेवार इनके पास सुरक्षित हैं जो शायद ही किसी के पास देखने को मिले। इनका कहना है कि "छोटी चीजे व्यवस्थित नही रहेगी तो जीवन कैसे व्यवस्थित रहेगा।"

काकोजी का परिवार चलाने का तरीका ऐसा रहा है कि कभी मनमुटाव जैसी स्थिति को प्रश्रय नही मिला। उन्होने कभी निषेधाज्ञा जैसी कोई चीज जारी नही की मगर सयम, अनुसाशन, सच, स्पष्टवादिता को जीवन मे सदा महत्व दिया। घर के बच्चे स्वावलम्बी बने और नए अनुभवो के जानकार हो—इस बात का ध्यान उन्होने बराबर रखा।

परामर्श देने का तरीका भी अनोखा है। पहले सुनना, फिर शान्त, सयम व ईमानदारी से सलाह देना। चाहे वह सलाह पसन्द आए या न आए। मेरे जीवन मे ऐसे अनेक अवसर आए हैं, जब मन असन्तुलित हुआ है, रुकावटें पैदा हुई है, हौसले पस्त हुए हैं। हमेशा काकोजी ने मार्ग सुझाया है।

आज भी पिता का स्नेह और आशीर्वाद परिवार के प्रत्येक सदस्य को स्नेह-सूत्र मे बाधे हुए हैं।

इनका आशीर्वाद व आदर्श हमारे जीवन मे हर पल साथ रहे—ईश्वर से यही प्रार्थना है। □

मेरे पिता

□ □

लक्ष्मी राजगढ़िया

पिताजी के वारे मे मैं सोचती हूं तो लगता है उनकी कितनी ही ऐसी चीजें है जिन्हे मैं अपने जीवन मे उतारना भी चाहती हूं, पर शायद हममे से किसी भी भाई-वहनो में उनकी जितनी दृढता नही है कि हम जो सोचें उसे पूरा कर ही लें। कई वार तो सोचते ही रह जाते हैं। वे जिस किसी भी कार्य को शुरू करते है उसे पूरा किए विना नही छोडते। उनके जीवन की पुस्तक मे "नही हो सकता" शव्द ही नही है। वे किसी भी कार्य को सीखने के लिए उम्र का कोई वन्धन नही मानते चाहे वह टेनिस हो, स्केटिंग हो, पेन्टिग हो या साइकिल पर किए हुए कठिन करतव। उन्हे उन्होने जव सीखना चाहा ६०,७०,७५ वर्ष किसी भी अवस्था मे सीखना शुरू कर दिया तथा उसे सीख कर ही दम लिया। वे यो तो जैनी हैं पर उन्होने हमे हर धर्म को सम्मान देना सिखाया। उनका कहना है कि मूल वात तो हर धर्म मे एक ही है, सच कहो, किसी का दिल मत दुखाओ आदि। गीता के सही मर्म को उन्होने समझा है और उसे अपने जीवन मे उतारा भी है — अपना कर्म एव कर्तव्य करते जाओ फल की आशा मत करो। फल देना तो ईश्वर का काम है।

वे अपना कार्य दूसरे दिन के लिए बचाकर नही रखते थे। रात १२ बजे तक भी बैठकर पूरा करते है, दूसरे दिन के कार्यो की फेहरिस्त बना लेते थे परिवार के जिस सदस्य को जो कार्य देना होता वे भी रात को ही लिख छोडते थे। सुबह जब सामूहिक प्रार्थना मे बैठते थे, तो वे चरखे पर सूत कातते तथा परिवार के दूसरे सदस्य बारी-बारी से रोज किसी भी नामी महापुरुष की जीवनी या उनकी लिखी हुई पुस्तक को पढता था, यो एक पुस्तक पाच-छः महीने मे पूरी हो जाती थी। इसके बाद प्रार्थना फिर ये सबको उस दिन का अपना-अपना कार्य समझा देते थे।

मुझे तो उन्होने जीवन की कितनी गूढ बाते यो ही हँसते-हँसते सिखा दी। उनके साथ शादी के बाद भी करीब ९ वर्षो तक उनकी निजी सेक्रेटरी के रूप मे कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उस समय कितनी चीजो को जाना एव समझा है। एक बार मैं उनके पास अपनी किसी निजी बात के बारे मे सलाह मागने गई तो उन्होने अपने पास बैठाकर मेरी समस्या को समझा तथा उसके बारे मे मुझे उचित सलाह भी दी तथा फिर कहा, देखो आज तुम मुझसे सलाह मागने आई हो, पर जब कभी भी ऐसी कोई भी समस्या या उलझन आए तो ठढे दिमाग से सोचो और जिस कार्य को करने मे तुम्हारा दिल दो बार धडके यानी कि उस काम को करने का मन गवाही न दे उसे बिल्कुल ही मत करो कारण अपने दिल से बडा जज कोई नही है। गलत काम के पहले तुम्हे हृदय जोर से धडक कर सावधान कर देता है। तुम उसकी आवाज न सुनो यह और बात है। इस बात को समझाने के लिए उन्होने अपनी तिजोरी की चाबी निकालकर दी और मुझे उसे खोलने के लिए कहा, मैंने जब उसे खोला तो उन्होने पूछा, 'क्या तुम्हारा मन डरा, घबडाया या धडका।' मेरे ना कहने पर उन्होने हँस कर कहा 'क्योकि तुमने मेरी अनुमति से तिजोरी खोली थी, यही तुम छुप कर खोलती यानी कि बिना मेरी अनुमति के खोलती तो तुम्हे घबडाहट भी होती और तुम जरा-जरा-सी आहट पर भी चौकती। तुम्हारा दिल धडकता। तुम अपनी आहट से भी परेशान हो जाती। यही निशानी है सही और गलत कार्य की।' उनकी इस बात का मेरे जीवन पर बडा असर हुआ। जब भी मेरे जीवन मे कोई समस्या आई या कठिनाइयां आई मुझे उनके समाधान के लिए किसी के पास नही जाना पडा। मेरा मन जिस कार्य को करने के लिए जरा भी हिचका मैंने उसे नही किया।

दूसरी बात जो सिखाई वह थी इन्सान को होड़ यानी (कम्पीटीशन) जरूर करनी चाहिए पर कुछ सीखने के लिए। मैं उनसे अच्छा काम कर सकू । जलन से नही। तुम सुखी तभी रह सकती हो जब तुम्हे यह महसूस हो कि तुम्हे जो मिला है वह बहुतो को नही मिला जैसे कि तुम्हारे पास एक कमरे का फ्लैट है तो तुम किसी के बगले को देखोगी तो शायद तुम्हे असन्तोष हो कि मेरे पास नही है पर यह सोचकर देखोगी कि बगले तो थोडे आदमियो के पास है लाखो इन्सान तो ऐसे है जिनके पास अपना एक कमरा भी नही है, तो तुम्हे यह सतोष होगा कि ईश्वर की कृपा से मैं लाखो लोगो से अच्छी स्थिति मे हूँ। किसी भी चीज मे अपने को हीन भावना से ग्रस्त मत होने दो। यदि कोई तुमसे ज्यादा पैसेवाला भी व्यक्ति तुम्हारे घर आता है तुम शरमाओ नही। तुम्हारा घर जैसा है वैसा ही रहेगा। वह उसे नही बदलेगा फिर सकोच कैसा। अपने व्यक्तित्व को इतना ऊँचा उठाओ कि लोग तुमसे मिलकर खुश हों। इन्होने जिन्दगी मे हर वस्तु को अच्छाई के रूप मे लेना सिखा दिया। गलत रूप से सोचने की आदत ही नही रही। आज हर मित्र, हर रिश्ते, हर इन्सान को समझने एव देखने का मेरा नजरिया ही बदल गया है। मैं हर एक इन्सान के प्लस पाइन्ट ही देखने की चेष्टा करती हूँ।

सबसे बडी बात इन्होने यह सिखाई कि किसी की बुराई न करो, न सुनो। इन्हे ये बात विरासत मे मेरे पूज्य दादाजी से मिली है। मेरे दादाजी के सामने तो कोई भी किसी की जरा-सी भी बुराई नही कर सकता था। वे तुरन्त टोक देते थे तथा कहते थे क्यो गाव का मैल धो रहे हो।

आज से बत्तीस साल पहले मेरी शादी हुई थी तो उन्होने विदाई के आधे घटे पहले मुझसे कहा था कि आज तक तुम इस घर की इज्जत थी आज के बाद तुम दो घर की इज्जत हो। आज के बाद उस घर की कोई बात हमे मत बताना तथा न ही इस घर की बात वहां। इस परम्परा को ये अपनी तरफ से अभी भी निभाते चले आ रहे है। कभी भी उन्होने मुझे मेरी ससुराल के कुशल-क्षेम के अलावा कोई प्रश्न नही किया चाहे उन्हे मेरी कितनी ही कठिनाइयो का पता या अन्दाजा हुआ। मैं भी उनके आदेशानुसार चुप ही रही। एक बार बहुत साल बीतने पर मैंने पाया कि वे मुझे ही कह रहे थे तुम मेरी परीक्षा मे बहुत खरी उतरी हो। मुझे तुम पर नाज है। उस वक्त तो मैं इन

पक्तियों का मतलब नही समझ सकी कि ये मुझसे क्या कहना चाहते है पर आज जब सोचती हूं तो उन पक्तियो का कुछ मतलब सलझ मे आता है।

बचपन मे हमारी माताजी का स्वर्गवास हो गया था। हमे नई माताजी मिली। मैं तो ईश्वर से यही कहूँगी कि माँ मरे नही यदि मरे तो हमारी माँ जैसी सबको माँ मिले। उन्होने हमे बहुत प्यार दिया है। हमारी बीमारियो मे रात-दिन जग कर हमारी हर तरह से सेवा की है। हम नही खाते थे तो वह नही खाती थी। तनमन से हमारे पूरे घर की सेवा मे जुटी रहती थी। दादाजी, दादीजी, हम बच्चो एव बाद मे हमारे बच्चो सब की जरूरतो को पूरा करने के लिए वे आधी रात को भी तैयार रहती थी एव अभी भी रहती हैं। मैं तो शायद उसका पच्चीस प्रतिशत भी अपने बच्चो के लिए कर सकू तो अपनेआप को धन्य समझू गी। उनकी वजह से पिताजी को कभी भी घर की कोई चिन्ता एव परेशानी नही हुई। मैं तो कहूँगी कि मेरे पिताजी के अच्छे स्वास्थ्य एव सुखी होने का बहुत्त बडा श्रेय माँ को भी जाता है। उनसे तो हमने जिन्दगी मे पाया ही पाया है। माँ ने हमसे कभी भी कुछ लिया नही है। उन्हे खुश करना भी बहुत आसान है उनके पास बैठ कर अच्छी तरह खा लो वे खुश हो जाती है।

जब हम भाई-बहन बड़े हो रहे थे उन्ही दिनो पिताजी की पब्लिक लाइफ, राजनैतिक लाइफ शुरू हो रही थी। ये उसमे भी बडे व्यस्त रहते थे। पर उन्होने अपने घर, अपने बच्चो को कभी नेगलेट नही किया। वे हमेशा कहा करते थ कि मेरे बच्चे मेरी जिम्मेदारी है इन्हे इन्सान और अच्छा नागरिक बनाना है। वे छोटी से छोटी बात से लेकर वडी कोई वार्त सिखानी होती तो हमे खुद ही सिखाते बताते रहे है। जैसे कि ट्राम मे कैसे सही तरीके से चढना उतरना, कैसे रास्ता सही तरीके से पार करना। स्वीमिंग करने जाते थे तो भी स्वीमिंग पुल मे, जहाँ हम भाई-बहन पानी पीना शुरू करने लगते, न जाने कहाँ से उनका कधा हमे सहारा देने के लिए तैयार मिलता था। हर रविव।र को हमे कही न कही पिकनीक पर ले जाते वहाँ हमारे साथ हर खेल मे शामिल होते रहे है।

उनका अपना एक प्लेन था जिसको वे चलाते । उसमे बैठाकर हमे वे आस-पास के शहरों मे ले जाते थे। हर काम वे खुद अपने हाथ से करते तथा हमसे

करवाते थे जिससे कि हमे हर काम करने की आदत हो। हमेशा कहते कि इन्सान को कोई भी कार्य करने मे शरमाना नही चाहिए, चोरी करने मे शर्म करनी चाहिए। कभी-कभी गाडी तक ठेलवाते थे। मै कोई भी चीज नई बनाती चाहे वो रसोई घर मे बनाई हुई रेसीपी या सिलाई, कढाई कोई भी नया लेस उसे बहुत ध्यान से देखते खाते और बडाई करते थे।

बाद के वर्षो मे भी मैंने देखा वे अपने ऑफिस में काम करने वाले दरवान या क्लर्क को जो कि कम पढा-लिखा होता था अपने पास से फीस भरकर रात के स्कूल मे दाखिला दिलवा देते थे नही तो हिन्दी की टाईपिंग सिखवा देते ताकि उसे अच्छी तनख्वाह की नौकरी मिल जाए। अभ्यास के लिए भी आराम से अपने ऑफिस के टाईपराइटर आदि इस्तेमाल करने देते थे। जब उन्हे अच्छी नौकरी मिल जाती तो बडी खुशी होती थी। कई बार तो इधर-उधर अपने मित्रो के यहाँ उन्हे लगवा भी देते थे। मैं कई बार नाराज होती थी कि अपना आफिस स्कूल है क्या। कारण कितने जनो को तो मुझ ही ट्रेनिग देनी पड़ती थी तो हँसकर कहते थे तुम्हे भी दुआ मिलेगी।

सच तो यह है कि बचपन मे पूरा प्यार और अच्छे सस्कार मिले तो जीवन मे आगे चलकर कोई भी कठिनाई यदि आए तो उसका सामना करने मे कोई भी परेशानी नही होती हैं, जैसे कि शुरू मे किसी पौधे की अच्छी तरह देख-भाल कर लो तो उसकी जडे मजबूत हो जाती है। वह एक अच्छे पेड की शक्ल लेकर बडे से बडे आधी तूफान को सह सकता है। हमे भी उन्होने उसी प्यार और जतन से बडा किया और साथ मे जीवन की हर वस्तु का मूल्य भी सिखाया। इन मामलो मे काफी कडाई भी बरतते थे और बरतते है।

हमारे स्कूल मे हर उत्सव मे वे शामिल होते थे चाहे स्पोर्ट्स दिवस हो या वार्षिक दिवस हो मुझे उसमे भाग लेते देखकर वे बड खुश होते थे। मैं भी स्टेज से जबतक उन्हे नही देख लेती थी अशान्त रहती थी। अपने व्यस्त समय मे से हमारे लिए समय निकाल ही लेते थे। बाद मे तो वे मेरे बच्चो के प्रोग्राम मे भी शामिल होने लगे। बच्चे भी दौडकर उन्हे अपने जन्म दिन का न्योता दे आते अपने स्कूल के पोग्रामो का न्योसा दे आते, वे बिना भूले समय पर मेरी मा के सग मौजूद होते थे।

उनके पास बाद के वर्षो मे रहने के कारण उन्हें और करीव से जाना तो पाया अपनी तकदीर पर विश्वास करो तथा किसी भी वस्तु से मोह न करो एक ही मिनट मे वे अपना एम० पी० का पोस्ट छोडकर आ गए। मेरे भाई ने पूछा भी कि घर पर सलाह तो की होती तो उन्होने तुरन्त कहा अरे इसमें क्या पूछना था पार्टी के लिए छोडना था छोड दिया। ज्यादा सलाह लेता या सोचता तो दो मत भी हो सकते थे सो मोह कैसा।

लिखना तो बहुत चाहती हू पर लिखने के लिए पूरे शब्द ही नही मिलते है। वे सच्चे अर्थो मे हमारे पिता, माता, गुरु, एव पथ प्रदर्शक रहे है तथा मुझे बहुत गर्व है कि वे मेरे पिता है।□

नानाजी के प्रति

□ □

राजीव राजगढ़िया

मैं अपने नानाजी के प्रति बहुत ही आभारी हूं कि उन्होंने मेरे जीवन का सबसे बडा उपहार मुझे दिया मेरी माता के रूप मे। उन्होंने मेरी माता के जीवन को व्यवहारिक एव जीवत बनाया। एक तरह उन्ही के स्वस्थ्य की प्रतीक है। मैं अपने को बहुत भाग्यशाली मानता हूं कि मुझे शैशव काल मे उनके सरक्षण मे रहना पडा जो समय मेरे व्यक्तित्व एव चरित्र निर्माण का स्वर्णयुग था। यह सच है कि उस समय अपने अपरिपक्व होने के कारण उनके व्यक्तित्व को पूरी तरह नही समझ सका फिर भी घुमा-फिराकर उनके व्यक्तित्व, चरित्र, आचरण, कार्य एव चिन्तन शैली का प्रभाव तो पडा ही जिससे मुझे अपनी कार्य शैली एव व्यापार मे काफी सफलता मिली।

अपने जीवन का आदर्श उपस्थित कर इन्होने मुझे सिखलाया कि समाज का एक उत्तरदाई सदस्य होते हुए कैसे एक आदर्श पुत्र, पिता, परम-पिता बन

सकता हूँ। जब वे विदेश भ्रमण पर गए तो ३ बातो से परहेज रखा, शराब पीना, धूम्रपान एव मांसाहार जो विदेशो में अति प्रचलित है। इन्होने बल्कि वहाँ की खूबियो और अच्छे आदर्शो को सीखा एव उसे जीवन मे व्यवहारिक रूप देने की चेष्टा की। वहाँ इन्होने देखा कि किस तरह वहा के आदमी अपने बच्चो-स्त्री-परिवार के साथ रहते हुए व्यापारिक व्यस्तता के बावजूद भी समाज के अच्छेकामो मे सक्रिय सहयोग देते है। अपने जीवन मे उसे उतारा। व्यवसायिक व्यस्तता के बावजूद भी ये सामाजिक कार्यो के लिए समय निकाल ही लेते है। इतना ही नही खेलकूद, चित्रकला एव हम बच्चो के साथ सास्कृतिक कार्यक्रमो मे भाग लेते रहते है। मै उनके आदर्शो, विचारो भावो तथा जीवन की व्यावहारिकता के परिप्रेक्ष मे उनके कदमो का महत्व देता हूँ। जिससे कोई भी व्यक्ति लाभान्वित हो सकता है। इनका यह विश्वास है कि कमाने की अपेक्षा उसका सयम करना मुश्किल है। धन की अनिवार्यता को ये मानते है लेकिन उसके पीछे कभी भी मतवाला नही हुए। उसके पीछे बेतहाशा दौडे नही। जीवन मे अपने आदर्शों के बाद ही धन का महत्व मानते है। ये पक्के भाग्यवादी है। एक बार उन्होने मुझसे कहा कि जो कुछ तुम्हे मिलता है वह मिलेगा ही उसे कोई छीन नही सकता तो फिर उसकी प्राप्ति के लिए अनावश्यक भाग-दौड क्यो किया जाए। तुम अपना कर्त्तव्य निष्ठा पूर्वक निभाते चलो।

उनकी स्पष्टवादिता की मेरे ऊपर छाप है। इनकी कर्मयोग पर अटूट आस्था है। ये विश्वास करते है कि स्पष्टवादी भले ही अपनी स्पष्टवादिता के लिए बदनाम हो पर वह थोडे समय के लिए ही। आगे चल कर सभी उसकी मान्यता को मानेंगे और स्तुति करेंगे। अपने विचार एव कार्य बराबर सृजन-आत्मक रखो कभी भी विध्वसकारी प्रवृत्तियो की ओर अपना झुकाव मत झुकने दो। अपने मन को बराबर सत्सगो मे लगाओ।

वे बराबर हमलोगो को शिक्षा देते रहते है कि समय के मुताबिक अपने को किस तरह अच्छे कार्यो मे लगाया जा सकता है, समय का सदुपयोग कैसे किया जा सकता है, प्रकृति के साथ सामजस्य कैसे रखा जा सकता है। हमे प्रकृति से शिक्षा लेनी चाहिए। जो चीजें प्रकृति के साथ नही चल सकी वे लुप्त हो गई।

उमी तरह मनुष्य को भी प्रकृति के माथ-माथ अपने को ढालना चाहिए परन्तु अपने मूल सिद्धान्तो की वलि देकर नही।

इनके अनुमार मनुष्य की सफलता धन अर्जन से नही आँकी जा सकती है वल्कि उसकी सफलता का रहस्य है ममाज, मित्रो एव पारिवारिक लोगो मे उमने अपनी कितनी छाप छोडी हैं।

ये वरावर शिक्षा देते रहते है कि दूमरो के कार्यों एव विचार पर अपना निर्णय लेने के पूर्व अपने को उसके स्थान पर रखो और तव विचार करो कि यदि तुम उस स्थान या स्थिति मे होते तो क्या करते। इससे दूसरो के माथ न्याय करने मे कही गलती नही होगी।

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का पता उमके वोलचाल के ढ ग, उमके विचार तथा उसके व्यक्तित्व का असर दूसरो पर कितना पडता है इससे चलता है।

नानाजी व्यवस्था पूर्वक काम करने के पक्षधर है। मैं अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि मुझे उनके विचार जानने मे कभी भी कठिनाई या उम्र का सकोच नही हुआ। वे विचार इस तरह रखते है मानो नानाजी नही एक मित्र के विचार हो। उनके (दौहित्य) नाती होकर हम अपने को गौरवान्वित महसूस करते है। इस पुनीत अवसर पर मेरी यही मनोकामना है कि मैं इनके अतीत का नही बल्कि भविष्य का प्रतिस्वरूप वनूँ। □

मेरे नानाजी

□ □

विनीत राजगढ़िया

अपने भइया की तरह मुझे नानाजी के पास ज्यादा दिन रहने का मौका तो नही मिला, परन्तु मम्मी से उनके बारे मे जितनी बातें भी जानी है, मुझे तो उनका जीवन सबके लिए मार्ग दर्शनीय और अनुकरणीय लगता है। इतने व्यस्त होने के बावजूद भी वे घर वालो को अपना काफी समय दिया करते हैं और देते हैं। समाज मे रहने के बावजूद भी वे समाज से कभी नही डरे। सन् १९२९ मे जब कि विदेश-यात्रा की बात कोई सोच भी नही सकता था, उन्होने विदेश यात्रा की। हालाकि इसके कारण उन्हे अपनी जाति से वाहर कर दिया गया था।

जब मैं सुनता हूँ कि इनके पास विमान था और वे उसे खुद चलाते थे तो ताज्जुब होता है। ये हर अच्छी चीज के शौकीन हैं। अपने शहर के अच्छे व्यापारी होने के बावजूद अपने व्यस्त जीवन मे से अपनी सेहत के लिए पूरा समय निकालते हैं। आजकल एव उस समय के सेठो को देखें, तो उनके वदन का ढीलाढालापन और तोद के सिवाय कुछ नही दिखता। वे एक अच्छे तैराक, मोटरवाइक और रेसिंग कार के भी शौकीन थे। वे सारी चीजो को बड़े धड़ल्ले से चलाते थे।

अभी कुछ दिनों पहले मेरे एक करीबी दोस्त ने, जो कि फिल्मो का अच्छा शौकीन है, नानाजी की तस्वीरो का एलबम देखा, और उनकी ६० वर्ष की उम्र मे ली हुई तस्वीर को देखकर बोल उठा कि इनकी मसल्स तो जैकी श्रौफ जैसी है।

इस बार ये भइया की शादी मे बम्बई आए तो हमारे यहा की लिफ्ट खराब थी। मैं तो देखकर दग रह गया—बडे धडल्ले से बिना रुके वे छः माला चढ जाया करते थे। यू मैं भी कराटे का शौकीन हूँ एवं ब्राउन बैल्ट लिया हुआ है, पर अपने नानाजी के पास बैठने में घबराता हूँ। न जाने कब वे किस गेम के लिए चैलेंज कर दें। इनसे मुकाबला करना बहुत ही मुश्किल है। समय की कमी का बहाना इन्होने कभी किसी के साथ किया ही नही। इनका सिद्धांत है कि समय किसी के लिए नही रुकता, नही गया हुआ वापस लौटता है। उसका जितना सदुपयोग कर सको, कर लो। उन्होने १९८५ मे लाठी चलाना शुरू किया। इस वर्ष कराटे सीखना भी आरम्भ कर दिया है। असल मे उनके बारे मे लिखना तो बहुत चाहता हूँ, पर उनकी खूबियाँ अनगिनत हैं, जिसे लिखना मेरे लिए मुश्किल भी हैं। मै तो यही कहूगा कि मुझे गर्व है कि ये मेरे नानाजी हैं। □

मेरे दादाजी

□ □

सगीता दुधोड़िया

दादाजी से सीखी हुई कई बातें हमारी जिन्दगी से इतनी गहरी जुडी हुई हैं कि आज यदि उन्हे शब्दो मे लिखना चाहूँ तो बहुत कम होगी। समझ मे नही आता किस घटना या बात का उल्लेख करूँ क्योकि सब अपनी-अपनी जगह महत्वपूर्ण है। एक तो वे कभी भी पापा, माँ और हम बच्चो के बीच मे नही बोलते हैं। हमेशा कहते है तुम्हारे पापा समझते है बच्चो के साथ क्या सलूक करना है। इसका मतलब यह नही कि हमलोगो को वे प्यार नही करते पर और दादा, दादियो की तरह हमलोगो को लाड-दुलार करके बिगडने नही दिया जैसा कि औरो के बारे मे हम सुना करते हैं।

दूसरा, ये हमेशा कहते हैं 'कोई ले जाएगा तकदीर थोडे ही ले जाएगा।" बात मेरे मन मे बैठ गई है। कोई चीज के खो जाने या कोई चीज के न मिलने पर थोडी देर मन मे तकलीफ होती है क्योकि दादाजी की कही बात याद आ जाती है और फिर शान्ति मिलती है।

तीसरा ये हमेशा कहते हैं अपने से नीचे को देखो, ऊपर वाले को नहीं। सुख पाओगे। बचपन मे ये बातें अच्छी नहीं लगती थी। किसी की कोई चीज देखकर इच्छा होती काश हम लोगो के पास भी होती। पर आज बड़े हो गए हैं तो ये सब बाते समझ मे आती है और मालूम होता है कि इन बातो मे कितनी सच्चाई है और कितना गहरा सार है।

दादाजी के जीवन से सीखने लायक बहुत बाते हैं और यदि उनमे से कुछ बातो को भी हम अपने जीवन मे उतार सकें तो बहुत ही अच्छा हो।

आज ८० वर्ष की उम्र मे भी उन्हे हर चीज जानने और सीखने की जिज्ञासा है। ये बहुत सुलझे दिमाग के हैं। नौ-दस वर्ष पहले की बात है। मैं उस समय पेन्टिग सीख रही थी। दादाजी को लगा यदि सगीता सीख सकती है तो मैं क्यो नही सीख सकता। उन्होने कहा तुम मुझे पेन्टिग सिखाओ मैं तुम्हे गुजराती सिखाऊँगा (वे उस समय गुजराती भी सीख रहे थे)। उस बात से मेरी आँखें खुली कि आदमी अपनी छोटो से भी कुछ सीख सकता है। और वे एकदम मन से पेन्टिग मे जुट गए। उनकी बनाई हुई तस्वीरें घर में और सीढियो पर लगी हुई है। उन पेन्टिगो को देखकर याद आ जाता है कि ये कैसे शुरू हुई थी।

दादाजी मुझे बहुत ही प्यार करते हैं और उससे भी ज्यादा मेरी बेटी शुभिका को। यदि उनके लिए बिना मैं कभी उनके पास जाती हू तो कहते हैं शुभिका को नही लाई—नो इन्ट्री। से मुझे बहुत गर्व है अपने दादाजी पर □

मेरे काकोजी

□ □

चन्द्रकुमार सरावगी

काकोजी अनुशासन प्रिय है और भोजन के विषय मे तो उनका अनुशासन उनके सिद्धान्त से भी जुडा हुआ है, जो हम बच्चो के लिए एक तरह से करेला और नीम चढा जैसा है। हमे बाहर खाना पसन्द था, उन्हे कत्तई नही। हम बाहर खाकर आते तो बातें सुनने को मिलती—"मेरा सब कुछ मिलेगा, जमीन, जायदाद, धन, नाम पर बिना व्यायाम किए तथा खान-पान मे सयम रखे स्वस्थ शरीर नही मिलेगा।" शान्त भाव से सुनाई गई ये फटकार गुस्से की डांट-डपट से भी तीखी लगती थी, गहरे चुभ जाती थी। अब आज इस बात का मोल समझ मे आता है। मैं अपना सौभाग्य समझता हूं कि 'नही नही करते' भी उनकी बार-बार की सीख कुछ तो घर कर ही गई है।

यो तो वे बातो से ही सीख या फटकार देकर चुप हो रहते हैं। उनके जीवन को मैने हमेशा दूसरो से बहुत भिन्न पाया है। वे अपने प्रति सच्चे हैं, जो ठीक

समझा उसे किया और सबके सामने उसको स्वीकार किया। सच बात कहने से कभी भी डरते नही। उनकी स्पष्टवादिता से लोगो में आदर बढा ही घटा नही।

सवेरे जल्दी उठना और अपने पूरे दिन की कार्य योजना बना लेना उनकी विशेष आदत रही है। एक कागज पर फेहरिस्त बनती है, पूरे परिवार के हर सदस्य के काम उसमे दर्ज हो जाते हैं। भूलने का कोई प्रश्न ही नही। इस योजनाबद्ध तरीके से समय का अपव्यय नही होता। घर की हर वस्तु की एक निश्चित जगह है और क्या मजाल जो वहाँ दूसरी रख दी जाएँ। ये बातें छोटी लगती हे पर जीवन मे कितना अर्थ है यह आज इस उम्र मे समझ मे आता है। एक खास बात उनमे पाई और वह है नई चीजे सीखने का शौक। उनका कहना है कुछ भी सीखने के लिए उम्र बाधक नही।

काकोजी के कई सुझाओ मे से एक मैं कभी नही भूल पाऊँगा। कोई भी काम करो—ईमानदारी जरूरी है। मैंने इसे आजमा कर देखा है इससे जीवन मे सतोष बहुत मिलता है। आय तो सीमित ही रहेगी। खर्चे कम करना और अपनी इच्छाओ पर लगाम लगाना ही जीवन की समस्याओ को काफी हद तक कम कर सकता है। यह सीख हमेशा याद रहती है।

वे अपने कर्म के पक्के हैं, अपने आपसे सच्चे हे, और किसी का अहित करने की सोच ही नही सकते हैं। जीवन मे इतना व्यस्त रह कर भी कार्य के हर क्षेत्र मे एक विशिष्टता प्राप्त करने की चेष्टा और मेहनत और सच्चाई से कमाई गई इज्जत को असदिग्ध रखना यह उन्ही के लिए सम्भव है।□

मेरे जीजाजी

□ □

साधना जैन

जैसा कि पूज्य जीजाजी के बारे मे सुना था, मेरी स्वर्गीय पूज्य माताजी एव पिताजी (सासजी ससुरजी) के मुख से—आदर्शवादी एव सरल प्रकृति के हैं प्रत्येक चीजो की जानकारी मे प्राथमिकता रखते है। जो काम कोई बीस साल बाद करे वह बीस साल पहले ही कर दिखाने वाले हैं। वचन के पक्के, अपने माता-पिता के भक्त, अपने छोटे से परिवार को स्वर्ग बनाकर रखने वाले, आप जो कहते हैं वह अवश्य करते हैं। जो नही कर सकते तुरन्त ना कह देते हैं।

आपके माता-पिताजी अत्यन्त धार्मिक विचार के थे। जीजाजी भी जीजी के साथ हर एक अष्टमी, चतुर्दशी को पूजन करते है। अष्टान्का विधान आपने माता-पिता के साथ सपत्नीक ससमारोह सम्पन्न किया। नित्य मन्दिर जाना आपका नियम हैं। जब मेरी शादी आसनसोल में हुई तब विदाई के बाद आपके ही साथ, आपकी ही गाडी मे हमलोगो को कलकत्ते आने का सुअव-सर प्राप्त हुआ। रास्ते मे आपके मनोविनोद द्वारा मै रोती हुई आखिर हँस ही पडी। हसते देख आपने फिर एक मजाक छेडा, बोले "लडकियाँ अपने मायके की चाहारदिवारी तक तो रो-रो कर नाक मे दम कर देती है और फिर उनका रोना पता नही किधर गायब होकर हसी मे परिवर्तित हो जाता है।" उनकी इस बात से मै शर्म से गड गई।

आप वच्चो के साथ वच्चों की तरह उनसे खूब घुलमिलकर बातें कर लेते हैं। वच्चों को अच्छी शिक्षा देना जैसे पेन्टिग, गाछ लगाना, लेख लिखना, नृत्य, गाना इत्यादि मे अपनी रोचकता दिखाकर उन्हे आगे वढने में उत्साहित करते हैं। आपके सहयोग द्वारा ही आज हमारे वच्चे कई कलाओ मे दक्ष निकल गए। अच्छे ससर्ग से अच्छी वुद्धि आती हैं, यह सही कहावत हैं। मेरी ननदजी भी अच्छे ससर्ग मे रहने के कारण जव हमारे घर आती हैं, हमलोगों को भी अपने ही घर जैसी शिक्षा वरावर देती हैं तथा आज हमारे घर मे सुख-शान्ति का साम्राज्य है। इसका श्रेय भी प्रत्यक्ष रूप से मेरी ननदजी तथा परोक्ष रूप से मेरे जीजाजी को ही है।

स्वावलम्वी वनने को प्रेरणा आपसे मुझे निरन्तर मिलती रही। कई वार आपकी प्रेरणा द्वारा मेरी भी स्वयं कुछ काम करने की इच्छा हुई किन्तु कुछ पारिवारिक उलझनो से मैं इसे कार्यान्वित न कर सकी। किन्तु हां, इतनी अवश्य आदत हो गई कि अपना घरेलू कार्य ही निपटा लेने की क्षमता रखती हूँ। आप सपरिवार अपने हाथो से सूत कात कर कपडा तैयार कर पहनते हैं। आपकी वृद्धा माताजी भी निरन्तर सूत कात कर अपना समय उसी मे ज्यादा व्यतीत करती थी। देश के प्रति भक्ति और अपने देश की चीजो के प्रति अधिक आस्था रखते हैं।

एक वार की वात हैं आपकी छोटी लड़की (लक्ष्मी) टाइफाइड के ज्वर से सन्तप्त थी। हालत नाजुक हुई जा रही थी परन्तु आप अपने विश्वास, अपनी आस्था पर ही अडिग रहे। अपनी चिर-परिचित प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा उन्हे स्वस्थ कर दिया।

जव मेरे ससुरजी रिटायर्ड हुए और उन्हे सामूहिक धन-राशि आफिस से मिली तव उनकी इच्छा उन रुपयो से मकान खरीदने की हुई। ससुरजी के मन मे आया जव कलकत्ते मे रहना है तो क्यो न अपना मकान लिया जाए। जैसे ही जीजाजी को यह वात मालूम हुई, तो दलालो से वात करना, खुद जाकर देखने के वाद वावूजी को लेजाकर दिखाना इत्यादि काफी दौड़-धूप की। अन्त में आपकी मेहनत सफल हुई। आपने वावूजी के स्वप्न को साकार वनाकर दम लिया। पिताजी आपसे वहुत श्रद्धा करते थे। उनकी नजरो मे अपने वेटो से आपका स्थान कम नही था।

आपने निरन्तर रश्म-रिवाजो का विरोध किया। जिसमे युग-युगान्तर से हमारा समाज पिस रहा है। पुराने रीति-रिवाजो को आपने बिल्कुल नही अपनाया। आपने खुद अपने बच्चो की शादी मे हमारे यहा से भात नही लिया। हमलोगो से सिर्फ च दरी ओढाने का नेग करवाया। आप हर त्योहारो पर हमारे घर पर आते, तिलक कराते, किन्तु सिर्फ नारियल से, रुपयो से नही।

अपने बच्चो की शादी भी बडे सुचारू ढग से आदर्शपूर्ण ढग से की—एक दिन की शादी, कम से कम नेगचार। अच्छे वातावरण का प्रभाव बच्चो पर भी पड़ना स्वाभाविक है। आपके सभी छोटे-बडे बच्चे भी अत्यन्त मृदुभापी, आज्ञाकारी एव शिष्टाचारी हैं। हमारे सभी सुख-दु ख मे आपके सम्पूर्ण परिवार का पूरा सहयोग रहता है।

मै तो यही कहूँगी कि जीजी ने पूर्व जन्म मे बहुत पुण्य किया था कि सर्वगुण सम्पन्न सुन्दर, स्वस्थ, आदर्शवादी, मृदुभाषी एव धार्मिक सास-ससुरजी मिले। अच्छे जीजाजी का सहवास मिला। पुण्य कर्म के उदय से उनके सभी बच्चे भी कर्मठ एव सर्वगुण सम्पन्न है।

हम सब की यही कामना है कि आपका यह उत्साह आपके सहवास मे निरन्तर बना रहे। यह ८१ दीपको का समूह अपने परिवार एव मेरी जीजी के जीवन पथ को प्रज्वलित करता रहे। □

एक जाग्रत जीवन्त व्यक्तित्व

□ □

सरदारमल दुग्गड़

सन् १९५६ मे मैंने प्राकृतिक चिकित्सा का हैदराबाद मे प्रशिक्षण लेने के बाद जब राजस्थान के नागौर नगर मे प्राकृतिक चिकित्सा का काय प्रारम्भ किया, उसी समय यह समाचार मिला कि कलकत्ता मे पूरे भारत के प्राकृतिक चिकित्सको एव चिकित्सा-प्रेमियो का एक सम्मेलन हो रहा है। मैं उस समय कलकत्ता नही जा सका। इस सम्मेलन के आयोजन मे धर्मचन्दजी सरावगी का प्रमुख हाथ रहा और सम्मेलन मे वे प्रधान मन्त्री भी चुने गए। उनके प्रयासो से प्राकृतिक चिकित्सा का सार्वजनिक रूप से एक स्थाई सगठन बना।

सन् १९५८ मे अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के हैदराबाद सम्मेलन मे नागौर से गया। वहा सरावगीजी से विशेष सम्पर्क बना। प्राकृतिक चिकित्सा के कार्य के प्रति उनकी रुचि, उत्साह, सक्रियता, जागरूकता, तन-मन-धन से सहयोग देने की वृति देखकर मुझे भी विशेष प्रेरणा मिली और मैंने भी राजस्थान मे राजस्थान प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् का गठन करने और प्राकृतिक चिकित्सा को प्रान्त मे प्रचारित और प्रसारित करने

का संकल्प लिया। सन् १९५९ मे राजस्थान के अजमेर नगर मे अखिल भारतीय सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर मैंने राजस्थान के सभी परिचित प्राकृतिक चिकित्सको एव प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेमियो को अजमेर 'राजस्थान प्राकृतिक चिकित्सा परिषद्' के गठन करने हेतु आमन्त्रित किया। ४० प्रेमी और १० चिकित्सक पधारे थे। अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद की कार्यकारिणी की बैठक भी उस समय अजमेर मे हुई। कार्यकारिणी के सदस्य भी उस बैठक मे पधारे। धर्मचन्दजी सरावगी की उपस्थिति मे सारी कार्यवाही हुई। उस समय उन्होने मुझसे राजस्थान प्रान्तीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद का मन्त्री बनने का आग्रह किया और समुचित मार्ग दर्शन किया।

सरावगीजी वर्षों तक अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् के प्रधान मन्त्री रहे। सम्मेलनो के अवसर पर उनसे सम्पर्क होता रहा। उनके मन्त्रीत्व काल मे परिषद का कार्य बराबर प्रगति करता रहा। परिषद् की ओर से धर्मचन्दजी के सम्पादन मे 'स्वस्थ जीवन' पत्र भी निकलने लगा। कार्य की प्रगति से अनेक लोगो मे इर्ष्या भाव भी जागा, सम्मेलनो में आपसी झगडे भी होते रहे पर सरावगीजी के धैर्य, सूझबूझ व्यवसायिक बुद्धि एव समझौते की वृति से सारा वातावरण शान्त हो जाता और कार्य सुचारु रूप से चलता रहा।

इस बीच अनेक बार कलकत्ता जाना हुआ, जैन हाउस ८।१, एस्प्लानेड ईस्ट, फोन करके मिलने जाता। उनके यहा का सारा वातावरण ही स्वास्थ्यप्रद नजर आता। ऊपर चढते समय सीढियो पर स्वास्थ्यप्रद चित्र, सतुलित आहार के चार्ट, फलो के चार्ट, उनके गुणो के वर्णन के चार्ट आदि देखते-देखते कोई भी स्वास्थ्य के बारे में सहज मे काफी कुछ जानकारी प्राप्त कर सकता है। उनके रहन-सहन का ढग भी स्वास्थ्य के प्रति चेतना से ओत-प्रोत दिखाई देता।

सरावगीजी का उद्योगशील होते हुए भी उनका साहित्य प्रेम भी उल्लेखनीय रहा है। 'स्वस्थ जीवन' का सर्वोतम प्रकाशन किया साथ में प्राकृतिक चिकित्सा के अनेक विपयो पर पुस्तके लिखकर छपवाई।

सन् १९७५ मे पुन: कलकत्ता जाना हुआ। वहा विपश्यना साधना का एक शिविर लगा था। मैं भी उस शिविर में सम्मिलित हुआ। जोधपुर प्राकृतिक

एक जाग्रत जीवन्त व्यक्तित्व

□ □

सरदारमल दुग्गड

सन् १९५६ मे मैंने प्राकृतिक चिकित्सा का हैदराबाद मे प्रशिक्षण लेने के बाद जब राजस्थान के नागौर नगर मे प्राकृतिक चिकित्सा का काय प्रारम्भ किया, उसी समय यह समाचार मिला कि कलकत्ता मे पूरे भारत के प्राकृतिक चिकित्सको एव चिकित्सा-प्रेमियो का एक सम्मेलन हो रहा है। मैं उस समय कलकत्ता नही जा सका। इस सम्मेलन के आयोजन मे धर्मचन्दजी सरावगी का प्रमुख हाथ रहा और सम्मेलन मे वे प्रधान मन्त्री भी चुने गए। उनके प्रयासो से प्राकृतिक चिकित्सा का सार्वजनिक रूप से एक स्थाई सगठन बना।

सन् १९५८ मे अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के हैदराबाद सम्मेलन मे नागौर से गया। वहा सरावगीजी से विशेष सम्पर्क बना। प्राकृतिक चिकित्सा के कार्य के प्रति उनकी रुचि, उत्साह, सक्रियता, जागरूकता, तन-मन-धन से सहयोग देने की वृति देखकर मुझे भी विशेष प्रेरणा मिली और मैंने भी राजस्थान मे राजस्थान प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् का गठन करने और प्राकृतिक चिकित्सा को प्रान्त मे प्रचारित और प्रसारित करने

का संकल्प लिया। सन् १९५९ मे राजस्थान के अजमेर नगर मे अखिल भारतीय सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर मैने राजस्थान के सभी परिचित प्राकृतिक चिकित्सको एव प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेमियो को अजमेर 'राजस्थान प्राकृतिक चिकित्सा परिषद्' के गठन करने हेतु आमन्त्रित किया। ४० प्रेमी और १० चिकित्सक पधारे थे। अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिपद की कार्य-कारिणी की बैठक भी उस समय अजमेर मे हुई। कार्यकारिणी के सदस्य भी उस बैठक मे पधारे। धर्मचन्दजी सरावगी की उपस्थिति मे सारी कार्यवाही हुई। उस समय उन्होने मुझसे राजस्थान प्रान्तीय प्राकृतिक चिकित्सा परिपद का मन्त्री बनने का आग्रह किया और समुचित मार्ग दर्शन किया।

सरावगीजी वर्षों तक अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् के प्रधान मन्त्री रहे। सम्मेलनो के अवसर पर उनसे सम्पर्क होता रहा। उनके मन्त्रीत्व काल मे परिषद का कार्य बराबर प्रगति करता रहा। परिषद् की ओर से धर्मचन्दजी के सम्पादन मे 'स्वस्थ जीवन' पत्र भी निकलने लगा। कार्य की प्रगति से अनेक लोगो मे इर्ष्या भाव भी जागा, सम्मेलनो मे आपसी झगडे भी होते रहे पर सरावगीजी के धैर्य, सूझबूझ व्यवसायिक बुद्धि एव समझौते की वृति से सारा वातावरण शान्त हो जाता और कार्य सुचारु रूप से चलता रहा।

इस बीच अनेक बार कलकत्ता जाना हुआ, जैन हाउस ८।१, एस्प्लानेड ईस्ट, फोन करके मिलने जाता। उनके यहा का सारा वातावरण ही स्वास्थ्यप्रद नजर आता। ऊपर चढते समय सीढियो पर स्वास्थ्यप्रद चित्र, सतुलित आहार के चार्ट, फलो के चार्ट, उनके गुणो के वर्णन के चार्ट आदि देखते-देखते कोई भी स्वास्थ्य के बारे में सहज में काफी कुछ जानकारी प्राप्त कर सकता है। उनके रहन-सहन का ढग भी स्वास्थ्य के प्रति चेतना से ओत-प्रोत दिखाई देता।

सरावगीजी का उद्योगशील होते हुए भी उनका साहित्य प्रेम भी उल्लेखनीय रहा है। 'स्वस्थ जीवन' का सर्वोतम प्रकाशन किया साथ में प्राकृतिक चिकित्सा के अनेक विपयो पर पुस्तके लिखकर छपवाई।

सन् १९७५ मे पुनः कलकत्ता जाना हुआ। वहा विपश्यना साधना का एक शिविर लगा था। मैं भी उस शिविर में सम्मिलित हुआ। जोधपुर प्राकृतिक

चिकित्सा केन्द्र से लाभ लेने वाले परिवारो को मेरा शिविर का पता मालूम नही था। उनमे से एक परिवार अपने बच्चे को डिपथेरिया हो जाने से मेरी राय लेना चाहते थे। उन्होने सीधे सरावगीजी को फोन कर दिया। सरावगीजी ने स्वय तो उन्हे मार्ग दर्शन दिया ही साथ ही फोन का सदेश देने मेरे शिविर का पता लगाकर स्वय पधारे और सारी जानकारी दी। इतने बडे आदमी होकर भी उन्होने स्नेह और सहयोग की वृत्ति के कारण अपना समय निकालकर पधारने की कृपा की।

कलकत्ते में प्राकृतिक चिकित्सा के कार्य मे आपका बड़ा सहयोग हर समय रहा है। मारवाडी रिलीफ सोसाइटी में प्राकृतिक चिकित्सा विभाग खुलवाने और देख-रेख करने के लिए एक बडा केन्द्र भी कलकत्ता से कुछ दूरी पर खुलवाने तथा अखिल भारतीय स्तर का प्राकृतिक चिकित्सा का शिक्षण विद्यालय अच्छे स्तर का खुलवाने व सचालन करने मे आपका पूरा योगदान रहा है।

सरावगीजी ने एक सम्मेलन में आए सभी प्राकृतिक चिकित्सकों के चित्र स्वय अपने निजी कैमरे से सबको बुला-बुला कर खीचे और वे चित्र "स्वस्थ जीवन के प्राकृतिक चिकित्सा इतिहास विशेपाक में ब्लाक बनाकर छापे। हर काम को योजना पूर्वक करने का यह एक नमूना है। सफल जीवन के लिए आपका जीवन प्रेरणादायक है। सरावगीजी जब अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के मन्त्री थे तब मैंने अपनी ओर से यह प्रस्ताव भेजा कि भारत के प्राकृतिक चिकित्सको में जो चिकित्सा का आपसी मतभेद है प्राकृतिक चिकित्सा जो एक सपना नही है और प्राकृतिक चिकित्सको में जो कमजोरियां और कमिया है उनको दूर करने के लिए प्राकृतिक चिकित्सको के ही रीफ्रेशर कोर्स का शिविर प्रतिवर्ष लगाया जाए। चिकित्सको को अध्ययनपूर्ण जानकारी से बराबर अवगत रखा जाए पर ऐसा कुछ प्रयत्न नही हो पाया।

सरावगीजी का कलकत्ता में अच्छा व्यवसाय है। अपने व्यवसाय के साथ वे अपने कार्यालय में प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी देशी-विदेशी पुस्तको को भी रुचि रखने वाले लोगो को उपलब्ध कराने के लिए व्यवस्था कर रखी है और उस पर बराबर ध्यान रखकर अच्छा स्तरीय साहित्य रखा जाता है और माग आने पर साहित्य भेजा जाता है।

प्राकृतिक चिकित्सा केवल उनकी रुचि का विषय ही नही है जीवन का अग भी है। वे स्वय अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक तो हैं ही अपने सम्पर्क में आने वाले लोगो को भी बराबर जागरूक करते रहते हैं। उनका रहन-सहन, आहार-विहार सभो प्राकृतिक स्वास्थ्य विज्ञान के दृष्टिकोण से प्रभावित है। उन्होने डा० सेल्टन की पुस्तक "फास्टिग केन सेव योर लाइफ" का अपने द्वारा भावानुवाद 'उपवास' से जीवन रक्षा' नाम से सर्वसेवा सघ वाराणसी से प्रकाशित करवाया है। यह पुस्तक उपवास के बारे में अपने ढग की अनूठी पुस्तक है।

मैं सरावगीजी के स्वस्थ शरीर और दीर्घ आयु की कामना करता हुआ मगल मैत्री की भावनाएँ प्रेषित करता हूँ। □

तपस्वी पुरुष

□ □

पुष्करलाल केडिया

श्रद्धेय धर्मचन्दजी सरावगी का नाम जन-स्वास्थ्य एव प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र मे हमारे देश मे ही नही, विदेशो मे भी बड़े आदर के साथ लिया जाता है। भारत मे प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के प्रचार-प्रसार एव विकास का इतिहास जव भी लिखा जाएगा उसमे उनके दीर्घकालीन रचनात्मक कार्यों की चर्चा एक पृथक अध्याय मे की जाएगी।

धर्मचन्दजी से मेरा प्रथम परिचय सन् १९५२ ई० मे हुआ, जव वे कलकत्ता कारपोरेशन के कौसिलर चुने गए थे। मैं उन दिनो नागरिक स्वास्थ्य सघ का सचिव था। सघ की स्थापना हम स्काउटो ने स्वास्थ्य शिक्षा एव नागरिक-ज्ञान के प्रचार तथा नगर स्वच्छता की चेतना जनसाधारण मे जगाने के उद्देश्य से की थी। सस्था के उद्देश्यो को सफल वनाने के लिए हमे अनुभवी एव प्रवुद्ध पथ प्रदर्शको की तलाश थी। मेरा ध्यान धर्मचन्दजी जैसे कर्मठ और स्वनामधन्य व्यक्ति की ओर आकृष्ट होना स्वाभाविक ही था। उन्होने उस समय सघ के कार्यों मे वहुत सहायता की। उनका सहयोग भुलाया नही जा सकता। आगे चलकर मुझे उनके साथ वैठकर, प्राकृतिक चिकित्सा, वृद्धो के लिए

आवास व्यवस्था आदि विविध विषयो पर चर्चा करने तथा उनका अमूल्य परामर्श प्राप्त करने के अनेक अवसर मिले। मैने सदा उन्हे एक ऐसे तपस्वी के रूप मे देखा है, जिसका स्वस्थ क्रियाशील जीवन सबके लिए प्रेरणा और प्रकाश का स्रोत है।

स्वास्थ्य और दीर्घ आयु प्राप्त करने की व्यावहारिक कला यदि किसी को सीखनी हो तो वह मोटी-मोटी पुस्तको का अध्ययन किए विना ही धर्मचन्दजी से सीख सकता है। सयमित और सात्विक जीवन कितना महान और उज्ज्वल होता है, इसकी जीवन्त छवि उनके व्यक्तित्व मे देखने को मिलती है।

धर्मचन्दजी ने सेवा को जीवन धर्म के रूप मे अपनाकर, अनेकानेक पीड़ित मानवो की सेवा की है। मारवाडी रिलीफ सोसाइटी मे प्राकृतिक चिकित्सा विभाग खोलने का श्रेय उन्ही को है। इसके अतिरिक्त उन्होने सोसाइटी की प्रगति में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

पूर्वजो का यह कथन अक्षरशः सत्य है कि सयमी और शुद्ध आचार-विचार वाले व्यक्तियो के निकट बुढापा कभी आता ही नही। धर्मचन्दजी को आज भी युवकों के समान स्वस्थ और फुर्तीला देखकर मेरे मन मे इस पुरानी मान्यता की पुष्टि होती है। अस्सी वर्ष की आयु में जिसे लाठी चलाने का कौशल और कराट सीखने की इच्छा हो, उसे वृद्ध कहने का साहस भला कौन कर सकता है ?

मैं तो कहूगा कि हमारी नई पीढी को उनके पदचिन्हो पर चलने का सकल्प लेना चाहिए और सदा याद रखना चाहिए कि स्वास्थ्य और चरित्र, दो ऐसे अमूल्य रत्न है, जिनके अभाव मे जीवन निर्धन और निस्तेज प्रतीत होता है।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि धर्मचन्दजी दीर्घजीवी हो और उनसे स्वस्थ-सबल राष्ट्र के निर्माण का स्वप्न देखनेवालो को प्रेरणा मिलती रहे। उन्हे मेरा नमन।□

मेरे बचपन के साथी

□ □

दुर्गादत्त लोहिया

धर्मचन्दजी सरावगी के बारे मे लिखने का मौका मिला इसे गौरव मानता हूँ। बचपन मे हमलोग ५-७ लडके एक साथ पढते थे। उस समय १६० सूतापट्टी, जिसका नाम फतेहद्वारी कोठी था, उसमे एक तल्ले के ऊपर ३०-३५ गद्दियाँ तथा दो तल्ले पर कई बासे थे। ऊपर ठाकुरवाडी भी थी। जिसमे श्रावण महीने मे और जन्माष्टमी के दिन हर साल श्री कृष्ण भगवान का झूलनोत्सव मनाया जाता था। मुझे याद है कई सज्जनो के साथ श्यामलालजी घरनीधरका को झूलन सजाने का बहुत शौक था। उस समय बाहर के लोगो की, झूलनोत्सव देखने की, भीड़ लगी रहती थी।

धर्मचन्दजी सरावगी के पिता का नाम स्व० बैजनाथजी था। उनके फर्म का नाम जोखीराम बैजनाथ पडता है। श्री बैजनाथजी बहुत ही धार्मिक प्राणी थे और मिलनसार थे। यह फतेहद्वारी कोठी मे उस समय व्यापार के लिए रहते हुए भी जैसे एक परिवार के लोग-सा रहते थे। वे सारे कार्य मे एक परिवार की तरह हर के सुख-दुख मे सभी का साथ देते थे।

उस समय धर्मचन्दजी पुरुषोत्तमजी केडिया, नन्दलालजी जालान, कन्हैयालालजी तथा हरिरामजी मोदी और हम प्रायः एक ही स्कूल में पढते थे। श्री मूलचन्दजी अग्रवाल ने उस समय माहेश्वरी विद्यालय से अलग होकर हुक्कापट्टी

में एक स्कूल खोला था उसमें हम सभी साथी आ गए थे। जहाँ तक याद है उसमे क्लास ८ से ७ मे ७ से ६ में, ६ से ९ मे यानी उस समय फर्स्ट क्लास को मैट्रीक कहा जाता था। बाद को श्री मूलचन्दजी ने 'विश्वमित्र' अखबार निकालना शुरू किया। हम सभी आपस मे बहुत ही प्रेम से लिखते-पढते और खेलते थे। सूतापट्टी की कोठी छोड़ने के बाद भी जब १७३ हरीसन रोड में कुछ गद्दियाँ आई तब भी धर्मचन्दजी सरावगी के साथ सम्बन्ध बना ही रहा। स्कूल मे पढते समय भी हमें याद आता है सत्य के ऊपर कविता बनाकर हम लोगो ने कुछ परचे छपवाकर बाटे थे।

बचपन बीतने पर सारे मित्रों का इधर-उधर होना स्वाभाविक है लेकिन धर्मचन्दजी का साथ आज भी बना है। मुझे याद है कि दमदम फ्लाइ ग क्लब मे कोई उत्सव था उन्होने वहा निमन्त्रण पत्र देकर कई-कई साथियो को बुलाया जहाँ हवाई जहाज उड़ाने का इनका कौशल देखने को मिला। उस समय कितना आश्चर्य हुआ जब कि जैसे जमीन पर हम लोटते है वैसे ही हवाई जहाज का दृश्य उन्होने दिखाया।

धर्मचन्दजी ने प्राकृतिक चिकित्सा एव व्यायाम का अध्ययन ही नही किया बल्कि प्राकृतिक चिकित्सा पर किताबें भी लिखी और वे जनसेवा का बहुत कार्य भी करते आ रहे है। व्यायाम व प्राकृतिक चिकित्सा को अपने निजके जीवन मे भी अपना लिया है। इसके लिए उनका स्वास्थ्य आज भी ठीक है। प्राकृतिक चिकित्सा के प्रेमी श्री मोरारजी देसाई जब वे प्रधान मन्त्री थे उनसे मिलकर इन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय की कोणशिला भी लगवाई।

परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि उन्हें दीर्घायु प्रदान करें जिससे वे और भी जनसेवा कर सकें। □

समाज की सम्पत्ति

□ □

भूवेन्द्रनाथ राय

धर्मचन्दजी एक अद्‌भुत व्यक्तित्व के पुरुष है। उनकी सादगी मिलने वालो पर प्रभाव डाले विना नही रहती। कभीकभार की थोड़े समय की मुलाकात ही मित्रता मे वदल जाती है। प्राकृतिक चिकित्सा के अध्ययन एव अनुभव के लिए ससार के विभिन्न भागो मे स्थित प्राकृतिक चिकित्सा के केन्द्रो का उन्होने दौरा किया। वहा से लौटकर साथ ही महात्मा गांधी से आशीर्वाद प्राप्त कर मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी अस्पताल मे प्राकृतिक चिकित्सा का अप्रवेशित विभाग खुलवाया। ३५ वर्ष के वाद जव मारवाडी रिलीफ सोसाइटी अस्पताल मे अप्रवेशित विभाग वन्द हो गया तो धर्मचन्दजी ने डायमण्ड हार्वर रोड पर "नेचर क्योर एण्ड योगा रिसर्च इन्स्टीच्यूट" नामक प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र चालू किया। थोड़े समय के अन्दर ही इस अस्पताल ने लोकप्रियता प्राप्त की कि वहां के कौटेज एव केविन मे प्रवेश पाने के लिए रोगियो को नम्वर लगाना पड़ता है।

धर्मचन्दजी ने विभिन्न रोगों पर प्राकृतिक चिकित्सा की प्रायः २५ पुस्तकें भी लिखी है एव बिना किसी रायल्टी के उन पुस्तकों का प्रकाशन अधिकार उन्होने स्वर्गीय बिनोवाजी के द्वारा स्थापित "सर्वसेवा सघ" को दे दिया है। मैने उनकी पुस्तको मे से एक पुस्तक देखी। उसे पढकर बहुत ही प्रभावित हुआ। मेरा लड़का भी उससे इतना प्रभावित हुआ कि उसने अपने एक मित्र को, जिनका प्रेस था, इस पुस्तक का बंगला सस्करण छापने को तैयार कर लिया किन्तु ब्लाक वगैरह जबतक बने, कागज के दाम बढ जाने के कारण उन्होने बगला संस्करण छापने से इनकार कर दिया पर हम हिम्मत नही हारे है। भविष्य मे मुझे आशा है यदि यह पुस्तक बगला या अग्रेजी मे छप जाए तो बहुत लोगो को इससे लाभ होगा।

अभी धर्मचन्दजी प्रतिदिन सवेरे ६ बजे कर्जन पार्क मे जाकर लाठी चलाने का अभ्यास करते हैं। बहुत आदमी वहा घूमने तथा व्यायाम इत्यादि करने आते है किन्तु धर्मचन्दजी एक ऐसे व्यक्ति हैं जो इस उम्र मे वहा लाठी चलाने का अभ्यास करते है। जबकि उनके लड़के और नाती की उम्र के युवक ही इसका अभ्यास उनके साथ करते है। इस उम्र मे भी सरावगीजी मे काफी कार्य क्षमता एव ताजगी है तथा उन्हे हमने कभी भी बीमार पडते नही देखा। ब्रह्मवर्त्त पुराण का एक श्लोक उनके जीवन पर लागू होता है जिसका अर्थ है—जिस तरह "गरुड़ पक्षी" को देखकर सर्प भाग जाते है उसी तरह सयमी पुरुष से रोग एव बुढापा दूर रहता है।

धर्मचन्दजी जैसे व्यक्ति समाज की सम्पति है एव भगवान से उनके दीर्घ जीवन के लिए मैं प्रार्थी हूं। □

स्वास्थ्य सजग

□ □

डा० डी० एन० खुशलानी

वहुत दिन पहले जव उन्होने मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी मे प्राकृतिक चिकित्सा का विभाग खुलवाया था तव उनसे मेरा परिचय हुआ क्योकि मैं भी जन साधारण का इलाज विना दवा-दारू एव इन्जेक्सन के ही करता था। वे भी हमारी संस्था के सरक्षक वन गए और हमारे नैहाटी स्थित केन्द्र का निरीक्षण करने आए। धर्मचन्दजी को नई चीजो को सीखने का शौक है और अच्छी चीजो का व्यवहार भी वे चाव से करते हैं। चुम्वक चिकित्सा के अध्ययन के वाद उन्होने चुम्वक पानी पीना भी शुरू किया है। एकुप्रेशर चिकित्सा का अध्ययन करने के वाद उन्होंने अपने मालिश करने वालों को सिखाया कि कैसे हाथ एव पाव की तलहटी पर मालिश किया जाता है। उनके जीवन क्रम के विपय मे जो मुझे जानकारी प्राप्त हुई है वे इस प्रकार हैं।

१—वे सवेरे ५ वजे उठते हैं और एक चुटकी कच्चा चावल मुँह मे डालकर पानी से निगल जाते है (चवाते नही)। इससे यकृति (लीवर) ठीक रहता है। इस विधि को इन्होने वहुतो को वताया और जिन्होने इसे किया वे लाभान्वित हुए।

२—उसके वाद वे उषापान करते हैं यानी एक लीटर ताजा पानी पीते हैं जिससे पेट साफ हो जाता है। शौच खुलकर आ जाता है जिससे २४ घण्टे मे फिर दुवारा शौच नही जाना पड़ता है।

३—शौच से निवृत होकर वे सरसो तेल और नमक का चूर्ण मिलाकर दात साफ करते है। इससे उनके दाँत के मसूडे मजबूत रहते है और पायरिया इत्यादि दांतो की बीमारी भी नही होती है। वे किसी तरह का टूथपेस्ट दांतो को साफ करने के लिए व्यवहार नही करते। उसके बाद ठढे पानी से स्नान करते है। मोटे तौलिए से शरीर मलते है साबुन का व्यवहार नही करते।

४—अपने नेत्रो की ज्योति ठीक रखने के लिए वे आँखो को प्रतिदिन सुबह हर आंख को ठडे पानी के २५ बार छीटे देकर धोते हैं। जिस पानी से आँख धोते है उसे १८ घण्टा ताम्बे के लोटे मे पहले रखा जाता है। इसके बाद त्रिफला के पानी से आँख धोते है। पहले उन्हे अलग-अलग कामो के लिए अलग-अलग चश्मे की जरूरत पडती थी। जैसे गाडी चलाने के लिए अलग, सिनेमा देखने के लिए अलग, पढने और कागजातो पर हस्ताक्षर करने के लिए अलग। किन्तु अब उन्हें इसकी जरूरत नही पडती है।

मैं एक बार बड़ाबाजार युवक सभा चुम्बक चिकित्सा पर व्याख्यान देने गया। वहाँ देखता क्या हूँ कि धर्मचन्दजी इस ८१ वर्ष की उम्र मे भी वहुत कठिन व्यायाम जैसे, पैरलल वार, वाल प्रेस, रिंग, चिनिंग, वेंच प्रेस तथा यौगिक आसन कर रहे हैं।

अपने मकान की छत पर उन्होने फल एव सब्जियो का उद्यान लगा रखा है जिसमे स्वय परिश्रम करते है ताकि स्वास्थ्य ठीक रहे। हमे मालूम है कि वे अब अपने ९ दशक मे प्रवेश कर चुके हैं और इस अवस्था मे भी वे अव कजन पार्क मे जाकर लाठी चलाने का अभ्यास कर रहे हैं जहाँ उनके सम आयु के क्या उनके लडके एव नाती की ही उम्र के नवयुवक आते और अभ्यास करते है। इस साल वे वडाबाजार युवक सभा मे कराटे सीखना भी आरम्भ किये हैं।

मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आयु दिनोदिन वृद्धि करती जाए ताकि वे नई पीढी को स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष जानकारी से अवगत कराते रहें।□

गहराई तक जाने वाले

□ □

माणकचन्द काला

आदरणीय धर्मचन्दजी सरावगी से मेरा सम्पर्क प्रायः २८ वर्षों से है। उत्कृष्ट समाज-सेवा की भावनावश ये सदा ही कुछ न कुछ सेवा कार्य करते रहते हैं। ये सेवा तन, मन व धन से करते हैं उसका विवरण भी रखते है।

सफेद दाग की चिकित्सा कई एक वर्षो से करते आए हैं। ये आयुर्वेद औषधि का प्रयोग कराते है। प्रत्येक मगलवार को रोगियो को नियमित रूप से समय देते हैं। प्रत्येक रोगी की फाइल रखते है जिसमे उसका फोटो रखते है और उसकी प्रगति का फोटो भी रखते है जिससे कि नए रोगी को आत्मविश्वास एवं उस चिकित्सा के प्रति विश्वास पैदा हो।

मुझसे कुछ वर्षों पहले इन्होने इच्छा जाहिर की कि ये अपने पूज्य पिताजी श्री वैजनाथजी सरावगी के नाम से सचालित ट्रस्ट से असमर्थ वूढो को दाँत

प्रदान करना चाहते है ताकि उनको खाने-पीने की सुविधा हो सके तथा चेहरा भी सुन्दर लगे। मैंने इनके इच्छानुसार एक महिला दंत चिकित्सक व निर्माण-कर्त्ता से व्यवस्था करवा दी थी जिसका कि उपयोग इन्होने कुछ वृद्धजनो को दाँत प्रदान करने मे किया।

ये चुम्बक चिकित्सा भी एक होमियोपैथ को अपने यहा नियमित रूप से बैठाकर करवाते है। प्राकृतिक चिकित्सा मे तो वर्षों से इनकी रुचि है ही जिसका प्रमाण तो जगजाहिर है मारवाडी रिलीफ सोसाइटी का प्राकृतिक विभाग। मेरा परिचय इनसे उन दिनो ही हुआ था जबकि ये अपने विभाग की देखभाल करने सोसाइटी नियमित रूप से आया करते थे। उन दिनो ये मासिक पत्र "स्वस्थ जीवन" का सम्पादन भी किया करते थे।

इनसे सम्पर्क व व्यवहार से जो मेरा विचार इनके बारे मे बना वह है— मितव्ययी, मृदु एव मिष्ठाभाषी। ये नियमित व्यायाम करके स्वस्थ व नियमित जीवन जीने वाले मित्र निर्माण करने वाले ही नही है बल्कि निर्वाहक भी हैं। हर स्तर के व्यक्ति से सम्पर्क व व्यवहार बनाए रखने वाले (साधारण से लेकर प्रधान मन्त्री तक) सदा मृदु मुस्कान के साथ अपनी आँखो से स्नेह-प्रदान करने वाले एक विशेष आकर्षक व्यक्तित्व है। □

कृतित्व

कृतित्व

श्री धर्मचन्द सरावगी द्वारा लिखित पुस्तकों की सूची

	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	भूमिका/लेखक	महीना	साल	सख्या	सं०	पृ०सं०	मूल्य
(१)	योरप में सात मास	हिन्दी पुस्तक एजेन्सी।		नवम्बर	१९३५	१०००	प्रथम	३४४	३ ००
(२)	स्वस्थ रहना ही हमारा			अप्रैल	१९६३	१०००	प्रथम	९४	२ ००
	जन्म सिद्ध अधिकार है	एक्मे एण्ड कम्पनी।		नवम्बर	१९६४	१०००	द्वितीय	९४	२.००
(३)	स्वस्थ रहना सीखें	हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय।			१९६४	२०००	प्रथम	१२०	१.००
(४)	पचास साल बाद	हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय।			१९६५	२०००	प्रथम	९४	१.००
(५)	आहार शुद्धि	भारत जैन मडल प्रकाशन।		नवम्बर	१९७४	५२००	प्रथम	३४	७५
(६)	कब्ज की प्राकृतिक चिकित्सा	पश्चिम वग प्राकृतिक चिकित्सा परिषद।			१९७५	१०००	प्रथम	५६	२.००
(७)	चर्म रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा	सर्व सेवा सघ प्रकाशन।	गगा प्रसाद गौड़ "नाहर"	अप्रैल	१९७२	३०००	प्रथम	७८	१ ५०
					१९६९	१५०००	प्रथम	१६६	२.००
(८)	प्राकृतिक इलाज	हिन्द पाकेट बुक।			१९६५	१०००	प्रथम	६४	१ ००
(९)	पेट कराहता है	दिगम्बर जैन भवन।			१९६७	१०००	द्वितीय	६४	१ ००
					१९७२	२०००	तृतीय	६४	१.००
					१९७७	३०००	चतुर्थ	५८	२ ००

पुस्तक का नाम	प्रकाशक	भूमिका/लेखक	महीना	साल	संख्या	सं०	पृ०सं०	मूल्य
(१०) तन्दुरूस्त रहने के उपाय	सस्ता साहित्य मण्डल			१९६४	२०००	प्रथम	६४	१ २५
				१९६८	३०००	द्वितीय	६४	१.५०
				१९७७	३०००	तृतीय	६०	२.००
				१९८३	३०००	चतुर्थ	६०	३.५०
(११) सरल योगासन	सस्ता साहित्य मण्डल	श्री मोरारजी देसाई		१९६१	२५००	प्रथम	६०	३.००
				१९६३	८०००	द्वितीय	६०	२.५०
				१९७१	२०००	तृतीय	५८	२.५०
				१९७४	३०००	चतुर्थ	५८	३.००
				१९७७	३०००	पचम	५८	४.००
				१९७८	३०००	पष्टम	६०	४.००
				१९८१	३०००	सप्तम	६०	६.००
				१९८६	३०००	अष्टम	६०	६.००
(१२) घरेलू प्राकृतिक चिकित्सा	सर्व सेवा सघ प्रकाशन	श्री भगवान दास केला	अगस्त	१९६८	३०००	प्रथम	४८	० ७५
			दिसम्बर	१९७१	३०००	द्वितीय	४८	० ७५
			नवम्बर	१९७४	३०००	तृतीय	४८	१.५०
			सितम्बर	१९७७	५०००	चतुर्थ	४०	१ २५
			दिसम्बर	१९८०	५०००	पचम	३२	१.५०
			जनवरी	१९८३	५०००	षष्टम	३२	१.५०
			अक्टूबर	१९८६	५०००	सप्तम	३२	२.००

पुस्तक का नाम	प्रकाशक	भूमिका/लेखक	महीना	साल	संख्या	सं०	पृ०स०	मूल्य
(१३) उपवास से जीवन रक्षा	सर्व सेवा सघ प्रकाशन		नवम्बर	१९६७	२०००	प्रथम	१७०	३ ००
			मई	१९७२	२०००	द्वितीय	१७०	३.००
			दिसम्बर	१९७५	३०००	तृतीय	१७०	४ ००
			नवम्बर	१९८०	३०००	चतुर्थ	१६८	६ ००
			जनवरी	१९८४	३०००	पचम	१६८	७.००
(१४) दमा का प्राकृतिक इलाज	सर्व सेवा सघ प्रकाशन	श्री विजय सिंह नाहर	जनवरी	१९७१	२०००	प्रथम	११०	२.००
			अप्रैल	१९७६	३०००	द्वितीय	११०	२.५०
			अप्रैल	१९८०	३०००	तृतीय	१०२	४.००
			नवम्बर	१०८२	३०००	चतुर्थ	९४	४.००
			अक्टूबर	१९८६	३०००	पचम	९४	४.००
(१५) ब्लड प्रेशर की प्राकृतिक चिकित्सा	सर्व सेवा सघ प्रकाशन	श्री रंगनाथ दिवाकर	अप्रैल	१९७२	३०००	प्रथम	७०	१.५०
			अक्टूबर	१९७४	३०००	द्वितीय	७८	२ ००
			फरवरी	१९७७	३०००	तृतीय	८०	२ २५
			फरवरी	१९७९	५०००	चतुर्थ	७२	२.२५
			सितम्बर	१९८१	५०००	पचम	६६	२ ५०
			दिसम्बर	१९८४	३०००	षष्टम	६४	३ ००
(१६) हृदय रोग की प्राकृतिक चिकित्सा	सर्व सेवा सघ प्रकाशन	श्री रतन कुमार साध	अप्रैल	१९७३	२०००	प्रथम	९५	२.००

पुस्तक का नाम	प्रकाशक	भूमिका/लेखक	महीना	साल	सख्या	सं०	पृ०सं०	मूल्य
			जनवरी	१९७६	३०००	द्वितीय	८२	२ ००
			जुलाई	१९७९	३०००	तृतीय	८७	२.५०
			,,	१९८२	३०००	चतुर्थ	७२	३.००
			अप्रैल	१९८६	३०००	पचम	७२	४ ००
(१७) पथरी रोगो की प्राकृतिक चिकित्सा	सर्व सेवा सघ प्रकाशन	श्री राधाकृष्ण नेवटिया	अप्रैल	१९७३	२०००	प्रथम	६८	१ ५०
			नवम्बर	१९७५	३०००	द्वितीय	७६	२.००
			मई	१९७९	३०००	तृतीय	७६	२.५०
			मार्च	१९८२	३०००	चतुर्थ	७२	२ ५०
			दिसम्बर	१९८५	३०००	पचम	७२	३ ५०
(१८) मोटापा की प्राकृतिक चिकित्सा	सर्व सेवा सघ प्रकाशन		जून	१९७६	३०००	प्रथम	६३	१.७५
			जुलाई	१९७८	३०००	द्वितीय	६८	२.००
			जून	१९८०	३०००	तृतीय	६४	२.००
			जनवरी	१६८२	३०००	चतुर्थ	६४	२.००
			दिसम्बर	१९८३	३०००	पचम	६४	२.५०
			अक्टूवर	१९८५	३०००	षष्टम	६४	३.००
(१९) लकवा की प्राकृतिक चिकित्सा	सर्व सेवा सघ प्रकाशन	श्री खुशीराम शर्मा	जून	१९७६	३०००	प्रथम	५९	१ ७५
			दिसम्बर	१९७८	३०००	द्वितीय	६७	२.००

पुस्तक का नाम	प्रकाशक	भूमिका/लेखक	महीना	साल	संख्या	सं०	पृ०सं०	मूल्य
(२०) बवासीर की प्राकृतिक चिकित्सा	,,		फरवरी	१९८२	३०००	तृतीय	५६	२ ५०
			फरवरी	१९८५	३०००	चतुर्थ	५६	३ ००
			अगस्त	१९७६	३०००	प्रथम	५७	१ ५०
			जून	१९७८	३०००	द्वितीय	६४	१.५०
			मार्च	१९८०	३०००	तृतीय	६०	२.००
			सितम्बर	१९८०	५०००	चतुर्थ	५६	२ ५०
			अगस्त	१९८६	३०००	पाँचवा		३००
(२१) एपेण्डिसाइटिस की प्राकृतिक चिकित्सा	भाषा भवन,		अक्टूबर	१९७७	२०००	प्रथम	५६	१.५०
			अगस्त	१९८१	२०००	द्वितीय	४८	१.५०
(२२) अनिद्रा की प्राकृतिक चिकित्सा	सर्व सेवा संघ, प्रकाशन		अप्रैल	१९७९	३०००	प्रथम	६८	२ ५०
			मई	१९८२	३०००	द्वितीय	७२	२ ५०
			दिसम्बर	१९८५	३०००	तृतीय	७२	३.००
(२३) हर्निया की प्राकृतिक चिकित्सा	,, ,	डा० हीरालाल	दिसम्बर	१९८५	३०००	प्रथम	५६	३.००
(२४) [illegible] की प्राकृतिक चिकित्सा	,, ,,	डा० भरतनारायण पाण्डेय	नवम्बर	१९८६	३०००	प्रथम	५६	३.००
(२५) प्राकृतिक चिकित्सा के चमत्कार	जनस्वास्थ्य प्रकाशन,	डा० हीरालाल	नवम्बर	१९८६	२०००	प्रथम	९०	८.००

पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख, कविता, यात्रा, संस्मरण

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
१	धीरज का फल	खंडेलवाल जैन हितेच्छु	८-४-३१
२	तप फल	विजय	११-१०-३१
३	यूरप भ्रमण	अग्रवाल	६-६-३१
४	,, ,,	,,	१२-८-३१
५	शान्ति नाथ वन्दना	वीर	२३-१२-३१
६	यूरप भ्रमण	जैन मित्र	३०-१२-३१
७	,, ,,	,,	६-१२-३१
८	,, ,,	,,	२३-१२-३१
९	,, ,,	अग्रवाल	६-१२-३१
१०	इटली	विजय	१३-१२-३१
११	हवाई जहाज	वानर	९-१-३२
१२	विज्ञापन के उपाय	अग्रवाल	९-१-३२
१३	भारत मे लोहे का व्यवसाय	विशाल भारत	९-२-३२
१४	यूरप और भारत के मेवे वाले	वासुरी	९-३-३२
१५	भारत वनाम यूरप की रेलवे	रेलवे समाचार	२८-३-३२
१६	भारत मे लोहे का व्यवसाय	वासुरी	,,
१७	यूरप भ्रमण	अग्रवाल	१६-५-३२
१८	कौन सुखी	,,	,,
१९	लुवरीकेटिंग तेल का वर्तमान सभ्यता से सम्बन्ध	उद्योग धधा	६-६-३२
२०	यूरप भ्रमण	जैन मित्र	२२-६-३२
२१	,, ,,	अग्रवाल	,,
२२	मोटर टायरो की निर्माण कला	,,	३-७-३२

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
२३	यूरप भ्रमण	जैन मित्र	२४-७-३२
२४	,, ,,	,,	१-८-३२
२५	मुसद्दीगिरी	अग्रवाल	९-८-३२
२६	यूरप के सात मास	वानर	८-८-३२
२७	सर हरवर्ट आस्टीन	अग्रवाल	२-९-३२
२८	यूरप के सात मास	वानर	५-९-३२
२९	,, ,,	,,	५-१०-३२
३०	विनय	खडेलवाल जैन हितेच्छु	२९-१०-३२
३१	वायुयान यात्रा	लोकमान्य	२९-१०-३२
३२	लोहे की आत्म कथा	भारत मित्र	...
३३	कामना	अग्रवाल	३-११-३२
३४	लडन से हिन्दुस्तान	लोकमान्य	७-११-३२
३५	लडन से हिन्दुस्तान	,,	१४-११-३२
३६	यूरप के सात मास	वानर	२२-११-३२
३७	सुधार या विगाड	अग्रवाल	२९-११-३२
३८	नापने के फीते के कारखाने पर एक दृष्टि	,,	,,
३९	जार्ज ईस्टमैन	उद्योग धन्धा	४-१२-३२
४०	एक सामाजिक दृश्य	दिगम्बर जैन	२५-११-३२
४१	यूरप के सात मास	वानर	५-११-३२
४२	व्यापार से मशीनें	विश्वमित्र	७-१-३३
४३	प्रकाश और नवीन युग	अग्रवाल	८-१-३३
४४	मेरी आत्मकथा	वानर	१०-१-३३
४५	भविष्य के भवन	अग्रवाल	८-२-३३
४६	ल्यूब्रिकेटिंग तेल और वर्तमान समस्या	टिम्को रिव्यू	६-२-३३
४७	सिगरेट	,,	,,
४८	स्वर्गीय जार्ज इस्टमैन	,,	,,

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
४९	यूरप के सात मास	वानर	१८-३-३२
५०	नवयुवक का सुधार	जैन मित्र	३०-४-३३
५१	भारत मे नवीन उद्योग धधो का भविष्य	विश्वमित्र	१-९-३३
५२	कम पूजी के धन्धे	अग्रवाल	१-८-३३
५३	विज्ञापन कला	टिस्को रिव्यू	२१-९-३३
५४	सिगरेट का आविष्कार	ओसवाल नवयुवक	९-११-३३
५५	स्वर्गीय जार्ज इस्टमैन	,, ,,	,,
५६	वर्तमान व्यापारिक समस्या	भारत मित्र	२४-१०-३३
५७	तिब्बत की स्त्रियो की विचित्र स्थिति	अग्रवाल	१६-११-३३
५८	कौन सुखी	वीर	१५-१२-३३
५९	उत्तर विहार मे ध्वस-लीला	विश्वमित्र	१-३-३४
६०	यूरप के सात माम	वानर	,, ,,
६१	दीपक	टिस्को रिव्यू	१६-३-३४
६२	व्यापार से मशीनें	हस	१०-४-३४
६३	मोतीहारी की दुर्दशा	विश्वमित्र	२-२-३४
६४	,, ,, ,,	,,	७-२-३४
६५	भूकम्प पीडित प्रदेशो का आखो देखा दृश्य	वीर	१-४-३४
६६	वर्तमान व्यापारिक समस्या	अग्रवाल	१-६-३४
६७	टाइपराइटर	हस	६-६-३४
६८	भविष्य के मकान	टिस्को रिव्यू	१८-६-३४
६९	कम पूजी के नवीन व्यापार	गगा	१९-६-३४
७०	यूरप के कुजडे	सुधा	२०-६-३४
७१	समाज सुधार पर लोगो की भावना	राष्ट्रबन्धु	२५-६-३४
७२	कमी	,,	१-७-३४

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनाक
७३	लन्दन के सिनेमा के ससमरण	सिनेमा ससार	१-८-३४
७४	भारत के दूसरे छोर पर	सरस्वती	९-८-३४
७५	भूकम्प के वाद	जागरण	२०-८-३४
७६	सुधार	राष्ट्रबन्धु	१५-८-३४
७७	यूरपीय रेलवे	हस	२४-८-३४
७८	नवीन उद्योग-धन्धे	युगान्तर	१०-९-३४
७९	मोटर-टायर	टिस्को रिव्यू	१५-९-३४
८०	रेशम	चाद	१९-९-३४
८१	कलकत्ते मे हिन्दी की हत्या	विशाल भारत	४-१०-३४
८२	आधुनिक व्यापार मे यन्त्रो का उपयोग	स्वतत्र भारत	७-११-३४
८३	युवक का भविष्य	राष्ट्रबन्धु	२९-११-३४
८४	मोटर टायरो के कारखाने एक दिन	सुदर्शन	९-१२-३४
८५	रूसी महिला की शिष्टता	चाद	२९-१-३५
८६	कलकत्ते मे हिन्दी की दुर्दशा	काव्य कलाधर	५-२-३५
८७	विज्ञापन के साधन	वीणा	१३-२-३५
८८	वर्तमान व्यापार मे यन्त्रो का उपयोग	वेकार सखा	१४-३-३५
८९	नापने के फीते के कारखाने मे एक दिन	टिस्को रिव्यू	२०-३-३५
९०	फ्रास की प्रसिद्ध मदिरा	हस	२६-५-३५
९१	टाइप राइटर	टिस्को रिव्यू	१८-८-३५
९२	सीमा प्रान्त की यात्रा	,, ,,	१८-१२-३५
९३	नकली रेशम	अग्रवाल	८-९-३५
९४	दो शब्द	मा० रिली० सो०	१-३-३८
९५	फारवर्ड	,, ,,	,,
९६	,,	,, ,,	,,

तृतिय ९

क्रमाक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनाक
९७	निवेदन	मा० रिली० सो०	१-४-३६
९८	हमारी कामना	,, ,,	४-४-३६
९९	शुभ कामना	,, ,,	१०-५-३६
१००	स्वस्थ जीवन ही सच्चा सुख है	,, ,,	१५-५-३६
१०१	निवेदन	,, ,,	२२-५-३६
१०२	हमारे बच्चो का स्वास्थ्य	,, ,,	१८-७-३६
१०३	बर्लिन मे एक सप्ताह	अग्रवाल	१९ ७-३६
१०४	वायुयान चालको के अनुभव	मारवाडी	१०-८-३६
१०५	व्यायामशालाएँ	मा० रिली० सो०	२२-८-३६
१०६	हमारी गृह देवियो का स्वास्थ्य	,,	१०-१०-३६
१०७	वायु विमान चालको के अनुभव	टिस्को रिव्यू	१६-१०-३६
१०८	देरी क्यो	वीर	१३-१०-३६
१०९	आलम्पिक खेल	मा० रिलीफ सो०	१०-११-३६
११०	स्वास्थ्य डायरी	,,	१२-११-३६
१११	वायु विमान चालको के कौतूहलपूर्ण अनुभव	टिस्को रिव्यू	१५-११-३६
११२	स्वीडेन की गोटर नहर	विश्वमित्र	१-२-३७
११३	कुछ कौतूहलपूर्ण सरनामे	चाद	१२-३-३७
११४	हमारा स्वास्थ्य (सम्पादकीय)	मार० रिलीफ सो०	२०-३-३७
११५	निवेदन	मार० रिलीफ सो०	२८-३-३७
११६	स्वीडन की गोटा नहर	वीर	१३-३-३७

१-४-६७ से ३०-६-४६ तक मे ११७ से २७० तक के लेखो की फाईल खो गई है

२७१	वर्मा की अवस्था	आदर्श	८-७-४६
२७२	समाज मे कार्यकर्त्ताओ की कमी	समाज सेवक	१-४-४७
२७३	प्राकृ० चिकि० के अनुभूत प्रयोग	जैन मित्र	१७-४-४७

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
२७४	हमारी विदेश यात्रा	विश्वमित्र	१५-५-४७
२७५	,, ,, ,,	वीर	२४-५-४७
२७६	क्वीन एलिजावेथ	वीर भूमि	...१-४७
२७७	प्राकृतिक चिकित्सा	सहयोगी	७-३-४८
२७८	प्राकृतिक चिकित्सा	लोकमान्य	२-५-४८
२७९	प्राकृ० चिकि० के कटु अनुभव	,,	४-९-४८
२८०	प्राकृतिक चिकित्सा	विश्वमित्र	२१-६-४८
२८१	हमारा स्टैण्डर्ड	समाज सेवक	दीपावली ४८
२८२	वायुयान चालको के विचित्र अनुभव	सन्मार्ग	३०-१०-४८
२८३	अमेरिका का एक जवान बूढा	विश्वमित्र	३०-१०-४८
२८४	प्रान्तीयता का विष	सन्मार्ग	२६-११-४८
२८५	प्राकृतिक चिकित्सा के कुछ नये अनुभव	सन्मार्ग	१८-१-४९
२८६	,, ,, ,,	सहयोगी	७-२-४९
२८७	,, ,, ,,	जैन मित्र	माघ वी स० २४७५
२८८	हमारे स्वास्थ्य के लिये चीनी	सन्मार्ग	९-५-४९
२८९	प्राकृतिक चिकित्सा	जैन जगत	,,
२९०	,, ,,	सहयोगी	२७-२-५०
२९१	,, ,,	विश्वमित्र	२०-२-५०
२९२	विद्यार्थी और उनका स्वास्थ्य	जैन जगत	मार्च-५१
२९३	प्राकृतिक चिकित्सा से लाभ	विश्वमित्र	२५-५-५१
२९४	विदेशो मे निरामिष आहार	समाज सेवक	,,
२९५	प्रा० चि० की अमोघ शक्ति	सहयोगी	१४-८-५१
२९६	गलत धारणा	वीर वाणी	अगस्त-५१
२९७	जैनी बीमार क्यो पडे	ज्ञानोदय	१-९-५१
२९८	शाकाहार	,,	२८-९-५२
२९९	स्वास्थ्य धाम की यात्रा	,,	१८-९-५२

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
३००	प्राकृतिक जीवन	ज्ञानोदय	१४-९-५२
३०१	प्रा० चि० से लाभ	,,	,,
३०२	प्रा० चि० मे विलम्ब क्यो	,,	,,
३०३	जले पर प्राकृतिक चिकित्सा	सन्मार्ग	,,
३०४	धर्म और स्वास्थ्य	,,	२२-९-५२
३०५	प्रार्थना और उपवास मे रोगनाशक शक्ति	,,	४-१२-५२
३०६	सरजू महाराज को चिकित्सा से लाभ	विश्वमित्र	१९-१-५३
३०७	प्रा० चि० से लाभ	,,	२२-२-५३
३०८	जब एक ही अनेक हो जाता है	ज्ञानोदय	१९५३
३०९	दश लाक्षणी पर्व पर उपवास की महिमा	,,	७ ४-५३
३१०	कैंसर-एक भयानक रोग	,,	१-७-५३
३११	गर्मी में करने योग्य व्यायाम और भोजन	विश्वमित्र	२२ ७-५३
३१२	परोपकार से स्वास्थ्य	जीवन साहित्य	,,
३१३	,, ,, ,,	सन्मार्ग	२४-७-५३
३१४	बालो की रक्षा	विश्वमित्र	५-९-५३
३१५	दातो की रक्षा	,,	१२-९-५३
३१६	घरेलू चिकित्सा	,,	,,
३१७	नित्य नया भोजन	,,	१९-९-५३
३१८	कोला से लाभ या हानी	,,	,,
३१९	सर्जरी का अध्ययन	,,	२५-९-५३
३२०	दवा एक बहाना मात्र	,,	३०-१०-५३
३२१	रात्रि के पहले भोजन से लाभ	,,	१०-१०-५३
३२२	एक दिन रसोइया ने जब ककड का साग बनाया था	,,	,,

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
३२३	क्या चीनी हमारे स्वास्थ्य के लिये लाभप्रद हैं	विश्वमित्र	२४-१०-५३
३२४	प्राकृतिक चिकित्सा की चर्चा	,,	१५-११-५३
३२५	मनुष्य को विश्राम की आवश्यकता	,,	५-१२-५३
३२६	समाज का स्वास्थ्य खराब क्यो	,,	३१-१२ ५३
३२७	मेला और स्वास्थ्य	,,	१-१-५४
३२८	लदन मे हिन्दू मदिर और धर्मशाला	,,	१७-१-५४
३२९	विदेशो मे मासाहार का विरोध	,,	२१-१-५४
३३०	कोमेट हवाई जहाज मे	नया जीवन	फरवरी-५४
३३१	ववासीर और उसका इलाज	विश्वमित्र	२०-२-५४
३३२	समाज का स्वास्थ्य खराब क्यो	भविष्य	मार्च-५४
३३३	४० से ८५ वर्ष के युवको का क्लब	ज्ञानोदय	,,
३३४	स्वास्थ्य का लेखा जोखा	विश्वमित्र	२०-४-५४
३३५	साफ कलकत्ता	सन्मार्ग	१३-८-५४
३३६	स्कूली वच्चो का जलपान	विश्वमित्र	३०-१०-५४
३३७	टोन्सिल कटाने से पुरुषत्व की कमी	सन्मार्ग	३-१-५५
३३८	वाढ के कारण उडिसा की दुर्दशा	लोकमान्य	१६-५-५५
३३९	उडिसा वाढ का आँखो देखा हाल	विश्वमित्र	,,
३४०	प्राकृतिक चिकित्सा से पुरुषो को लाभ	,,	२६-११-३५
३४१	पडने वाले वच्चो का जलपान	,,	२९-१०-५५
३४२	कैंसर की प्राकृतिक चिकित्सा	...	..
३४३	स्वास्थ्य के लिए निरामिष भोजन	सन्मार्ग	१०-२-५६
३४४	स्वास्थ्य के लिये नीद आवश्यक	विश्वमित्र	,,
३४५	कसाईखाने को वन्द कर कारपोरेशन जल व व्यायामशाला की व्यवस्था करें	सन्मार्ग	४-४-५६
३४६	कलकत्ता कारपोरेशन के वजट पर	लोकमान्य	४-४-५६
३४७	हैजे का कारण, लक्षण और निवारण	विश्वमित्र	८-५-५६
३४८	स्वर्गीय श्री मूलचन्द्रजी	,,	३-११-५६

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
३४९	मोटापा का मोह	विश्वमित्र	२७-११-५६
३५०	प्राकृतिक चिकित्सा	,,	२६-११-५६
३५१	व्यायाम-साधना	स्वस्थ जीवन	जुलाई-५६
३५२	भोजन क्यो और कैसे	,,	अगस्त-५६
३५३	विद्यार्थियो का भोजन	,,	सितम्बर-५६
३५४	पेट	,,	नवम्बर-५६
३५५	मोटापा कम करने का उपाय	,,	जनवरी-५७
३५६	स्वास्थ्य की नीव दृढ कीजिये	,,	मार्च-५७
३५७	पिताजी तव और अव	,,	अप्रैल-५७
३५८	हमारी वडी आँत	,,	मई-५७
३५९	मेरे जीवन दाता हैं	,,	जुलाई-५७
३६०	प० नेहरू की चुस्ती का रहस्य	,,	अगस्त-५७
३६१	मुरे रोज शाकाहारी है	,,	सितम्बर-५७
३६२	व्यायाम और भोजन	,,	अक्टूबर-५७
३६३	मेरा दस दिन का उपवास	,,	नवम्बर-५७
३६४	चीनी हानिकारक क्यो	,,	फरवरी-५८
३६५	योगाभ्याम और नेहरूजी	,,	मार्च-५८
३६६	आदरणीय रामदेवजी चोखानी	विश्वमित्र	...
३६७	सक्षिप्त कार्य विवरण	स्वस्थ जीवन	मई-५८
३६८	मालिश के कडवे-मीठे अनुभव	,,	जुलाई-५८
३६९	एक धनकुवेर से प्रा० चि० के सवध मे वातचीत	,,	अगस्त-५८
३७०	एनिमा या सिनेमा	,,	,,
३७१	मेरा दस दिन का उपवास	जैन जगत	,,
३७२	मोटापा कम करने का उपाय	विश्वमित्र	..
३७३	जलने पर उपचार	स्वस्थ जीवन	सितम्बर-५८
३७४	रक्तचाप की प्रा० चि०	,,	नवम्बर-५८
३७५	जनाना और मर्दाना भोजन	,,	दिसम्बर-५८

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनाक
३७६	हृदय रोग	स्वस्थ जीवन	जनवरी-५९
३७७	मैं होश मे रहता तो यह इलाज न कराता	,,	मार्च-५९
३७८	न रिश्तेदारी न पुत्र का सरक्षण	,,	अप्रैल-५९
३७९	हाथ का दर्द, आँख का दर्द, खाँसी	,,	मई-५९
३८०	फोडे, फुन्सी ज्वर (बुखार)	,,	जून-५९
३८१	आसाम की बाढ	विश्वमित्र	९-७-५९
३८२	आसाम के बाढ पीडितो के लिए सोसाइटी द्वारा सेवा कार्य	,,	१०-७-५९
३८३	असम की भयानक बाढ	सन्मार्ग	,,
३८४	आन्त्रक्षय (इन्टेस्टाइन टी बी)	स्वस्थ जीवन	अग० सित०-५९
३८५	स्वास्थ्य चाहने वालो का भोजन	,,	अक्टूबर-५९
३८६	सिनेमा गृह, ट्राम और बसो मे धूम्रपान बदी	,,	नवम्बर-५९
३८७	सूर्य नमस्कार	कल० म्यूनि० गजट	२३-३-५९
३८८	स्कूल के बच्चो का जलपान	जैन जगत	जनवरी-६०
३८९	ढेवर भाई का वर्क फास्ट	स्वस्थ जीवन	,,
३९०	हार्निया के कारण और उपचार	,,	,,
३९१	अधिवेशन मे नया अधिवेशन	,,	फरवरी-६०
३९२	फल नही खाऊँगा क्योंकि फायदा हो जायेगा	,,	मार्च-६०
३९३	निसर्गजीवी बाबू धर्मनारायणजी	,,	,,
३९४	रोग एक . उपचार दो	,,	अप्रैल-६०
३९५	विश्व-विजयी गामा-अप्राकृतिक भोजन	,,	,,
३९६	चतुर्थ वर्ष की वार्षिक रिपोर्ट का परिचय	,,	मई-६०
३९७	प्राकृतिक चिकित्सा और राजा बलदेवदास	,,	[illegible]-६०

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
३९८	संस्था के भवन का शिलान्यास	स्वस्थ जीवन	जुलाई-६०
३९९	क्या प्रा० चि० महंगी है	,,	अगस्त-६०
४००	अकल से काम न लेकर आज नकल से काम लेते हैं	,,	,,
४०१	दांत कैसे निकलते हैं	,,	सितम्बर-६०
४०२	जवानी का पौधा	,,	,,
४०३	खुजली के लिए मिठाई बन्द	,,	अक्टूबर-६०
४०४	मुझे कोई जडी दें	,,	नवम्बर-६०
४०५	महात्मा का मन्त्र-प्राकृतिक चिकित्सा का दोष	,,	दिसम्बर-६०
४०६	बालो का खिजाव-दाँत कहाँ बनवाये	,,	जनवरी-६१
४०७	सूरजमुखी-एक पौष्टिक आहार	नवनीत	,,
४०८	औषधियो के संस्कार	स्वस्थ जीवन	फरवरी-६१
४०९	खानपान मे परिवर्तन	,,	मार्च-६१
४१०	हमारी शारीरिक अस्वस्थता एक अभिशाप	नाग० स्वा० संघ	,,
४११	बादाम के हलुवे से ताकत के बनिस्बत बीमारी	स्वस्थ जीवन	अप्रैल-६१
४१२	दिया तले अँधेरा	,,	,,
४१३	ताकत का मोह	,,	मई-६१
४१४	व्यायाम और भोजन	मा० पु० पत्रिका	,,
४१५	प्रा० चि० का विकास-क्रम	स्वस्थ जीवन	जुलाई-अगस्त-६१
४१६	जर्मनी मे प्रा० चि० की स्थिति	,,	सितम्बर-६१
४१७	आम नुक्सान करते हैं	,,	,,
४१८	अमरूद नुक्सान करते हैं	,,	,,
४१९	प्रा० चि० के चक्कर मे क्यो फँसे	,,	अक्टूबर-६१

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
४२०	पेट के दर्द के लिए आसन	स्वस्थ जीवन	अक्टूबर-६१
४२१	वसन्त नेचर क्योर अस्पताल	,,	नवम्बर-६१
४२२	फोडो ने शिकायत की	,,	दिसम्बर-६१
४२३	जले का इलाज पानी	,,	जनवरी-६२
४२४	प्राकृतिक चिकित्सा का जादू	,,	फरवरी-६२
४२५	भागलपुर मे प्रा० चिकित्सा-केन्द्र का उद्घाटन	,,	मार्च-६२
४२६	भागलपुर मे जवाहरलालजी	,,	,,
४२७	खूब गुजरेगी जब मिल बैठेगे दीवाने दो	,,	अप्रैल-६२
४२८	तब और अब	,,	मई-६२
४२९	सूर्य किरणो से शक्ति	सन्मार्ग	१५-५-६२
४३०	दो तस्वीरे	स्वस्थ जीवन	जून-६२
४३१	हैजे की प्रा० चिकित्सा	विश्वमित्र	११-६-६२
४३२	,, ,, ,,	सन्मार्ग	१९-६-६२
४३३	डा० राय के संस्मरण	विश्वमित्र	४-७-६२
४३४	नए-पुराने अन्धे विश्वास	नया जीवन	जुलाई-६२
४३५	मिट्टी तेरे यह ठाट	स्वस्थ जीवन	,,
४३६	इन्फ्लूएन्जा से आराम कैसे	प्राकृ० जीवन	,,
४३७	डा० राय के संस्मरण	स्वस्थ जीवन	अगस्त-६२
४३८	गलत धारणाएँ	,,	,,
४३९	आँखो की रक्षा कीजिए	जैन जगत	,,
४४०	रक्तचाप	सन्मार्ग	१३-८-६२
४४१	मोटापा एक रोग	विश्वमित्र	२७-८-६२
४४२	पिताजी की बीमारी	स्वस्थ जीवन	सितम्बर-६२
४४३	रूस मे प्राकृतिक चिकित्सा	,,	,,
४४४	जब धूम्रपान मे रोक लगी	,,	अक्टूबर-६२
४४५	धूम्रपान और कैंसर	,,	,,

क्रमाक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
४४६	राजा का हवा से इलाज	स्वस्थ जीवन	नवम्बर-६२
४४७	कब्ज दूर करने के उपाय	,,	,,
४४८	मिर्गी का हाल	,,	दिसम्बर ६२
४४९	गाजर का महत्व	सन्मार्ग	२९-१२ ६२
४५०	रथ यात्रा का हाल	स्वस्थ जीवन	जनवरी-६३
४५१	स्वास्थ्यप्रद भोजन का चुनाव	जैन जगत	,,
४५२	मोरारजी भाई का सादा जीवन-क्रम	स्वस्थ जीवन	फरवरी-६३
४५३	एक्जिमा पर प्रा० चि० का प्रयोग	सन्मार्ग	२०-२-६३
४५४	मोरारजी भाई का सादा जीवन-क्रम	भूदान यज्ञ	२२-२-६३
४५५	१९६३ मे हम क्या करें	स्वस्थ जीवन	मार्च-६३
४५६	समझाने का ढग-आँख और मिट्टी	,,	,,
४५७	सुख की नीद	आरोग्य	,,
४५८	बालो को गिरने-झडने से रोकिए	जीवन साहित्य	,,
४५९	बग प्रादेशिक हि० सा० सम्मेलन—चतुर्थ अधिवेशन	.	.
४६०	गाजर का महत्व	प्राकृ० जीवन	,,
४६१	गाजर खाइये स्वस्थ रहिये	नया जीवन	,,
४६२	सडको पर दौडने वाली मौत	हमारा मन	,,
४६३	धूम्रपान से कैंसर (गुज०)	कल्याण यात्रा	अप्रैल-६३
४६४	दिल्ली दुग्ध योजना—बीकानेर से दूध	गो सवर्धन	अप्रैल-६३
४६५	मोरारजी भाई टीके लेने के विरोधी	स्वस्थ जीवन	,,

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनाक
४६६	मसूढो की मालिश	स्वस्थ जीवन	मई-६३
४६७	मोटापा का कारण— दूर करने का उपाय	प्राकृ० जीवन	,,
४६८	धूम्रपान से बचिये	जैन जगत	,,
४६९	हिन्दी के तार	विश्वमित्र	१२-५-६३
४७०	गजेपन से बचिये	,,	२४-६-६३
४७१	स्त्री शिक्षा और प्राकृ० चिकित्सा	,,	जून-६३
४७२	अच्छे स्वभाव के भी व्यक्ति रोगी क्यो	,,	,,
४७३	दवाओ से बचिये	कल्याण	जुलाई-६३
४७४	श्री मोरारजी भाई का भोजन प्राकृ० भोजन	स्वस्थ जीवन	,,
४७५	भोजन आग पर न पकाये	,,	,,
४७६	शारीरिक श्रम के प्रति हमारी उपेक्षा	स्वस्थ जीवन	अगस्त-६३
४७७	सकटकालीन स्थिति और राष्ट्र का स्वास्थ्य	सन्मार्ग	६-८-६३
४७८	जहा पानी की अपेक्षा दूध आसानी से बिकता है	,,	२७-८-६३
४७९	दवाओ से बचियें	प्रकृति	अगस्त-६३
४८०	पीठ का दर्द	स्वस्थ जीवन	सितम्बर-६३
४८१	स्टेनली लीफ के अनुभव	,,	,,
४८२	गोपालन मे एक नया प्रयोग	गोसम्वर्धन	,,
४८३	पोटेन्शियालिटीज आफ नेचर क्योर इन इण्डिया	नादर्न इण्डिया प०	,,
४८४	ब्रोंकियल एलमेन्ट्स	डा० यूनी० मैग०	,,
४८५	सत्य चिकित्सक जिन्हे अपने पर ही विश्वास नही है	स्वस्थ जीवन	[illegible]

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
४८६	गजेपन से बचिये	स्वस्थ जीवन	नवम्बर-६३
४८७	डायरिया का स्वानुभूत नुस्खा	,,	,,
४८८	दवाए नही, प्रकृति स्वास्थ्य प्रदान करती है	जीवन साहित्य	,,
४८९	,, ,, ,,	जैन गजट	१४-११-६३
४९०	लकवा और उसकी चिकित्सा	सन्मार्ग	२३-११-६३
४९१	अमेरिका मे प्रा० चि० की प्रगति	विश्वमित्र	२२-१२-६३
४९२	लकवा	प्रकृति	दिसम्बर-६३
४९३	शक्ति राजू से भक्ति राजू	स्वस्थ जीवन	,,
४९४	सोयाबीन की उपयोगिता	,,	,,
४९५	गामा को बिठाकर मैंने हवाई जहाज चलाया	धर्मयुग	५-१-६४
४९६	अमेरिका मे प्रा० चिकित्सा की प्रगति	स्वस्थ जीवन	जनवरी-६४
४९७	डायरी-लकवा की चिकित्सा	,,	,,
४९८	धूम्रपान छोडने के कुछ उपाय	,,	फरवरी-६४
४९९	डायरी—"फ्लू"	,,	,,
५००	हिन्दी के सा० पत्रकार—स्व० प० विष्णुदत्त शुक्ल	सन्मार्ग	२९-२-६४
५०१	सच्ची शिक्षा	जीवन साहित्य	मार्च-६४
५०२	डायरी—कैन्सर	स्वस्थ जीवन	,,
५०३	गहरी नीद सोइये	,,	,,
५०४	हमारे विचारो पर स्वास्थ्य का प्रभाव	,,	,,
५०५	डायरी—माथे मे सीग	,,	अप्रैल-६४
५०६	डायरी—दवाओ के भक्त	स्वस्थ जीवन	मई-६४
५०७	गाजर का रस	,,	,,

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
५०८	डायरी—मुडा घुटना	स्वस्थ जीवन	जून ६४
५०९	डायरी—मुह के छाले	,,	जुलाई-६४
५१०	शरीर को सुगठित बनायें	,,	,,
५११	कौतूहलपूर्ण सरनामे	विश्वमित्र	१२-७-६४
५१२	जब मेरी ससुराल वालो ने मेरे असली दांतो को नकली समझा	धर्मयुग	१९-७-६४
५१३	मुझे आश्चर्य होता है कि लोग बीमार क्यो पडते है	नया जीवन	जुलाई-६४
५१४	दमा और उससे बचने के उपाय	विश्वमित्र	२४-८-६४
५१५	डायरी—भोजन तालिका	स्वस्थ जीवन	अगस्त-६४
५१६	हमारे भोजन मे विटामिन और खनिज लवण का सतुलन	,,	,,
५१७	प्राकृतिक चिकित्सा से उपचार जल्दी	,,	सितम्बर-६४
५१८	जन्म के समय मोटे बच्चे	,,	,,
५१९	जयपुर की बाढ	विश्वमित्र	७-९-६४
५२०	,, ,,	सन्मार्ग	,,
५२१	सफेद बाल से काले	स्वस्थ जीवन	अक्टूबर-६४
५२२	प्राकृ० चिकि० उसका वरदान	,,	,,
५२३	नीद स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है	,,	नवम्बर ६४
५२४	डायरी—सोहन हलुवा	,,	,,
५२५	गाजर खाइये	,,	दिसम्बर-६४
५२६	पाँच-सात वर्ष बडा हू	,,	,,
५२७	खनिज लवण	,,	जनवरी-६५
५२८	डायरी—भोजन एक बार	,,	,,
५२९	मोटापा कम करने के उपाय	,,	फरवरी-६५
५३०	डायरी—कैन्सर	,,	,
५३१	डाब की उपयोगिता	,,	मार्च-६५

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनाक
५३२	जलने पर पानी का प्रयोग	स्वस्थ जीवन	मार्च-६५
५३३	"भू" से छेडछाड	धर्मयुग	११-४-६५
५३४	अपनी सुन्दरता को बढाइये	नया जीवन	अप्रैल-मई-६५
५३५	डायरी—छूत की बीमारी	स्वस्थ जीवन	अप्रैल-६५
५३६	डायरी—एक लक्ष्य दो मार्ग	स्वस्थ जीवन	मई-६५
५३७	डायरी-भूत पिशाच और टायफायड	,,	जून-६५
५३८	आजकल के अस्पताल एक व्यापार हैं	,,	,,
५३९	रोगो को दूर करने मे उपवास का महत्व	विश्वमित्र	२१-६-६५
५४०	मधुमेह का कारण और बचने का उपाय	जैन जगत	जुलाई-६५
५४१	डायरी—एक्जिमा	स्वस्थ जीवन	,,
५४२	पीठ का दर्द	,,	अगस्त ६५
५४३	मसाजर का विज्ञापन	,,	,,
५४४	रोगो को दूर करने मे उपवास का महत्व	जीवन साहित्य	,,
५४५	इण्डियन सेज वेजटेबुल्स की टु हेल्थ	पेट्रियाट	७-८-६५
५४६	डायरी—हाथ के चोट	स्वस्थ जीवन	सितम्बर-६५
५४७	गठिया का दर्द गया	,,	अक्टूबर-६५
५४८	भारत मे प्राकृतिक चिकित्सा	,,	नवम्बर-६५
५४९	गाजर खाइये—स्वस्थ रहिये	सम्यक दृष्टि	,,
५५०	बिना जमीन की खेती	सन्मार्ग	३-११-६५
५५१	डायरी—दूध का दुरूपयोग	स्वस्थ जीवन	दिसम्बर-६५
५५२	डायरी—कान का नासूर	,,	जनवरी-६६

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनाक
५५३	दवाए नही-शरीर ही अपने को रोग-मुक्त कर सकता है	सन्मार्ग	९-१-६६
५५४	डायरी—प्राकृतिक चिकित्सा का अधिवेशन	स्वस्थ जीवन	फरवरी-६६
५५५	कलकत्ता अधिवेशन मे परिषद के मत्री श्री धर्मचन्द सरावगी	स्वस्थ जीवन	फरवरी-६६
५५६	दस अस्पताल बनाने से एक व्यायामशाला बनाना अधिक उत्तम	रांची एक्सप्रेस	१३-२-६६
५५७	पुरानी हवाई यात्राए चन्द यादें	धर्मयुग	२०-२-६६
५५८	डायरी-उपवास द्वारा स्वास्थ्य	स्वस्थ जीवन	मार्च-६६
५५९	झुर्रियो से बचिये	सा० हिन्दुस्तान	२०-३-६६
५६०	डायरी—प्राकृतिक चिकित्सा का चमत्कार	स्वस्थ जीवन	अप्रैल-६६
५६१	लन्दन मे प्राकृतिक चिकित्सा	सन्मार्ग	२४-४-६६
५६२	डायरी— गठिया	स्वस्थ जीवन	मई-६६
५६३	सुख की नीद सोने के उपाय	सन्मार्ग	१६-५-६६
५६४	डायरी—गुड और चीनी	स्वस्थ जीवन	जून-६६
५६५	डायरी—साइटिका	,,	जुलाई-६६
५६६	स्वास्थ्य के लिए उपवास और प्रा० जीवन	भूदान यज्ञ	१०-६-६६
५६७	ब्रिटेन मे प्राकृतिक चिकित्सा	स्वस्थ जीवन	अगस्त-६६
५६८	डायरी—इन्जेक्शन	,,	,,
५६९	लन्दन मे एक चिकित्सा केन्द्र मे	नया जीवन	जुलाई-६६
५७०	क्या चेचक का टीका अनिवार्य है	अपरा	अगस्त-६६
५७१	डायरी—गठिया	स्वस्थ जीवन	दिसम्बर-६६
५७२	विदेशो मे उपवास का सफल प्रयोग	,,	,,
५७३	ब्रिटेन मे प्राकृतिक चिकित्सा	,,	,,
५७४	डायरी—गरम टडे का जादू	,,	अक्टूबर-६६

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
५७५	ब्रिटेन मे प्राकृतिक चिकित्सा	स्वस्थ जीवन	अक्टूबर-६६
५७६	,, ,,	,,	नवम्बर-६६
५७७	डायरी—पेट का ट्यूमर	,,	,,
५७८	डायरी—गठिया	,,	दिसम्बर-६६
५७९	आजकल के सौंदर्य-प्रसाधन	जैन जगत	जनवरी-६७
५८०	प्राकृतिक चिकित्सा की ओर रूस की प्रगति	स्वस्थ जीवन	,,
५८१	भोजन पचाने का नुस्खा	,,	,,
५८२	डायरी—हार्निया	,,	मार्च-६७
५८३	चोट लगने पर रक्त चढाना जरूरी है या उपवास	भा० प्रा० वि०	६८
५८४	चोट का इलाज	स्वस्थ जीवन	मई-६९
५८५	आधुनिक चिकित्सा के नाम पर होने वाली अनावश्यक चीरफाड	भा० प्रा० वि०	..
५८६	प० नेहरू की चुस्ती का रहस्य	स्वस्थ जीवन	नवम्बर-७०
५८७	सुख की नीद सोने के उपाय	भा० प्रा० वि०	.. ७०
५८८	मैक्रोबायटिक	,,	... ७०
५८९	डायरी—हृदय रोग	प्राकृ० जीवन	अगस्त-७१
५९०	डायरी—उपवास	,,	अक्टूबर-७१
५९१	डायरी—हार्निया	,,	नवम्बर-७१
५९२	डायरी—प्राकृतिक भोजन	,,	दिसम्बर-७१
५९३	डायरी—प्राकृतिक जीवन की अनभिज्ञता	प्रा० जीवन	जनवरी-७२
५९४	डायरी—प्राकृतिक चिकित्सा सस्ती या मँहगी	स्वस्थ जीवन	जुलाई-७२
५९५	डायरी—वडी उम्र मे भी व्यायाम का महत्व	,,	अगस्त-७२
५९६	डायरी—केवल संयम चाहिए	,,	सितम्बर-७२

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनाक
५९७	स्वास्थ्यबर्द्धक चना	स्वस्थ जीवन	अक्टूबर-७२
५९८	आँख है तो जहान है	,,	नवम्बर-७२
५९९	गेंदे के गाछ के रस का चमत्कार	,,	दिसम्बर-७२
६००	गरम ठडे का जादू	निसर्ग अ० आरो०	अक्टूबर-७२
६०१	खाड का महत्व	,,	सितम्बर-७२
६०२	पश्चिम को पूर्व से प्रकाश की आशा	स्वस्थ जीवन	जनवरी-७३
६०३	प्राकृतिक चिकित्सा सस्ती या मँहगी	सा० विमल	,,
६०४	सिडनी मे प्रा० चि० सम्मेलन	स्वस्थ जीवन	फरवरी-७३
६०५	मोटापा का कारण और दूर करने का उपाय	स्मा० माहे० व्या०	,,
६०६	व्यायामशाला ने मेरा कितना उपकार किया	,, व० व० यु०	मार्च-७३
६०७	डायरी—कुदरती उपचार	निसर्ग ओ आरो०	फरवरी-७३
६०८	डायरी—प्राकृ० चिकि० की चर्चा	स्वस्थ जीवन	मार्च-७३
६०९	व्यायाम के सम्बन्ध मे गलत धारणाये	प्रा० जीवन	मार्च-७३
६१०	डायरी—स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन	स्वस्थ जीवन	अप्रैल-७३
६११	डायरी—मौसम की बातें	,,	मई-७३
६१२	माटी तारो या रूवाव	नि० अ० आरो०	जून-७३
६१३	दवा न लें आराम करें	स्वस्थ जीवन	,,
६१४	गजेपन से बचिये	,,	जुलाई-७३
६१५	डायरी—फ्लू	नि० अ० आरो०	,,

क्रमाक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
६१६	एडीथी चोटली सुधीनो इलाज	नि० अ० आरो०	अगस्त-७३
६१७	शरीर की सफाई	,,	सितम्बर-७३
६१८	डायरी—हृदय रोग	स्वस्थ जीवन	अक्टूबर-७३
६१९	सप्ताह मे एक उपवास	नि० अ० आरो०	नवम्बर-७३
६२०	आठ सोलह और वत्तीस	,,	दिसम्बर-७३
६२१	टान्सील कटाने से पुरुषत्वकी कमी	स्वस्थ जीवन	जनवरी-७४
६२२	डायरी—एक इन्जेक्शन ने सारी जीवन पद्धति वदल दी	नि० अ० आ०	फरवरी-७४
६२३	डायरी—श्रद्धा वगर पण लान	,,	मा० अ०-७४
६२४	गलगोटा फूलनी डाली योना रसनो चमत्कार	,,	जुलाई-७४
६२५	डायरी—हृदय रोगनी बीमारीना वेचियो	,,	अगस्त-७४
६२६	हार्निया	नि० अ० आ०	सितम्वर-७४
७२७	भोजन मे परिवर्तन	,,	अक्टूवर-७४
६२८	गठिया का इलाज	,,	नवम्बर-७४
६२९	हवा खाओ	,,	दिसम्वर-७४
६३०	चिकित्सा का भूत	,,	जनवरी-७५
६३१	पहले ही प्रयोग मे मुझे और मेरे परिवार वालो को प्रा० चि० का कट्टर भक्त वना दिया	भारतीय प्राकृतिक विद्यापीठ पत्रिका	..
६३२	भोजन का चुनाव कैसे करें	,,	७३-७४
६३३	गाजर का रस	स्वस्थ जीवन	जनवरी-७६
६३४	गेहू के रोगनाशक गुण	विश्वमित्र	१०-५-७६
६३५	हार्ट फेल से वचने के उपाय	,,	२९-७-७६
६३६	पण्डित नेहरू की कर्मन्यता	स्वस्थ जीवन	नव० दिस०-७६
६३७	७७ मे स्वस्थ रहने के लिये २५ सूत्री कार्यक्रम	विश्वमित्र	१७-१-७७

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनाक
६३८	शुभकामना	स्वस्थ जीवन	जनवरी-७७
६३९	हार्ट फेल से बचने के उपाय	,,	फरवरी-७७
६४०	प्राकृ० चिकि० के अनुभूत नुस्खे	,,	अप्रैल-७७
६४१	हमारे प्रधान मन्त्री श्री मोरारजी भाई का आहार	,,	मई-७७
६४२	मोरारजी भाई क्या खाते है	प्रकृति वानी	अप्रैल-७७
६४३	स्वस्थ रहने के लिये २५ सूत्री कार्यक्रम	माहेश्वरी	मई-७७
६४४	आरोग्य पचीमी	स्वस्थ जीवन	जून-७७
६४५	दवाइयो का जाल	,,	जुलाई ७७
६४६	निरोग रहने का रहस्य	,,	अगम्त-७७
६४७	शुद्ध वायु का उपयोग	राजस्थानी वीर	जुलाई-७७
६४८	,, ,, ,,	गोधन	,,
६४९	विना पैसे का टानिक	जैन जगत	अगस्त-७७
६५०	प्रसाद बाँटकर खायें	स्वस्थ जीवन	सितम्बर-७७
६५१	विना खर्च का टानिक	प्राकृ० पत्रिका	,,
६५२	इस धनी से मजदूर अच्छा	स्वस्थ जीवन	अक्टूबर-७७
६५३	आरोग्य पचीसी	म० पा० चि० स्यारि०	नवम्बर-७७
६५४	निरोग रहने के लिए उपयुक्त आहार लेना सीखें	प्रा० पत्रिका	दिस जन०-७८
६५५	ववामीर से कैसे वचे	स्वस्थ जीवन	फरवरी-७८
६५६	स्कूल कालेजो मे वच्चो को भी मीखाना चाहिए	प्रा० पत्रिका	मार्च-७८
६५७	दमे का इलाज	स्वस्थ जीवन	अप्रैल-७८
६५८	चुम्वक चिकित्सा के प्रयोग	,,	मई-७८
६५९	ववासीर के कारण	,,	जून-७८
६६०	दमे का इलाज	प्रा० पत्रिका	अगस्त-७८
६६१	जनाना मर्दाना आहार	स्वस्थ जीवन	सितम्बर-७८

क्रमाक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
६६२	जब मरना ही है तो छूरिया खाकर भी क्यो मरे	,,	अक्टूबर-७८
६६३	खून के दस्त ठीक हुए	,,	नवम्बर-७८
६६४	७० वर्षनी उमरे जुवान	नि० अ० आ०	दिसम्बर-७८
६६५	लकवा भी वरदान	स्वस्थ जीवन	दिसम्बर-७८
६६६	प्रा० चि० तब और अब	,,	जनवरी-७९
६६७	प्राकृतिक नुस्खे	धर्मयुग	फरवरी-७९
६६८	निरोग रहने के लिए उपयुक्त आहार लेना सीखें	जैन जगत	जनवरी-७९
६६९	पहले ही प्रयोग ने मुझे और मेरे परिवार वालो को प्रा० चि० का कट्टर भक्त बना दिया	प्रा० चिकित्सा	फरवरी-७९
६७०	योगासन तब और अब	स्वस्थ जीवन	फरवरी-७९
६७१	निरोग रहने के लिये उपयुक्त आहार लेना सीखें	राजस्थानी वीर	फरवरी-७९
६७२	पहले ही प्रयोग ने मुझे और मेरे परिवार वालो को प्रा० चि० का कट्टर भक्त बना दिया	प्रा० जीवन	अप्रैल-७९
६७३	हार्टफेल से बचने के उपाय	हेल्थ हेरल्ड	विन्टर-८१
६७४	शिवाम्बु चि० तब और अब	स्वस्थ जीवन	फरवरी-८१
६७५	अति भोजन	स्वास्थ्य चेतना	सितम्बर-८१
६७६	हरस, मसा भगदर	निसर्ग० अने० आरो०	दिसम्बर-८१
६७७	दीर्घायु मे लोगो को स्वस्थ रहने का नुस्खा	बडाबाजार युवक सभा हीरक जयती	२८-३-८४
६७८	ब्रिटेन मे प्रा० चि० प्रसार	स्वस्थ जीवन	अप्रैल-८४
६७९	हाउ टू सेभ योरसेल्फ फ्राम हर्टट्रबुल	प्रकृति निकेतन स्मारिका	अप्रैल-८४
६८०	हार्टफेल से बचने का उपाय	जैन जगत	मई-८४
६८१	मेरे स्वस्थ रहने का राज	हिन्दुस्तान साप्ताहिक	१०-८-८६
६८२	मेरे स्वस्थ रहने का राज	सोसाइटी	मई, जून, जुलाई-८६

□

पायरिया दूर करनेवाला दाँतों का मंजन

मेरे मकान में डाक्टर नियोगी नाम के सुप्रसिद्ध दन्त चिकित्सक रहते है। कलकत्ते मे उनकी काफी प्रसिद्धि है। शहर के धनिक, मिल मालिक, व्यापारी, विदेशी दूतावास के लोग, मिनिस्टर आदि प्रायः इनके चिकित्सालय मे आते रहते हैं। अपने हुनर मे चूकि यह सिद्धहस्त है इसलिए फीस भी वडी लम्वी लेते हैं। सौभाग्य से कहिए या दुर्भाग्य से, हमारे परिवार मे पिताजी और माताजी के अलावा और किसी को भी इनकी सेवा की आवश्यकता नही पडी। वैसे भी ये बडे मिलनसार और शिक्षित व्यक्ति हैं। सन् १९५४ मे जव श्री सिद्धवा एडिनबरा से प्राकृतिक चिकित्सा सीखकर आए और हमारे यहा ठहरे तो श्री नियोगी ने दन्त चिकित्सको की एक गोष्ठी मे उनका व्याख्यान कराया था।

कई वर्षो वाद १९७० मे अपने दाँतो के लिए नियोगीजी के पास गया, तो वह कहने लगे कि दात मे जो थोडा वहुत दर्द होता है, उसका कारण सिर्फ यह है कि लोग कुछ खाने के वाद मुँह साफ नही करते केवल रूमाल मे मुँह पोछ लेते है तथा सुवह भी मसूढो की मालिश नही करते। व्रश से केवल सामने के दाँत वे साफ कर लेते है पर यदि महीन नमक और कड़वा तेल मिलाकर व्रश से मजन करने के वाद या उसके वदले मसूढो को उगली से मला जाए

और दाँतों को साफ किया जाए तो दाँत मजबूत होते है। इसके अलावा भोजन मे गाजर का प्रयोग दातों के लिए लाभप्रद है। चीनी, चाय, काफी, आदि का उपयोग वन्द कर देना चाहिए। ये चीजें दातो के दुश्मन हैं।

इस कथन के बाद उन्होंने मुझ से कहा, यदि आप कहेगे तो मैं ३२) रुपये फीस लेकर बडे आराम से आपका दात उखाड़ दू गा। पर यह कार्य आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नही रहेगा। धीरे-धीरे एक के बाद एक, कई दात निकलवाने पडेंगे या थोड़ी देर के लिए दर्द मिटाने की कीमती दवा भी लिख सकता हूं, पर उसका असर स्थायी नही होगा। यह मेरे जीवन का अनुभव है कि यदि किसी रोगी को मै कम कीमत का देशी नुस्खा बताता हूँ तो वह समझता है कि मुझे आधुनिक दवाओ का ज्ञान ही नही है और बुद्धू हूँ। इसलिए अपनी व्यापारिक प्रतिष्ठा रखने के लिए इच्छा न रहते हुए भी, लोगो को कीमती औषधिया बतानी पडती है।

मैंने डाक्टर नियोगी के बताए हुए तरीके से अपने भोजन मे गाजर का उपयोग आरम्भ किया। चीनी, चाय, काफी तो वर्षों से मैं उपयोग करता ही नहीं।

व्रश से मजन करने के बदले कडवे तेल और नमक से मसूढो को और दांतो को मलना शुरू कर दिया, परिणामस्वरूप कुछ ही दिनो मे दात का दर्द जाता रहा और जहा पानी पीने तक मे कष्ट का अनुभव होता था वहा अब कडी चीजें खा लेता हूँ। यह प्रयोग कई लोगो को बताया जिन्होंने किया उनका पायरिया तक ठीक हो गया।□

जले का इलाज पानी

प्राकृतिक चिकित्सा का भक्त होने से पहले जलने पर स्याही, पिसा हुआ कच्चा आलू, तथा अन्य कितनी ही दवाईयो के प्रयोग मैंने सुन रखे थे। साथ ही यह भी सुन रखा था कि जलने पर पानी पडने से फफोले पड जाते है। पर प्राकृतिक चिकित्सा का साहित्य पढने से मालूम हुआ कि जलने पर जले हुए स्थान को तुरन्त ठंडे पानी मे डुबा देना चाहिए और इतनी देर तक उसे डुबोए रखना चाहिए कि जबतक जलन शान्त न हो जाए। यदि शारीरिक गर्मी से पानी गरम हो जाये और उसके कारण रोगी को पुन. जलन मालूम देने लगे तो उस गरम पानी को ठंडे पानी से बदल देना चाहिए या उसमे बरफ डाल देना चाहिए। जले हुए स्थान पर कपडा हो और वह ढीलाढाला हो तो उसे उतार देना चाहिए। और यदि कसा हो तो उसे फाड़कर हटा देना चाहिए। शरीर रक्षा के लिए कपडे का मोह नही करना चाहिए। आग से शरीर या उसका कोई भाग जितना अधिक जले उतने ही समय तक उसे पानी मे रखना चाहिए। यह बात मुझे आरम्भ मे बड़ी अटपटी और नयी सी लगी, परन्तु जब अपने परिवार मे तथा अन्य जगहो मे मौका मिलने पर इस प्रयोग को आजमाया तो प्रयोग को सोलहो आने सही पाया। अर्थात जलने वाले को इस प्रयोग से बहुत शीघ्र आराम मिला और शरीर पर जलने का निशान भी न पड़ा।

१९५३ मे जब मैं योरप गया, उस समय एडिनबरा के श्री थामसन से मेरी बातचीत हुई। उन्होने इस सम्बन्ध मे अपना एक अनुभव सुनाया।

एक बार श्री थामसन अपने एक मित्र के साथ, जो फायरब्रिगेड के अफसर थे, एक पिकनिक मे गए हुए थे। वहा मित्र महोदय का हाथ जल गया। मित्र दवा-दारू के घोर पक्षपाती थे। लगे दवा ढूढने। मगर जगल मे दवा कहा ? तब डा० थामसन ने कहा अपने हाथ ठडे जल मे डूबो दीजिए। पहले तो उन्होने इस बात का मजाक उड़ाया, मगर जब कोई दवा न मिली तो डा० थामसन का कहना मानकर अपना जला हाथ जल मे डाल दिया और कुछ देर उसी मे रखे रहे। ऐसा करने से उन्हे आश्चर्यजनक लाभ हुआ। फिर तो वह इस चिकित्सा के इतने बडे भक्त हो गए कि अपने फायरब्रिगेड मे यह आदेश दे दिया कि जब कभी कही आग बुझाने जाना हो तो प्रत्येक व्यक्ति अपने साथ एक बोतल ठडा पानी और थोडा कपड़ा अवश्य ले जाया करे। □

जले की प्राकृतिक चिकित्सा

घटनाएँ छोटी होती हैं, किन्तु कभी-कभी वे जिन्दगी को नया मोड दे देती हैं। मनुष्य के जीवन पर कभी-कभी छोटी घटनाए अपना स्थाई प्रभाव छोड जाती है। पेड से फल गिरते सभी देखते है पर इस नगण्य घटना ने महान् वैज्ञानिक न्यूटन के सामने एक नया सिद्धान्त ही उपस्थित कर दिया—पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत।

कुछ वर्षों पहले मैं भागलपुर गया था। वहा एक मित्र के यहा बातें चल रही थी। तभी किसी बच्चे के चीखने की आवाज आयी। दौडकर उसके पास पहुँचे। देखा मित्र का एक पाच वर्ष का बच्चा खेलते-खेलते चूल्हे की आग से अपना हाथ जला बैठा है। बच्चे का जला हाथ देखकर मित्र घबरा गए। बच्चा दर्द के मारे चीख रहा था। मित्र बडे आदमी थे नौकर से बोले, "दौडकर जल्दी से डाक्टर को बुला ला।"

साथ बैठे एक दूसरे सज्जन ने कहा, 'बच्च को गाडी मे बैठाकर फौरन अस्पताल ले चलना चाहिए। डाक्टर यहां आएगा, दवा इन्जेक्शन मगायेगा, तब तक तो बहुत देर हो जाएगी।'

बच्चे के जले हाथ की प्राकृतिक चिकित्सा मैं बताने ही जा रहा था कि तब तक हमारे मित्र का बड़ा लड़का पहुँच गया। काफी पढा-लिखा है, किन्तु अभी सौ फीसदी आधुनिक शिक्षित नही हो गया है, अर्थात वह जो भी काम करता है सोच-समझकर करता है। वहा पहुँचकर उसने एक वार मेरी ओर अर्थ-पूर्ण दृष्टि से देखा, फिर बोला, 'बच्चे को अस्पताल ले जाने की जरूरत नही और न डाक्टर को ही बुलाने की जरूरत है।'

'तब' ? अचरज मे आकर लोगो ने पूछा। उत्तर मे वह एक बाल्टी ठडा पानी उठा ले आया, और लोगो के मना करते रहने पर भी बच्चे के जले हाथ को उस पानी मे डुबो दिया। लोग मना करते ही रह गए कि पानी मे जला हाथ डालने से उसमे फफोले पड जाए गे। किन्तु लडका न माना और उसने जो ठीक समझा किया। पानी की शीतलता से बच्चे के हाथ की जलन कुछ कम हुई। थोडी देर मे रही-सही जलन भी जाती रही और बच्चे के मुंह पर मुस्कराहट आ गई।

लडके के इस उपचार पर उसके पिता और अन्य लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। क्योकि उनकी धारणा थी कि डाक्टर, दवा और इन्जेक्शन के बिना कोई रोग दूर ही नही हो सकता। किन्तु मुझे तो पता ही था कि जलने का सही उपचार लडके ने किया है।

मैंने लडके की ओर प्रशंसा भरी नजर से देखकर पूछा, "बेटे उपचार की यह पद्धति तुमने कहां सीखी ?" हँसकर उसने कहा, "चाचाजी, उपचार की इस पद्धति को मैंने 'स्वस्थ जीवन' मे पढा था। तत्पश्चात इसे २-४ बार मैंने रोगियो पर आजमाया भी था, आश्चर्यजनक लाभ हुआ था। तभी से मेरा विश्वास इस उपचार पर बैठ गया है।"

मैंने पूछा, "अभी तो बच्चे का हाथ थोडा ही जला था। यदि जलकर घाव हो गया होता तो तुम क्या करते ?"

"तो भी मैं डाक्टर को न बुलाता। गिली मिट्टी को उबालकर घावपर बाध देता और बार-बार बदलता और उससे लाभ हो जाता।"

लडके की इस सूझ-बूझ पर मुझे बडी प्रसन्नता हुई। □

पेट की वायु (गैस) निकालने का नुस्खा

आठ, सोलह, बत्तीस

मेरे एक मित्र हैं जिनकी आयु लगभग ६० वर्ष की हो गई है, स्वास्थ्य पर बहुत ध्यान देते है। उनका स्वास्थ्य है भी अनुकरणीय। एक दिन मैं उनसे मिलने गया। उनके सोने वाले कमरे के दरवाजे के पीछे लिखा था, सीधे आठ, दाहिने सोलह, बायें बत्तीस। अच्छी स्थिति के व्यक्ति है। मैंने हँसते हुए पूछा, "क्या तिलस्मी उपन्यासो की तरह आपने भी इन्कम टैक्स वालो से बचने के लिए नोटो की गड्डियां जहा छिपा रखी है वहा का निशान यहा लिख रखा है ?' वे कहने लगे, "दरवाजो पर लगे इन वाक्यो को देखकर आप ही की तरह दूसरे लोग भी ऐसा प्रश्न करते है। दरअसल ये वाक्य मेरे खजाने के ही तिलस्मी शब्द हैं, पर नोटो के स्थान को बताने के बजाए ये स्वास्थ्य को ठीक रखने का उपाय बताते हैं।'

पूरी बात मेरी समझ मे नही आई। पहेली समझाने के लिए कहने पर वे कहने लगे, "भोजन के उपरान्त यदि मनुष्य सीधे होकर ८ लम्बे सास लें, फिर दाहिने करवट लेकर १६ लम्बे सास ले, और अन्त मे बाएँ करवट लेकर ३२ लम्बे सास लें, तो किया हुआ भोजन यथास्थान पहुच जाता है और वायु

(गैस) मुँह द्वारा डकार के रूप मे या गुदा द्वारा अपान वायु के रूप मे उसी समय निकल जाता है।

यह छोटा-सा नुस्खा एक वयोवृद्ध विद्वान प्राकृतिक चिकित्सक ने अनुभव के आधार पर लगभग ७-८ वर्ष पहले मुझे बताया था जिसे मैं भोजन के उपरान्त नित्य उपयोग में लाता हूँ। बाएँ-दाएँ की सख्या मे या उसे करने मे भूल न हो इसलिए दरवाजे पर लिख दिया है।

इसके बाद मैंने ये नुस्खा गुजरात के गर्वनर श्रीमन्नारायण और पश्चिम बगाल के गवर्नर श्री धवन को भी बताया जिसको उन्होने आजमाया और जब मिलते थे तब बडी सराहना करते थे।

कुछ वर्षो पहले वायु हटाने के लिए आठ-सोलह—बत्तीस के नुस्खे को पश्चिम बगाल के मन्त्री श्री यतीन चक्रवर्ती को बताया। उन्होने इसका प्रयोग किया। जब भी मिलते हैं तो धन्यवाद देते हैं। □

अतिसार में रामबाण जामुन के पत्ते

साधारण जीवन मे जानकारी के अभाव मे हमारे सामने तिल की ओट मे पहाड़ छिपा रहता है। जो बीमारिया साधारण घरेलू प्रयोगो, भोजन सुधार तथा आसानी से मिलने वाली अनुत्तेजक जडी-बूटियो एव फल-फूल आदि द्वारा आनन-फानन मे ठीक हो जाती है, उनके लिए बड़े-बडे डिग्रीधारी चिकित्सको को बुलाकर उनसे इन्जेक्शन पर इन्जेक्शन लेकर हम बडी भूल करते है। कैसी विडम्बना है कि जो डाक्टर जितनी अधिक दूर से मगवाई हुई दवाइयो का उपयोग बताता है, उसे उतना ही अधिक ज्ञानवान समझा जाता है।

एक बार जब मैं दिल्ली मे ही था तो श्रीमन्‌जी से बहन मदालसा के स्वास्थ्य के सम्बन्ध मे चर्चा होने लगी। उन्होने बताया कि मदालसाजी को अभी हाल मे डायरिया यानी अतिसार की भयकर शिकायत हो गई थी। मदालसाजी को औषधियो पर आस्था नही के बराबर है। खासकर एलोपैथी की तो वह कट्टर विरोधिनी है। इसलिए श्रीमन्‌जी ने अपना आजमाया हुआ नुस्खा उन्हे काम मे लेने को कहा।

अतिसार के भयकर से भयकर दौरे पर जामुन के पेड की टाई पत्तिया, जो न ज्यादा मोटी हो और न ज्यादा मुलायम, लेकर कूट ले, फिर उनमे जरा-सा सेंधा नमक मिलाकर उसकी दो गोलिया बना लें, इन गोलियो मे से एक गोली सुबह और दूसरी शाम को खा लेने से अतिसार तुरन्त बन्द हो जाता है। □

गरम-ठंडे का जादू

पुराने जमाने से लोगो की गलत धारणा जमी हुई है कि एक साथ गरम ठडे का प्रयोग करने से नुकसान होता है। आज भी अक्सर लोगो को यह कहते सुनता हूँ, वाहर घूम कर आया, शरीर गरम था, पानी पी लिया, सर्दी लग गई, तथा धूप मे घूमकर आया, एयर कंडीशन कमरे मे घुसा, खांसी आने लगी या ज्वर आ गया, आदि। उन भोले व्यक्तियो की वातें सुनकर हँसी आती है।

जिस प्रकार पुराने विचारो के लोगो की उपर्युक्त वातें सुनकर हमे हँसी आती है, उसी प्रकार हम जव प्राकृतिक चिकित्सा के नियमो के अनुसार किसी को गरम-ठडा सेंक या गरम-ठडी पट्टी या गरम-ठंडा कुल्ला करने की राय देते हैं तो वे आश्चर्यचकित हो हमारी भी वातो पर हँसते है और हमारे मुँह की ओर देखने लगते हैं। कुछ लोग तो साहस कर यह भी पूछ बैठते हैं कि ऐसा करने से कोई हानि तो नही होगी ? फिर भी कुछ समझदार लोग विना किसी शका के उन उपचारो का प्रयोग करते है और लाभ उठाते हैं। नीचे कुछ अनुभूत प्रयोग दे रहा हूँ। इनसे मालूम हो जाएगा कि गरम-ठडे मे कितना जादू भरा है।

(१)

एक व्यक्ति के बाईं आख के नीचे की पलक मे छोटी-सी एक फुंसी हो गई। फुसी का रग आस-पास में लाल और बीच में सफेद था। आंख मे काफी वेदना थी। एक-दो दिन तकलीफ उठाने के बाद उसने मुझसे सलाह ली। मैंने उसे गरम-ठडे का प्रयोग बताया। उसने गरम पानी मे गमछा भिगोकर और निचोड़ कर उसे फुसी पर रखा और ५ मिनट के भीतर २-३ बार सहता-सहता गरम सेंक किया। फलतः फुसी आधी रह गई। सेंक के बाद उसने ठडे पानी मे भीगा हुआ गमछा रखा। लाभ और अधिक हुआ, फिर तो उसका विश्वास जम गया। दोपहर और सध्या को भी उसने यही प्रयोग किया। इस तरह बिना औषधि अथवा इन्जेक्शन के ही उसकी फुसी ठीक हो गई।

(२)

एक मित्र का दाहिना अण्डकोष फूल गया था। उन्होने बताया, अण्डकोष मे वेदना है, और वह साधारण नाप से सवाया बड़ा भी हो गया है, साथ ही स्थान का रग कुछ लाल भी है। मैने उनसे भी ३ मिनट गरम और एक मिनट ठडा प्रयोग की बात कही। दो दिनो बाद मिलने पर उन्होने बताया कि गरम ठडे का प्रयोग उन्होने केवल चार-पाच बार ही किया और उससे ही उनका अण्डकोष साधारण अवस्था मे आ गया।

(३)

एक मित्र को गुदा के पास एक फुसी निकली। वे घबड़ाए। क्योकि उनके कई मित्रो को भगदर की बीमारी हो चुकी थी और डर रहे थे कि कही वह बीमारी उनको भी न हो जाए। अत वह मुझसे चिकित्सा पूछने आए। मैंने गरम ठडे की बात उनसे भी कही। पहले तो वह चिकित्सा उन्हे नही जची। फिर बाद को उन्होने सोचा इस चिकित्सा मे खर्च तो कुछ लगता नही करने मे क्या हर्ज है? यदि लाभ न भी हुआ तो दवा फरोश और सर्जन कही जाते थोड़े ही है। किसी तरह उन्होने मेरी बात मान ली और दो-तीन दिनो तक गरम-ठडे का प्रयोग किया। फिर जब मिले तब कहने लगे कि, "भाई साहब गरम-ठडे का प्रयोग सचमुच जादू का-सा काम करता है।" □

स्वस्थ रहने का राज

एक वार एक मित्र के लडके की शादी मे वाकुड़ा गया। लौटते समय एक प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेमी मित्र से वातें होने लगी। मित्र की उम्र सत्तर से अधिक है। पर वे लगते हैं पचास से कम ही के। जो भी नया आदमी उनसे मिलता है वह अपनी उम्र उसे पचास ही वताते हैं। खान-पान मे उन्होने काफी नियन्त्रण कर रखा है। चौवीस घन्टो मे आध छटाक से लेकर एक छटाक तक अन्न रोज खाते हैं। कहा करते हैं अन्न तो मैंने गरीवो के लिए छोड़ दिया है और उन्ही के आशीर्वाद से आज मैं स्वस्थ हूँ। मेरी ही तरह यदि दूसरे लोग भी अन्न का उपयोग कम करें तो वे स्वय स्वस्थ रहने के साथ-साथ भारत की अन्न समस्या को हल करने मे भी सहायक होगे। और तब हो सकता है भारत को विदेशो से अन्न मंगाना ही न पडे।

वह नित्य व्यायाम भी करते हैं। चाहे वह रेल मे यात्रा करते हो या हवाई जहाज में। उनका यह क्रम कभी नही टूटता। समय निकाल कर कुछ व्यायाम कर ही लेते है। लोगो के पूछने पर कहते है आज के सभ्य समाज के लोगो को यदि खुलेआम सिगरेट, शराव आदि पीने मे लज्जा नही आती तो मैं अच्छा काम करने मे लज्जा क्यो करूँ? मेरा शरीर भी कोई आवुनिक सीकिया पहलवान की तरह नही है, सीना भी चिकेन चेस्ट नही कि व्यायाम करते समय मेरे मन मे हीन भावना की उत्पत्ति हो।

आगे उन्होने बताया, मुझे सबसे अधिक आश्चर्य तो इस बात पर होता है कि कुछ मित्र जो मेरे रहन-सहन, खान-पान की आलोचना करते है, वे ऐसे व्यक्ति है जो औषधियो पर जीते है और जिन्हे कोई न कोई बीमारी लगी रहती है। कुछ तो ऐसे भी हैं जो वस्तुतः मुझसे उम्र मे कम है किन्तु मुझसे अधिक वयस्क दिखलाई पड़ते है। इसलिए मैं उनकी आलोचनाओ को एक कान से सुनता हूं और दूसरे से निकाल देता हूँ। और अपने जीवन क्रम पर, जिससे मुझे लाभ है, चलता रहता हूँ। फलत कई वर्षो से मैं कभी बीमार पडा ही नही। मैं सुबह व्यायाम करने के बाद कच्चा दूध बिना चीनी मिला, तीन-चार केले, चार खजूर और कुछ नारियल के टुकड़े लेता हूं। खजूर के साथ नारियल खाने मे वह बड़ा स्वादिष्ट लगता है। नारियल द्वारा शरीर को पूरी चिकनाई मिल जाती है। और वह पेट को साफ भी खूब करता है। खजूर खून बढाता है। केले और दूध का मेल बढिया होने के कारण वह पूरा-पूरा सतुलित भोजन बन जाता है। दो पहर को आधी छटाक से एक छटाक अन्न रोटी तथा चावल आदि के रूप मे लेता हूँ। साग तो लेता ही हूँ, कच्ची तरकारिया भी खाता हूँ। जिनमे मुख्यतः उस खास ऋतु की ही तरकारिया होती है। जैसे गाजर, गोभी, टमाटर, खीरा आदि। इसके अलावा गन्ने के मौसम मे गन्ना चूसता हूँ। कच्ची तरकारी खाने से और गन्ना चूसने से दात बहुत मजबूत बने रहते है। सध्या को दूध और मौसम के फल जैसे सन्तरा पपीता, आम, लीची, सफेदा, बेल, नासपाती, खरबूजा, तथा सूखे मेवे आदि मे से कोई एक या दो चीजें लेता हूँ। मैंने अबतक जो स्वास्थ्य सम्बन्धी साहित्य पढा है उससे मालूम हुआ है कि चालीस से अधिक उम्र वाले व्यक्तियो को स्वस्थ रहने के लिए सध्या समय दूध-फल का हलका भोजन करना चाहिए। मेरा कहना मानकर मेरे कई मित्रो ने भी अपना सध्या का भोजन, साधारण प्रचलित भोजन की जगह, दूध, फल ही कर लिया है। इससे उन्हे काफी लाभ हुआ है।

मैंने उनकी सारी बाते सुनी तो कहा, "आप और मैं दोनो एक ही पथ के पथिक हैं।" इसपर वह हसकर बोले, "इसी से तो हम दोनो एक साथ मोटर मे बैठकर कलकत्ते चल रहे है। किसी कवि ने सच कहा है। गुजरेगी खूब जब मिल बैठेंगे दीवाने दो।" ◻

मिट्टी तेरे यह ठाट

बहुत पुरानी बात है। उन दिनो हमारे यहां दवाइयो का दौर-दौरा था। मेरे एक परिचित व्यक्ति के शरीर पर मकड़ी ने मूत दिया। हम उन्हे अपने पारिवारिक डाक्टर के पास ले गए। डाक्टर हमारी बात सुन कर हँसने लगे और बोले, 'लोगो मे कितनी गलतफहमी है। मकडी को क्या मूतने के लिए कोई और स्थान नही मिला जो उसी स्थान पर मूतने आई। यह तो चर्म रोग है। मैं दवाई देता हूँ, ठीक हो जाएगा। लोग बिना समझे-बूझे रोग का चाहे जो नाम रख देते है और दूसरे लोग उसे मान भी लेते है। खैर, उनकी दवाई लाई गई और कई दिनो बाद मकडी के मूत का असर दूर हुआ।

आजकल हमारे यहां मिट्टी का बोलबाला है। मेरे दोहते सजीव के मुँह और हाथ पर छोटी छोटी पानी भरी फुन्सिया हो गई थी। पहले वाली बात होती तो मलहम और इन्जेक्शन आरम्भ हो गए होते पर अब तो इसके लिए हमारे यहां ठण्डी-ठण्डी मिट्टी की पट्टिया ही लगाई जाती हैं। सजीव की फुन्सियो पर भी वही मिट्टी की पट्टी दिन मे दो-तीन बार लगाई गई। आध-आध घन्टे के लिए। इससे वहा की फुन्सियां तो दूर हो गई पर दूसरी जगह वे फिर निकल आई अतः उसे नीम के पानी का एनिमा दिया गया और फलो पर

रखा गया। दो-एक दिनो मे ही सारी फुन्सियाँ गायब हो गई। नए लोगो को फुन्सियो पर मिट्टी की पट्टी देने से उसमे सैप्टिक हो जाने का डर रहता है। ऐसे लोगो को मालूम होना चाहिए कि जो कुछ भी हम खाते हैं या हमारा शरीर जिस चीज से बना है वह सब मिट्टी ही तो है। यह सावधानी अवश्य रखनी चाहिए कि जो मिट्टी काम मे लें वह साफ-सुथरी हो।

कुछ वर्षों पहले की बात है। माताजी के दाँतों मे दर्द उठा। गरम-ठडे कुल्ले किए गए, सेंक किया, पर दर्द जा नही रहा था। दवाई के पक्ष मे तो वे थी नही आखिर एक प्राकृतिक चिकित्सक को बुलाया गया। मिट्टी से दातो को मलने के लिए कहा। पहले तो वे राजी नही हुई, पर जब डाक्टर ने जोर दिया और समझाया कि आप करके देखे, क्या नुकसान है? यह उपचार कई रोगियो पर आजमाया हुआ है, जादू का-सा काम करता है। तब वह राजी हुई और मिट्टी का मजन किया गया। पहले तो दर्द के स्थान पर थोडा और दर्द हुआ जो स्वाभाविक था। पर उन्होने उसकी परवाह न कर मजन करना जारी रक्खा और दात का दर्द एक बार के मजन करने से ही कम हो गया। फिर तो उन्हे उस पर थोडा विश्वास हुआ और पहले दिन ही उन्होने दिन मे तीन बार मिट्टी का मजन किया, जिससे दर्द आधा रह गया। उसके बाद लगातार दो-तीन दिनो तक उसी प्रकार दिन में तीन बार मिट्टी का मजन करने से दर्द बिल्कुल दूर हो गया अब जब कभी इसका जिक्र हम अपने परिवार मे करते है तो आश्चर्य होता है।

आजकल कई प्राकृतिक चिकित्सक मिट्टी की छोटी छोटी टिकिया बनाकर रखते हैं जिसे मिट्टी के पेड़े कहते है और दातून और टूथ पेस्ट की जगह सुबह इन्हे मुँह मे रखकर मजन करने की सलाह देते है। □

स्व० राजा बलदेव दास बिड़ला का उपदेश

आजकल थोडी ही उम्र में लोगो का स्वास्थ्य खराव हो जाता है। इस सम्बन्ध मे एक विवाह से लौटते समय एक मित्र से बातचीत हो रही थी, तभी उन्होने कहा कि लोग धन कमाने के पीछे इतने अधिक व्यस्त रहते है कि वे स्वास्थ्य की ओर ध्यान ही नही देते जिसका फल यह होता है कि उनका स्वास्थ्य जल्दी ही जवाव दे जाता है। धन कमाने के बाद सुख देने के नाम पर लोग शरीर को इतना नाजुक वना लेते है कि फिर औषधियो के वल पर ही वह चलता है।

इसी सिलसिले मे मित्र ने स्वर्गीय राजा बलदेवदासजी बिडला का एक सस्मरण सुनाया। उन्होने कहा—"सस्मरण की घटना छोटी-सी ही है और वात भी अधिक नही है। जिस प्रकार हमारे ऋषि-मुनियो ने अपनी विद्वता के प्रभाव से छोटे-छोटे सूत्रो मे जीवन का सार रख दिया है यानी गागर मे सागर भर दिया है उसी प्रकार राजा साहव द्वारा कही गई स्वास्थ्य सम्बन्धी वातें स्वास्थ्य चाहने वालो के लिए वडी ही ज्ञानवर्द्धक और उपयोगी है।"

जव ज्योतिपियो ने राजा साहव को वताया कि उनकी मृत्यु ५० वर्ष की ही उम्र मे हो जाएगी तो अपने जीवन के अन्तिम क्षण भागीरथी के किनारे वावा

विश्वनाथ के चरणो मे बिताने के लिए वे काशी रहने लगे और अन्न की जगह फल का सेवन शुरू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि दिनो दिन उनका स्वास्थ्य सुधरने लगा और मृत्यु का क्षण टल गया। तब उन्होने अपने जीवन के कार्यक्रम मे अन्य नियमो के साथ-साथ नित्य घूमने का भी नियम चालू किया। एक दिन धूप मे जब वह घूम रहे थे तो कलकत्ते के एक प्रतिष्ठित शिक्षित व्यक्ति ने कौतूहलवश उनसे कहा, "राजा साहब, आप धूप मे घूमते है? नही घूमना चाहिए। शायद इससे नुकसान हो।" इसपर वह हँसने लगे और मुस्कुराते हुए बोले, "भाई, तुम शरीर के नियम को नही जानते। इसका यह नियम है कि जो इसे कष्ट देता है, उसे यह सुख पहुचता है और जो इसे आराम देता है और इसके वश में हो जाता है उसे यह कष्ट पहुँचाता है। इसलिए यदि तुम थोडा-सा भी सुख चाहते हो तो शरीर को कष्ट देते रहो। ऐसा करने से यह तुम्हारे वश मे रहेगा।" कलकत्ते वाले मित्र उनके सामने तो कुछ नही बोले, पर उसका फल यह हुआ कि आज वे अस्वस्थ हैं।

आज का आधुनिक युग उनकी बात को दकियानूसी विचार समझ कर उस पर कुछ ध्यान नही देता।

स्वास्थ्य चाहने वाले व्यक्तियों को राजाजी के सूत्ररूपी उपर्युक्त शब्दो का पूरा अर्थ निकाल कर शरीर से यदि काम लेना है तो बिस्तर पर पडे-पडे शरीर को आराम न देकर सुबह तडके ही दूर तक घूमने निकल जाना चाहिए। आसन करना चाहिए या व्यायाम करना चाहिए तथा स्वाद पर आश्रित होकर चटपटी चीजो का व्यवहार न कर उत्तम स्वास्थ्य के लिए स्वास्थ्यकर चीजो का ही व्यवहार करना चाहिए। □

अन्न के कम प्रयोग से स्वास्थ्य में सुधार

आफिस मे बठा था। फोन की घटी वजी। राव श्री युधिष्ठिर जी अग्रवाल ग्रांड स्मिथ वर्क्स के मालिक का फोन था। इनसे काफी वर्षो से परिचय है। मुझे यह भी मालूम है कि वर्षो से इनके परिवार में प्राकृतिक चिकित्सा अपना चमत्कार दिखाती आ रही है। साधारण बातचीत के बाद मैंने उनसे फोन करने का कारण पूछा। उन्होने कहा, "आपसे मिलकर स्वास्थ्य के सम्बन्ध मे कुछ सलाह लेनी है। छ महीने पहले साधारण सर्दी लगी और मैं दवा के चक्कर मे पड गया। काफी समय और रुपया वर्वाद हुआ। पर लाभ कुछ भी नही हुआ। दशा वैसी ही रही, वल्कि और वदतर हो गई जैसा कि इस कहावत मे कहा गया है 'मर्ज वढता गया ज्यो ज्यो दवा की।' विचार किया, आप तो घर के ही हैं। मौका पडने पर घरवालो को ही कष्ट दिया जाता है।" मैंने कहा—"आप तकलीफ न करें। मैं खुद ही आपके यहा आ जाऊगा।" उन्होने नहीं माना और आफिस मे मिलने का समय तय करने के लिए कहा।

मैंने अपने सुविधानुसार उनसे मिलने का समय निश्चित किया। वे आफिस मे आए और वातें की। सारी वातो को सुनने के वाद मैंने उन्हे राय दी कि "जिन लोगो की आर्थिक स्थिति ठीक है, उन्हे आज के इस अन्नसकट के जमाने मे अन्न का

भोजन कम कर देना चाहिए। मैंने आज से २२ वर्ष पूर्व बगाल के अकाल के समय अन्न के अभाव मे गरीबो को मरते देख और अन्न को एक समय ही लेने का सकल्प लिया था। समय जाते देर नही लगती। २२ वर्ष बीत गए। कम अन्न खाकर भी मेरा स्वास्थ्य पहले से अच्छा ही है।"

उन्हे मेरी बात जची और वह मेरे भोजन का चाट ले गये।

कई महीनो बाद उनके ही एक रिश्तेदार रतनलालजी सुरेका अपने लड़के की शादी की खुशी मे दी गई पार्टी मे मुझसे मिले। मैंने उनसे स्व० युधिष्ठिरजी के स्वास्थ्य के बारे में पूछा तो उन्होने बताया, वे अब बिल्कुल ठीक हो गए। सुबह-शाम दूध-फल खाते है, दोपहर को एक बार अन्न खाते है। सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई। उनसे टेलीफोन पर टाइम निश्चित कर मैं उनके घर पर गया। वे बड़े प्रसन्न दिखाई पड़ रहे थे और सतुष्ट थे। वह कहने लगे, "मुझे आश्चर्य होता है कि जो अच्छी स्थिति के लोग है वे अधिक अन्न खाकर साधारण और गरीब लोगो के लिए अन्न संकट क्यों पैदा करते है? साथ ही बीमार पड़ कर देश के लिए कार्य करने के घटो मे कमी क्यो कर देते है? ऐसे लोग परिवार वालो के लिए चिन्ता तो खड़ी कर ही देते है, इसके उपरान्त वे व्यर्थ की कड़वी दवाइयो और इन्जेक्शनो द्वारा कष्ट तो उठाते ही हैं, साथ-साथ धन भी गँवाते है। उनकी बनिस्पत यदि वे मेरी तरह सुबह-शाम दूध-फल खाने लगें और केवल दोपहर को ही अन्न-भोजन करने लगे तो उनका स्वास्थ्य बढिया बना रहे।' □

आंख उठने पर मिट्टी की पट्टी

मेरे बड़े पुत्र निर्मल की छोटी सवा वर्ष की बच्ची की आखे अचानक थोडी-थोडी लाल होनी आरम्भ हुई और सुबह उठने पर वह कुछ फूली-हुई-सी और चिपकी-चिपकी दिखती थी। पर अभी बहुत कीचड़ निकलना शुरू नही हुआ था।

उसकी आँखो को ठडे पानी से धोया जाता था। पर जो लाभ होना चाहिए, नही हो रहा था। मैंने उसकी आंख पर ठडी मिट्टी की पट्टी चढाने को कहा। उसकी मा और मेरी पत्नी ने जब दो-एक बार पट्टी चढाने का प्रयत्न किया तब वह रोने लगी और पट्टी को आंखो से हटा दिया करती थी। फलतः वे हिम्मत हार गई।

एक दिन मेरे पूछने पर कि उसकी आँखो पर मिट्टी की पट्टी क्यो नही चढाई जाती, व्यर्थ मे यह इतने दिनो से तकलीफ पा रही है, तो उन लोगो ने बताया कि वह पट्टी रखने ही नही देती है और उतार कर तुरन्त फेक देती है। मैंने कहा जब वह दिन मे सो जाए तो मेरे पास लाना, मैं अपने हाथो उसकी आँख पर पट्टी रखूंगा।

भोजन के उपरान्त जब वह दो पहर को सोई तो उसे मेरे पास लाया गया। मैंने उसकी आँख पर मिट्टी की ठडी पट्टी रखी। एक बार आँखो पर ठड लगने पर वह जरा चौंकी, परन्तु पहली ही नीद थी, जरा सा थपथपा देने से वह पुन. सो गई और आधे घन्टे तक बड़े मजे से मिट्टी की पट्टी उसकी आँखों पर लगी रही। अब घरवालो को विश्वास हो गया कि मुन्नी बिना कष्ट के आखो पर मिट्टी की पट्टी ले सकती है।

दो दिनो तक लगातार दिन में दो बार उसे यह पट्टी दी गई। जिसकी वजह से उसकी आँखो की लाली कट गई, सूजन हट गई और आँख का चिपकना भी बन्द हो गया। मुझे याद है पुराने जमाने मे जब बच्चो की आखें उठती थी तो माताएँ लाल रग, दूध की मलाई, अफीम का लेप आदि न जाने कौन-कौन-सी महगी-सस्ती औषधिया काम मे लिया करती थी और हप्तो बल्कि महीनो बच्चो को कष्ट उठाना पड़ता था। उनकी जगह मिट्टी और पानी का यह सरल उपचार इस काम के लिए कितना सस्ता और सहज है।□

औषधियों के संस्कार

सोसायटी से लौट ही रहा था कि सीढी के पास ही एक कार्यकर्त्ता साथी मिले। उनकी एक आँख कुछ लाल थी जिसे वह मल रहे थे। पूछने पर बताया कि आँख मे साधारण-सी चोट लग गई है। कष्ट हो रहा है। मैंने कहा आँख मे साधारण-सी चोट लगी है तो किसी स्पेशलिस्ट के चक्कर मे न पड़ें, बल्कि घर पर रहकर एक दिन आराम कर लें और जख्मी आख पर गीली मिट्टी की पट्टी बाधे। मिट्टी की पट्टी से जैसी कि आपलोगो की धारणा है, जख्म के सेप्टीक होने का कोई भय नही है। पर मिट्टी शुद्ध और साफ होनी चाहिए। सफाई और सुविधा के लिए मिट्टी को सीधे आँख पर न रख उसे कपड़े मे रख कर ३-३ इन्च मोटी बना कर रखें। यह सुनकर वह कुछ बोले नही जिससे मुझे लगा शायद वे मेरे इस सस्ते नुस्खे से काम न लें। फिर जब पन्द्रह-बीस दिनो बाद उनसे मेरी मुलाकात हुई, तो मैंने उनसे उनकी आँख और उसके इलाज के बारे मे पूछा। वह हसकर बोले, महाराज, आपके चक्कर मे पडता तो क्या इतनी जल्दी ठीक होता। मैं सीधे एक आई स्पेशलिस्ट के पास गया और उससे उसके लिए औषधि ली। उनकी बात सुनकर मुझे हसी आ गई और पन्द्रह वर्ष पहले की एक और घटना याद हो आई। मैंने कहा, आपही की तरह मेरे एक

मित्र थे। एक बार उनकी आँखें लाल हो गई और दर्द शुरू हुआ। मैने उन्हे दो-तीन दिनो तक आराम करने और मिट्टी की पट्टी लगाने की सलाह दी। परन्तु उनके घरवालों तथा अन्य मित्रो ने उन्हे घबरा दिया और कहा, आँख है तो जहान है, आख नही तो कुछ नही। अतः किसी आख के स्पेशलिस्ट को दिखलाओ।

कमाई चल रही थी। वह शहर के एक बडे स्पेशलिस्ट के पास गए, जिसने बत्तीस रुपये फीस के लिए और आध घण्टे तक कई यन्त्रो द्वारा आखें देखी, फिर कागज पर दो-तीन दवाइया लिखते हुए कहा, आपने बहुत अच्छा किया जो आ गए वरना यह एक बड़ी भयकर बीमारी है। इस बीमारी से तो लोगो की आँखें फूट गई है। जो दवाएँ मैंने लिख दी है उनका प्रयोग कीजिए। सात दिनो तक घर से बाहर न निकलिए और एक हरा चश्मा भी ले लीजिए तथा आठवें दिन मुझसे मिलिए। बेचारे क्या करते, चश्मे के १०) रु० और औषधियो के १६) रुपए दिए और सात दिनो तक घर मे पडे रहकर आठवें दिन चिकित्सक महोदय से मिले। इसबार भी उसने उनसे बत्तीस रुपये रखवाए और आंखो का परीक्षण करने के बाद कहा पहले से बहुत ठीक है, पर अभी खराब होने का डर है, इसलिए दूसरी औषधि लिख देता हूँ। अब इसका प्रयोग करें साथ ही एक सप्ताह और घर पर रहकर आराम करें और आठवे दिन एक बार फिर आजाएँ। आखो का मामला है, लापरवाही नही करनी चाहिए। वे चुपचाप घर आए और ८ दिन बाद जब वह पुनः डाक्टर के पास पहुचे तो उन्हे एक फीस और देनी पड़ी तब आख के ठीक होने का सर्टिफिकेट उन्हे मिला जिससे वह सन्तुष्ट हुए। उसके बाद मैं जब कभी उनसे मिलता हूँ तब हँसे बिना नही रहता। मेरे कहने से वह दो-तीन दिन भी आराम करने के लिए तैयार नही हुए, पर सौ-डेढ सौ रुपया डाक्टर को देकर एकबारगी पन्द्रह दिनो तक घर मे बैठने के लिए राजी हो गए।

वही दशा मेरे कार्यकर्त्ता मित्र की हुई। इसमे ऐसा दोष नही। लोग आज इतने मेडिसिन माईड के हो गए हैं कि छोटी से छोटी बीमारी, जो साधारण उपचार से ठीक हो सकती है के लिए भी डाक्टर के पीछे दौड़ते है और औषधियो का व्यवहार करते हैं।□

जनाना और मर्दाना भोजन

मेरे एक मित्र काफी हसोड है। कभी-कभी वे मजाक मे पते की बात कह दिया करते है। एक दिन वह अच्छे मूड मे थे। मजाक होने लगा। कहने लगे दुनिया का नियम है कि मनुष्य जिसकी संगति करता है, धीरे-धीरे स्वयं भी वैसा ही हो जाता है। जवान रहते हुए भी उसमे ताजगी नही रहती। जवानो का साथ करनेवालो मे जवानी बनी रहती है। इसी तरह यदि कोई झगडालू आदमी की सगति करता है तो कुछ समय बाद वह स्वय भी झगडालू हो जाता है। साधु और शान्त प्रकृति के व्यक्तियो के साथ रहनेवालो के विचार मे परिवर्त्तन हो जाता है। वे भी उसी तरह के हो जाते हैं। जो लोग व्यापारियो के साथ रहते है सगति के असर से कुछ समय बाद वह भी व्यापारी हो ही जाते हैं। जो जुआडियो की सगति करते है, धीरे-धीरे वे भी जुवा खेलना शुरू कर देते है। राजनीतिज्ञो के साथ करने वाले राजनीति सीख जाते हैं। सगति का असर तो जरूर पडता है। आज के नव-जवान अधिकतर जनानी हरकतें किया करते हैं। जनानो की तरह नजाकत का पहनावा, उसी तरह का बनाव श्रृंगार, यहाँ तक कि खाने-पीने मे भी जनानी चीजें ही खाते है। उनमे मर्दानगी और पुरुषत्व कहाँ से आए ?

उनकी बातें सुनकर लोग गम्भीर हो गए। उनकी अबतक बातें तो समझ मे नही आ रही थी, लेकिन भोजन की बात सुनकर लोगो के मुह मे पानी आ गया। एक मित्र से नही रहा गया। बोले : आप भी कभी-कभी बे-सिर पैर की बातें करते है। भला खाने-पीने में जनानी और मर्दानी चीजो का क्या सवाल ? मेरे मित्र ने हसते हुए कहा, मैं जानता था कि इस बात का असर आप लोगो पर भी पड़ेगा। इसलिए पहले से ही चौक रहे है। ठहरिए, आपलोगो की पोल खोलता हूं। यह सुनकर पूछनेवाले सज्जन भी कुछ सकपकाए। दूसरे लोगो ने भी मेरे मित्रसे उस बात को बताने का आग्रह किया। वह बोले : "अच्छा तो सुनिए। लोग भोजन मे सुबह से शाम तक स्त्रीलिंग वाचक वस्तुएं ही अधिकतर उपयोग मे लाते है। जैसे चाय, मठरी, कचौडी, पकौड़ी, पूरी, चटनी, मलाई, मिठाई आदि। परन्तु पुलिग सूचक चीजें जैसे—केला, टमाटर, गाजर, नारियल, खीरा, सन्तरा, बादाम, दूध, तथा मट्ठा आदि नही खाते। फिर लोगो मे मरदानगी आए तो कहाँ से आए ? उनकी इस लाजवाव सूझ पर सभी लोग ठहाका मारकर हसने लगे। □

खाँसी रोकने की अद्‌भुत प्रक्रिया

छोटे वच्चे जव सोए सोए खासते हैं तव माताएँ उसकी छाती पर हाथ फेरती है जिससे उन्हे आराम मिलता है। उसी तरह जव वड़े वच्चे या वडे आदमी को जव खासी आती हो तो गले से नीचे छाती तक हाथ फेरने से खाँसी वन्द हो जाती है। यदि खाँसी अधिक आती हो तो दोनो हाथो मे ४-५ वून्द पानी लेकर हथेलियो को वापस रगड लिया जाए और उसे, जिससे खाँसी हुई है, उसे गले, छाती, पसली और पीठ के भाग को ऊपर से नीचे की ओर मालिश की जाए यह मालिश एक-दो मिनट करने से वह स्थान लाल हो जाएगा। यह क्रिया दिन मे २-३ वार कर ली जाय तव खाँसी एकदम ठीक हो जाएगी और इस तरह काम करेगी जिस तरह आधुनिक जमाने मे वीमारियो पर पेन्सिलिन काम करती है। पर यह पेन्सिलिन विना पैसे की होगी। यह क्रिया मैंने तीस-चालीस वर्षो मे कई वार अपने पर और अपने परिवार के अन्य छोटे-वड़े सदस्यो पर आजमाई है। जो सफल रही है।□

चुटकी भर चावल का कमाल

स्वस्थ रहने के लिए कोई भी चीज चाहे वह खान-पान मे परिवर्तन हो, एक्यु प्रसर हो, चुम्बक हो मुझे बताए जिसे मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक रहे या आती हुई बीमारी चली जाए तो मैं उसे तुरन्त अपना लेता हू ।

कुछ वर्ष पहले की बात है, प्रकृति निकेतन मे मुझे एक बयोवृद्ध बगाली सज्जन मिले। उनसे यकृत यानी लीबर के सम्बन्ध मे चर्चा चलने लगी तो उन्होने कहा कि बगाल मे पुराने जमाने से माताए अपने बच्चो को सुवह पहले एक चुटकी चावल यानी अगूठे और उसके पास की अगूली मे जितने चावल आए अपने हाथ से बच्चे के मुँह मे रख कर सुबह पहले ठडे पानी से निगलवाती थी। ठडे यानी साधारण ठडा फ्रिज का नही। चावलो को चबाए नही। इससे लीवर बहुत मजबूत होते है। यह शिक्षा बच्चो को मिलती थी और वे अपने जीवन भर निभाते थ जिसे उनकी लीबर बराबर स्वस्थ रहती थी। पर आजकल लोगो को यह शिक्षा नही मिलती। बडे होकर लोग सुबह उठते ही बेड टी लेते हैं जिससे उनका स्वास्थ्य ठीक नही रहता है।

मुझे उनकी बात बडी अच्छी लगी और मैंने उसे अपने पर आजमाया। साथ ही बहुत से मित्रो को बताया जिन्होने उसे आजमाया और उन्हे भी बड़ा फायदा हुआ। पर जिनलोगो ने मुफ्त का सलाह समझ कर एक कान मे सुनकर दूसरे से निकाल दिया उन्हे कोई लाभ नही मिला।□

उपवास के चमत्कार

इंगलैण्ड से प्रकाशित होने वाले एक मासिक पत्र मे स्टेनली लीफ के प्राकृतिक चिकित्सा-अस्पताल के बारे मे एक महिला ने एक उपयोगी लेख लिखा है जिसे हम नीचे दे रहे है। यह महिला उनके साथ काम कर चुकी है।

प्रथम विश्व महायुद्ध के पहले, स्टेनली लीफ शिकागो के इन्टर नेशनल कालेज आफ ड्रगलेस फिजिक्स के छात्र थे। इस कालेज की स्थापना वर्नर मैकफेर्डन ने की थी और इस कालेज के अधिकाश प्राध्यापक डाक्टर थे जो दवाओ की अनुपयोगिता को अच्छी तरह समझ गए थे। इसी कालेज मे पढ कर स्टेनली लीफ ने स्वास्थ्य और रोग के वास्तविक अर्थो एव शरीर की पुनर्निमाण की महान सक्ति को समझा। इस शिक्षा को वे कभी न भूले। इसलिए रोगो को दूर करने के लिए उन्होने अन्य पद्धतियो के बारे मे कभी नही सोचा और रोगो को दूर करने के लिए उन्होने प्राकृतिक चिकित्सा विशेष कर उपवास को ही अपनाया।

प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी सम्यक ज्ञान-प्राप्ति के लिए उनके हृदय मे असाधारण पिपासा थी। इसके लिए उन्होने विदेशो की अनेक बार यात्राएं भी की।

स्टेनली लीफ ने कठिन से कठिन रोगो का इलाज उपवास द्वारा ही किया। बर्लिन की श्रीमती स्मिथ को पेट की एक भयकर बीमारी थी। उनके चिकित्सको

ने जबाब दे दिया था। लेकिन स्टेनली लीफ ने उन्हे ३९ दिनों का उपवास कराकर ठीक कर दिया। यहां तक कि पहले जहां वह बिलकुल चल फिर भी न सकती थी वहां उन्होंने अपने लड़की के विवाह मे सक्रिय भाग लिया। इसी तरह बेलफास्ट की रहने वाली जेकसन अक्सर मूच्छित हो जाया करती थी, उनका भी इलाज स्टेनली लीफ ने उसी प्रकार किया।

एक नर्स मिस मैकफार्ड को एक प्रकार का भयानक चर्म रोग था, जिसको चिकित्सको ने असाध्य घोषित कर रखा था। लेकिन स्टेनली लीफ ने उससे १५५ दिनो का लम्बा उपवास कराया और वह पूर्ण स्वस्थ हो गई।

इन घटनाओं का स्टेनली लीफ स्वय उल्लेख नही करते थे। वह कहते थे, लोग इनपर सहज ही विश्वास नही करेगे। इसी तरह मैनचेस्टर के मिस्टर प्रोविस को भयानक रक्तल्पता की बीमारी थी। स्टेनली लीफ ने उनसे ३० दिनो का उपवास कराकर ठीक कर दिया। यह समाचार पत्र-पत्रिकाओ मे भी छपा था। पर सम्बाददाताओ ने इसपर विश्वास नही किया। उनकी समझ मे तो रक्त की कमी की बीमारी मे तो और अधिक भोजन की दरकार होनी चाहिए, भोजन त्याग देने से यह कैसे ठीक हो सकती है ? लेकिन श्रीमती फीसन ने इसकी गवाही दी है और कहा, वे इस घटना को व्यक्तिगत रूप से जानती है।

स्टेनली लीफ के एक भाई अफ्रीका मे रहते थे। उनके पैर मे एक विपाक्त फोडा निकला। चिकित्सको ने उसका एकमात्र इलाज आपरेशन वताया। स्टेनली लीफ ने उन्हे भी उपवास कराया। उपवास के एक सप्ताह वाद ही उनकी दशा मे इतना सुधार हुआ कि आपरेशन की सलाह देनेवाले चिकित्सक ने कहा यह तो आश्चर्यजनक रूप से सुधर रहा है। यह तो जादू है।

स्टेनली लीफ ने उपवास द्वारा कितने ही रोगियो को लम्वे उपवास कराकर स्वस्थ किया। जब मैं सन् १९५३ मे योरप की यात्रा पर गया था, तो उनसे मिलने लन्दन गया जहा एक ऐसे रोगी को देखा जिसने एक सौ दिनो का उपवास किया था। सयोग की बात जिस दिन मैं उससे मिला उसी दिन उसने कमला नीवू के रस से अपना लम्वा उपवास तोडा था। लीफ ने उससे मेरा परिचय कराया। मैंने उस व्यक्ति से पूछा जव आप प्राकृतिक चिकित्सा कराने यहा

आए थे तो आपको कौन कौन सी बिमारियां थी ? उसने हँसते हुए कहा यह पुछिए कि कौन-कौन-सी बीमारिया नही थी, क्योकि उस समय मेरा शरीर लगभग सभी वीमारियों का घर बना हुआ था।

यहा भारत में जब कभी मैं चिकित्सकों और रोगियों से मिलता हू तो मुझे बडा आश्चर्य होता है। क्योकि उनके मन मे दो-तीन दिनों के ही उपवास की बात बहुत तहलका मचा देती है। वे समझते हैं, उपवास करने से उनकी मौत जल्दी हो जाएगी। लेकिन सही बात यह है जिस मौत से वे इतना डरते हैं, वह अधिक और अनियमित भोजन के कारण ही जल्दी आती है।●

उपवास से लाभ

मेरे बचपन मे हमारे परिवार मे वैद्यो और डाक्टरो का बोल बाला था। पिताजी रहन-सहन और कपड़े-लत्तो आदि पर विशेष खर्च नही करते थे पर परिवार मे यदि कोई बीमार पड जाए तो चिकित्सको के लिए थैली का मुंह खोल देते थे। डाक्टरो और वैद्यो की मोटी मोटी फीस की परवाह न कर, जहा डाक्टर को दिन मे एक बार बुलाने से काम चल जाता, वहा उसे दिन मे दो-दो बार तीन-तीन बार बुला लेते और कभी-कभी तो दो-दो तीन-तीन चिकित्सको को एक साथ बुला लेते थे। इस विषय मे कोई उन्हे सुझाव देने की हिम्मत न करता।

परिवार मे डाक्टरो के बराबर आते रहने के कारण उनसे छूत की बीमारिया फैलती है यह बात मेरे मस्तिष्क मे घर कर गई थी। किन्तु प्राकृतिक चिकित्सा की ओर रुझान होने के बाद जब भयकर से भयकर बीमारी वाले रोगियो को देखने का और उनकी सेवा करने का मौका मिला तो मैं यह मानने लगा कि छूत से बीमारिया नही फैलती, पर छूत की तरह मनुष्य के विचार अवश्य फैलते है। मैं लगभग ४० वर्षों से दिन मे एक बार अन्न खाता हूँ। सुबह-शाम केवल फल दूध पर रहता हूँ। फलत· मेरा स्वास्थ्य बढिया रहता है लेकिन साल मे एक-दो बार सर्दी, खासी तथा बुखार आदि का चक्कर लग जाता है। बीमार पडना मनुष्य शरीर का धर्म है, यह मानकर संतोष कर लेता हूँ। रोगावस्था मे जब कोई

प्राकृतिक चिकित्सक मिलता तो वह कहता, अच्छा हुआ आपके शरीर का विकार निकल रहा है।

गत ३६ वर्षों से यानी जब से श्री मोरारजी भाई के विशेष सम्पर्क मे आया और उन्हे सप्ताह में एक दिन उपवास कर नीरोग देखा तो उससे मुझे भी प्रेरणा मिली।

अब मैं गत ३६ वर्षों से सप्ताह मे एक बार मगलवार को १२ घन्टो का उपवास करता हूँ। बुधवार की सुबह व्यायाम करने के बाद साढे आठ-नौ बजे केवल फल-दूध लेता हूँ। इस बीच मगलवार को भी व्यायाम करता हूँ और अपने नित्य के सारे काम-काज भी करता हूँ। उपवास के दिन-दिन भर फल दूध और भोजन के स्थान पर केवल सादा पानी पीता हूँ। इन १२ घन्टो में मेरा वजन १-२ पौण्ड कम हो जाता है किन्तु बुधवार के बाद ६ दिनो तक शरीर मे स्फूर्ति बनी रहती है। और ६ दिनो मे, घटा हुआ वजन पुनः बढ जाता है।

इस उपवास से सबसे बड़ा लाभ मुझ यह हुआ कि इन ३६ वर्षों मे मुझे कोई भी बीमारी नही हुई। मेरे उपवास करने के लाभ को देख कर मेरे मित्र तथा मेरे परिवार के अन्य लोग भी उपवास की ओर आकर्षित हुए। हमलोगो के देखा-देखी हमारे यहा काम करने वाला बीस साल पुराना सेवक सोनी राम भी मगलवार का उपवास करने लगा।□

चीनी छोड़ी, खुजली मिटी

सुबह का समय था। मैं व्यायाम की तैयारी कर ही रहा था कि टेलीफोन की घन्टी बजी। एक परिचित सज्जन का टेलीफोन था। यो तो वे बड़े साहसी है, परन्तु बीमारी आदि होने पर बहुत जल्दी घवड़ा जाते है। मैंने पूछा, कहिए कैसे तकलीफ की ? बोले एक लडका खुजली से परेशान है, वह क्या परेशान है कहना चाहिए, उसकी वजह हमलोग सब परेशान है। डाक्टरो का इलाज करते-करते आजीज आ गए है। सूइया लेते-लेते लडका भी तग हो गया है। अब तो वह डाक्टर की शक्ल मात्र से खौफ खाता है। यहा कई आदमियो से जिक्र हुआ, तो वे आपका नाम लेते है। इसीलिए मैंने आपको तकलीफ दी है। कृपया बताइए क्या उपाय किया जाए ?

"मेरे पास तो केवल एक उपाय है जिसे मैं अमोघ मानता हूँ।" आप अब अधिक झझट मे न पड कर सीधे प्राकृतिक चिकित्सा पर आ जाइए।" वे भी शायद इसके लिए तैयार ही बैठे थे। कहने लगे, "जो आप कहेगे वही करूँगा।"

मैं व्यायामशाला से फुरसत पाकर जब उनके पास पहुँचा तो लडके की हालत पर तो दु ख हुआ ही, उससे अधिक दु ख घर की दुर्व्यवस्था देख कर हुआ। घरका सारा सामान अस्त-व्यस्त पडा था तथा सफाई का ठीक प्रबन्ध नही था। मैंने उन्हे सर्वप्रथम सफाई से रहने की सलाह दी। उसके बाद बातचीत के सिलसिले मे यह मालूम हुआ कि लड़के को टाफी चाकलेट आदि काफी खिलाया जाता रहा है। मैंने अक्सर देखा है कि हमलोग अग्रेजो की अच्छी बातें चाहे न सीखे पर

उनकी बुरी बात सीख लेते है। टाफी आदि का रिवाज अपने यहां कब रहा है ? मगर अब इसका रिवाज बहुत बढ गया है।

मैंने उन महाशय को बताया कि मिठाई खाने से खुजली का होना स्वाभाविक है। अत. शीघ्र ही इसका मिठाई का नास्ता बन्द कर दीजिए और इसे प्राकृतिक चिकित्सा की शरण मे जाने दीजिए। मेरी बात उन्होने मान ली। उनसे रोगी की दिनचर्या के सम्बन्ध मे पूछा तो मालूम हुआ कि लड़के को व्यायाम की आदत बिलकुल नही है। मैंने उन महाशय से कहा जो इलाज होगा, वह फिलहाल लडके को खुजली को तो दूर कर देगा, किन्तु यदि आप चाहते हो कि लड़का आगे भी स्वस्थ रहे तो आपको दो-एक बातें और करनी पडेगी। पहले तो आप अपने घर मे सफाई का प्रबन्ध कीजिए ईश्वर की कृपा से आपको किसी प्रकार की कमी नही है, कमाते-खाते है, तो सफाई के नाम पर कुछ खर्च क्यो नही करते ? दूसरे लड़के को मिठाई खिलाना बन्द कर दीजिए और तीसरे उससे नियमित रूप से व्यायाम कराइए।

मुझे यह जान कर प्रसन्नता हुई कि उन्होने मेरी बताई हुई सब बातों पर अमल किया और अपने परिवार मे सुबह चाय, बिस्कुट, टोस्ट, मठरी, पकौड़ी आदि के स्थान पर नारियल, केला, खजूर, अमरुद, गाजर, टमाटर, मट्ठा, दूध आदि चीजो मे से दो-एक चीजें जो जिसे पसन्द हो दी। और आज उनका परिवार सुखी और नीरोग है। अभी उस दिन जब वे मिले तब बताया कि अब उनके लडके और परिवार के सबलोग स्वस्थ है। मुझे सुन कर बडी प्रसन्नता हुई। मैं चाहता हूँ कि सभी परिवार इसी तरह की दिनचर्या बना लें तो समाज से रोग समूल नष्ट हो जाय।□

फ्लू दरवाजे तक आकर लौट गया

'स्वस्थ जीवन' के दफ्तर में वर्माजी कई वर्षों से काम करते थे और प्राकृतिक चिकित्सा के नुस्खे और चुटकुले बराबर सुना करते थे। कुछ दिन बाद उनके मनमे दवाइयो की गुलामी से निकलने के लिए पुराने सस्कारो के जजीर तोडने का विचार आया। होनहार कहिए या सयोग की बात, उन्ही दिनो शहर मे चारो ओर जोरो से फ्लू फैला और कोई घर ऐसा न बचा जिसमे दो-एक फ्लू के मरीज न हो।

एक शुक्रवार को वर्माजी दफ्तर से घर गए तो तबियत सुस्त मालूम दी। भोजन करने की इच्छा नही हुई। पत्नी ने उन्हे सुस्त देख कर कारण पूछा वर्माजी खुद नही जानते थे कि सुस्ती का कारण क्या है।

पत्नी ने खाना खाने के लिए आग्रह किया। वर्माजी ने खाना मंगाने के पहले मन मे सोचा कि खाना खाऊँ या नही। उस समय उन्हे 'स्वस्थ जीवन' मे पढी हुई वह सूक्ति याद आई कि मन मे यदि विचार उठे कि खाना खाएँ या न खाएँ तो उस समय नहीं खाना ही ठीक है। अत उन्होने तुरन्त निश्चय करके दृढता पूर्वक पत्नी से खाना न लाने के लिए कहा।

उस रात वर्माजी ने विना नमक या चोनी मिला हुआ केवल नीवू का पानी पीया। दूसरे दिन पहले से तबीयत कुछ ठीक थी, पर विलकुल साफ नही हुई थी वे काम पर गए पर दिन भर कुछ नही खाया। केवल नीवू का पानी ही लेते रहे पत्नी के घवडाने पर उन्होने उसे समझाया कि शहर मे फ्लू फैला है, यदि खान-पान मे मैं जरा भी गडवड़ी करूँगा तो कम से कम एक सप्ताह तक बीमारी भुगतनी पडेगी।

यदि हम किसी मेहमान को अपने यहा वुलाना न चाहे तो उसकी आवभगत और खातिरदारी नही करनी चाहिए। उसी तरह जव वुखार आता हुआ दिखाई दे तो उसे उपवास रूपी लाल झण्डी दिखानी चाहिए, जिससे वह उस व्यक्ति को कजूस और खतरनाक समझ कर उसके पास नही फटकेगा।

इस डेढ दिन के उपवास से हो सकता है वर्माजी के शरीर मे थोड़ी कमजोरी आई हो, पर आर्थिक नुकसान न होने से उनकी पाकेट कमजोर नही हुई। पर यदि फ्लू का आक्रमण उनपर हो जाता तो एक सप्ताह तो अवश्य ही घर पर बैठा देता। और तव आर्थिक नुकसान भी होता ही। साथ ही दवा का खर्च लगता सो अलग, और सवसे वुरी वात तो यह होती कि फ्लू की वजह से शरीर अधिक निर्वल हो जाता।

रविवार को वर्माजी ने आराम किया। सोमवार को जव काम पर गए तो हसते हुए वोले, 'इस वार मेरे दरवाजे तक फ्लू आकर लौट गया।' □

वायु और सूर्य किरण सबसे अच्छी औषधियां

राजा का इकलौता बेटा बीमार पड़ा। राज्य के चिकित्सक ने पूरी सावधानी से उसका इलाज किया। फलतः कुछ ही दिनो मे लडका स्वस्थ हो गया।

इस घटना से राजा के मन मे यह विचार आया कि जिस तरह अपने लडके के बीमार होने पर मुझे बड़ा दु:ख हुआ था, उसी प्रकार मेरी प्यारी प्रजा के लड़के-बच्चे जब बीमार होते होगें तो उन्हे भी अवश्य ही दु:ख होता होगा। यह सोचकर उसने अपने राज्य के सभी चिकित्सको को बुलाया और उनसे कहा कि कोई ऐसा उपाय बताओ जिससे मेरे राज्य से रोग दूर हो जाए। अर्थात् आज से मेरे राज्य मे कोई बीमार ही न पड़े।

एक वृद्ध और अनुभवी चिकित्सक से उन्होने सलाह की। उस चिकित्सक ने कहा, "ऐसी दवा ससार मे है और वह है शुद्ध वायु और सूर्य की किरण। इनका उपयोग वही किया जा सकता है, जहां ये मिले, इन्हें रुपये-पैसो से खरीदा भी नही जा सकता। अतः अपनी प्रजा मे यह प्रचार करवाएं कि वे शुद्ध वायु और सूर्य किरण का अधिक से अधिक उपयोग करें। □

जले पर पानी के प्रयोग को मान्यता

पृष्ठ ३१ और ३२ पर जले पर पानी के अनुभूत प्रयोग के विषय में चर्चा की गई है और यह कहा गया है कि लोगो की यह धारणा गलत है कि जले पर पानी पड़ने से फफोले बनते हैं। विभिन्न प्रकार की दवाओ के बजाए जले पर पानी का प्रयोग सर्वोत्तम इलाज है। अब तो भारत सरकार ने भी इस विधि को मान्यता प्रदान कर दो है। अभी कुछ दिनो पहले दिवाली के अवसर पर चार-पाँच दिनो तक दूरदर्शन पर चन्द मिनटो की एक लघु फिलम दिखाई गई, जिसमे ओमपुरी दर्शको को बताते हैं कि दिवाली मे पटाखे, फुलझडी आदि आतीशबाजी आप चलाएंगे। मगर फुलझडी या पटाखो से जल जाने पर दवा लगाने के बदले फौरन घाव पर खूब ठण्डा पानी डालना चाहिए।□

भारत में प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र

अखिल भारतवर्षीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद की स्थापना होने के पहले पूर्व, पश्चिम, उत्तर,दक्षिण मे प्राकृतिक चिकित्सा के लगभग १०-१५ केन्द्र ही थे किन्तु परिषद की स्थापना के बाद इस चिकित्सा पद्धति मे देश के विशिष्ट व्यक्तियो, राजनेताओ, मन्त्रियो, जैसे गाधीजी, मुरारजी देसाई, श्रीमन्ननारायणजी और देबर भाई आदि के प्रयत्नो से एव सरकारी सहयोग से इसका प्रचार-प्रसार इतना बढा कि आज देश के विभिन्न १३ प्रान्तो मे १८३ प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र चल रहे है, जिसकी सूची हम पाठको की सुविधा के लिए यहाँ प्रकाशित कर रहे है :

महाराष्ट्र-१

१. कमल आरोग्य मन्दिर यवतमाल
यवतमाल

२. शान्तिकुटी प्रा० चिकित्सालय
गोपुरी, वर्धा

३ प्रा० चिकित्सा केन्द्र,
महानगरपालिका,
सदर नागपुर

४. श्रीराम प्रा० चिकित्सालय,
तुमसर, भण्डारा

५. श्रीमती काशीबाई कोठारी
आरोग्य धाम, गोरक्षणी रोड
अकोला

६. राठी निसर्गोपचार व होम्यो-
पैथिक केन्द्र, श्रीकृष्णपेठ अमरावती,

७. आरोग्यधाम डा० ट्राल स्मृति
निसर्गोपचार अनुसन्धान रुग्णालय
हेड काटेज, अपर प्लैंटो, चिफलदरा
अमरावती

८ निसर्गोपचार केन्द्र
कानलदा, जलगाव

९. निसर्गोपचार योगाश्रम
१७, ओकारनगर पेठ, जलगाँव

१०. सानेगुरूजी निसर्गोपचार केन्द्र
साने गुरूजी विद्यालय, भीकोवा,
पाणरेमार्ग, दादर, बम्बई-२९

११. योग चुम्बक निसर्गोपचार केन्द्र
गुजराथ कोलोनी, कोथरुण
पूणे-२९

१२. निसर्गोपचार आश्रम,
ऊरूली काचन, पूणे

१३ निसर्गोपचार केन्द्र
आगरा रोड, धुलिया

१४. योग निसर्गोपचार सलाह केन्द्र
नादेड कोआप. हाउसिंग सोसायटी
नादेड

१५ निसर्गोपचार आरोग्य धाम,
चैतन्यवाडी, बुलढाणा

१६. योग व निसर्गोपचार केन्द्र
समर्थवाड़ी, औरंगावाद

१७. निसर्गोपचार केन्द्र
२९/९० वीलल्लू भाई पार्क रोड
न० २ अन्धेरी वेस्ट, वम्वई-५८

१८ महारानी प्रा० चिकित्सालय
कामीकोस लेन, आनन्द भवन
घाट कोपर, वम्वई-८६

१९ प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र
नेनवाई निवास, नेहरू रोड,
मुलून्द, वम्वई-८०

२०. नेचर क्योर क्लिनिक कैम्पसफार्मर
सुनाया हाउस, उ रा माला
वम्वई-२६

२१. प्रा० चिकित्सा सलाहगार केन्द्र
जे० आर० ए० वलव रोड,
वम्वई-८

२२. प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र,
१६, भारत महल, ८६ ररीनड्राइव
रोड, उ रा माला, वम्वई-२

२३. प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र,
चाल सी० ५, रूम न० ४
भद्रनगर, मलाड वेस्ट, वम्वई-६४

२४ निसर्गोपचार सलाह केन्द्र टाइप II
२५४ ओसर टाउनशिप, नाशिक

२५. योग निसर्गोपचार मार्गदर्शन केन्द्र
वी० १५६/४ एन ११ वडको,
औरंगावाद

२६ प्राकृतिक आरोग्य आश्रम,
शिवरेकुडी देगलूर, नन्मेड

२७. प्राकृतिक चिकित्सा आश्रम
मु०-पोस्ट आत्मानुसंधान अध्याल
टेकुडी ता० ब्रह्मपुरी, चन्द्रपुर

२९ निसर्गोपचार केन्द्र
चन्दनवाडी मिरज, सागली

गुजरात-२

१. गुजरात कुदरती उपचार मडल
हरिजन आश्रम, अहमदावाद-२

२. वसन्त नेचरक्योर हॉस्पीटल
नवरंगपुरा, अहमदावाद-९

३ निसर्गोपचार केन्द्र,
सरदार पटेल कालोनी,
अहमदावाद-१४

४. निसर्गोपचार केन्द्र,
भुंज, कच्छ

५ निसर्गोपचार केन्द्र, सर्वोदय आश्रम
माढी, महेसाणा

६ कुदरती उपचार केन्द्र
जलालपोर, वलसाड

७. निसर्गोपचार केन्द्र, स्मार्त फलीया
गोपीपुर, सूरत

८ निसर्गोपचार केन्द्र, कचनविला,
होपपुल के पास, सूरत

९ निसर्गोपचार केन्द्र,
स्वराज्य आश्रम,
वारडोली, सूरत

१०. गुजरात कुदरती उपचार मडल,
निसर्गोपचार केन्द्र, वीतम नगर
सोसाइटी रेसकोर्स रोड, वड़ोदरा

११. कुदरती उपचार केन्द्र,
विनोबा आश्रम, गात्री, बडौदरा

१२. कुदरती उपचार केन्द्र, एलेम्बीक,
रेसकोर्स रोड, माटीकोरल,
बडौदरा

१३ कुदरती उपचार केन्द्र,
पुनित आश्रम,
मोटीकोरल, बडौदरा

१४. अबालालमुंशी निसर्गोपचार केन्द्र
बल्लभ विद्यानगर, खेडा

१५. कायाकल्प जैन मर्चेन्ट सोसाइटी
पासे पीलड़ी, अहमदाबाद ७

१६. निसर्गोपचार केन्द्र
शारदा ग्राम, जूनागढ

१७. निसर्गोपचार केन्द्र
कुतियाणा, जूनागढ

उत्तर प्रदेश-३

१. आनन्द निकेतन प्रा. चिकित्सालय,
नकाटिया, बरेली

२. प्राकृतिक चिकित्सालय, मगरवारा
उन्नाव, कानपुर

३ प्राकृतिक चिकित्सालय आश्रम
गगाधर उन्नाव, कानपुर

४ श्री तत्वज्ञान आश्रम, गजरौला
मुरादाबाद

५ प्राकृतिक चिकित्सालय,
टाउनहाल के सामने, मैनपुरी

६ आनन्द जीवन कार्यालय, दाल मंडी
बुलन्दशहर

७. अनुरागी आरोग्य आश्रम, मधुवन
मोटहा, पो०-हमीरपुर

८ प्राकृतिक चिकित्सालय, महुडर,
बस्ती

९. मुक्ति तीर्थ, सिकन्दराराऊ,
अलीगढ

१०. श्री कृष्ण नेचरक्योर हॉस्पीटल,
झासी रोड, उरई, रामनगर

११ प्राकृतिक चिकित्सालय
१२८/१४६ एच-किदवई नगर
कानपुर

१२. भास्कर प्राकृतिक चिकित्सालय,
आरोग्य कुंज, खेरागढ, आगरा

१३ कानपुर प्राकृतिक चिकित्सालय,
गोलघाट, छावनी, कानपुर

१४ प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र
काटनमिल, चौकाघाट, वाराणसी

१५ आरोग्य मन्दिर,
आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर

१६. जीवन निर्माण केन्द्र, आरोग्य-
आश्रम, छोटी पाचली, मेरठ

१७ देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र
मोतीझील, कानपुर

१८ प्राकृतिक चिकित्सालय, खेरागढ
आगरा

१९. कानपुर स्वास्थ्य इन्स्टीट्यूट
[illegible], शास्त्री नगर, कानपुर

२०. महर्षि दयानन्द प्राकृतिक योग-
प्रतिष्ठान, रामघाट रोड, अलीगढ

२१. कपिल इन्स्टीटयूट आफ नेचरोपैथी-
योगिक साइन्सेज
दीपलोक, खजाची नगर,
देहरादून

२२. आरोग्य सदन, गहलौता भवन,
पो० प्रासकावाद चमन, विजनौर

२३. योग साधना सेन्टर, साकेत, मेरठ

२४. श्री जगन्नाथ प्रसाद नेचरोपैथी,
कोडा जहानावाद, फतेहपुर

२५ प्राकृतिक चिकित्सा आश्रम
झिन्जाना रोड, शामली,
मुजफ्फरनगर २४७७७६

२६ गढवाला प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र
लैन्सडोन, पौड़ीगढवाल

२७. प्राकृतिक चिकित्सा सस्थान,
सोहनलाल गली

राजस्थान-४

१. प्राकृतिक चिकित्सालय, वापू नगर,
जयपुर

२ राजस्थान प्रा० चिकित्सालय केन्द्र
गगाशहर रोड, वीकानेर

३. सोभाग नेचुरो योगिक ट्रीटमेटकम
रिसर्च सेंटर
कोढा धर्मशाला, अजमेर

४. राजकीय प्राकृतिक चिकित्सालय,
उदयपुर

५ राजकीय प्रा० चिकित्सालय,
हनुमानगढ, श्री गगानगर

६. प्रा० चिकित्सालय, चोपासनी रोड
कमला नेहरू नगर, जोधपुर

७. प्रा० चि० स्वास्थ्य परामर्श केन्द्र,
नागौर

८. श्री हाडोती प्रा० चि० परिपद-
एव योग सस्थान,
वारा कोटा

९. जोधपुर नगर प्रा० चि० परिषद
परामर्श केन्द्र
ई-३२, मरुधर औद्योगिक क्षेत्र,
वासनी, जोधपुर

१०. योगाश्रम प्रा० किकित्सा केन्द्र,
चुरू

दिल्ली-५

१. अखिल भारतीय प्राकृतिक-
चिकित्सा मिशन,
ए-१ व्लाक, जनकपुरी

२ प्राकृतिक चिकित्सालय,
दिल्ली गाधी स्मारक निधि,
पटपडगज, दिल्ली

३ नेचरक्योर क्लीनिक,
गडोदिया मार्केट, खारी वावली

४. आनन्द स्वास्थ्य निकेतन,
चूणामण्डी, पहाड़गज

५. नेचरोपैथी हैल्थ होम, शोरा कोठी,
शव्जी मण्डी, घटाघर

६ नेचरक्योर क्लीनिक,
डव्लू जैड ६-वी, नारायण

७ नेचरक्योर सेन्टर,
सी-४३७, निर्माण विहार

८. प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र,
वी-१/१८६, लाजपत नगर

९. नेचरक्योर सेन्टर,
४५/४३, ईस्ट पटेल नगर

१०. नेचरक्योर सोसाइटी दिल्ली
सी-४३७, निर्माण बिहार

११. गाधी स्मारक प्राकृतिक चिकित्सा-
समिति, १५, राजघाट कालोनी

१२. अखिल भारतीय प्राकृतिक-
चिकित्सा परिषद
१५, राजघाट कालोनी

१३, नीप प्रा० चिकित्सा एव योगकेन्द्र,
३४२/1 मण्डावली, फाजलपुर

१४ केन्द्रीय अनुसन्धान परिषद योगा-
एव प्रा० चिकित्सा, भारत सरकार,
अशोक रोड

१५. नेचरक्योर हैल्थ होम,
२ दयानन्द मार्ग, शकरपुर

हरियाणा-६

१. प्रा. चिकित्सालय स्वाध्याय आश्रम,
पो० पट्टी कल्याणा, करनाल

२. हरियाणा प्राकृतिक चिकित्सालय,
चाग रोड, भिवानी

३. प्राकृतिक योग चिकित्सालय,
महम रोड, चिडियाघर के पास,
भिवानी

४. सनातन धर्म प्राकृतिक चिकित्सालय
एस० डी० कालेज रोड,
अम्बाला छावनी

५ प्राकृतिक चिकित्सालय,
गाधी स्मारक भवन,
सैक्टर १६-ए, चण्डीगढ

६. काया कल्प आश्रम
सोहना, गुडगावा

७. दयानन्द प्राकृतिक चिकित्सालय,
सोहना रोड, पलवल

८. हरियाणा प्रा० चि० परिषद
द्वारा श्री कृष्ण आदर्श, गऊशाला
सभालका मण्डी, करनाल

पश्चिम बगाल-७

१. नेचरक्योर एण्ड योग रिसच-
इन्स्टीच्यूट, प्रकृति निकेतन
डायमड हार्बर रोड, विष्णुपुरा
२४ परगना, पश्चिम बगाल

२. मारवाडी रीलिफ सोसाइटी-
अस्पताल (प्राकृतिक चिकित्सा
विभाग)
रवीन्द्र,सरणी कलकत्ता-७

३. प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र
पो० प्रधान नगर सिलीगुडी,
पश्चिम बगाल

मध्य प्रदेश-८

१. प्राकृतिक चिकित्सालय
आनन्दनगर, रायपुर

२. प्राकृतिक चिकित्सालय
माधव नगर, पदमनाभपुर, दुर्ग

३ विश्व सखा प्रा० स्वास्थ्य केन्द्र
विज्ञान मार्ग, खरगोन, नीमाड

४ प्रा० नि०
९४ त्रिवेणी कालोनी, इन्दौर

५ आरोग्य भवन, सिरपुर तालाव, इन्दौर
६. अहिओम योग केन्द्र यूनियन-हास्पिटल, धार रोड, इन्दौर
७. प्रा० चि०, तानसेन रोड, ग्वालियर
८. सर्व चिकित्सा सेवा संस्थान, विरलानगर, ग्वालियर
९ युग निर्माण प्रा० चि० ट्रस्ट, सुरजपुर, सुरगुजा
१०. प्रा०चि०, अम्बिकापुर सुरगुजा
११. प्रा० स्वास्थ्य केन्द्र, सागर
१२. प्रा० स्वास्थ्य केन्द्र, गुना
१३. प्रा० चि०, छोटी मस्जिद के पीछे
१४. शिव आरोग्य सदन, साठ खेड़ा गरौठ, मन्दसौर
१५. प्रा० स्वास्थ्य केन्द्र, पटरीतराई रायपुर
१६. प्रा० स्वास्थ्य केन्द्र, छतरपुर
१७. प्रा० चि०, वैरागढ, भोपाल
१८. शासकीय योग केन्द्र, टी० टी० नगर, भोपाल
१९. प्रा० चि०, अशोक कालोनी कटनी जवलपुर
२०. प्रा० चि० सदन, १९६ गौतम मार्ग, उज्जैन
२१ प्रा० चि०, मन्दिर, टीकमगढ
२२. प्रा० जीवन शिक्षान केन्द्र रतलाम
२३ स्वास्थ्य केन्द्र रूपखेडा, रतलाम
२४. प्रा० चि० केन्द्र, सरस्वती निकेतन छतरी चौक, उज्जैन
२५. प्रा० चि० महदीपुर रोड, उज्जन
२६. ओमानन्द योग साधना केन्द्र, हरसूद देवास
२७. प्रा० स्वास्थ्य केन्द्र चौगुणापुल रतलाम
२८. राजेन्द्र योग केन्द्र, रतलाम

उड़ीसा-९

१. नेचरक्योर हॉस्पीटल जी/३, सेक्टर-२, राउरकेला-८
२. नेचरक्योर हॉस्पीटल भुवनेश्वर, उडीसा

करनाटक-१०

१. इन्स्टीच्यूट ऑफ नेचरोपैथी यौगिक साइस, जिन्दल नेचरक्योर हॉस्पीटल, १६वां के एम एस तुमकुर, वगलोर-५६७०७३
२. नेचरक्योर हॉस्पीटल ९ मेन, ३रा ब्लाक, जयनगर वगलोर-५८००११
३. नेचर क्योर हास्पीटल, वगेरी, हुवली-५८००२३

केरल-११

१. नेचर क्योर हॉस्पीटल, वरकला, गर्वनमेटरन
२. वट्टापाड़ा नेचरक्योर सेंटर त्रीवेन्द्रम-८
३. वेचनी नेचरक्योर सेंटर नलनचेरी, त्रीवेन्द्रम

४. कल्लाज नेचरक्योर सेंटर
वलीसाडा, त्रीवेन्द्रम

५. अजली नेचरक्योर सेंटर
सुभाषनगर

६. त्रीवेन्द्रम नेचरक्योर सेंटर
नन्हवरियम, त्रीवेन्द्रम

७ प्रसान्ती नेचरक्योर सेंटर
ओरुलोन

८ प्राकृतिक चिकित्सालयम्
मूजीकुलम, अमागमली, कोचीन

९ गांधी नेचरक्योर सेंटर
कन्नीमगलम, त्रीचूर

१०. महात्मा गाँधी नेचरक्योर हॉस्पी-
टल, मजूर साउथ, कोट्टयाम

११. कल्पका नेचरक्योर नरसिंग होम
कक्कोडी, कालीकट

१२. वल्या नेचरक्योर हॉस्पीटल
त्रीचूर

१३. प्राकृतिक चिकित्सा सेंटर
नवकथारा, हरप्पाड

१४. करथिका नेचरक्योर सेंटर
अम्याथोले, त्रीचुर

तमिलनाडू-१२

१ शर्मा नेचरक्योर सनेटेरियम
गणेशनगर, पुडोक्कोटाई
पिन कोड-६२२००१

२. नेचरक्योर हास्पीटल
३०, २ रा मेन रोड कट्टूरवन्नागर
अड़यार, मद्रास-६०००२०

३ नेचरक्योर सेनेटोरियम
कृष्णा ले आउट
कोयम्बटूर-६४१००६

४. नेचरक्योर सेंटर न० १ (कोमर)
जयराम चेट्टीयर रोड
थिरूवन मीयूर, मद्रास-६०००२४

५. नेचरक्योर हॉस्पीटल
१०५ तिरूचेन्दूर रोड,
पलयमकोट्टाई-६२२०००७,
तिरूनेलवेली

६ थानगम नेचरक्योर हॉस्पीटल
सिरसाबाई इलम
११२ सी राजावेधी, कचीपुरम
६३१५०२, चिंगलवट

आंध्र-१३

१. नेचरक्योर हॉस्पीटल
स्वरुपिल्लाई, हैदरावाद

२. नेचरक्योर हास्पीटल
वेगमपेट, हैदरावाद-१६

३. प्रकृति योगा आरोग्य केन्द्रम
कतुरीवारी स्ट्रीट,
विजयवाडा ५२०००१

४. प्रकृति चिकित्सालयम्
गाधीघर, पनमालुरा, कृष्णा

५. ग्रमीना प्रकृति निकित्साल्यम्
कुड्डापट्ट, अपरपल्ली

६ प्राकृयी आश्रम, ढ० के निपट,
काकीनाडा-६३३००१

७. ककतीया नेनरक्योर हॉस्पीटल
फोर्ट रोड, वरगल-५०६००२

८. नेचरक्योर हॉस्पीटल, भीखूरोड
विसाखापट्टम-५३०००२

९ प्रकृति चिकित्सालय
नेचरक्योर हॉस्पीटल, चेमुन्नीपाट्ट
गुड्डापट-५१६००१

१०. प्रकृति चिकित्सालय
पेनामूस्फुरू, कृष्णा

११ प्रकृतिक निकेतन
डटालूर, गुन्टूर

१२ नेचरक्योर सेंटर
न्यू सयमपेट, वारगल (वाया)

१३. गाधी नेचरक्योर हॉस्पीटल
वपाटीया-५२२१०१

१४. ककतीया नेचरक्योर हॉस्पीटल
हटर रोड, वारगल-५०६००२

१५. नेचरक्योर हॉस्पीटल, टाडापत्तरी
अनन्तपुर-५१५४११

१६. आरोग्य सदनम्
पटमाटा लेक, कृष्णा

१७ रामकृष्ण प्रकृति आश्रम
भीमवरम् ५३४२०३

१८. नेचरक्योर हॉस्पीटल
वारगल

प्राकृतिक चिकित्सा : पत्र-पत्रिकाएँ

१. स्वस्थ जीवन (मासिक)
(हिन्दी-अग्रेजी) राजघाट, दिल्ली

२ प्राकृथी जीवन (पाक्षिक)
(तेलगू-अग्रेजी) आध्र

३ दीलाइफ नेचुरल (अग्रेजी मासिक)
तामिलनाडू

४. प्राकृतिक जीवन (हिन्दी, मासिक)
लखनऊ

५ आनन्द निकेतन (हिन्दी, मासिक)
कानपुर

६ स्वास्थ सपदा (हिन्दी),
उत्तर प्रदेश

७ प्रकृति वाणी (हिन्दी,)
लखनऊ

८. आरोग्य, (हिन्दी),
गोरखपुर

९. जीवन दृष्टि, (हिन्दी)
उत्तर प्रदेश

१०. नेचर्स हेल्थ न्यूज
(हिन्दी, अग्रेजी, उर्दू)
जम्मू व कश्मीर

११ हेल्थ हेरल्ड (अग्रेजी-हिन्दी)
करनाटक, बगलोर

१२. प्रकृति चिकित्सा (मलयालम,
पाक्षिक व मासिक)
केरल

१३. नेचरक्योर (मासिक तमिल),
तमिलनाडु

१४ प्रकृति चिकित्सा (मासिक कन्नड,)
करनाटक

१५. जीवन दृष्टि (मराठी),
महाराष्ट्र

१६ न्यूज लेटर (मराठी),
महाराष्ट्र

स्वास्थ्य सूत्र

स्वस्थ रहना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है

- एक व्यायामशाला दस अस्पतालो के बराबर है ।
- बिना स्वास्थ्य के शिक्षा ऐसी है
  जैसे बिना रुपये-पैसे के खाली मनीबैग ।
- जिसे व्यायाम के लिए समय नहीं मिलता
  उसे बीमारी के लिए समय निकालना पडता है ।
- स्वास्थ्य एक बहुमूल्य रत्न है जिसका मूल्य
  मनुष्य उसे खोने के बाद आंकता है ।
- जीने के लिए खाएँ, खाने के लिए न जीएँ ।
- दूध पीने से ताकत आती, दूध पीएँ बीमारी जाती ।
  उत्तम, बढ़िया मीठा ताजा दूध सभी भोजन का राजा ।

स्वस्थ रहने के लिए

नित प्रति जो कसरत करे, प्रात समय या शाम।
आलस तन लागे नहीं, स्वास्थ्य बने बिनु दाम ॥

तेल खायें नहीं तो उसे, मलिये सारे शरीर।
काया सुन्दर होयगी बन जाओगे वीर ॥

सुबह शाम कसरत करो, जो चाहो सुख चैन।
बिन कसरत नहीं तन बने, सुनो हमारे वैन ॥

विधिवत नियमित शक्ति भर, कसरत करना ठीक।
अनियमित करने से भला, ना करना ही ठीक ॥

सयन शौच नियमित करे, भोजन काम आराम।
स्वास्थ्य हेतु नित चाहिए करना नित व्यायाम ॥

स्वास्थ्य का माप-दण्ड

- क्या आपको निर्विघ्न नींद आती है ?
- क्या आपको दस्त साफ होता है ?
- क्या आपको भूख लगती है ?
- क्या आपको सारे दिन काम करने मे उत्साह रहता है ?
- क्या आपका पेट छाती से ४-६ इन्च छोटा है ?
- क्या आप सभी से मीठे बोलते हैं ?
- यदि नहीं तो आप। रहन-सहन, खान-पान मे परिवर्तन करें।
- अपने विचारो को बदलें कुछ व्यायाम अवश्य करें।
- स्वस्थ जीवन के लिए औषधियो से दूर रहें।
- किसी प्राकृतिक चिकित्सालय मे चिकित्सा कराएं।

स्वास्थ्य रक्षा के नियम

☐ प्रति दिन दो ही वार खायें।
☐ प्रतिदिन कम से कम दो सेर पानी पियें।
☐ प्रतिदिन एक घटा व्यायाम करें।
☐ प्रतिदिन एक समय प्राणायाम करें।
☐ सप्ताह मे एक दिन उपवास करें।

स्वास्थ्य-सूत्र

स्वास्थ्य हेतु भोजन निमित
होत न धन दरकार।
केवल सयम चाहिए,
और आचार-विचार ॥
और आचार-विचार,
स्वाद के लिए न खाओ।
नष्ट करो मत खाद्य,
न तन में रोग बढ़ाओ ॥

धन दौलत की खोज मे,
लेत न बिल्कुल चैन।
लहू पसीना एक करि,
धन जोड़े दिन रैन ॥
धन जोड़े दिन रैन,
स्वास्थ्य हित खरच करें जब।
अन्त समय मिले कफन,
और कुछ न मिले तब ॥

मिट्टी की महिमा

पहला सुख निरोगी काया, यह जग मिट्टी की माया ।।
औषधि करती नहीं सफाया, केवल देती रोग दबाया ।।
पेड़ू पर मिट्टी बंधवाया, रोग जड़ से करे सफाया ।।
जिसने इसे नही अपनाया, स्थिर स्वास्थ्य कभी नहीं पाया ।।

अगर कभी हैजा हो जावे, या ज्वर आकर तुम्हे सतावे ।।
पेड़ू पर मिट्टी तुरत चढ़ावे, दस-दस मिनटों पर बदली जावे ।
हैजा तुरत ठीक हो जावे, मिट्टी पट्टी दूर भगावे ।।

यदि दाँतों में कष्ट सतावे, डाक्टर दॉतो को उखड़ावे ।।
अच्छी मिट्टी तुरत मंगावें, उसे धूप मे खूब सुखावें ।।
पेड़े के आकार बनावें, सुवह-शाम दो बार लगावें ।।
मीठी चीनी कभी न खावें, खूब मजे से चना चबावें ।।

चोट, घाव, अरु जल जाने पर, फोड़ा फुन्सी दाद खाज पर ।।
दर्द एकजीमा सिर मे चक्कर, बिच्छू बर्रे सभी कष्टो पर ।।
अच्छी मिट्टी तुरत मगाकर, ठण्ढे जल से उसे मिलाकर ।।
कष्ट भाग पर उसे बाधकर, दस-दस मिनटो बदल-बदल कर ।।

भोजन के कमरे में लगाने योग्य

- आपको भूख लगी है ?
- आपने मुँह आँख और हाथ पैर धो लिए हैं ?
- जल पीना हो तो एक घण्टे पहले पीयें या
  भोजन के एक घण्टा बाद पीयें।
- ध्यान रखें ढेंकी कुटे पूर्ण चावल का ही उपयोग करें,
  और उसका माँड़ न निकालें।
- छिलके सहित साग का उपयोग करें।
- भोजन बिना मिर्च, कम मसाले का खायें।
- हाथ चक्की का चोकर सहित आटा ही व्यवहार मे लावें।
- मीठे के लिए चीनी के स्थान पर गुड़ का प्रयोग करें,
  इससे खनिज लवण नष्ट नहीं होते।
- भोजन के बाद मुँह, आँख और हाथ अवश्य धोवें।
- धीरे-धीरे खूब चबाकर भोजन करें,
  दाँतो का काम आँतो से न लें।
- अचार-पापड़ की जगह मौसम के फल खायें
  इससे भोजन के बाद ही पानी पीने की इच्छा भी न होगी,
  और दाँत मजबूत होगे।

विभिन्न रोगों की दवाएँ

जहां तक काम चलता हो गिजा से
वहां तक चाहिए बचना दवा से।

यदि मेदे में होवे जब गिरानी,
तो पी नीबू या अदरक का पानी।

यदि खून कम बने, बलगम ज्यादा,
तो खा गाजर, चना, शलगम ज्यादा।

जिगर के बल पे है इन्सान जीता,
जिगर कमजोर हो तो खा पपीता।

जिगर आँतो में गर्मी हो, दही खा,
अनार और सन्तरे के रस को पी जा।

थकान से है यदि अंग ढीले,
तो फौरन दूध गर्मागर्म पीलें।

यदि ज्यादा दिमागी है तेरा काम,
तो खा ले, तू शहद के साथ बादाम।

स्वास्थ्य के नियम

करो चाह मत चाय की, या काफी की मीत।
नीबू भी जल गरम मे, लेत रोग सब जीत।।
फल या सब्जी सूप का ही करिए व्यवहार।
मध्य दिवस तक इस तरह, करें न ठोस आहार।।

चोकरयुक्त रोटी तथा छिलकायुक्त हो दाल।
यह भोजन दोपहर का, तजि दो मिर्चा लाल।।
सब्जी हरी, सलाद को, तिगुना रखिये तात।
इससे सारे देह के, रोग दूर होई जात।।

बातें निम्न विशेष करि, रखिए चित मे ध्यान।
खूब चबा के खाइये पाचन हो आसान।

दो बार भोजन करें, रक्खें इसका ध्यान।
सुखद स्वास्थ्य के लिए है यह सूत्र महान।।

शाकाहरी बनें सदा, तजिए अण्डा-मांस।
बिना भूख मत खाइये, जब तक तन मे श्वांस।।
हफ्ते मे फिर एक दिन, कर लीजे उपवास।
जिससे तन-मन रोग सब, कभी न आवे पास।।

स्वस्थ रहने के लिए

- प्रातःकाल सोकर उठते ही मै एक गिलास ठंढा पानी पीता हू
  ठढा से तात्पर्य है – ताजा, बरफ डाला या फ्रिज मे रखा नही।

- भोजन के समय सम्भव हो तो पहले सन्तरे या टमाटर का रस पीयें।

- भोजन के एक घटा बाद एक-दो गिलास पानी पीयें।

- जब अपच मालूम हो, बहुत धीरे-धीरे एक गिलास पानी पीयें।

- यदि पेशाब रगीन दिखाई दे तो पानी पीने की मात्रा बढ़ा दें।

- कब्ज की किंचित शिकायत होने पर पानी अधिक पीयें अमरूद और त्रिफला का उपयोग करें।

किन पदार्थों में कौन विटामिन मिलेंगे।

ए	मक्खन, दूध, गोभी, पके आम,
बी-एक	टमाटर, मूली, गेहूँ, चावल, दाल
बी-दो	दूध, बाजरा, जौ, मकई, गाजर
सी	आलू, शक्करकन्द, कमला नीबू, स्ट्राबेरी, अमरूद
डी	अनन्नास, नासपाती, सूर्य की धूप, मक्खन, छेना

क्या आप जानते हैं

दिल २४ घण्टे में १,०३,६८६ बार धड़कता है।

खून २४ घण्टे में १,६८,८००,००० मील आपके शरीर में सफर करता है।

श्वांस २४ घण्टे मे २३,०४० बार ली जाती है।

भोजन २४ घण्टे मे ३-७५ पौंड तक किया जाता है।

गैस २४ घण्टे में ७५८ पौंड शरीर से वाहर निकलती है।

स्वास्थ्य रूपी धन कमाने के उपाय

एक घण्टे चिन्ता मत करें, वदले में एक घण्टे अधिक हँसें

एक दावत के मोह को छोड़ें, वदले मे घर का सादा भोजन करें

एक दिन रात्री की गोष्ठी छोड़ें, एक दिन अच्छा साहित्य पढ़ें

एक घण्टे विजली मे कम रहे, एक घण्टे हल्की सूर्य किरण मे अधिक रहे

एक घण्टे मोटर मे कम चढ़ें, एक घण्टे पैदल चलें

एक प्याली चाय कम पिएँ, एक प्याली दूध विना चीनी का पिएँ

एक वार अन्न खाना छोड़ दें, एक वार फलाहार करें

सप्ताह मे एक दिन का, उपवास अवश्य कर

जीवन को ऊँचा उठाना है तो,

योगी बनो पर रोगी नहीं
स्वस्थ बनो पर मोटे नहीं
बलवान बनो पर दुष्ट नहीं

खरे बनो पर खारे नहीं
धीर बनो पर सुस्त नहीं
सरल बनो पर मूर्ख नहीं
सावधान बनो पर वहमी नहीं
उत्साही बनो पर जल्दबाज नहीं
न्यायी बनो पर निर्दयी नहीं
चंगे बनो पर हठी नहीं
दृढ़ बनो पर दुर्बल नहीं
प्रेमी बनो पर पागल नहीं

समालोचक बनो पर निन्दक नहीं
नम्र बनो पर चापलूस नहीं
स्पष्ट बनो पर उद्दण्ड नहीं
चतुर बनो पर कुटिल नहीं
मितव्ययी बनो पर कंजूस नहीं
गम्भीर बनो पर मनहूस नहीं

सिगरेट की महिमा

मै दयालु सिगरेट, न मुझसे भय खाओ तुम भाई।
हानि रहित मुझको बतलाते, विज्ञापन सारे भाई ।। १ ।।

वे तुमसे कहते, मै हूँ अति सुन्दर मित्र तुम्हारी।
झूठ बात होने पर भी, वह लगती तुमको प्यारी ।। २ ।।

वे कहते सन्तुष्ट तुम्हे, करती उमग भर तन मे।
अब मेरे शिकार बन जाओ, हिचक न जाओ मन में ।। ३ ।।

अपने इस सुन्दर होठो के, बीच दबाकर मुझको।
बस बिलकुल आधुनिक दिखाई दोगे, फिर तुम सबको ।। ४ ।।

शायद जरा दिखाओ पहले, तुम मुझ पर नाराजी।
मुझे न चाहो, किन्तु शीघ्र ही जीतूंगी मै बाजी ।। ५ ।।

तुम देखोगे, मेरे बिना न काम तुम्हारा चलता।
मुझको पी लेने से मानो, नूतन जोश उमडता ।। ६ ।।

एक बार मेरे फन्दे मे, जो मानव आ जाते।
जीवन भर के लिए सुनो, वे मेरे ही हो जाते ।। ७ ।।

जब हम मिली, तभी से तुमने खो दी निज आजादी।
मैने अपनी धाक तुम्हारे मन मे खूब जमा दी ॥ ८ ॥

रग तुम्हारे गोरे गोरे गालों का मुरझाया।
पड़ी तुम्हारी अगुलियो पर, मेरी काली छाया ॥ ९ ॥

अब जपते हो मुझसे छुटकारा पाने की माला।
किन्तु भाई, तुमको तो मैंने कड़ी कैद मे डाला ॥ १० ॥

गलत राह दिखलाकर मैने, तुम्हे बहुत भटकाया।
दृष्टि मन्द हो गई तुम्हारी, सूख गई है काया ॥ ११ ॥

स्वास्थ्य नष्ट हो गया और कफ, भी तुमको आता है।
तुम तो टी० बी० के मरीज हो, डाक्टर बतलाता है ॥ १२ ॥

फिर कहता है ज्यादा जीने की, तुम छोडो आशा।
कैसर तुम्हे हो गया है, सिगरेट ने तुमको फासा ॥ १३ ॥

अवसर तुमने गंवा दिया, अब क्या रोना पछताना।
अपनी कब्र खोद ली तुमने, तब मुझको पहचाना ॥ १४ ॥

मेरी एक साथिन भी है, जिसे "मृत्यु" सब कहते ॥
वही तुम्हे लेने आयगी, अच्छा चलू नमस्ते ॥ १५ ॥

हँसने के लिए

एक प्राकृतिक चिकित्सक व्याख्यान देते समय कहने लगे कि तम्बाकू से मेरा गला नहीं खराब होता। सुनने वालो की आखें उन्हे आश्चर्य से देखने लगीं। किन्तु सब लोग हसने लगे जब उन्होंने कहा कि मेरे गले को तम्बाकू इसलिए असर नहीं करती कि मै उसे छूता ही नही।

———

एक ९० वर्ष के व्यक्ति सभा मे व्याख्यान देने के लिए खड़े हुए। उन्हे उस बैठक का विषय मालूम नहीं था। जिज्ञासा भरी दृष्टि से जब इधर उधर देखने लगे तो पास ही मे बैठी एक मनचली लड़की ने स्लिप भेजी कि अपने बुढापे के अनुभव सुनाइये। उन्होने भाषण आरम्भ करते हुए कहा कि मेरी तो अभी जवानी चल रही है जवानी के अनुभव सुना सकता हूं। बुढ़ापे के पास तो मैं आया ही नहीं, उसको कैसे बता सकता हूँ।

———

एक व्यक्ति ने तालाब मे डूबते हुए एक डाक्टर को बचाया। निकलने के बाद डाक्टर ने बचानेवाले को धन्यवाद दिया और कहा—मेरे पास इस समय कुछ रुपये-पैसे नही है जो दू, लेकिन उससे भी बहुमूल्य चीज देता हू कि बराबर डाक्टरों से दूर रहो। इनसे पैसे भी बचेंगे और जान भी बचेगी।

———

एक मोटे व्यक्ति ने अपने मोटापे से तग आकर चिकित्सक से कहा कि मै अपना मोटापा दूर करने के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हू। पर मिठाई, तली हुई चीजें, आलू छोड़ने के लिए तैयार नही। फल तो मैं खा ही नहीं सकता।

चिकित्सक ने हसते हुए कहा—आपका मोटापा भगवान ही दूर कर सकता है।

———

जीवन शक्ति की रक्षा के उपाय

यह समझना भूल है कि ठडी हवा से सर मे दर्द हो जाता है और सर्दी, जुकाम हो जाता है। सर्दी-जुकाम तो अधिक खाने से, खास करके स्टार्च वाले पदार्थ ज्यादा खाने से होता है। इसके प्रमाण मे यह आसानी से कहा जा सकता है कि जाड़े के दिनो में लोग गर्मी के दिनो से अधिक खाते हैं, और कहते हैं कि शरीर को स्वस्थ रखने के लिए जाड़े मे ज्यादा खाना आवश्यक है, पर जब सर्दी जुकाम होती है तो जाड़े का बहाना करते हैं।

यदि हम जीवन शक्ति की सतर्कता पूर्वक रक्षा करें और शरीर की मशीनरी को सतुलित रखें तो हम स्वस्थ रहेगे इसके विपरीत जाने पर हम अस्वस्थ और दु खी रहेगे।

अस्वस्थ लोगो को प्रकृति के सम्पर्क मे ले आना चाहिए। कमजोर और निराश रोगी यदि प्रकृति के सम्पर्क मे आए और घर के बाहर प्राकृतिक वातावरण मे रहे तो आश्चर्यजनक उन्नति होगी।

जब कोई आग में हाथ देता है तो हाथ जल जाता है—यह प्रकृति का नियम है। इसी तरह जब व्यक्ति प्रकृति के नियमो का उल्लघन करता है, तो वह अपना स्वास्थ्य गँवा बैठता है।

औषधियो से रोग को दबाना ठीक वही त्रिया है जैसे किसी के माथे पर बैठी मक्खी को कुल्हाड़ी की चोट से भगाना।

शरीर की रोग निरोधक शक्ति को नष्ट करने मे जितने कारण होते हैं उस सबसे प्रधान कारण भोजन की गल्तियां है।

एक मोटे आदमी ने एक लम्बे उपवास के बाद कहा—आज जीवन मे पहली बार मैं पालथी मार कर बैठ सकता हूं और खड़ा होने पर अपने पैरो को देख सकता हूं।

तीन आवश्यक बातें

तीन की कामना करो	स्वास्थ्य संतोष मित्रता
तीन को नियम से करो	भजन व्यायाम भोजन
तीन के लिए प्रयत्न करो	स्वतंत्रता आत्मनिर्भरता प्रसन्नता
तीन को सदा मान दो	माता पिता गुरु
तीन से घृणा करो	निर्दयता परनिन्दा अभिमान
तीन की सराहना करो	परिश्रम समय की पाबंदी सहनशीलता
तीन मे दृढ रहो	साहस प्रेम सज्जनता
तीन पर नियन्त्रण करो	क्रोध व्यवहार जिह्वा
तीन पर दया करो	दुर्घटनाग्रस्त भटका यात्री विधवा
तीन का संग छोड़ो	मिथ्यावादी व्यभिचारी जुआरी
तीन को हृदय से निकाल दो	राग द्वेष मोह
तीन की हँसी मत उड़ाओ	बूढा पागल अपंग
तीन की प्रशंसा करो	स्वाभिमान मधुर व्यवहार ईमानदारी
तीन से सदा बचो	हिंसा झूठ चोरी
तीन आंसुओं को पवित्र मानो	प्रेम के करुणा के सहानुभूति के

प्राकृतिक चिकित्सा के अनुभूत प्रयोग जो पेन्सिलिन की तरह कार्य करते हैं।

लीवर को मजबूत करने के लिए

सुबह खाली पेट एक चुटकी चावल मुँह मे रखकर

बिना चबाये पानी से निगल जाना।

हाई ब्लडप्रेशर कम करने के लिए

नमक का उपयोग बिलकुल बन्द कर दें या बहुत कम कर दें।

चोट लगने पर

ठडे पानी की पट्टी बाँधना।

दांतों को मजबूत करने के लिए

कड़ुवे तेल मे नमक मिलाकर मजन करने से

दांत मजबूत होते है, पायरिया तक ठीक होता है।

भोजन के बाद पेट से वायु या गैस निकालने के लिए

सीधे सो जाएँ, आठ लम्बे सांस लें,

फिर दाहिनी करवट हो कर सोलह सांस लें,

अन्त मे बायीं करवट लेकर बत्तीस सांस लें,

इससे वायु मुँह से या गुदा से निकल जाती है।

शरीर में कहीं भी फुन्सी हो तो

तीन मिनट गरम और एक मिनट ठंडा सेंक दें।

एक दो बार करने से फुंशी खतम हो जाएगी और

बड़े फोड़े का रूप नहीं लेगी।

घुटनों के दर्द के लिए

भोजन मे खीरे का उपयोग करें और एकपोतिया लहसून खाएँ।

जलने पर

जले हुए स्थान को तुरन्त पानी मे डुबा दें और

जबतक जलन नहीं मिटे उसी में रहने दें।

उससे फफोला नहीं होगा तथा दाग नहीं पड़ेगा ●

सर्वोत्तम वाक्य

सर्वोत्तम छः शब्द —मै स्वीकार करता हूँ, मुझसे भूल हुई।

पांच शब्द :—आपने एक अच्छा काम किया।

चार शब्द :—आपकी क्या राय है ?

तीन शब्द :—यदि आप चाहे।

दो शब्द —बहुत धन्यवाद।

एक शब्द —हमलोग।

सात सुख

पहला सुख निरोगी काया

दूजा सुख घर मे हो माया

तीज सुख सुलक्षणी नारी

चौथा सुख पुत्र आज्ञाकारी

पाँचवा सुख सुवास वासा

छठा सुख राज मे पासा

सातवां सुख सतोषी जीवन

समारोह विवरण

अभिनन्दन समारोह : एक विवरण

९ नवम्बर १९८६, रविवार। दोपहर से घिरे बादलो की घटा मे लुक-छिप कर सध्या उतरी कि बादल छँट गए। मोयरा स्ट्रीट के उत्तर-दक्षिण की सरणी मोटरो की कतार से भर गई। 'विद्यामन्दिर' का वाह्य द्वार गेंदे की पीताभ झालरों का पीताम्बर ओढे प्रकृति की अपार महिमा का स्मरण करा रही थी। सभागार के मुख्य द्वार, प्रागण व मंच पुष्पो से सुसज्जित । मच पर पीछे झूलता बोध पट्ट : 'विशिष्ट समाजसेवी धर्मचन्द सरावगी अभिनन्दन समारोह'। यहाँ से वहाँ तक डायस श्वेत वस्त्र से आवृत, जिस पर कतार से रखे थे नाम-पट्ट समारोह के विशिष्ट अतिथियो के।

सध्या छ बजा कि सभाकक्ष सुधि-श्रोताओ व कलकत्ते की विभिन्न सस्थाओ के सभासदो से खचाखच भर गया। वातावरण मे यहाँ से वहाँ तक सम्मान की उच्छसित भावना लहरा उठी। उद्घोषक श्री भँवरलाल सिंघी ने आज के कार्यक्रम की उद्घोषणा के साथ स्वागत अभिनन्दन सहित मच पर आह्वान किया अभिनन्दन समारोह के अध्यक्ष श्री राधाकृष्णजी कानोडिया का। इसके साथ ही उन्होने मच पर आसन ग्रहण करने का अनुरोध किया सौम्य और विशिष्ट सेवाओ के प्रति आभार प्रदर्शन हेतु सर्वश्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका, विजयसिंहजी नाहर, राधाकृष्णजी नेवटिया, बजरगलालजी लाठ, कलकत्ता के शेरीफ पद्मश्री डा० जी० के० सराफ, प्रो० हीरालालजी चोपड़ा व भगवतीप्रसादजी खेतान और आज के अभिनन्दनीय धर्मचन्दजी सरावगी से। तत्पश्चात कार्यक्रम के शुभारम्भ की घोषणा करते हुए मगल गीत के लिए नगर की स्वर साधिका श्रीमती कल्पना बाटिया ने मगलगीत प्रस्तुत करने का आग्रह किया गया।

और शात सभागार मे स्वरगरिमा की लहर लहरा उठी :

"सत्य समता के तटो से योग ही उन्मुक्त धारा।
उस सनातन युगपुरुष को कोटिश वन्दन हमारा॥"

इस वन्दना के साथ आज के समारोह के अध्यक्ष श्री राधाकृष्ण कानोडिया का माल्यार्पण द्वारा अभिनन्दन किया अभिनन्दन समिति के मन्त्री श्री दीपचन्दजी नाहटा ने। इस माल्यार्पण के क्रम मे कलकत्ता के शेरिफ पद्मश्री डा० जी० के० सराफ को श्री मदन अग्रवाल, श्री विजयसिहजी नाहर को श्री दीचन्दजी नाहटा, श्रीराधाकृष्ण नेवटिया को सुन्दरलालजी टाटिया, श्री बजरगलालजी लाठ को श्री दीपचन्दजी नाहटा, श्री दीपचन्द नाहटा को हिम्मतसिहजी जैन, श्री भगवतीप्रसादजी खेतान को कृपाचन्दजी सुराणा, डा० हीरालालजी चोपडा को कमलकुमारजी जैन तथा रामकृष्ण जी सरावगी को कमलकुमारजी जैन ने माल्यार्पण किया। इसी के साथ उद्घोपक की ओजस्वी वाणी गूँजी कि और अव अभिनन्दन समिति के अध्यक्ष से निवेदन है कि वे इस आयोजन के मुख्य केन्द्र श्री धर्मचन्दजी सरावगी को माल्यार्पण करें—तालियो की गडगडाहट के साथ।

करतल ध्वनि मच व सभाकक्ष मे एक लय एक स्वर मे गूँज उठी।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि आज के समारोह के दो अतिथि लोक कल्याण मन्त्री यतीन चक्रवर्ती एव कारपोरेशन के उप-मेयर श्री मणिसान्याल विलव से आए थे। उनके आते ही मंच पर प्रसन्नता की लहर दौड गई थो। क्योकि ये मत्री और उप-मेयर मात्र नही थे पर मच पर आसीन महानुभावो के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर देश हितार्थ काम करने वाले सगी-साथी थे।

श्री रामकृष्ण सरावगी

अभिनन्दन के इन क्षणो मे अभिनन्दन समिति के अध्यक्ष श्री रामकृष्ण सरावगी ने समिति के गठन, उद्देश्य और प्रेरणा की चर्चा के क्रम मे अभिनन्दन के और अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रेरक श्री विजयसिह नाहर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। उन्होने कहा 'जव धर्मचन्दजी सरावगी अपना ८२वाँ जन्म दिवस मना रहे हैं उस समय आप और हम एकत्रित है उनका अभिनन्दन करने के लिए।'

'धर्मचन्दजी अपनेआप मे एक व्यक्ति नही, एक सस्था है। जिस क्षेत्र मे वे गए उस क्षेत्र मे न केवल आशातीत सफलता प्राप्त की वल्कि उन्होने अपने आपको पूरी तरह उस कार्य मे समर्पित किया। मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के प्रधान सचिव के रूप मे और उसके साथ अनेक वर्षों तक

जुड़े रह कर एक अन्यतम कार्यकर्त्ता के रूप मे उन्होने जो अपनी सेवाएँ दी, सोसाइटी का इतिहास इस बात का साक्षी है कि, उनकी वे विनम्र सेवाएँ इस प्रमुख सेवा संस्था के लिए काफी उपयोगी रही। राजनीति के क्षेत्र मे वे आए, कलकत्ता कारपोरेशन के कौसिलर चुने गए। कलकत्ता कारपोरेशन का अपना एक इतिहास रहा है। बगाल की राजनीति मे जो भी आया है, डा० विधान चन्द्र राय, जनाब फजलुल हक, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, देशबन्धु चितरजनदास, कलकत्ता कारपोरेशन के नाम के साथ ये सभी नाम उभर आते है, और उसी क्रम मे कौसिलर हुए श्री धर्मचन्द सरावगी। एक काम जो उन्होने बहुत ही महत्वपूर्ण किया—कलकत्ता कारपोरेशन मे उन्होने एक प्रस्ताव रखा कि कलकत्ते के किसी भी ट्राम या बस मे चलने वाला कोई भी व्यक्ति धूम्रपान नही कर सकेगा। आज शायद उस बात को ३२-३३ वर्ष बीत गए लेकिन श्री धर्मचन्दजी के द्वारा बनाया गया, रखा गया यह प्रस्ताव आज भी कानून के रूप मे अमल मे लाया जाता है। पश्चिम बगाल काग्रेस कमेटी ने धर्मचन्दजी को राज्य-सभा का मनोनयन-पत्र दिया, धर्मचन्दजी ने उसमे जयलाभ किया और जब काग्रेस के हाई-कमान ने कहा कि हम आपको बगाल मे रखना चाहते है, राज्य-सभा के सदस्य चुने जाने के दूसरे दिन ही उन्होने राज्यसभा का पद छोड दिया और थोडे ही दिनो बाद वे पश्चिम बगाल विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। राजनीति से वे जुड़े रहे, किन्तु कभी भी राजनीति उनके लिए पेशा नही बनी। एक आदर्श के रूप मे, एक सेवक के रूप मे उन्होने बगाल की सेवा की। फिर उनके जीवन का क्रम चला मनुष्य को प्रकृति के निकट ले जाने का। आज के युग मे जबकि मनुष्य प्रकृति से दूर हटता चला जा रहा है, धर्मचन्दजी ने यह प्रयास किया कि मनुष्य को, इन्सान को प्रकृति के निकट ले जाएँ। उन्होने यहा प्राकृतिक निकेतन नामक एक सस्था की स्थापना की और आज भी यह सस्था डायमण्ड हारबर मे बहुत अच्छे रूप से व्यक्ति को प्रकृति के निकट ले जाने की चेष्टा मे रत है। बगैर किसी आकाक्षा के, बगैर किसी पद के। ८१ वर्ष की आयु प्राप्त कर धर्मचन्दजी आज भी उतने ही सक्रिय है जितना कि आज से ४० या ५० वर्ष पहले थे। हम जैसी उम्र वालो के लिए वे ईर्ष्या के पात्र है। हमलोग बराबर यह चेष्टा करते है कि धर्मचन्दजी से कुछ सीख और धर्मचन्दजी ने हमलोगो को बहुत कुछ सिखाया भी है। आज इस अभिनन्दन समारोह के अवसर पर जब मैं आप सबका स्वागत करने के लिए खड़ा हुआ हूँ,

अभिनन्दन समिति की ओर से, तो हो सकता है कि हमारे आयोजन में त्रुटिया रही हो, त्रुटिया रहनी स्वाभाविक है। किन्तु हमने एक चेष्टा की है कि हमलोगो से पहले की पीढी का जो भी व्यक्ति हमारे वीच मे उपस्थित है, देश और समाज के लिए उसने अपनी विनम्र सेवाएं अर्पित की है उनका समादर करने की। आज हम अभिनन्दन उनका नही करते, धर्मचन्दजी का अभिनन्दन नही करते, हम अभिनन्दन करते है उनके कार्यो का, उस प्रेरणा का जिस प्रेरणा से धर्मचन्दजी ने प्रेरित होकर अपने जीवन मे इतने वड़े काम किए। आज के इस स्वागत समारोह मे हम परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते है कि देश सेवा का, समाज सेवा का और मनुष्य को प्रकृति के निकट ही नही, निकटतम ले जाने का जो प्रयास धर्मचन्दजी ने किया है, आनेवाली पीढी उस प्रयास को कायम रखे और मैं समझता हूँ कि यही धर्मचन्दजी का वास्तविक अभिनन्दन होगा।"

डॉ० जी० के० सराफ

पद्मश्री कलकत्ता के शेरिफ डा० जी के० सराफ ने आठ दशको के इतिहास से जुडे धर्मचन्दजी का अभिनन्दन करते हुए कहा—मैं अभिनन्दन धर्मचन्दजी का नही बल्कि अभिनन्दन करना चाहता हूं सुन्दर स्वास्थ्य का। स्वास्थ्य की उस कल्पना का जिसमे मनुष्य पूर्ण रूप से स्वस्थ होकर सुन्दर जीवन व्यतीत कर सकता है, दीर्घायु हो सकता है। सयम, व्यायाम, प्राकृतिक चिकित्सा से कैसे स्वस्थ रहा जा सकता है। आज यह कितना वड़ा एक सवूत है कि ठीक सयम के साथ रहकर, ठीक भोजन करके व्यक्ति ८२ वर्ष की अवस्था मे भी इतना स्वस्थ, इतना सशक्त हो सकता है। आज वे मन से भी पूर्ण जागरूक हैं वे शारीरिक, मानसिक और विचार शक्ति सभी मे पूर्ण रूप से स्वस्थ है। जो दिशा उन्होने दिखाई कि व्यक्ति कैसे स्वस्थ रह सकता है, यह वहुत आवश्यक है, विशेपकर हमारे मारवाड़ी समाज मे जहाँ पर अधिकतर लोग खाना अधिक खाते है और अधिक भोजन करके वीमार पड़ते हैं। कम भोजन करके वीमार पड़ने वाले दूसरे वर्गो मे होगे, हमारे समाज मे लोग अधिकतर वीमार इसलिए पडते हैं कि वे अधिक खाते है और अधिक कमाना, अधिक भोजन करना, व्यायाम न करना, हाथ पैर न हिलाना यह कितनी शर्म की वात है, जिसके कारण हमारे समाज के स्वास्थ्य का स्तर बहुत नीचा

है। धर्मचन्दजी सरावगी का उदाहरण केवल मारवाडी समाज के लिए नही, पूरे देश के लिए, मैं कहूँगा पूरी मानव जाति के लिए एक आदर्श है। अनुकरण हम करें और उनसे लोग सीखें कि कैसे स्वास्थ्य ठीक रखा जा सकता है। आज जितनी दवाइयो का दुरूपयोग होता है। जितनी बीमारिया वढती जा रही है, डाक्टर बढते जा रहे है और दवाइयां बढ़ती जा रही है। विदेशी कम्पनियो कि जो दवाइयां दुनियां मे कहीं नही बिकती, जो जहर है, जैसे नौवलजीन है—यह सिद्ध हो चुका है कि नौवलजीन से आदमी मर सकता है, मैक्साफार्म उससे आदमी अन्धा हो सकता है, वे सारी दवाइयां आकर इस देश में बिकती है। थर्ड वर्ल्ड मे जितनी कूड़ा करकट दवाइयां है उन सबका यहाँ सग्रह-विक्रय होता है और लोग उसको भोजन की तरह खाते है। दवाइयो का विक्रय तभी बन्द होगा जब हम इन दवाइयो से दूर हो। हम व्या-याम करके, कसरत करके ठीक ढग से जीकर अगर अपना स्वास्थ्य वना सक तो वही स्वास्थ्य होगा। दवाइयो से लिया हुआ स्वास्थ्य उधार का स्वास्थ्य है। टिकता नही, बहुत जल्दी टूट जाता है। धर्मचन्दजी ने जो २१ वीघा जमीन जौका मे देकर इतना सुन्दर प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र बनाया, यह दान सचमुच बहुत सराहनीय है। लोग वहाँ जाकर, वहुत से लोग लाभ उठाते है लेकिन मैं चाहता हूँ कि आज उनके इस अभिनन्दन समारोह के बाद एक ऐसा काम हो जिसमें और अधिक से अधिक लोगो को स्वास्थ्य की सिक्षा दी जा सके और आदर्श के रूप मे लोग धर्मचन्दजी को देखकर उनसे प्रेरणा लें, उनसे सीख रहने का ढग, जीने की कला और भोजन, सयम, व्यायाम सब। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि धर्मचन्दजी सरावगी का स्वास्थ्य इसी तरह वना रहे, वे शतायु हो और हम फिर उनसे वार-वार हर वर्ष प्रेरणा लेते रहे। धन्यवाद।

श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका

सरावगीजी का अभिनन्दन करते हुए वयोवृद्ध प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका ने वड़ावाजार युवक सभा के अपने साथी धर्मचन्दजी की व्यायाम निष्ठा पर [illegible] डाला। उन्होने कहा :

धर्मचन्द सरावगी का जो अभिनन्दन आज हो रहा है [illegible] मैं धर्मचन्दजी को वहुत दिनो से जानता हूँ, [illegible] वड़ावाजार युवक सभा के लिए काफी घनिष्ठ रहा है। [illegible]

की स्थापना के समय से ही मेरा सम्बन्ध रहा है। धर्मचन्दजी सरावगी वहा व्यायाम करने के लिए नियमित रूप से उपस्थित होते थे। शरीर चर्चा के विषय मे बराबर ही इन्हे प्रीति रही है और वे इसमे काफी दिलचस्पी ले कर व्यायाम करते थे, खासकर वजन उठाने मे वे बराबर ही अपनी परीक्षा देते रहते थे। ८० पौंड का वजन जिसे बेंचप्रेस कहते है आसानी से करते थे। बल्कि मैंने आज भी कहा उनसे कि इस उम्र मे और इतना भारी वजन उठाना अच्छा नही है। वे बहुत कर्मनिष्ठ है और काफी पब्लिक के कामो मे दिलचस्पी रखते है। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वे दीर्घायु प्राप्त करें और समाज का और देश का काम अच्छी तरह से करते रहे।

श्री मणि सान्याल

तत्पश्चात् भूतपूर्व पार्षद व वर्तमान मे कलकत्ता कारपोरेशन के उप-मेयर श्रीमणी सान्याल ने अपने उस साथी का जिसके साथ १९५२ से १९५७ तक पार्षद रहे अभिनन्दन किया। कहा :

माननीय सभापति, उपस्थित सज्जनवृन्द। कलकत्ता कारपोरेशन मे धर्मचन्द जी के साथ काम करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था। हम दोनो एक साथ एक ही समय मे लम्बे अरसे तक कौंसलर के रूप मे काम करते रहे है। उस समय काम करते हुए कलकत्ता महानगरी की उन्नति की परिकल्पना के विभिन्न कार्यों मे उनका विचार एव प्रयत्न जो हमने देखा वह मुझे सदा स्मरण रहेगे। इस शहर को वे प्राणो से भी अधिक प्यार करते है। इस शहर की उन्नति अवनति के प्रति उनकी चिन्ता-भावना का अन्त नही है। आज उसी दृष्टि से इस शहर के एक अधिवासी के रूप मे तथा आज फिर से पौर सभा से युक्त होने के खातिर मैं धर्मचन्द सरावगी को इस शहर के अधिवासियो की ओर से, कलकत्ता कारपोरेशन के सदस्य होने के नाते ही नही बल्कि इनके बहुविध जन सेवा मे लगे रहने के कारण उनका अभिनन्दन करता हूँ। समाज सेवा, दरिद्रजनो की सेवा ही इनका जीवन धर्म रहा है। इसके अलावा इनका एक और परिचय है, वह है, इनका प्राकृतिक चिकित्साविद होना और कि प्राकृतिक चिकित्सा के सम्बन्ध मे ये केवल आग्रही ही नही है बल्कि इस चिकित्सा पद्धति की उन्नति तथा जनसाधारण मे इसके प्रचार-प्रसार के लिए भी इनकी चेष्टाओ का कोई अन्त नही है। धर्मचन्दजी जैसे कर्मठ पुरुष, जो ८१ वर्ष पार कर आज ८२ वें प्रवेश कर रहे है अभिनन्दनीय हैं।

डॉ० हीरालाल चोपड़ा

मनुष्य के जीवन का लक्ष्य यह है कि वह अपने लिए ही नही वल्कि दूसरों के वास्ते भी जीता है और दूसरो के वास्ते जीने के लिए उसको अपने स्वास्थ्य को बरकरार रखना जरूरी है। प्राकृतिक चिकित्सा के बारे मे मुझे स्वय कुछ ऐसा अभ्यास है। ऐसा देखा गया है कि इस प्राकृतिक चिकित्सा से वहुत पुरानी बीमारिया भी फौरन दूर हो जाती रही है। मेरे पिताजी ने एक टी० वी० का सैनीटोरियम बनाया था डाक्टरी को छोडकर उसे प्राकृतिक चिकित्सा की तरफ मोडा। ठीक है, उस वक्त सारे डाक्टर भी हँसते थे कि यह भी क्या कोई डाक्टरी है लेकिन बाद मे पता चला कि गाधीजी ने भी अपनी आत्मकथा मे इसका जिक्र किया है कि किस प्रकार से ये चीज हमेशा के लिए इन्सान को तन्दुरूस्त बना देती है। मगर प्राकृतिक चिकित्सा ने हमको यह वता दिया है कि इन्सान सौ साल तक रह सकता है। हमारे प्रभुदयालजी हिम्मतसिहका जैसे बुजुर्ग ने सिद्ध कर दिया है कि किस प्रकार हम जिन्दगी को ऊपर बढा सकते है और धर्मचन्दजी ने यह बता दिया है कि इतना जीवन व्यतीत करते हुए हम किस प्रकार से कार्यरत रह सकते है। इस दुनिया के अन्दर यह नही कि जगल मे वैठकर, बल्कि सोसाइटी के अन्दर काम करेगे। इसलिए ऐसे लोगो के वास्ते तो उम्र कोई बाधा नही होती। यह तो नौजवान हैं, ८२ साला नौजवान। भगवान करे कि ये और भी वहुत ज्यादा दिनो जिए। और हम इनसे प्रेरणा लेकर आगे बढने की कोशिश करे। हमारी आनेवाली पीढी इनको अपना ध्येय वनाकर इनके साथ चलने का प्रयत्न करे और अपने जीवन को सादा स्वस्थ रखने के लिए इनका अनुकरण करे।

श्री भगवती प्रसादजी खेतान

मेरा तो धर्मचन्दजी के साथ पारिवारिक सम्बन्ध है। मेरे पिताजी के साथ इनके पिताजी की दोस्ती थी। और ये दोस्ती अब भी बरकरार है। इनके बारे मे मैं क्या कहूँ। ये जब भी मिलते हैं, बडे प्रेम से मिलते हैं, इनके समाज सेवा के बारे मे, और सबके बारे मे तो आप सब सुन ही चुके है मैं यह कह सकता हूँ कि ये सब तरह से मिलनसार और अच्छे आदमी हैं और अपने सिद्धान्त के पक्के है।

श्री विजयसिह नाहर

ऐसे तो प्रकृति निकेतन, प्राकृतिक चिकित्सा प्राकृतिक तरीके से इनका बहुत विश्वास है। स्वय करते है, सिखाते है। [illegible]

पुस्तकें भी लिखी है और लोगों को देते है। 'स्वस्थजीवन' पत्रिका भी निकालते थे। नियमित व्यायाम करते है, व्यामशाला रोज जाते हैं और वहा पर हर तरीके का व्यायाम करते है, और अभी भी, इस उम्र मे भी व्यायाम सीखते है। आपलोगो को सुनकर खुशी होगी कि अभी इन्होने लाठी चलाना सीखना शुरू किया है, कराटे सीख रहे है नये तरीके से। वे कहते है कि बुढापा कुछ नही, उम्र कुछ नही, हमारे शरीर मे फुर्ती है, हम सब कुछ सीखेंगे। और ऐसे तो वे एरोप्लेन चलाना भी जानते है और स्पोट्स हैकिट का शौक रहा है। सेवा के हिसाब से उन्होने मारवाडी रिलीफ सोसाइटी और अनेक प्रतिष्ठानो के साथ युक्त है और सेवा बराबर करते आए है। राजनीति मे भी उन्होने कुछ दिन सक्रिय अंश लिया, कारपोरेशन के कौंसिलर तो थे ही और बगालकौसिल मे अपर हाउस मे भी बहुत-साल मेम्बर रहे है। अभी बताया कि दक दफे उन्हे राज्यसभा मे काग्रेस की तरफ से मनोनीत किया गया था और वे जीत भी गए पर कितना त्याग उनके अन्दर था कोई लोभ नही था जो एक अन्य सदस्य जिनको भेजना जरूरी था, वे वेचारे उस बार हार गए और उनके हारने से धर्मचन्दजी से निवेदन किया गया कि आप बगाल मे ही रहिए, दिल्ली जाकर क्या कीजिएगा, इनका जाना जरूरी है इसलिए इस पद को आप छोड दीजिए। जिस दिन इनका निर्वाचन हुआ, उसके दूसरे ही दिन उन्होने त्याग-पत्र दे दिया।

इतना बडा एक दृष्टान्त उनके जीवन का हमारे सामने है—प्रकृति निकेतन बहुत बड़ी जमीन है, उनका सुन्दर एक बगीचा बनाया हुआ था, हम उस बगीचे मे उनके साथ भी गए है और उन्होने बडी खुशी के साथ उसको दान दे दिया, उतनी बडी जमीन, कई लाख रुपये उसका दाम भी होगा, परन्तु उन्हे खुशी है कि उनके उस जमीन मे प्रकृति निकेतन एक सुन्दर सस्था बन गई है। और इन्होने बहुत मेहनत और खर्च करके उसे बनाने मे पूरा हाथ बँटाया। उनकी बार-बार यह कोशिश रही है कि नए-नए काम करते रहे, आज भी नया ज्ञान है। उनको बगीचे का शौक था, वहाँ पर जोका मे तो बगीचा बनाया था, किन्तु वह जब दे दिया तो अपने घर मे ही छत पर एक बगीचा बनाया और आज भी देखेंगे कि छत के ऊपर एक नारियल का पेड लगा हुआ है, जिसमे नारियल होता है और उसका ये व्यवहार करते है। ऐसे ये बराबर रहे हैं, किसको क्या मदद करते हैं उसका प्रचार कभी नही करते, अखबारो मे नाम नही छपवाते।

सबसे बड़ी बात है कि ये बराबर हँसते रहते हैं। आज उनका जो अभिनन्दन हो रहा है, हम तो कहेंगे, उनकी उम्र के हिसाब से, उनके चलन के हिसाब से बच्चे हैं। वे शतायु हों, खुशी रहे और सेवा भावना का आदर्श ले कर धर्म का, समाज का, लोगो की सेवा करते रहे—यही प्रार्थना मैं करता हूँ, धन्यवाद।

श्री राधाकृष्ण नेवटिया

१९२९ की बात है, मैं अपने मकान से अपनी गद्दी जा रहा था, रास्ते मे इनकी गद्दी पडती है। धर्मचन्दजी के पिता से मेरा पुराना परिचय था। देखा गद्दी के नीचे ५०-६० आदमी खड़े है। धर्मचन्दजी के पिताजी ने मुझसे कहा—नेवटियाजी मेरा धर्मा विलायत से आया है। इसको मन्दिर मे ले जाना है। फिर मैंने कहा—मन्दिर मे क्यो ले जाना है ? तो कहने लगे मन्दिर वाले इसे घुसने नही देते, इसलिए अभी अपने को साथ चलना है। मैंने कहा धर्मा क्या कोई डकैती करके आया है। जो मन्दिर मे घुसने नही देते। वह तो भगवान का मन्दिर है। वे बोले—यही तो बात है, कुछ सामाजिक लोगो ने भगवान का ठेका ले रखा है, मन्दिर के अन्दर जाने नही देते इसलिए चलना है सबको। तो ऐसा सामाजिक बधन था उस समय कि विलायत जाना भी पाप था और आ करके मन्दिर मे घुसना भी। कुछ ऐसे सामाजिक व्यक्ति हैं जो भगवान को ताला लगा कर रखते हैं। इस ताले को तोडने मे अगर क्रान्तिकारी कदम किसी ने उठाया तो वह धर्मचन्दजी ने ही उठाया। वे बोले मन्दिर मे जाएँ या न जाएँ, पर विलायत एक दफे नही बीस दफे जाएँगे। ये उनको कितनी सहन शक्ति और कितना उत्साह है कि वे पुरानी रूढियो और परम्पराओं को तोडने मे सबसे आगे रहे: हवाई जहाज मे लोगो का जाना, आप जानते हैं कितना साहस का काम था उस समय, आज से ६० वर्ष पहले कौन उड़ता था। धर्मचन्दजी हवाई जहाज के बिना जाते ही नही थे कहीं। इतना साहस था कि वे जहाज मे ही जाते थे। तो मैं आपको एक कथा सुनाऊँ—पाइलट यानी हवाई जहाज चलाने वाले जैन समाज मे दो ही व्यक्ति थे—[illegible] और धर्मचन्दजी सरावगी। ये पाइलट बने तो इन्होने अपना जहाज [illegible] और अपने परिवार को ले गए। जहाज रास्ते मे खराब हो गया, [illegible] हो गया, पर धर्मचन्दजी का साहस देखिए, इन्होंने जहाज को [illegible]

[illegible]

मे उतार दिया। लेकिन इन्होने हिम्मत हारी नही, सब परिवार को लेकर आ गए। कितनी ताकत है इनके मन मे। तो इनके जीवन से हमे यह प्रेरणा लेनी है कि छोटेपन से कितना साहस से काम करना चाहिए। इसी तरह इन्होने गाँधीजी से प्रेरणा ली। गाँधीजी का कहना था कि मनुष्य जीवन मे किस तरह से सुखी रह सकता है, बीमार पडे तो किस तरह से स्वयं ठीक हो सकता है इसके लिए प्राकृतिक चिकित्सा से बढकर और कोई चिकित्सा नही हो सकती। गाधीजी की प्रेरणा से मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी मे प्राकृतिक चिकित्सा का केन्द्र खोला। और लोगो से चिकित्सा के लिए रुपये मागे तथा वार्ड भी खोल दिया। इनडोर, आउटडोर भी खोल दिया। इतने मे ही नही सीमित रहे, धर्मचन्दजी ने कहा कि भारतवर्ष के कोने-कोने मे, गाव-गाँव मे प्राकृतिक चिकित्सा का प्रचार हो और उसके लिए जितना भी धन और जितनी भी आवश्यकताएँ हो उसके लिए मैं तैयार हूँ। और उन्होने कहा कि एक अखिल भारतवर्षीय प्राकृतिक चिकित्सा सम्मेलन बुलाना चाहिए। और धर्मचन्दजी ने अखिल भारतवर्षीय प्राकृतिक चिकित्सा सम्मेलन किया और ढेबर भाई जो काग्रेस के प्रेसिडेन्ट थे, उनको सभापति बनाया। और बालकोबा भावे विनोबा भावे के भाई थे उनको स्वागताध्यक्ष बनाया। मैं मत्री बना और अखिल भारतर्वीय प्राकृतिक चिकित्सा का कलकत्ते मे सम्मेलन हुआ। उसमे हजारो व्यक्ति एकत्रित हुए। यह उनकी प्रेरणा है कि आज तीस वर्षो से लगातार भारत मे सम्मेलन होता है यहां पर कलकत्ते मे एक आदर्श प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र खुलना चाहिए। इसके लिए २२ बीघा जमीन डायमण्ड हार्बर पर धर्मचन्दजी ने प्राकृतिक निकेतन को दे दिया और ट्रस्ट बनाया। उनकी प्रेरणा से भारतवर्ष मे आज सैकडो प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र खुल गए। इतना कर्मठ जीवन है कि जिस काम मे ये लग जाते हैं उसे पीछे छोडते नही है। इसलिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं—हमारे सस्कृत मे है जीवम् शतम् सुखम् मनुष्य सौ वर्ष तक जिए ही, परन्तु कैसे जिए—आँखो से देखे, कानो से सुने, पैरो से चले। ऐसा जीवन जो है, ओ धर्मचन्दजी बिता रहे हैं और भविष्य मे बिताएँ—यही मेरी शुभकामना है।

श्री यतीन चक्रवर्ती

बहुत खुशी की बात है कि धर्मचन्दजी के ८१ साल पूर्ण होने के कारण उनका अभिनन्दन समारोह किया जा रहा है। हमारा यह सौभाग्य है कि

मुझे इस जलसे मे भाग लेने का मौका मिला। १९६६ से धर्मचन्दजी से हमारा परिचय है। उस वक्त मैं भी लेजिसलेटिव कौन्सिल मे था। धर्मचन्दजी भी वहाँ एक सदस्य बने थे। छ. साल तक लगातार एक साथ हमने काम किया। और हमने यह देखा कि धर्मचन्द सरावगी एक आदर्श लेकर चलते हैं, वे चाहते है कि अपने मुल्क के नौजवानो को ऐसी तालीम देनी चाहिए कि हिन्दुस्तान की भारत की जो सांस्कृतिक परम्परा है, व्यायाम, योग व्यायाम वह आगे बढे। यह आदर्श लेकर ८२ साल के नौजवान लगातार वह काम कर रहा है। यहाँ जो नेता लोग मौजूद है, वह क्रिकेट टीम के बराबर हैं। एक है हिम्मतसिंहकाजी ९८, दो साल और बाकी है सेंचुरी करने के लिए, और वह सेंचुरी भी नाट आउट। कानोड़िया जी है, खेतान जी है, हमारे विजय दा हैं ८२ के, नाट आउट। इसके बराबर करीब-करीब धर्मचन्दजी भी ८२ के हैं। ये शाकाहारी निरामिष है और खुशी की बात है कि इनकी तालीम से हम भी शाकाहारी हो गए है और वे भी जो व्यायाम करते है वह मुझे सिखलाया करते है। हमारी उम्र है ७६ लेकिन अपने मन्त्रिमण्डल मे हम सबसे ज्यादा जोरदार मिनिस्टर है। आज तक हम काम करते हैं और हमारे खिलाफ जो खडे होते है उनको पटक देते है। आज खुशी की बात है शाकाहारी होना और हमारे भारत की जो परम्परा है, वह योग व्यायाम है, जिसे सीखकर हमारे नौजवान आगे बढे ताकि हमारे हिन्दुस्तान की, पश्चिम बगाल की जो आज मौजूदा हालत है उसे सुधार सकें। अब दुर्भाग्य है कि आज पश्चिम बगाल के नौजवान दूसरे देश से सभ्यता उधार लेते है, संस्कृति और दूसरी चीजें भी मगर यहाँ सबूत है, एक नमूना है यह धर्मचन्दजी। आज यह शुभकामना हम जाहिर करते है, शुक्रिया अदा करते हैं कि मुझे आज यह मौका मिला।

श्री बजरंगलाल लाठ

आज सुबह भी हमलोगो ने अभिनन्दन एक मित्र का किया है, आज शाम को फिर दूसरा अभिनन्दन हो रहा है, यह हमारे समाज की परिपाटी है। हम लोगों ने बहुत अभिनन्दन किए। सर्वप्रथम हमको याद आता है आज के समारोह जो रामकृष्णजी सरावगी है, जिनके पिता के नेतृत्व में पदमराजजी [illegible] का अभिनन्दन किया था। पदमराजजी जैन समाज के एक [illegible] थे। [illegible] और वैसे ही लेखक। जो गांधीजी को वह मानता था कि [illegible]

मतभेद है, मेरा नम्बर पहला था और आपने दो नम्बर मे मुझको बुलाया।" वे चौक गए। ऐसे व्यक्ति का जब अभिनन्दन किया और उनके घर पर गए मूलचन्दजी के नेतृत्व मे फूल वगैरह सब लेकर, तो वे रोने लगे। बोले, मुझे यह मालूम नही था कि समाज मुझको इस दृष्टि से देखता है, इतना सम्मान करता है। उसके बाद तो अनेक अभिनन्दन किए। ऐसे अभिनन्दन का अपना महत्व है। कलकत्ते के मैदान मे सबकी स्टेचू लगी हुई है, सब राजनीतिज्ञो को। गोष्ठो पाल का स्टेचू भी आप देखेंगे, कितना सुन्दर फुटबाल किक मारते हुए। उस गोष्ठो पाल का अभिनन्दन हमने किया। १०,००० रु० की थैली अतुल्य बाबू के सभापतित्व मे उनको प्रदान किया। अभिनन्दन इसलिए नही कि उस व्यक्ति की तारीफ करें, अभिनन्दन इसलिए नही कि उन्होने ये किया वो किया। हम इस प्रवृत्ति का अभिनन्दन करना चाहते है, जिसके करने से हमलोगो ने देखा है बहुत लाभ हुआ है। धर्मचन्दजी मे एक विशेषता है जिसके कारण वे इस स्थान पर पहुँचे। आज गोपाष्टमी का मेला है, धर्मचन्दजी गोपाष्टमी का महत्व समझते है, वे गोपाष्टमी के दिन अपनी जन्म-तिथि मनाते है। गायो के लिए दान देते है। आज के दिन भगवान कृष्ण ने नगे पैर गायो को चराने का काम शुरू किया था। मेरे लिए बडी समस्या हो गई भाइयो ने कहा कि आप गोपाष्टमी के मेले मे नही चलेंगे, यह कैसे होगा। मैंने उन भाइयो से कहा कि जबसे मैंने होश सभाला है, मै गोपाष्टमी के मेले मे जाता हूँ और आज मैं नही जाऊँगा इसका मुझे खेद है। मुझको धर्मचन्दजी के प्रति श्रद्धा है, उनमे जो नम्रता है, सस्थाओ मे, बड़ी-बडी सस्थाओ मे उनके साथ काम किया है, सोसाइटी मे, प्रकृति निकेतन मे, लेकिन इनके अन्दर मोह नही है। ये जो काम करते हैं, करते हैं, छोड दिया, छोड दिया।

धर्मचन्दजी का स्वागत इसलिए हो रहा है कि इन्होने अपने माता-पिता के प्रति अपार श्रद्धा दिखाई है। मुझको खुशी है, बडा हर्ष है कि ये जो हमलोगो ने अभिनन्दन का नियम बनाया है, इसका बड़ा भारी अर्थ है, यह व्यर्थ की चीज नही। खुशामद की चीज नही, प्रचार की चीज नही। इस प्रवृत्ति का इतिहास।"

और आज के इस आयोजन के विशप अतिथि श्री प्रफुल्लचन्द्र सेन अस्वस्थता के कारण पधार नही सके। उनकी शुभकामना पढ़ी गई।

PRAFULLA CHANDRA SEN

Sri Dharamchand Saraogi Abhinandan Samiti
Calcutta.

Dear Friend,

I am extremely happy to learn that Sri Dharamchand Saraogi Abhinandan Samiti is observing his eighty second Birthday on 9th November at 6 p m. at Vidya Mandir, 1 Moira St., Calcutta I know Shri Dharamchand intimately. He is a social worker He is an educationist and is an enthusiastic supporter of Nature Cure. He is recognised as a selfless benevolent worker He is admired by all concerned and has no enemies. I wish him my regard and love and a long healthy life so that he can devote his selfless service for many many years to come. As I am not well I have to deny myself the pleasure and honour to congratulate him personally Sri Dharamchand's services are responsible for the good health of many persons I regret for my inability to attend the abhinandan function Hoping to be excused. Shri Radhakrishna Kanoria is a well-known and eminent social worker and I am sure under his guidance the abhinandan function will be a great success.

तत्पश्चात सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री राधाकृष्ण कानोडिया ने श्री सरावगीजी को माल्यार्पण के साथ ही अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

जिसका समिति के मन्त्री श्री दीपचन्दजी नाहटा ने पाठ किया।

अभिनन्दन-पत्र

श्री धर्मचन्द सरावगी के कर-कमलो मे सादर-समर्पित

श्रद्धेय श्री सरावगीजो

आज आपके ८२वें जन्म-दिवस पर आपका सार्वजनिक अभिनन्दन करते हुए हमे अपार हर्ष हो रहा है। आधी सदी से भी अधिक समय से आप समाज के सार्वजनिक जीवन से जुडे रहकर समाज के बहुमुखी विकास में अपना योग-दान करते आ रहे हैं। आपकी सतत् सेवाओं को स्वीकार करते हुए हम सब आपके आभारी हैं।

नव क्रान्ति के अग्रदूत

अति अल्प आयु मे ही आपने रूढ़ि-ग्रस्त समाज द्वारा उपस्थित बाधाओ का सामना करते हुए योरप भ्रमण किया तथा विदेशो मे होने वाले ज्ञान-विज्ञान तथा बौद्धिक विकास का संदेश दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक पत्रो द्वारा समाज तक पहुचाया। इतना ही नही जैन समाज मे प्रथम हवाई जहाज चालक बन कर युवको को साहसिक अभियानों के लिए प्रेरित किया। अपने निजी हवाई जहाज द्वारा जयपुर काग्रेस मे स्व० पडित जवाहरलाल नेहरू का अभिनन्दन आपने पुष्प-वृष्टि द्वारा किया।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी

जीवन का कोई क्षेत्र आपकी कार्य-साधना से अछूता नही रहा। तैराकी, चित्रकारी, खेलकूद और व्यायाम की विविध विधाओ के विशेषज्ञ के रूप मे आप कई बार पुरस्कृत और सम्मानित होते रहे है।

लेखन, सम्पादन, कला-साधना सभी क्षेत्र आपके सक्रिय सहयोग से अनुप्राणित है। सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक और राजनैतिक कार्यों मे आप सदा सलग्न रहे हैं।

कलकत्ता कारपोरेशन मे कौसिलर रहकर आपने सिनेमाघरो, ट्रामो एव बसो मे धूम्रपान निषिद्ध कराया। पश्चिम वग विधान परिषद तथा गो-सवर्धन कौन्सिल के सदस्य रहकर आपने देश-सेवा और गो-सेवा की दिशा मे स्तुत्य कार्य किया।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के प्रधानमन्त्री-पद पर रहकर बाढ, भूकम्प और दगो के समय आपके द्वारा किया गया राहत कार्य कभी भुलाया नही जा सकता। जनस्वास्थ्य के लिए राष्ट्रपिता गांधीजी के आशीर्वाद से सोसाइटी मे आपने प्राकृतिक चिकित्सा विभाग खुलवाया।

चिर युवा प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेमी

जीवन-यात्रा के आठ दशक पार कर, आज भी आपका सुदर्शन व्यक्तित्व सुगठित और स्वस्थ शरीर, युवकोचित गरिमा से प्रदीप्त है। शालीनता, उदारता और परिहास-प्रियता के कारण आप सर्वत्र सम्मानित है।

आपका पूरा जीवन प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार-प्रसार और विकास के लिए अर्पित है। अपने उद्यान की भूमि तथा लाखो के अनुदान से कलकत्ता मे आपने जिस 'नेचर क्योर एण्ड योगा रिसर्च इन्स्टीच्यूट' की स्थापना की है वह आपके प्राकृतिक चिकित्सा प्रेम का अमर प्रतीक बना रहेगा।

आपका अभिनन्दन। शतशः वन्दन॥

हम हैं।

रामकृष्ण सरावगी
सभापति

राधाकृष्ण कानोड़िया
अध्यक्ष

प्रफुल्लचन्द्र सेन
प्रधान अतिथि

दीपचन्द नाहटा
मन्त्री

श्री धर्मचन्द सरावगी अभिनन्दन समिति

कलकत्ता, दिनाक ९ नवम्बर, १९८६

हर्षोल्लास के साथ पश्चिम बग के लोककल्याण मत्री श्री यतीन चक्रवर्ती ने उन्हे तालियो की अविराम गड़गड़ाहट के मध्य दुशाला भेट की। इसके बाद कलकत्ते के शेरिफ, पद्मश्री डा० गोपालकृष्ण सराफ ने इस अवसर पर प्रकाशित 'धर्मचन्द सरावगी : प्राकृतिक चिकित्सा प्रेमी' ग्रन्थ उन्हें समर्पित किया।

अब सस्थाओ की ओर से माल्यार्पण का कार्य प्रारम्भ हुआ। इस क्रम में कलकत्ते की सामाजिक, राजनैतिक, सास्कृतिक विशिष्ट सार्वजनिक संस्थाओं की ओर से प्रदत्त मालाओ से सरावगीजी ढँक से गए। जिन संस्थाओं की ओर से माल्यार्पण किया गया उनकी सूची इस प्रकार है :

नागरिक स्वास्थ्य सघ—श्री गोपालदासजी आचार्य
दिगम्बर जैन युवक समिति—श्री जुगराजजी जैन
प्राकृतिक निकेतन—श्री आनन्दीलालजी गोयनका
पश्चिम वंग प्राकृतिक चिकित्सा परिषद—श्री गणेश प्रसाद [illegible]
वड़ावाजार युवक सभा—श्री प्रमोद रोहतगी

श्री जैन सभा—श्री सरदारमलजी काकरिया
माहेश्वरी व्यायामशाला—श्री श्रीलालजी बिन्नानी
माहेश्वरी सभा—श्री माणिकचन्दजी दम्माणी
मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी—श्री चिरजीलालजी केजड़ीवाल
मालवीय पुस्तकालय—श्री पवनकुमारजी जैन
अनन्य मित्र—श्री विहारी भाई शाह और श्री प्रवीनभाई शाह
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा—श्री कृपाचन्दजी सुराना जैन
युवासंगठन (वगाल, विहार, उड़िसा) दिगम्वर जैन क्षेत्र—श्री कमलकुमारजी जैन
राजस्थान युवक सघ, अ० भा० दिगम्बर जैन युवा परिषद—श्री देवेन्द्र जैन
नवजीवन सघ—श्री अशोक धवले
भारतीय पुस्तकालय—श्री रामदेवजी उपाध्याय
श्री दिगम्वर जैन अग्रवाल समाज—श्री राजकुमारजी जैन
श्री दिगम्वर जैन भवन ट्रस्ट—श्री प्यारेलालजी जैन
आराधना—श्री हनुमान दारूका
कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन—श्री आत्मारामजी तोदी
नेचर क्योर एण्ड योगा रिसर्च इन्स्टीच्यूट—डा० बी० एन पाण्डय
श्री दिगम्वर जैन रथयात्रा कमेटी—श्री हिम्मतसिंहजी जैन
लायन्स क्लब आफ नार्थ कलकत्ता—श्री आर० एन० बागची
श्री सरावगी प्रतिष्ठान के कार्यकर्ता—श्री सत्यनारायण वर्मा
पागल बाबा सन्त कमेटी—श्री महेन्द्र कुमार सरावगी
फतेहपुर जैन समाज—श्री महावीर प्रसादजी जैन
माहेश्वरी भवन समिति—श्री रमाशकरजी वागडी।
ओसवाल नवयुवक समिति तेरापन्थी युवक परिपद—श्री भवरलाल सिंघी

माल्यार्पण के हर्षोल्लासमय वातावरण मे अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करने के लिए मच पर सुप्रसिद्ध उद्योगपति, समाजसेवी श्री राधाकृष्ण जी कानोडिया खडे हुए। सभा कक्ष धीर-गभीर। उल्लपित हृदय से अभिनन्दन स्वर गूँजा :

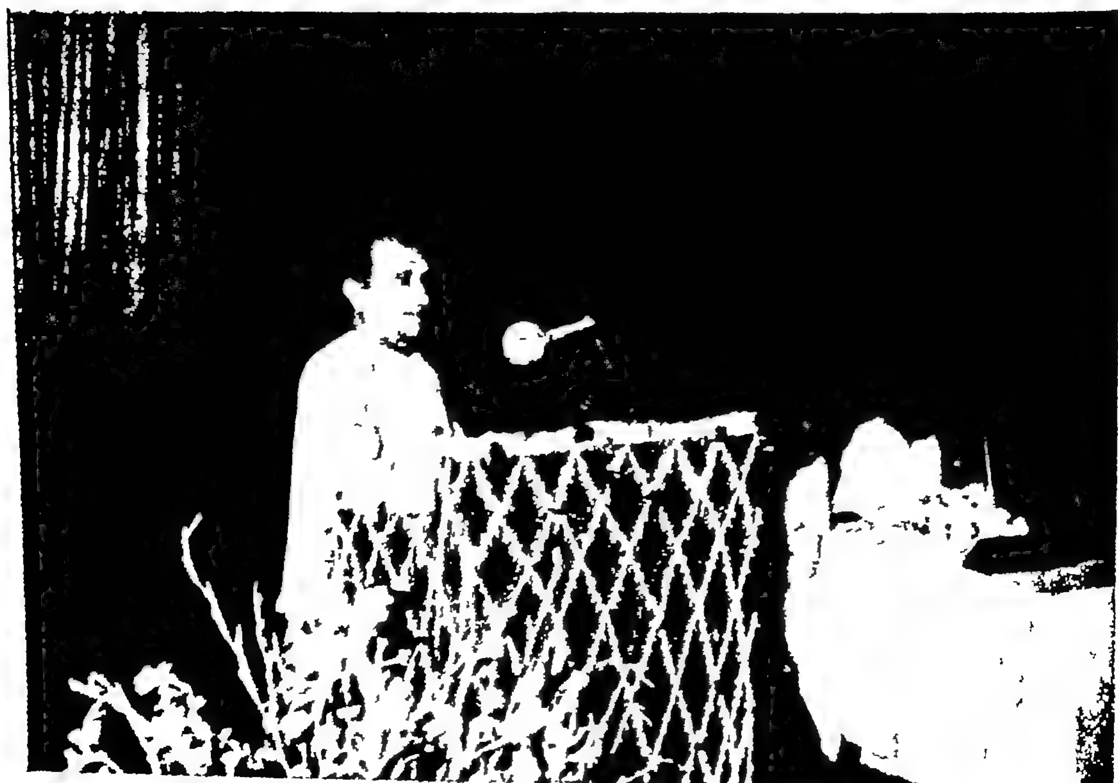
श्री राधाकृष्ण कानोड़िया

माननीय प्रभुदयालजी, जीतन वाबू, बहनो एव भाइयों। आज मुझे वड़ी प्रसन्नता हो रही है कि भाई धर्मचन्दजी का अभिनन्दन हम कर रहे हैं। धर्मचन्द

अभिनन्दन समारोह के अवमर पर धर्मचन्द जी को [illegible]
श्री यतीन चक्रवर्ती। पीछे परिलक्षित है अभिनन्दन समिति [illegible] श्री [illegible]
प० बंगाल के भूतपूर्व मंत्री तथा अभिनन्दन समिति के अध्यक्ष श्री [illegible]

समारोह के [illegible]
अभिनन्दन [illegible]

कलकत्ते के शेरिफ पद्मश्री डाक्टर गोपालकृष्ण सराफ धर्मचन्द जी को "श्री धर्मचन्द सरावगी प्राकृतिक चिकित्सा प्रेमी" नामक ग्रन्थ भेंट करते हुए। पीछे परिलक्षित है श्री रामकृष्ण सरावगी।



धर्मचन्द जी कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए।

जी ने जो कार्य किए, उसके लिए इनका अभिनन्दन करना जरूरी था और धर्मचन्दजी को अभी जो मालाएं पहनाई गई इससे मैं देखता हूं कि लोगों की इनके ऊपर कितनी श्रद्धा है, बहुत प्रेम है। धर्मचन्दजी सदा से ही सबके प्रेमी रहे और सदा से ही इनके विचार बड़े अच्छे रहे। अपने विचारो मे ये सदा पक्के रहे। प्रथम यात्रा जब इन्होने विदेश की की थी उस समय बहुत आदमियो ने कहा कि आप मत जाइए, इनके पिताजी भी डगमगा गए थे कि इनको भेजें या नही भेजें। लेकिन सब बन्धुओ के कहने से वे राजी हो गए और धर्मचन्दजी गए। प्रथम यात्रा करके आए तो उस वक्त थोडी तकलीफ हुई, पीछे कोई बात नही थी तकलीफ की। पीछे तो सब जैसे आते हैं, जाते हैं वैसे ही धर्मचन्दजी बहुत दफे विदेश गए और बहुत छोटी उम्र मे ही इन्होंने एरोप्लेन चलाना भी सीखा। जब ये सीख रहे थे तब हमलोगो के साथी बात करते थे कि धर्मचन्दजी इसमे सफल होंगे ये हमलोगो को सन्देह है। जब धर्मचन्दजी इसमे सफल हो गए तो सबलोगो ने इनका स्वागत किया। और हमारे समाज के दो-चार आदमी ही उस वक्त विमान चलाना सीखे थे और कोई नही चला पाए थे। धर्मचन्दजी खान-पान मे सदा ही ऐसे रहे जिससे कि सदा आदमी स्वस्थ्य रहे। धर्मचन्दजी को व्यायाम मे सदा ही रुचि रही। बड़ाबाजार युवक सभा मे जब मैं सभापति था उस समय धर्मचन्दजी को मैं देखता था कि रोज आकर व्यायाम करते हैं, और करते ही नही दूसरे लोगो को सिखाते भी हैं। जब मैं बडाबाजार युवक सभा मे था उस समय धर्मचन्दजी ने युवक सभा की छत पर एक बगीचा बनवाया था उसमे योगाशन और टाइकानडो की शिक्षा दी जाती थी। अभी भी धर्मचन्दजी बराबर ही दान करते है और यह (प्राकृतिक निकेतन) बगीचा वाला दान तो बहुत बडा दान है, आज इसकी तो बहुत बडी कीमत है। मैं मारवाडी रिलीफ सोसाइटी मे जब सभापति था उस समय धर्मचन्दजी मेरे साथ कमेटी मे थे और धर्मचन्दजी की सलाह इतनी अच्छी लगती थी कि उन सलाह से जो काम होता था वह बहुत ही सुन्दर होता था। धर्मचन्दजी सलाह देने मे बडे होशियार और चतुर थे। मारवाडी रिलीफ सोसाइटी एक ऐसी संस्था है जिसके द्वारा सेवा होती है और सेवा मनुष्य का बहुत बडा धर्म है।

विहार के भूकम्प मे धर्मचन्दजी ने जो काम किया वह सराहनीय काम था। कलकत्ता कारपोरेशन मे धर्मचन्दजी जब गए तो [illegible]

किया। उस वक्त कारपोरेशन मे यह नियम लगवा दिया कि ट्राम मे, वस मे कोई वैठे वह सिगरेट नही पी सकता। वह नियम आज भी चालू है। धर्मचन्दजी स्वीमिंग भी वहुत अच्छा जानते हैं, जानते ही नही सिखाते भी हैं। मैं स्वीमिंग करना कम जानता था, मुझे भी धर्मचन्दजी ने स्वीमिंग करना सिखाया था। धर्मचन्दजी वैसे तो उम्र मे मुझ से एक साल छोटे है लेकिन स्वीमिंग के काम में ये मुझ से वडे थे। आज धर्मचन्दजी का हम स्वागत नही कर रहे हैं। हम तो अपना निज का ही स्वागत कर रहे है। मुझे इससे प्रसन्नता है कि धर्मचन्दजी आज ८२ वर्ष के है तव इनका समाज स्वागत करता है, ये सौ साल के हो तो हमलोग फिर इनका स्वागत करें। समाज धर्मचन्दजी की सव चीजो को ग्रहण करे और धर्मचन्दजी से भी ऊँचा वने यही मेरी कामना है। जय हिन्द।

आज के अभिनन्दनीय व्यक्तित्व स्वस्थ और दीर्घायु जीवन के मगल प्रयत्न मे सलग्न सरावगीजी ने सभी गुरुजनो और अभिनन्दन समिति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए अपने जीवन के उन पृष्ठो को रेखाकित किया जिनमे उनकी प्रेरणा सन्निहित थी। उन्होने समारोह को सम्वोधित किया—

आज आपने मेरा जो स्वागत किया—मेरी यह मान्यता है कि यह कार्यकर्त्ताओ का और जिनलोगों ने मुझे महयोग दिया था, जिन लोगो की प्रेरणा से मैं इसमे आया, उनलोगो का स्वागत किया। मैं कहा करता हूँ कि किसी व्यक्ति के पास कोई चीज नही होती है, अभाव होता है और जव वह आती है तो उसका मूल्य समझता है। मेरी भी स्थिति इसी तरह की थी। मेरे पिताजी वड़े धार्मिक व्यक्ति थे, सामाजिक कार्यकर्त्ता थे, मैं उनका एकमात्र पुत्र था और आज से ७५ साल पहले खान-पान का ज्ञान मुझे तो होना ही क्या था, वच्चा था, माताजी को भी नही था। उनका लाड-प्यार मुझे इतना मिला कि गलत खान-पान की वजह से मैं वरावर वीमार रहता था। यहाँ तक कि मेरे ताऊजी वगैरह कहा करते थे कि वैजनाथ का लड़का इस तरह वीमार चलता है, यह भविष्य मे क्या करेगा! इस तरह की स्थिति मे, मैंने सवसे पहले गगाजी जाना शुरू किया और गगाजी जाने के वाद तैरना शुरू किया। वह भी एक अजीव परिस्थिति थी। सयोग से मेरी माताजी को एक ही भाई था और एक ही लड़का। जिस स्त्री का भाई तालाव मे डूवकर मर जाए और उसी का

लडका यदि तैरना सीखे उसकी क्या परिस्थिति होगी। तो इसलिए जबतक मैं तैर कर नही आता था, तो बेचारी खाना नही खाती थी। उसके बाद मैंने १९२० में माहेश्वरी व्यायामशाला के अखाडे मे कुश्ती लड़ना शुरू किया। उस जमाने मे समृद्ध परिवार मे कुश्ती लड़ना अच्छा नही माना जाता था। आस-पास के लोग अपने बच्चो को कहा करते थे कि इसकी सगत मत किया करो।

सयोग से मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी का सेक्रेटरी बना और भाग्य से गाँधीजी के साथ नोआखाली जाने का काम पडा। वहाँ मुझे यह ज्ञान हुआ कि बिना औषधि के मनुष्य स्वस्थ रह सकता है। उसमे सिर्फ जरूरत है खानपान बदलने की, उपवास करने की और व्यायाम करने की। उनके आशीर्वाद से मारवाडी रिलीफ सोसाइटी मे प्राकृतिक चिकित्सा विभाग खुला मैं लोगो से कहा करता हू कि प्राकृतिक चिकित्सा तो जीने की कला है, साथ ही साथ यह एक प्रकार का भूत है। जिसको लग जाता है उसको छोडता नही। मैंने देखा कि मुझको जब पकडा इसने तो मैं आज इतने वर्ष हो गए इससे छुटकारा नही पा सका। लाभ मुझको जरूर हुआ मैं यह मानता हूँ कि मुझे और मेरे परिवार मे आज ४०-४५ वर्षो मे एपेण्डि-साइटिस, एक्जीमा, हार्निया और कई बीमारियाँ हुई और सारी की सारी बिना औषधि के, बिना आपरेशन के ठीक हुई। आज हमारे परिवार के लोगो को भी धीरे-धीरे, जो कहिए गलत धारणाएँ बनी हुई थी कि ये चीज नही खानी चाहिए यह नही, यह भी मिट गई।

जब यह आम आता है गर्मी के दिन मे आता है, लीची आती है गर्मी के दिन मे आती है। लोगो की धारणा है कि ये गर्म करती है, नही खाना चाहिए और मैं सन्तरा खाता हूँ, जो जाडे के दिनो मे आता है, प्रकृति इसे जाडे के दिनो मे बनाती है और लोग कहते हैं कि सन्तरा खाएँगे तो सर्दी हो जाएगी। मैं यह आपको बताऊँ, आपको ताज्जुब होगा कि आज ४० वर्षो से मैं रात्रि मे सन्तरा खाकर और दूध पीकर सोता हूँ। कभी सर्दी का कोई [illegible] नही है। धीरे-धीरे परिवार के लोगो के भी दिमाग मे यह बात समझ गई कि यह जो धारणा हमलोगो की है, बिलकुल गलत है।

व्यायामशाला मे कठिन व्यायाम करता हूँ। आज भी मुझे [illegible] ने कहा कि तुम्हे कठिन व्यायाम नही करना चाहिए। मैं ८० पौंड [illegible]

हूँ जब कि मेरे पोते के उम्र के लड़के उसे १० दफे २० दफ उठाते हैं। मैं ७० दफे उठाने की सेट करता हूँ, ८० की उठाने की दूसरी सेट करता हूँ और फिर ७० तीसरी की सेट करता हूँ। यानी कि १५० से २०० वार मैं उठता हूँ। कोई तकलीफ नही होती। हमारे हिन्दुस्तान में, कुछ ऐसी धारणा है कि ४०-५०-६० के वाद लोगो को यह नही करना चाहिए, लेकिन विदेशो मे, आज अमेरिका के राष्ट्रपति श्री रीगन ७६ के है, मेरे पास अखवार की कटिंग है, वे आज भी बेंच प्रेस करते है। मैं अपने बुजुर्गों से सुनता हूँ कि कठिन व्यायाम नही करना चाहिए। जरूर वे अच्छी भावना से कहते है लेकिन मैं देखता हूँ कि जवतक मुझे कष्ट नही है, कोई तकलीफ नही है, इस क्रम को चलता रहूँ। मेरा यह विश्वास है कि जिस दिन मैं छोड दूँगा शायद मुझे लकड़ी लेकर चलना पड़े। इसलिए मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि लकडी लेकर न चलना पड़े। आज मेरा ८१ खत्म होकर ८२ शुरू हुआ है, तो मैं वडावाजार युवक सभा, प्राकृतिक निकेतन और सस्थाओ की वजह से और आपलोगो की शुभकामनाओ की वजह से खडा हूँ। इसलिए नम्रतापूर्वक ८२,०००-०० रुपए, इसमे ५५०००-०० रुपए वडावाजार युवक सभा मे एक हेल्थ क्लव के लिए (होटलो मे आपलोगों ने देखा होगा, वहुत-सी मशीनें वगैरह रख के हेल्थ क्लब चलाते है, वड़ावाजार युवक सभा मे भी एक हेल्थ क्लव वना रहे हैं और उसमे इन्सट्रूमेट वगैरह मंगा लिए हैं) देना तय किया है। प्राकृतिक निकेतन मे केविन्स है, उनका इम्प्रूवमेट हो रहा है, उसमे भी ११,०००-०० रु० देना तय किया है और वाकी का जैन मन्दिर के जीर्णोद्धार के लिए। इस प्रकार मैं नम्रतापूर्वक यह ८२,०००-०० रुपये अपने ८२ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर देना तय किया है।

दर्शकदीर्घा मे पुनः तालियो की गडगडाहट और अभिनन्दनीय धर्मचन्दजी सरावगी के प्रति श्रद्धाविनत वातावरण मे श्री कमल कुमारजी जैन ने धन्यवाद ज्ञापन किया उन महत व्यक्तित्वो के प्रति जिन्होने अपनी ओजस्वी वाणी से प्रेरणा के द्वार खोले, जिन्होने सक्रिय सहयोग प्रदान कर आज के कार्यक्रम को गौरव प्रदान किया और धर्मचन्दजी सरावगी के प्रति इसलिए कि उन्होने अपने ८२ वे वर्ष प्रवेश पर बयासी हजार रुपये की धन राशि प्रदान करने की घोषणा की। अन्त मे उन्होने विनम्र अनुरोध किया कि यहाँ धर्मचन्दजी सरावगी की

धर्मपत्नी उपस्थित है। किसी भी मनुष्य का कोई भी महत कार्य विना सहधर्मिणी के सहयोग के सफलता की ऊँची चोटी पर नही पहुँचता। इसलिए आज इस अवसर पर उनका अभिनन्दन करना चाहिए।

मच पर पधारी श्रीमती सरावगी मोती देवी – नमन, सौम्य स्वरूपा। दर्शको ने हर्षविभोर होकर करतलध्वनि से उनका अभिनन्दन-वन्दन किया। सम्पूर्ण वातावरण मे मानो गूँज रहा था: अभिनन्दन शत-शत वन्दन सर्व समर्पण का।□